अभिमत

हमारे देश में खिलौने बनाने की पुरानी परंपरा रही है। परंपरागत खिलौने फेंकी हुई वस्तुओं को दुबारा इस्तेमाल करके बनते हैं, इसलिए वे सस्ते व पर्यावरण मित्र भी होते हैं। इसके साथ, खिलौनों में विज्ञान के कई सिद्धांत छिपे होते हैं और जिन्हें बच्चे खेल-खेल में बहुत सहजता से सीख सकते हैं। और इससे कई गरीब बच्चों का बचपन खिलौनों से महरूम होने से भी बच जाता है। अरविंद बच्चों के लिए सीखने को मनोरंजक बनाने पर जोर देते हैं। इसका उद्देश्य सिर्फ खेल ही नहीं है, कुछ सीखना भी है, समझ बनाना भी है।

कचरे से खिलौने बनाकर विज्ञान पढ़ाना

नवाचार

■ बाबा मायाराम

इन दिनों बच्चों की परीक्षाएं चल रही हैं। कुछ परीक्षाओं के नतीजे भी आ गए हैं। परीक्षा में अच्छे परिणाम नहीं आने से बच्चों के तनावग्रस्त होने व परेशान होने की खबरें भी आई हैं। यह हर साल की बात है। लेकिन मैं आज ऐसी हस्ती के बारे में बताने जा रहा हूं, जिसने विज्ञान व गणित को मजे से सिखाने की कोशिश की है। यही वे विषय हैं, जिनमें बच्चे प्राय: पिछड़ जाते हैं।

कुछ समय पहले मैं महाराष्ट्र के पुणे में था। यहां मेरी रूचि अरविंद गुप्ता से मिलने में थी और उनसे मैंने मिलना भी सुनिश्चित कर लिया था। टॉय मेकर के नाम से ख्यात अरविंद गुप्ता ने विज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्हें भारत सरकार ने साल 2018 में पद्मश्री से भी सम्मानित किया है।

जब मैं उनके पुणे स्थित निवास पर पहुंचा तो उस समय बारिश हो रही थी। वे सड़क तक छाता लेकर मुझे लेने के लिए आए थे। यह पहली बार नहीं था, जब मैं उनसे मिलने जा रहा था। हम पहले भी कई बार मिल चुके हैं, लेकिन इसे सालों गुजर गए।

यह 80 के दशक की बात है, जब वे मध्यप्रदेश के होशंगाबाद (अब नर्मदापुरम) जिले में स्थित किशोर भारती संस्था में माध्यमिक स्तर के बच्चों के लिए विज्ञान की नई किताबें तैयार करने में जुटे थे। किशोर भारती ने होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम चलाया था, जिसके तहत् शासकीय माध्यमिक स्कूलों के लिए विज्ञान की किताबें बनाई जा रही थीं। कक्षा 6 वीं से लेकर 8 वीं तक पाठ्यक्रम तैयार किया जा रहा है। इन किताबों के पिछले पृष्ठ पर लिखा रहता था- मैंने सुना, भूल गया, मैंने देखा, याद रहा, मैंने करके देखा, समझ गया। यह विज्ञान शिक्षण की सीख थी।

लेकिन इस बीच मेरा उनसे संपर्क बना रहा। पहले पत्राचार के माध्यम से कभी-कभार और जब ईमेल आया तो नियमित संपर्क होने लगा। उन्होंने मुझे बहुत सारी किताबें पढ़ने दीं और नए व प्रेरणादायक साहित्य से परिचय करवाया। उनका एक काम, हर महीने देश-विदेश के अच्छे बाल साहित्य का अनुवाद करना भी है।

अरविन्द गुप्ता ने कानपुर आईआईटी से इंजीनियरिंग से बी टेक किया है। शुरू में उन्होंने पुणे में टाटा मोटर्स में काम किया, लेकिन वहां उनका मन नहीं लगा। कुछ समय उन्होंने ब्रिटिश मूल के वास्तुकार लॉरी बेकर के साथ भी काम किया। लॉरी बेकर महात्मा गांधी से प्रभावित होकर भारत में बस गए थे और उन्होंने घर बनाने के लिए सस्ती स्थानीय सामग्री को बढ़ावा दिया और टिकाऊ घर बनाए।

साल 1978 में अरविंद गुप्ता होशंगाबाद जिले के एक गांव में आए, जहां किशोर भारती संस्था के होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम से जुड़कर उन्होंने काम किया। इस दौरान उन्होंने विज्ञान के कई प्रयोग किए। किशोर भारती से पास से 7 किलोमीटर दूर एक छोटा कस्बा बनखेड़ी है। वहां शुक्रवार को साप्ताहिक हाट लगता है। सड़क के किनारे फुटपाथ पर दुकानें लगती हैं। वहां से वे छोटी-मोटी सस्ती चीजें खरीदकर लाते थे और उनसे खिलौने बनाते थे और उसके पीछे के विज्ञान को बच्चों को समझाते थे।

साइकिल के पहिए में लगने वाली वाल्व ट्यूब, माचिस की तीली, कचरे में पड़ा वायर या बोतल, झाड़ू की सींक जैसे सामानों से वे खिलौने बनाते थे। उन्हें इस काम में टेल्को में ट्रक डिजाइन करने से ज्यादा मजा आया।

हमारे देश में खिलौने बनाने की पुरानी परंपरा रही है। परंपरागत खिलौने फेंकी हुई वस्तुओं को दुबारा इस्तेमाल करके बनते हैं, इसलिए वे सस्ते व पर्यावरण मित्र भी होते हैं। इसके साथ, खिलौनों में विज्ञान के कई सिद्धांत छिपे होते हैं और जिन्हें बच्चे खेल-खेल में बहुत सहजता से सीख सकते हैं। और इससे कई गरीब बच्चों का बचपन खिलौनों से महरूम होने से भी बच जाता है।

अरविंद बच्चों के लिए सीखने को मनोरंजक बनाने पर जोर देते हैं। इसका उद्देश्य सिर्फ खेल ही नहीं है, कुछ सीखना भी है, समझ बनाना भी है। समझ जब बनती है तब बच्चे अपनी सीख को जीवन के व्यापक सामाजिक संदर्भ से जोड़ने में सक्षम होते हैं। तब सीखना जादुई हो जाता है।

वे मानते हैं कि बच्चों को हाथ से काम करना चाहिए, तरह-तरह के कौशल सीखने चाहिए। इससे पढ़ाई मजेदार हो जाएगी। उनका मानना है कि बच्चों को माता-पिता सभी प्रकार की गतिविधियां करने और उन्हें रूचि के स्थानों पर ले जाने में अधिक समय बिताना चाहिए और उन्हें घरेलू कामों खाना बनाना, मरम्मत करना और खरीदारी इत्यादि में शामिल करना चाहिए, जिससे वे जीवन शिक्षा भी सीख सकें।

वे कहते हैं कि आप केवल मूर्खतापूर्ण खिलौने ही खरीद सकते हैं, चतुर खिलौने हाथों से बनाएं जाते हैं। यानी बच्चे खुद अच्छे खिलौने बना सकते हैं। वे कहते हैं जब बच्चे विज्ञान के प्रयोग करते हैं तो उनके चेहरे पर मुस्कुराहट आ जाती हैं।

उनका पसंदीदा एक खिलौना इलेक्ट्रिक मोटर है, जिसे उन्होंने कई साल पहले बनाया था। वे याद करते हैं कि जब उन्होंने इसे पहली बार बनाया था, तो बहुत रोमांच था। लगभग एक पखवाड़े तक वे आधी रात को उठते थे और सोने से पहले कुछ मिनटों के लिए मोटर चलाते थे।

अरविंद गुप्ता कहते हैं कि किसी बात को समझने के लिए पहले बच्चों को अनुभव की जरूरत होती है। अनुभव में चीजों को देखना, सुनना, छूना, चखना, सूंघना आदि कुशलताएं शामिल हैं। वे हमेशा ठोका-पीटी कर-करके कुछ बनाते रहते हैं। जबकि हमारी शिक्षा व्यवस्था को रटना सिखाती है, उसमें सोचने और समझने की गुंजाइश कम है।

वे बताते हैं कि कुछ समय के लिए वे छत्तीसगढ़ में लोहे की खदानों के बीच काम करने वाले मजदूरों के बीच गए थे। वहां लोहा पत्थर ढोने के लिए डम्पर ट्रक चलते थे। वहां के बच्चे दो माचिस की डिब्बियों की मदद से वह डम्पर ट्रक बनाकर खेल रहे थे। उसमें लीवर का काम करने के लिए तीली का इस्तेमाल किया गया था। इसे देखकर अरविन्द जी आश्चर्यचकित हुए और उन्होंने इसे अपनी खिलौनों की सूची में 'माचिस का 'डम्पर ट्रक' शामिल कर लिए।

इन सब प्रयोगों पर आधारित उन्होंने वर्ष 1984 में मैचिस्टिक माडल एंड अदर साइंस एक्सपेरीमेंटस बुक लिखी। अब यह किताब 12 भाषाओं में है। इसके बाद उन्होंने 25 किताबें और लिखीं। इसके बाद वे पुणे में आयुका (द इंटर- यूनिवर्सिटी सेंटर फार एस्ट्रोनामी एंज एस्ट्रोफिजिक्स, पुणे) में बाल-विज्ञान केंद्र के को-आर्डिनेटर बने। वहां हर दिन वे नए-नए खिलौने बनाते थे, फिर उनकी वीडियो बनाते थे।

साल 1990 में दूरदर्शन पर तरंग कार्यक्रम शुरू हुआ था। यह रोज आधा घंटे का कार्यक्रम होता था। उस समय केवल दूरदर्शन ही हुआ करता था। अन्य कोई टीवी चैनल नहीं था। इस कार्यक्रम को काफी पसंद किया जाता था। उन्होंने मुझे बताया कि आज ही उन्हें उन लोगों के पत्र मिलते हैं, जो तरंग देखकर बड़े हुए हैं। उन्होंने तरंग के लिए 125 प्रोग्राम बनाए। इस कार्यक्रम में वाल्व ट्यूब और माचिस की तीलियों वाला कार्यक्रम सौ बार दिखाया गया, जिससे दूरदराज के गांवों तक यह बात पहुंची।

अरविन्द गुप्ता कहते हैं कि मेरी जिंदगी का एक ही मकसद है कि मैं न केवल देश बल्कि पूरी दुनिया के बच्चों को किताबें, वीडियो, मेरे बनाए खिलौनों को बनाना सीखने के तरीके मुफ्त में उपलब्ध कर सकूं, ताकि ज्ञान पाने के रास्ते में गरीबी या संसाधनों की कमी आड़े न आए।

उनकी वेबसाइट arvindguptatoys.com कई भाषाओं पर कई भाषाओं में हजारों ईबुक हैं। वीडियो फिल्में हैं, जिन्हें अब तक 10 करोड़ लोग देख चुके हैं, रोजाना 7000 हजार किताबें डाउनलोड होती हैं। इस वेबसाइट पर उनके द्वारा अनुवादित किताबें हैं। देश-दुनिया का उत्कृष्ट व प्रेरणादायी साहित्य हैं। विशेषकर बाल साहित्य उपलब्ध है। देश में जहां सार्वजनिक पुस्तकालय न के बराबर हैं, वहां इस प्रकार की वेबसाइट लोगों के बहुत काम आती हैं।

अरविंद गुप्ता ने देश के विख्यात वैज्ञानिक प्रो.यशपाल व जयंत नार्लीकर के साथ भी काम किया है। वे बताते हैं कि जब प्रो. यशपाल जब विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव थे, तब उन्होंने अरविंद गुप्ता को किताब लिखने के लिए फैलोशिप दी थी। जयंत नार्लीकर तो उन्हें पुणे स्थित आयुका (द इंटर- यूनिवर्सिटी सेंटर फार एस्ट्रोनामी एंज एस्ट्रोफिजिक्स, पुणे) में बाल-विज्ञान केंद्र में लेकर आए थे।

कुल मिलाकर, अरविंद गुप्ता, एक खिलौना अन्वेषक है, शिक्षक हैं, इंजीनियर हैं, वैज्ञानिक हैं, और पुस्तकप्रेमी हैं। अच्छे अनुवादक हैं और धुन के पक्के निष्काम कर्मयोगी हैं। उन्होंने प्रचलित शिक्षा व्यवस्था से अलहदा पढ़ने-लिखने व हाथ से प्रयोग करने का नजरिया दिया है। क्या हम बच्चों को ऐसी शिक्षा देने के लिए तैयार हैं, जिसमें बस्ते का बोझ भी न हो और बच्चों की अच्छी समझ बने। खेल-खेल में

बच्चों को हाथ से काम करना चाहिए, तरह-तरह के कौशल सीखने चाहिए। इससे पढ़ाई मजेदार हो जाएगी। उनका मानना है कि बच्चों को माता-पिता सभी प्रकार की गतिविधियां करने और उन्हें रूचि के स्थानों पर ले जाने में अधिक समय बिताना चाहिए और उन्हें घरेलू कामों खाना बनाना, मरम्मत करना और खरीदारी इत्यादि में शामिल करना चाहिए, जिससे वे जीवन शिक्षा भी सीख सकें। वे कहते हैं कि आप केवल मूर्खतापूर्ण खिलौने ही खरीद सकते हैं, चतुर खिलौने हाथों से बनाएं जाते हैं।

बीता सप्ताह

27 अप्रैल
- लोकसभा चुनाव 2024 के देश के 88 सीटों पर दूसरे चरण का मतदान हुआ तथा छत्तीसगढ़ में तीन सीट पर मतदान हुआ।
- सुप्रीम कोर्ट ने वीवी पैट के 100 फीसदी सत्यापन से जुड़ी याचिकाएं खारिज कर दी।
- हैती के प्रधानमंत्री एरियल हेनरी ने इस्तीफा दे दिया।
- भारत की नेथ्रा कुमानन ने भारत का दूसरा पेरिस 2024 कोटा हासिल किया।

28 अप्रैल
- मणिपुर में लोकसभा चुनाव की वोटिंग के दरमियान कुकी उग्रवादियों के हमले से सीआरपीएफ के दो जवान शहीद हो गए।
- छत्तीसगढ़ में दूसरे चरण की तीन सीटों पर 76 प्रतिशत मतदान की पुष्टि हुई।
- चुनाव आयोग ने कहा कि जाति शब्द के इस्तेमाल पर होगी कार्रवाई।
- सीबीआई ने छत्तीसगढ़ के बीरनपुर हत्याकांड पर जांच शुरू की।

29 अप्रैल
- महादेव सट्टा एप मामले में एक्टर साहिल खान को छत्तीसगढ़ के बस्तर में गिरफ्तार किया गया।
- पाकिस्तान के विदेशमंत्री इशाक डार को उपप्रधानमंत्री बनाया गया।
- इंडोनेशिया में 6.5 तीव्रता का भूकंप आया।
- शीर्ष भारतीय तीरंदाज दीपिका कुमारी ने शंघाई में जीता रजत पदक।

30 अप्रैल
- छत्तीसगढ़ के बेमेतरा जिले में एक पिकअप खड़ी वाहन से टकरा गई जिससे उसमें सवार तीन बच्चे सहित नौ लोगों की मौत हो गई।
- दक्षिण-पूर्वी चीन के चच्यांग प्रांत के हांगचो शहर में हांगचो अंतरराष्ट्रीय पतंग महोत्सव थोंगच्येन झील के फूल सागर दर्शनीय स्थल में शुरू हुआ।
- आस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज पहली बार अंतरराष्ट्रीय टीम के कोच बनेगें।
- दो बार ओलंपिक स्वर्ण कप विजेता अमेरिका की महिला बास्केट बाल खिलाड़ी कैंडेस पार्कर ने बास्केटबाल से संन्यास ले लिया।

1 मई
- छत्तीसगढ़ बस्तर के अबूझमाड़ में पुलिस- नक्सली मुठभेड़ में दो महिला सहित सात नक्सली मारे गए।
- हैती में व्यवस्था बहाल करने में मदद करने के लिए बांग्लादेश एक अंतरराष्ट्रीय सेना में शामिल होने के लिए सहमत हो गया।
- अफगानिस्तान के मस्जिद में फायरिंग होने से छ: नमाजियों की मौत हो गई।

2 मई
- इजरायल-गाजा समझौते के लिए बड़ी रियायतें देने को तैयार हो गया।
- अमेरिका में रूसी यूरेनियम के आयात पर प्रतिबंध लगाने वाला विधेयक पारित हो गया।
- एस्ट्राजेनेका ने माना कि कोविशील्ड टीके से बढ़ता है टीटीएस का खतरा।
- चुनाव आयोग ने बीआरएस चीफ और तेलंगाना के पूर्व मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव को 48घंटे के लिए चुनाव प्रचार करने पर लगाया बैन।

3 मई
- इजरायल ने गिरफ्तार 64 फिलिस्तीनियों को रिहा किया।
- भारत व इंडोनेशिया के बीच सातवीं संयुक्त रक्षा सहयोग समिति (जेडीसीसी) की बैठक हुई।
- पाकिस्तान ने संयुक्त राष्ट्र से की फिलीस्तीन को पूर्ण सदस्यता देने की मांग।
- युवा ग्रैंडमास्टर डी गुकेश ने विश्व के टॉप-10 शतरंज खिलाड़ियों के क्लब में प्रवेश कर लिया।

कांग्रेस के घोषणापत्र से भाजपा को डर क्यों

दिल्ली के संसद भवन के सामने बाबा साहेब की आदमकद प्रतिमा में उनके दाएं हाथ की उंगली उठी हुई है। मानो वह चेतावनी दे रही है कि इस देश की सामाजिक और आर्थिक विषमता का अंत करना है, वरना असमानता की चक्की में पिसने वाले लोग इस व्यवस्था को ही मिट्टी में मिला देंगे।'

मार्च 2024 में आए विश्व असमानता डाटाबेस पेपर के अनुसार, भारत का मोदी राज 'अरबपति राज' बन गया है। एक तरफ 81 करोड़ गरीब लोगों को मुफ्त राशन उपलब्ध कराया जा रहा है तो दूसरी तरफ 2022-23 में शीर्ष एक फ़ीसदी लोगों के पास 22.6प्रतिशत आय और 40.1प्रतिशत संपत्ति पर कब्जा है। रिपोर्ट कहती है कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में आजादी के अमृत काल में आर्थिक असमानता अब ब्रिटिश राज से भी ज्यादा बढ़ गई है। क्रॉनी कैपिटलिज्म का प्रभाव यह है कि एक फ़ीसदी लोगों की आय और धन की हिस्सेदारी (क्रमश: 22.6, 40.1प्रतिशत) ऐतिहासिक तौर पर सबसे ऊंचे स्तर पर है। भारत की शीर्ष एक फ़ीसदी आबादी के पास आय की हिस्सेदारी दुनिया में सबसे अधिक है, यहां तक कि दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील और अमेरिका से भी अधिक है।

इस रिपोर्ट के आने के बाद कांग्रेस पार्टी और खासकर राहुल गांधी ने इसे चुनावी मुद्दा बनाया। राहुल गांधी पिछले 7 साल से देश को चेतावनी देते रहे हैं। भारत में ही नहीं बल्कि विदेश के तमाम संस्थानों में भाषण देते हुए राहुल गांधी ने देश में बढ़ती विषमता और गरीबी पर मोदी सरकार को आगाह किया। मोदी और उनके समर्थकों ने राहुल गांधी की इस चेतावनी का हमेशा मजाक उड़ाया। लेकिन वे भूल गए कि शुतुरमुर्ग की तरह गर्दन रेत में गड़ा देने से तूफान नहीं रुकते। राहुल गांधी लगातार और कई बार बहुत गुस्से में भी मोदी सरकार की आलोचना करते रहे। क्रोनी कैपिटलिज्म की आलोचना करते हुए उन्होंने हम दो हमारे दो की सरकार बताया। मोदी सरकार के एक दशक में पूंजीवाद का बहुत एकांगी विकास हुआ है। अम्बानी और अडानी की संपत्ति लगातार बढ़ती रही और इसके अनुपात में ही देश में गरीबों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। किसान, नौजवान, दलित, पिछड़े और आदिवासियों पर सामन्तवादी ही नहीं बल्कि सांस्थानिक हमले हुए। उनकी आर्थिक स्थिति ही कमजोर नहीं हुई बल्कि सामाजिक सुरक्षा और प्रतिष्ठा भी हीन बनाने की कोशिश की जा रही है।

प्रो. रविकांत

राहुल गांधी ने दो यात्राएं की हैं। पहले वे कन्याकुमारी से कश्मीर तक भारत जोड़ो यात्रा पर निकले। इस यात्रा में राहुल गांधी ने किसान, दलित, आदिवासी , महिलाओं. पिछड़ों, अल्पसंख्यकों में विश्वास पैदा किया। भाजपा और हिन्दुत्ववादी संगठनों ने हमले करके भय पैदा किया। डरो मत नारे के साथ राहुल गांधी ने पैदल यात्रा का नया कीर्तिमान स्थापित किया। इस यात्रा में राहुल गांधी ने देश को बखूबी समझा।

इस दरम्यान राहुल गांधी ने दो यात्राएं की हैं। पहले वे कन्याकुमारी से कश्मीर तक भारत जोड़ो यात्रा पर निकले। इस यात्रा में राहुल गांधी ने किसान, दलित, आदिवासी , महिलाओं. पिछड़ों, अल्पसंख्यकों में विश्वास पैदा किया। भाजपा और हिन्दुत्ववादी संगठनों ने हमले करके भय पैदा किया। डरो मत नारे के साथ राहुल गांधी ने पैदल यात्रा का नया कीर्तिमान स्थापित किया। इस यात्रा में राहुल गांधी ने देश को बखूबी समझा और ये पाया कि कमजोर वंचित मेहनतकश समाज के साथ मोदी सरकार बहुत अन्याय कर रही है। इसके लिए उन्होने अपनी दूसरी यात्रा की। भारत जोड़ो न्याय यात्रा राहुल गांधी ने मणिपुर से मुम्बई तक की। जलता हुआ मणिपुर सरकार के निकम्मेपन ही नहीं बल्कि उसकी विभाजनकारी नीति को भी दर्शाता है। समूचे देश को ऐसे ही विभाजन और वैमनस्य की आग में झोंक दिया गया। कहीं आदिवासियों के जल, जंगल और जमीन के अधिकार छीने जा रहे थे तो कहीं उनके मुंह पर पेशाब की जा रही थी। खुद को पिछड़ा कहकर सत्ता में आये मोदी जाति जनगणना से मुकर गए। उन्हें न तो सम्मान मिल रहा है और ना ही संसाधनों में हिस्सेदारी। दलितों की स्थिति तो और भी बदतर बना दी गई। उनके आरक्षण पर डाका डाला गया। कहीं ऊना तो कही हाथरस दोहराया गया। किसानों पर लाठियां और गोलियां चलाई गईं। किसान आंदोलन में 750 किसानों की शहादत हुई। कोरोना आपदा में लाखों लोग बिना दवा और ऑक्सीजन के मर गए। गंगा में तैरती लाशें और तेज लौ में जलती हुई चिताएं सरकार की बदनीयती को दिखाती हैं। कोरोना काल में बाबा रामदेव जैसे दवा व्यापारी मालामाल हो गए। महिला पहलवानों की अपनी अस्मत लूटने वाला पिशाच संसद में अट्टहास करता रहा। ऐसे असंख्य अन्याय मोदी की मनुवादी सोच का नमूना है।

राहुल गांधी लोगों को न्याय दिलाने के लिए सड़कों पर ही नहीं निकले बल्कि चुनाव मैदान में जाने से पहले उन्होंने एक विजन डॉक्युमेंट के रूप में अपना घोषणापत्र पेश किया। कांग्रेस पार्टी के घोषणा पत्र में सामाजिक न्याय के साथ-साथ आर्थिक न्याय की भी बात की गई है। एक तरफ दलित, आदिवासी, ओबीसी और महिलाओं को सामाजिक न्याय और सामाजिक सुरक्षा का संकल्प कांग्रेस के घोषणा पत्र में है। दूसरी तरफ किसानों और नौजवानों के लिए लंबे समय से चली आ रही मांगों को पूरा करने की गारंटी प्रदान की गई है। किसानों को एमएसपी लागू करने की गारंटी से लेकर ऋण माफी तक की योजनाएं घोषणापत्र में मौजूद हैं। केंद्रीय सेवाओं में नौजवानों को 30 लाख सरकारी नौकरियों के अलावा 1 वर्ष की अप्रेंटिसशिप का भी प्रोग्राम इसमें है। इस कार्यक्रम के जरिए एक लाख रुपये नौजवानों को मिलेंगे। इसी तरह प्रत्येक गरीब परिवार की एक महिला को प्रतिवर्ष 1 लाख रुपया बैंक खाते में ट्रांसफर करने की गारंटी दी गई है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह योजनाएं बहुत कैलकुलेटिव और व्यवहारिक हैं। ये 15 लाख खाते में आने और 2 करोड़ प्रति वर्ष रोजगार देने की तरह जुमले नहीं हैं।

जिस दिन कांग्रेस का यह घोषणा पत्र आया, भाजपा के खेमे में बेचैनी बढ़ गई। अभी यह घोषणा पत्र लोगों के सामने ठीक से आया भी नहीं था कि नरेंद्र मोदी ने इस पर सांप्रदायिक हमला बोल दिया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के घोषणा पत्र पर मुस्लिम लीग की छाप है। इतना सुनते ही कांग्रेस के समर्थकों ने ही नहीं बीजेपी के समर्थकों और नौजवानों ने भी इसका अध्ययन किया। इससे कांग्रेस को नुकसान होने के बजाय उल्टा उसके घोषणा पत्र का प्रचार हो गया। कांग्रेस का घोषणा पत्र एक तरह बीजेपी की पराजय का घोषणा पत्र भी बन गया। रातोंरात नौजवानों, किसानों, दलितों, पिछड़ों ने इस घोषणा पत्र को पढ़ा। इससे कांग्रेस के जनाधार के जनाधार में स्वत: इजाफा हुआ। जो कांग्रेस उत्तर भारत में चुनाव मैदान में ठहरी हुई नजर आ रही थी, घोषणा पत्र आने के बाद उसकी सक्रियता और चर्चा बढ़ गई। जो मीडिया कांग्रेस को दरकिनार कर रही थी, मोदी के हमले के बाद उसके मेनिफेस्टो पर चर्चा करने लगी। पूरे देश में कांग्रेस की उम्मीदों को पंख लग गए। भाजपा के समर्थक भी राहुल गांधी के दृष्टिकोण के मुरीद हो गए। लोकसभा के इस चुनाव में कांग्रेस के घोषणा पत्र ने एक मजबूत प्रभाव स्थापित कर दिया है। मतदान पर इस घोषणा पत्र की एक छाप दिखाई दे रही है।

भाजपा के लिए अब आसान नहीं रहा लोकसभा चुनाव

कई लोगों के मन में इस बात को लेकर थोड़ा ही संदेह रह गया है कि इस लोकसभा चुनाव में बाजी पलट रही है। अब यह उतना आसान नहीं रह गया है जितना भाजपा ने कल्पना की थी। भाजपा को उम्मीद थी कि वह आसानी से सीधे-सीधे तीसरी बार सत्ता में बैठेगी लेकिन अब यह मुश्किल नजर आ रहा है। कई आंकड़े उछाले जा रहे हैं लेकिन उनमें से लगभग सभी भाजपा को 272 के जादुई आंकड़े से कम और कमतर बता रहे हैं। एकमात्र सवाल जो पूछा जा रहा है वह यह है कि पार्टी सरकार बनाने के लिए आवश्यक आधी संख्या से कितनी नीचे जा सकती है। मिल रहे सभी संकेत इस बात की ओर इशारा कर रहे हैं कि सत्ताधारी पार्टी को इस बार भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। भाजपा में जो दृढ़ विश्वास दिखाई दे रहा था वह भाप बन कर उड़ गया सा प्रतीत होता है। ऐसे स्पष्ट संकेत मिल रहे हैं कि भाजपा हलकों में कहीं भी 'चार सौ पार' (400 के आंकड़े से अधिक) की कोई चर्चा नहीं है। 'चार सौ पार' भाजपा चुनाव अभियान की पहचान थी क्योंकि इस विश्वास के साथ ही उसने अपना प्रचार शुरू किया था। फिर भी कोई भविष्यवाणी करने में सतर्कता बरतनी चाहिए। अभी पांच चरणों का मतदान और मतगणना में एक महीना बाकी है। कुछ भी हो सकता है। चुनाव की सावधानीपूर्वक निगरानी की आवश्यकता होगी और यह एक थ्रिलर बनने के लिए तैयार है।

लेखा रत्तनानी

चुनाव के पहले दो चरणों में मतदान उम्मीद से कम रहा है। मतदान के रुझान को समझने के कई तरीके हैं। एक विचार यह है कि भाजपा ने शुरुआत में ही यह जताने के लिए भरपूर प्रयास किया कि वास्तव में कोई मुकाबला ही नहीं है। समृद्ध और अच्छी तरह से वित्त पोषित अभियान व मशीनरी की पूरी ताकत के साथ यह संदेश भेजा गया था। इसलिए भाजपा के मतदाता उत्साहित और तय नहीं थे- जब अंतिम परिणाम यही है तो काम करने का क्या मतलब है?

चुनाव के पहले दो चरणों में मतदान उम्मीद से कम रहा है। मतदान के रुझान को समझने के कई तरीके हैं। एक विचार यह है कि भाजपा ने शुरुआत में ही यह जताने के लिए भरपूर प्रयास किया कि वास्तव में कोई मुकाबला ही नहीं है। समृद्ध और अच्छी तरह से वित्त पोषित अभियान व मशीनरी की पूरी ताकत के साथ यह संदेश भेजा गया था। इसलिए भाजपा के मतदाता उत्साहित और तय नहीं थे- जब अंतिम परिणाम यही है तो काम करने का क्या मतलब है? दूसरा विचार मौसम का है- इस बार मौसम असामान्य रूप से गरम है। तीसरा यह है कि भाजपा खुद अपने कैडर को प्रेरित करने में सक्षम नहीं रही है। इसका एक कारण यह है कि पहला वोट डाले जाने से पहले ही पार्टी ने चुनाव को जीता हुआ घोषित कर दिया था और दूसरा व अधिक महत्वपूर्ण कारण पार्टी में बड़ी संख्या में गैर-भाजपा कार्यकर्ताओं की आमद है जो या तो अपने दम पर भाजपा में शामिल हुए हैं या उन पर भाजपा में शामिल होने के लिए प्रलोभन दिया गया अथवा दबाव डाला गया है। 'घुसपैठिये' बनाम कैडर का अजीब मिश्रण कुछ हद तक बेमेल रसायन बन रहा है और जो प्रतिबद्ध कार्यकर्ताओं के भीतर निराशा की भावना पैदा कर रहा है। वे अब खुद को पार्टी से बहिष्कृत महसूस करते हैं जिसमें उन्होंने लंबे समय तक काम किया है। अंतिम कारण- मतदाताओं के एक व्यापक वर्ग के बीच निराशा हो सकती है और यदि यह कारण है तो कम मतदान हर तरह से परिणामों को प्रभावित करेगा।

बहरहाल, सप्ताह की समाप्ति के करीब भाजपा के लिए और बुरी खबर आती गई। एक तरफ राहुल गांधी आग उगलते हुए मांग कर रहे थे कि 'सामूहिक बलात्कारी' प्रज्वल रेवन्ना के लिए वोट मांगने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश की हर लड़की और महिला से माफी मांगें जो कह रहे हैं कि रेवन्ना के लिए वोट मोदी को मजबूत करेगा। यह भाजपा के नए सहयोगी जेडीएस के समर्थन में एक चुनावी रैली थी जहां प्रधानमंत्री ने रेवन्ना सहित जेडीएस उम्मीदवारों के समर्थन में स्पष्ट अपील की। रेवन्ना पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा के पोते हैं। रेवन्ना 26 अप्रैल को कर्नाटक में अपने निर्वाचन क्षेत्र हासन में मतदान समाप्त होने के अगले दिन जैसे ही महिलाओं के बारे में उनके विचार और महिलाओं पर हमले के टेप लीक हो गए, वे जर्मनी भाग गए। रेवन्ना को समर्थन देने के बारे में पूछे गए सवालों का जवाब भाजपा नहीं दे पाई है जिसने विशेष रूप से प्रधानमंत्री को बेनकाब कर दिया है। यह बात तब विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है जब यह बात सामने आई है कि रेवन्ना के आचरण और उनके खिलाफ आरोपों के बारे में पार्टी को पहले ही चेतावनी दे दी गई थी। इसके बावजूद पार्टी ने उनकी उम्मीदवारी का समर्थन करने की पहल की।

दूसरी ओर भाजपा द्वारा कांग्रेस के खिलाफ लगाए गये उन आरोपों ने पार्टी के लिए मुसीबत खड़ी कर दी कि कांग्रेस धन को फिर से वितरित करना चाहती है या इसे मध्यम वर्ग से लेना और अल्पसंख्यकों को देना चाहती है। राहुल गांधी द्वारा उठाये गए आर्थिक असमानता से जुड़े मुद्दे को धर्म को जोड़ने का एक ज़बरदस्त लेकिन हताश प्रयास भाजपा को महंगा पड़ गया। गलगोटिया विश्वविद्यालय के छात्रों के एक वर्ग के हास्यास्पद विरोध मार्च के कारण भाजपा का यह दांव उलटा पड़ गया। गलगोटिया विश्वविद्यालय 300 से अधिक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों के साथ एनएएसी ग्रेड ए प्लस होने का दावा करता है। भाजपा समर्थित इस विरोध मार्च में शामिल छात्रों को मालूम नहीं था कि उनके हाथों में पकड़ी हुई तख्तियों में कांग्रेस के खिलाफ क्या लिखा है। वे उन मुद्दों के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे जिनका विरोध करने के लिए वे एकत्र हुए थे। गलगोटिया विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा में है और इस खेदजनक प्रदर्शन ने उत्तर प्रदेश में शिक्षा की स्थिति और एक ऐसी प्रणाली को उजागर किया है जिसके तहत नकली समाचार को राजनीतिक व्यवस्था के शीर्ष से ही प्रसारित किया जाता है, जहां छात्र कोई सवाल नहीं पूछते और बिना रुचि या जिज्ञासा के सीखते हैं।

भाजपा कई मायनों में अति आत्मविश्वास से पीड़ित है और उसके प्रभावों का अब उसे सामना कर पड़ रहा है। इससे उबरने के लिए सांप्रदायिक कार्ड का मनमाना उपयोग कर रही है। कांग्रेस पर अपने हमलों में खुद प्रधानमंत्री चरम पर चले जाते हैं। (उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस के घोषणापत्र में 'मुस्लिम लीग की मुहर है')। ऐसा लगता है कि पार्टी ने यह हिसाब नहीं लगाया है कि चुनावी बॉन्ड में अपनी भूमिका, अरविंद केजरीवाल जैसे विपक्षी नेताओं की गिरफ्तारी और किसी भी कीमत पर सत्ता पाने की उसकी कोशिशों की (जैसा कि महाराष्ट्र में हुआ) उसे कुछ कीमत चुकानी होगी। महाराष्ट्र एक ऐसा राज्य है जहां विपक्ष को भारी समर्थन मिल रहा है। सुप्रीम कोर्ट के दबाव के कारण यह खुलासा हुआ कि भाजपा ने चुनावी बॉन्ड के माध्यम से 8,000 करोड़ रुपये कैसे एकत्र किए। इससे एक व्यापक विचार सामने आया है कि पार्टी मूल रूप से भ्रष्ट है। भ्रष्टाचारियों के पाला बदलते और पार्टी में शामिल होते ही 'भाजपा वॉशिंग मशीन' से साफ घोषित करने का तरीका भी भाजपा की छवि और प्रतिष्ठा को धक्का पहुंचा रहा है। यहां तक कि पार्टी के प्रति वफादार लोग भी इस तरीके से नाखुश हैं। 400 से अधिक सीटें मिलने के दावे से डर पैदा हो गया है कि यह जनादेश संविधान को खतरे में डाल देगा और तब भाजपा आरक्षण जैसी कुछ बुनियादी गारंटी के साथ खिलवाड़ करने की स्थिति में आ जाएगी। इसके अलावा इस बात का भी डर है कि अगर मोदी को लगातार तीसरा कार्यकाल मिलता है तो देश के लोकतांत्रिक ताने-बाने में तानाशाही शैली के शामिल होने की आशंका है।

कुल मिलाकर, इस समय एजेंडे के मुद्दे उन मुद्दों से बहुत अलग हैं जिनके बारे में भाजपा ने सोचा था कि वे एजेंडे में होंगे। मुकाबला अंत तक चलेगा और वोटों की गिनती तथा परिणाम घोषित होने के बाद कई सबक सीखे जाएंगे।

(लेखिका द बिलियन प्रेस की प्रबंध संपादिका हैं। सिंडिकेट: द बिलियन प्रेस)

https://t.me/AllNewsPaperPaid

प्रकाशक, मुद्रक : राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन प्रा. लि. के लिए 506, आई.एन.एस. बिल्डिंग, 9, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित एवं बीएफएल इंफोटेक लि., सी 9, सेक्टर-3, नोएडा से मुद्रित। सम्पादक : राजीव रंजन श्रीवास्तव, (पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। आर.एन.आई. नं. DELHIN/2008/24216. दिल्ली कार्यालय :फोन: 011-23718195,23357784, फैक्स: 011-43581404, नोएडा कार्यालय: फोन: 0120-4114404 फैक्स: 0120-4273770
ई-मेल: deshbandhudelhi@gmail.com वेब: www.deshbandhu.co.in

आदर्श संहिता उल्लंघन मामले में पहली कार्रवाई

निर्वाचन आयोग ने प्रधानमंत्री के बांसवाड़ा में दिए भाषण पर भाजपा से जवाब मांगा है। कांग्रेस और वामदलों ने नरेन्द्र मोदी के भाषण को विभाजनकारी और महाहानिकर बताते हुए आयोग से शिकायत की थी। इसी पर संज्ञान लेते हुए आयोग ने नोटिस दिया है। किसी पदेन प्रधानमंत्री के विरु द्ध आदर्श संहिता उल्लंघन मामले में यह पहली कार्रवाई है। आयोग का अपनी याददाश्त के आधार पर ऐसा दावा है। दूसरी तरफ, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और उनकी पार्टी के नेता राहुल गांधी के विरु द्ध भाजपा की शिकायतों पर जवाब मांगा गया है। ये जवाब 29 अप्रैल तक दिए जाने हैं। इस तरह से आयोग ने निष्पक्षता एवं पारदर्शिता का एक कठिन पड़ाव पार कर लिया है। उसे इसका श्रेय मिलना चाहिए कि उसने संहिता उल्लंघन पर प्रधानमंत्री तक को नहीं बख्शा। यह आरोप भी कमजोर हुआ है कि आयोग विपक्ष और कमजोर दलों के नेता को ही निर्देशित करने में आगे रहता है। पर उसका निर्णायक इम्तिहान दोनों दलों के जवाब पर की जाने वाली कार्रवाई में होगा जो आयोग की शक्ति और क्षेत्र को परिभाषित करने वाला होगा। सार्वजनिक जीवन में गरिमा-मर्यादा और नियम-कायदे का आग्रही तबके ही नहीं, पूरे देश ने देखा-सुना कि बांसवाड़ा में और फिर अलीगढ़ तक में खास समुदाय और धर्म के लोगों के बारे में क्या-क्या न कहा गया। माना कि चुनाव बाद एक प्रधानमंत्री के रूप में आप समुदाय-धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं करते पर यही भाव चुनावी सभाओं में भी रहना बुरा नहीं होता। यह सामान्य जन अपेक्षा है कि प्रधानमंत्री को तमाम विभाजनों और दोष-रेखाओं से ऊपर होना चाहिए। तब आयोग को भी रिकार्ड बनाने का मौका नहीं मिलता। चुनाव की घोषणा करते हुए आयोग ने भाषणों में सभ्यता के निर्वाह का अनुरोध दलों से किया था, जिसका पालन किसी ने नहीं किया। विपक्ष में स्थितिजन्य आक्रामकता स्वाभाविक ही होती है। सत्ता अपने व्यवहार से उसको परिमार्जित करती है। खरगे और राहुल सरकार की नीतियों की आलोचना के अधिकार के प्रयोग में सभ्यता भूलते रहे हैं। वे न केवल प्रधानमंत्री को निजी स्तर चोट पहुंचाने वाली भाषा का धड़ल्ले से प्रयोग करते सुने-देखे गए हैं, बल्कि तू-तड़ाक पर भी उतर आए हैं।

आर्थिक क्षेत्र में नित नए विश्व रिकार्ड बनाता भारत

आरती कुमारी

दिनांक 1 मई 2024 को अप्रेल 2024 माह में वस्तु एवं सेवा कर के संग्रहण से सम्बंधित जानकारी जारी की गई है। हम सभी के लिए यह हर्ष का विषय है कि माह अप्रेल 2024 के दौरान वस्तु एवं सेवा कर का संग्रहण पिछले सारे रिकार्ड तोड़ते हुए 2.10 लाख करोड़ रुपए के रिकार्ड स्तर पर पहुंच गया है, जो निश्चित ही, भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती को दर्शा रहा है। वित्तीय वर्ष 2022 में वस्तु एवं सेवा कर का औसत कुल मासिक संग्रहण 1.20 लाख करोड़ रुपए रहा था, जो वित्तीय वर्ष 2023 में बढ़कर 1.50 लाख करोड़ रुपए हो गया एवं वित्तीय वर्ष 2024 में 1.70 लाख करोड़ रुपए के स्तर को पार कर गया। अब तो अप्रेल 2024 में 2.10 लाख करोड़ रुपए के स्तर से भी आगे निकल गया है। इससे यह आभास हो रहा है कि देश के नागरिकों में आर्थिक नियमों के अनुपालन के प्रति रुचि बढ़ी है, देश में अर्थव्यवस्था का तेजी से औपचारीकरण हो रहा है एवं भारत में आर्थिक विकास की दर तेज गति से आगे बढ़ रही है। कुल मिलाकर अब यह कहा जा सकता है कि भारत आगे आने वाले 2/3 वर्षों में 5 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की ओर मजबूती से आगे बढ़ रहा है। भारत में वर्ष 2014 के पूर्व एक ऐसा समय था जब केंद्रीय नेतृत्व में नीतिगत फैसले लेने में भारी हिचकिचाहट रहती थी और भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की हिचकोले खाने वाली 5 अर्थव्यवस्थाओं में शामिल थी। परंतु, केवल 10 वर्ष पश्चात केंद्र में मजबूत नेतृत्व एवं मजबूत लोकतंत्र के चलते आज वर्ष 2024 में भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है और विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर तेजी से आगे बढ़ रही है। आज भारत आर्थिक क्षेत्र में वैश्विक मंच पर नित नए रिकार्ड बना रहा है। वैश्विक स्तर पर विदेशी प्रेषण के मामले में आज भारत प्रेषण प्राप्तकर्ता के रूप में प्रथम स्थान पर पहुंच गया है। भारत में आज सबसे बड़ा सिंक्रोनाईजड बिजली ग्रिड है। बैंकिंग क्षेत्र में वास्तविक समय लेनदेन की सबसे बड़ी संख्या आज भारत में ही सम्पन्न हो रही है। भारत आज विश्व में दूसरा सबसे बड़ा स्टील उत्पादक देश है एवं भारत आज पूरे विश्व में मोबाइल फोन का निर्माण करने वाला दूसरा सबसे बड़ा निर्माता बन गया है। भारत में आज विश्व का दूसरा सबसे बड़ा सड़क नेट्वर्क है। मात्रा की दृष्टि से भारत में आज विश्व का तीसरा सबसे बड़ा फार्मासीयूटिकल उद्योग है। भारत में आज पूरे विश्व में तीसरा सबसे बड़ा मेट्रो नेट्वर्क है। भारत ने स्टार्टअप को विकसित करने के उद्देश्य से विश्व का तीसरा सबसे बड़ा पारिस्थितिकी तंत्र खड़ा कर लिया है। भारत का स्टॉक बाजार, पूंजीकरण के मामले में, विश्व में चौथे स्थान पर आ गया है। भारत में आज विश्व का चौथा सबसे बड़ा रेल नेट्वर्क है। विश्व में पैटेंट हेतु आवेदन किए जाने वाले देशों में भारत आज छठे स्थान पर आ गया है। आर्थिक क्षेत्र में भारत को यह सभी उपलब्धियां पिछले 10 वर्षों के दौरान प्राप्त हुई हैं। पिछले केवल 10 वर्षों के दौरान शेयर बाजार में निवेशकों को अपार सफलता हासिल हुई है और सेन्सेक्स ने 200 प्रतिशत की रिकार्ड वृद्धि दर्ज की है, इसी प्रकार निफ्टी भी इसी अवधि में 206 प्रतिशत की रिकार्ड वृद्धि दर्ज करने में सफल रहा है। यह स्थानीय एवं विदेशी निवेशकों का भारतीय अर्थव्यवस्था पर अपना विश्वास जता रहा है। भारत में शेयर बाजार में व्यवहार करने के उद्देश्य से खोले जाने वाले डीमेट खातों की संख्या वर्ष 2014 में 2.2 करोड़ थी जो वर्ष 2024 में बढ़कर 15.13 करोड़ हो गई है अर्थात इन 10 वर्षों में 7 गुणा से अधिक की वृद्धि दर अर्जित की गई है। देश का प्रत्येक उद्यमी/उपक्रमी/व्यवसायी बहुत उत्साह में है कि देश में व्यापार करने हेतु वातावरण में बहुत सुधार हुआ है एवं ईज आफ डूइंग बिजनेस में काफी सुधार हुआ है। आज भारत ही नहीं बल्कि भारतीय कम्पनियों द्वारा विदेश में भी पूंजी उगाहना बहुत आसान हो गया है। अतः एक प्रकार से उद्यमियों के लिए पूंजी की समस्या तो नहीं के बराबर रह गई है। भारतीय नागरिकों में आज स्व का भाव जगाने में भी कामयाबी मिली है, जिसके चलते स्वदेश में निर्मित वस्तुओं का उपयोग बढ़ रहा है एवं अन्य देशों से विभिन्न उत्पादों के आयात कम हो रहे हैं। इसके चलते भारत के विदेशी व्यापार घाटे में सुधार दृष्टिगोचर है। आज भारत से विभिन्न उत्पादों के निर्यात में मामूली वृद्धि दर्ज हो रही है तो कई उत्पादों के आयात में कमी दिखाई देने लगी है। इसे भारतीय नागरिकों के आत्म निर्भर भारत की ओर बढ़ते कदम के रूप में देखा जा सकता है। फरवरी 2024 माह में भारत का व्यापारिक निर्यात 11.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करते हुए 4140 करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो गया, जो पिछले 20 महीनों में उच्चतम स्तर पर है। इसके अतिरिक्त, सेवा निर्यात 3210 करोड़ अमेरिकी डॉलर के रिकार्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया है। फरवरी 2024 माह में माल एवं सेवाओं को मिलाकर कुल निर्यात 7355 करोड़ अमेरिकी डॉलर का रहा है, जो फरवर 2023 की तुलना में 14.2 प्रतिशत अधिक है। इसी कारण से, भारत का विदेशी मुद्रा भंडार भी आज 64,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर को पार कर गया है। आज भारतीय नागरिकों ने सनातन संस्कृति का अनुपालन करते हुए भारत को विकसित एवं मजबूत बनाने के लिए अपने कदम आगे बढ़ा लिए हैं। आज भारत में प्रत्येक नागरिक का औसत जीवन वर्ष 2022 के 62.7 वर्ष से बढ़कर 67.7 वर्ष हो गया है। यह भारत में लगातार हो रही स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के चलते ही सम्भव हो सका है। संयुक्त राष्ट्र के एक प्रतिवेदन के अनुसार भारत में प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय में पिछले 12 महीनों के दौरान 6.3 प्रतिशत की वृद्ध दर्ज हुई है। इसी प्रकार, एक सर्वे के अनुसार, आज भारत में 36 प्रतिशत कम्पनियां आगामी 3 माह में नई भर्तियां करने पर गम्भीरता से विचार कर रही हैं, इससे भारत में रोजगार के लाखों नए अवसर निर्मित होते दिखाई दे रहे हैं। गरीब वर्ग को भी केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ पहुंचाये जाने के भरसक प्रयास किए जा रहे हैं। जल जीवन मिशन ने पूरे भारत में 75 प्रतिशत से अधिक घरों में नल के पानी का कनेक्शन प्रदान करके एक बढ़ा मील का पत्थर हासिल कर लिया है। लगभग 4 वर्षों के भीतर मिशन ने 2019 में ग्रामीण नल कनेक्शन कवरेज को 3.23 करोड़ घरों से बढ़ाकर 14.50 करोड़ से अधिक घरों तक पहुंचा दिया गया है। इसी प्रकार, पीएम आवास योजना के अंतर्गत, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में 4 करोड़ से अधिक पक्के मकान बनाए गए हैं एवं सौभाग्य योजना के अंतर्गत देश भर में 2.8 करोड़ घरों का विद्युतीकरण कर लिया गया है। विश्व भर के सबसे बड़े सरकारी वित्तपोषित स्वास्थ्य सेवा कार्यक्रम – प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना – के अंतर्गत 55 करोड़ लाभार्थियों को माध्यमिक एवं तृतीयक देखभाल एवं अस्पताल में भर्ती के लिए प्रति परिवार 5 लाख रुपए का बीमा कवर प्रदान किया जा रहा है। साथ ही, पीएम गरीब कल्याण योजना के माध्यम से मुफ्त अनाज के मासिक वितरण से 80 करोड़ से अधिक परिवारों को लाभ प्राप्त हो रहा है। पीएम उज्जवल योजना के अंतर्गत 10 करोड़ से अधिक महिलाओं को मुफ्त गैस कनेक्शन प्रदान किये गए हैं। इन महिलाओं के जीवन में इससे क्रांतिकारी परिवर्तन आया है क्योंकि ये महिलाएं इसके पूर्व लकड़ी जलाकर अपने घरों में भोजन सामग्री का निर्माण कर पाती थीं और अपनी आंखों को खराब होते हुए देखती थीं। स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत भी 12 करोड़ से अधिक शौचालयों का निर्माण कर महिलाओं की सुरक्षा एवं गरिमा को कायम रखा जा सका है। जन धन खाता योजना के अंतर्गत 52 करोड़ से अधिक खाते खोलकर नागरिकों को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली में लाया गया है। इससे गरीब वर्ग के नागरिकों के लिए वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिला है। पूरे भारत में 11,000 से अधिक जनऔषधि केंद्र स्थापित किए गए हैं, जो 50-90 प्रतिशत रियायती दरों पर आवश्यक दवाएं प्रदान कर रहे हैं। अंत में यह कहा जा सकता है कि भारत आर्थिक क्षेत्र में आज पूरे विश्व में एक चमकते सितारे के रूप में दिखाई दे रहा है एवं अपनी विकास दर को 10 प्रतिशत के ऊपर ले जाने के भरसक प्रयास कर रहा है। इससे निश्चित ही भारत शीघ्र ही पहिले विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा एवं इसके बाद वर्ष 2027 तक भारत एक विकसित राष्ट्र भी बन जाएगा।

'वोट जिहाद' के बाद चुनाव में 'पाकिस्तान' की एंट्री पर बवाल

अशोक भाटिया

लोकसभा चुनाव के बीच कांग्रेस नेता और पूर्व विदेशमंत्री सलमान ख़ुर्शीद की भतीजी मारिया के वोट जिहाद वाले बयान को लेकर सियासत तेज हो गई । कन्नौज लोकसभा सीट सेभाजपा सांसद और प्रत्याशी सुब्रत पाठक ने इस बयान पर पलटवार किया । उन्होंने कहा कि "इंडिया गठबंधन भारत को पाकिस्तान जैसा बनाना चाहता है, जीत के हथियारों से जिहाद करेंगी।बीजेपी सांसद सुब्रत पाठक ने कहा कि अभी तक लव जिहाद, रेड जिहाद सुना था आज इन्होंने बता दिया कि वोटों का भी जिहाद करेंगे। सरकार में आ जाएंगे तो हथियारों से जेहाद करेंगे, इनका लक्ष्य ही यही है कि हिंदुस्तान में शरिया का कानून लागू करना। भारत को इस्लामिक राज्य बनाना और पाकिस्तान जैसा भ्रष्टाचारी आतंकवादी राष्ट्र बनाकर कई टुकड़े करवा देना। अभी इस बात पर वाद विवाद चल ही रहा था कि पाकिस्तान की भी इन चुनाओं में एंट्री हो गई । ऐसा लगता है कि मोदी की हेट्रिक लगाती देख कर पाकिस्तान को अभी से चिंता सताने लगी है। पाकिस्तान के नेता घबराहट में भारत के चुनाव पर टिप्पणी कर रहे हैं। इमरान खान सरकार में सूचना मंत्री रहे फवाद चौधरी ने ऐसा बयान दिया है, जो चुनावी मैदान में बहस का मुद्दा बन गया है। इसे लेकरभाजपा नेता कांग्रेस और राहुल गांधी पर निशाना साध रहे हैं। आइए समझते हैं कि आखिर पाकिस्तान को भारत के नतीजों को लेकर इतनी दिलचस्पी क्यों है? भारत के चुनाव में पाकिस्तान की एंट्री तो पहले ही हो चुकी थी। गुरुवार को बात मजबूत सरकार और कमजोर सरकार पर आ गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात के आणंद मेंभाजपा की रैली को संबोधित करते हुए फवाद चौधरी के उस बयान पर रिएक्ट किया, जिसमें उन्होंने राहुल गांधी की तारीफ की थी। मोदी ने कहा, "पाकिस्तान और कांग्रेस की ये पार्टनरशिप अब पूरी तरह एक्सपोज हो गई है। देश के दुश्मनों को आज भारत में मजबूत सरकार नहीं चाहिए। उनको कमजोर सरकार चाहिए।।।ऐसी कमजोर सरकार जो मुंबई में आतंकी हमले के समय थी। डोजियर भेजने वाली सरकार। दरअसल, लोकसभा चुनाव से पहले द गार्जियन की एक रिपोर्ट आई थी, जिसमें कहा गया था कि भारत की विदेशी खूफिया एजेंसी 2019 के कथित तौर पर विदेशों में हत्याएं करना शुरू किया है। पुलवामा हमले के बाद से भारत ने पाकिस्तान में 20 एक्ट्रा जुडिशियल हत्याएं करवाईं है। उस समय इस पर भारत के विदेश मंत्रालय ने इसे झूठा करार दिया था, लेकिन अंदर ही अंदर पीएम मोदी, राजनाथ सिंह समेत कई नेताओं के में लड्डू फूट रहे थे। क्योंकि ये उनके फेवर की बात थी कि जिस डोजियर को कांग्रेस सौंपती थी, उसमें से ही ये लोग है जिन्हें मारा गया है। हालांकि मेरे पास इसका कोई स्टेटमेंट नहीं है। इसके अलावा केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह से एक साक्षात्कार में पूछा गया था कि गार्जियन ने भारत पर 20 लोगों के मारने का आरोप लगाया है। इसे आप कैसे देखते हैं? अमित शाह ने जवाब में कहा था कि आप खुश हो कि नहीं हो। उन्होंने इससे इनकार भी नहीं किया था। कुल मिलाकर आज फिर चुनाव में पाकिस्तान लौट आया। 2019 का चुनावभाजपा पाकिस्तान पर किए गए स्ट्राइक के दम जीत गई थी। आने वाले दिनों में यह देखने वाली बात होगी कि किस-किस तरह से पाकिस्तान हमारे चुनाव गेस्ट अपीरियंस के रूप में आती है। बताया जाता है कि पाकिस्तान के बड़बोले नेता, पूर्व मंत्री और इमरान खान के करीबी फवाद चौधरी ने हाल ही में सोशल मीडिया पर एक वीडियो को री-पोस्ट किया था। ये वीडियो राहुल गांधी की रैली का था। इसमें वो पीएम मोदी पर निशाना साध रहे थे। फवाद चौधरी ने वीडियो को री-पोस्ट करते हुए कमेंट लिखा, पड़ोसी मुल्क से निकला वाला बयान सोशल मीडिया पर जंगल की आग की तरह फैल गया। दिन चढ़ते-चढ़ते आग गुजरात की रैली तक पहुंच गई थी।पीएम मोदी ने आणंद की रैली में कांग्रेस और पाकिस्तान पर तंज कसे। उन्होंने कहा, "संयोग देखिए।।। आज जब भारत में कांग्रेस कमजोर हो रही है। मैग्नीफाइंग ग्लास लेकर भी कांग्रेस को ढूंढना मुश्किल हो रहा है। यहां कांग्रेस मर रही है, वहां पाकिस्तान रो रहा है। कांग्रेस के लिए अब पाकिस्तानी नेता दुआ कर रहे हैं। शहजादे को प्रधानमंत्री बनाने के लिए पाकिस्तान उतावला है। एक RTI के जवाब में मिले गृह मंत्रालय के आंकड़े के मुताबिक, 2004 से 2013 के बीच देश में 9,321 आतंकी घटनाएं हुईं। इनमें 4005 आतंकी मारे गए। जबकि 2014 से 2022 के बीच 2132 आतंकी घटनाएं हुईं। इनमें 1538 आतंकी मारे गए थे। इस बीच एक सवाल ये भी उठता है कि पाकिस्तान में सत्ता की दौड़ से पहले ही बाहर हो चुके फवाद चौधरी भारत में कांग्रेस के तरफदार क्यों बन रहे हैं? कहीं ये कांग्रेस के समर्थन से ज्यादाभाजपा से घबराहट को तो नहीं दिखाता है? क्या पाकिस्तान को भी 4 जून यानी भारत में हो रहे लोकसभा इलेक्शन के रिजल्ट का इंतजार है? पाकिस्तान के साथ दिक्कत ये है कि वहां के नेताओं के पास इस वक्त कोई मुद्दा नहीं है। घर के अंदर और घर के बाहर पाकिस्तान हर मोर्चे पर जिस तरह से घिरा हुआ है, आज के पहले उसकी कभी इतनी बुरी हालत नहीं थी। चुनाव के बाद भी वहां राजनीतिक स्थिरता बहाल नहीं हो पाई है। पाकिस्तान खुद को हारा हुआ महसूस कर रहा है।जमीयत उलेमा-ए-इस्लाम के अध्यक्ष मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान कहते हैं, "हिंदुस्तान और हम एक ही दिन आजाद हुए।15 अगस्त 1947 को सुबह 8 बजे। आज वो दुनिया की सुपरपावर बनने के ख्वाब देख रहा है। हम दिवालियापन से बचने के लिए भीख मांग रहे हैं। इसके लिए कौन जिम्मेदार है? मौजूदा हालत को देखकर पाकिस्तान की आवाम का भी सब्र टूट रहा। सना अमज़द कहती हैं, "हमारा पॉलिटिकल निजाम नाकाम है। हम ना तीतर हैं ना बटेर। स्टेट पॉलिसी है ही नहीं।" खैज़र नाम के शख्स का पाकिस्तानी हुकूमत से सवाल है, "इंडिया आपसे आगे निकल रहा है। इजरायल आगे है। आप इस्लामी ब्लॉक बनाने जा रहे थे। क्या हुआ?" मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान कहते हैं, "पाकिस्तान की अवाम जब भारत की ओर देखती है, तो अपनी सरकार को कठघरे में खड़ा करना उसकी मजबूरी हो जाती है। ये मजबूरी।।।फिलहाल और ज्यादा बढ़ गई है। क्योंकि चुनाव के मैदान में लगातार पाकिस्तान की आतंकी छवि का जिक्र बना हुआ है। पाकिस्तान इस समय एक साथ कई मोर्चों पर जूझ रहा है। भारत में घुसपैठ कराना अब उसके लिए आसान नहीं रहा। अलग-अलग ग्लोबल मंच पर भारत पहले ही पाकिस्तान को अलग-थलग कर चुका है। अफगानिस्तान से सटे बॉर्डर पर भी तालिबान उसे बार-बार आंख दिखा देता है। बलूचिस्तान में क्रांति की लपटें अलग उठ रही हैं। PoK भी बार-बार इस्लामबाद को धमकी दे रहा है। इन सबके बीच पाकिस्तान की आर्थिक बदहाली उसे खोखला किए जा रही है। जाहिर है पाकिस्तान को खुद में बदलाव लाने की जरूरत है, क्योंकि आतंकवाद के खिलाफ भारत की पॉलिसी तो अटल है। पाकिस्तान के जिस नेता ने राहुल गांधी की तारीफ की है। वो भारत विरोधी ज़हरीले बयानों के लिए भी कुख्यात हैं। ये वही फवाद चौधरी हैं, जिन्होंने पाकिस्तान की संसद में सीना चौड़ा करके कबूल किया था कि पुलवामा के पाप को पाकिस्तान ने ही अंजाम दिया है। पाकिस्तान को भारत से कितना डर लगता है? खुद पाकिस्तान की संसद में इस बात की गवाही दी गई। पाकिस्तान के एक सांसद ने बताया कि उसके विदेश मंत्री को डर था कि कहीं भारत हमला ना कर दे। लेकिन पाकिस्तान की इसी संसद में कुछ साल पहले एक और वाकया हुआ। पड़ोसी मुल्क ने खुलेआम ये स्वीकार किया कि पुलवामा में जो आतंकी हमला हुआ, वो पाकिस्तान ने ही कराया था।फवाद चौधरी ने संसद में कबूल किया था, "हमने हिंदुस्तान को घुसके मारा है। पुलवामा में जो हमारी कामयाबी है।इस कौम की कामयाबी है। उसके हिस्सेदार हम सब हैं।"जाहिर है पुलवामा हमले को पाकिस्तान का गौरव बताने वाले फवाद चौधरी अगर राहुल गांधी की तारीफ करेंगे, तो कांग्रेस के विरोधी इसे कैसे जाने देंगे। वो भी तब, जबकि मौसम चुनावी है।

राजनीति में छिपे सियार की कलंक कथा है कर्नाटक का रेवन्ना सैक्स कांड!

मनोज कुमार अग्रवाल

कर्नाटक का एक ऐसा टेप कांड जिसने न सिर्फ पूरे देश को हिला कर रख दिया है वरन राजनीतिक नेताओं के आवरण में छिपे ऐसे शातिर चरित्र को उजागर किया है जिसने भारतीय राजनीति के इतिहास में ऐसा कलंकित दाग लगा दिया है जिसे मिटाना और भुलाना मुश्किल होगा। अभी तक सिर्फ संत के भेष में छिपे आशाराम राम रहीम जैसे लोगों के कुत्सित चरित्र उजागर हुए थे राजनीतिक नेताओं में भी अमरमणी त्रिपाठी तंदूर कांड वाले सुशील शर्मा साक्षी महाराज कुलदीप सैंगर समेत कई नेताओं पर बलात्कार हत्या जैसे संगीन मामलों में आरोपी बन चुके हैं लेकिन मौजूदा मामले में रेवन्ना की कथित पेन ड्राइव जो बयान कर रही है वह राजनीति में छिपे एक बेहद अययाश व अनगिनत महिलाओं के साथ यौन बर्बरता भरी दरिंदगी करने वाले ऐसे राजनीतिक की कलंक कथा का संकेत है जो लम्बे समय तक शर्मसार करती रहेगी हालांकि अभी इस हाइप्रोफाइल प्रकरण की जांच होने पर स्थिति और साफ सामने आएगी। ज्ञात हो कि पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा के विधायक बेटे एचडी रेवन्ना और हासन सीट से सांसद पोते प्रज्वल रेवन्ना पर गंभीर आरोप लगे हैं। रेवन्ना पर अपने घर में अनगिनत लड़कियों के साथ यौन शोषण करने, उनका अश्लील वीडियो बना कर उन्हें डराने-धमकाने का सनसनीखेज आरोप है। कर्नाटक सरकार ने जनता दल (सेक्यूलर) के अध्यक्ष एवं पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा के पोते और हासन से सांसद प्रज्वल रेवन्ना की संलिप्तता वाले कथित 'सेक्स स्कैंडल' की जांच के लिए रविवार को एक विशेष जांच दल गठित किया।कर्नाटक राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ. नागलक्ष्मी चौधरी द्वारा सरकार को एक पत्र लिखे जाने के बाद यह कदम उठाया गया। रेवन्ना (33) हासन लोकसभा सीट पर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के उम्मीदवार हैं, जहां 26 अप्रैल को मतदान हुआ। जद (एस) पिछले साल सितंबर में राजग में शामिल हो गया था। भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारियों की तीन सदस्यीय एसआईटी का नेतृत्व अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (सीआईडी) बिजय कुमार सिंह करेंगे। अन्य दो सदस्य, सहायक पुलिस महानिरीक्षक सुमन डी. पेनेकर और मैसुरु की पुलिस अधीक्षक सीमा लाटकर हैं। एसआईटी को शीघ्र अपनी जांच पूरी करने का निर्देश दिया गया है।प्रज्वल की संलिप्तता वाले कुछ वीडियो क्लिप का हाल के दिनों में हासन में वायरल किया गया है। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने एसआईटी गठित करने की घोषणा की थी। उन्होंने शनिवार देर रात सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, सरकार ने प्रज्वल रेवन्ना के आपत्तिजनक वीडियो मामले में एक विशेष जांच दल गठित करने का फैसला किया है।मुख्यमंत्री कार्यालय द्वारा जारी एक बयान के अनुसार, पुलिस के पास यह सूचना है कि विधायक एवं पूर्व मंत्री एचडी रेवन्ना के बेटे प्रज्वल देश छोड़कर चले गए हैं। प्रज्वल ने अपने चुनाव एजेंट के जरिए अधिकारियों के समक्ष यह शिकायत दायर की कि वीडियो में छेड़छाड़ की गई है और चुनाव से पहले उनकी छवि धूमिल करने के लिए इसका प्रसार किया जा रहा है। गृहमंत्री जी. परमेश्वर ने कहा, प्रज्वल के विदेश चले जाने के मामले में एसआईटी उन्हें वापस लाने और जांच जारी रखने के लिए जिम्मेदार होगी। हम एसआईटी से नहीं कहेंगे कि जांच कैसे करनी है।कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने कहा, हमारा सिर शर्म से झुक गया है। शिवकुमार, प्रदेश कांग्रेस प्रमुख भी हैं। उन्होंने कहा, मैंने मीडिया में देखा कि वह 'भाग' गए हैं। यह एक अक्षम्य अपराध है। यह शर्म का विषय है। वह एक सांसद हैं और पूर्व प्रधानमंत्री के पोते हैं। एसआईटी पर सरकार के आदेश में कहा गया है कि यौन अपराध को अंजाम देने वालों, इसका वीडियो बनाने वाले और फिर इसे सार्वजनिक करने वाले लोगों को जांच के दायरे में शामिल किया जाए।

आपको बता दें कि इस मामले में 200 अश्लील क्लिप्स वायरल हुई हैं मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक प्रज्वल के करीब 200 से ज्यादा आपत्तिजनक वीडियो वायरल हुए हैं। जबकि कुल 2976 से ज्यादा सेक्स क्लिप्स होने की बात सामने आ रही है। दावा किया गया है कि वायरल वीडियो में दिख रहीं महिलाएं खुद को छोड़ने की गुहार लगाती हुईं रो रही हैं और प्रज्वल वीडियो शूट कर रहे हैं। प्रज्वल अपने रसोईये की बेटी से भी आपत्तिजनक बातें और छेड़छाड़ करता था। जिस लिहाज से इस केस में अश्लील फोटो और वीडियो वायरल होने की खबर है, उस हिसाब से इसे भारत का अब तक का सबसे सबसे बड़ा सैक्स कांड कहा जा रहा है।आपको बता दें कि इस पूरे सेक्स कांड में प्रज्वल का एक पुराना ड्राइवर कार्तिक मीडिया के सामने आया है। कार्तिक वही है, जिसने प्रज्वल के फोन से अश्लील क्लिप्स को कॉपी किया था। कार्तिक ने 17 साल तक प्रज्वल के पास ड्राइवर की नौकरी की। पिछले साल जमीन से जुड़े एक मामले में दोनों के बीच विवाद हुआ और कार्तिक ने नौकरी छोड़ दी। कार्तिक का कहना है कि प्रज्वल और उसके परिवार ने उसकी जमीन को जबरन हथिया लिया और सवाल पूछे जाने पर उसको और उसकी पत्नी को प्रताड़ित किया।प्रज्वल के खिलाफ केस करने के लिए ड्राइवर कार्तिक ने कर्नाटक बीजेपी नेता देवराजे गौड़ा से संपर्क किया। देवराजे गौड़ा हासन में रेवन्ना परिवार के खिलाफ मोर्चा खोलने वाले नेता थे और पेशे से वकील हैं। 2023 में गौड़ा ने रेवन्ना के खिलाफ भाजपा के टिकट पर चुनाव भी लड़ा है। जानकारी के अनुसार जैसे ही प्रज्वल रेवन्ना को इस बात की भनक लगी तो उन्होंने कोर्ट से उनके खिलाफ किसी भी तरह के अश्लील वीडियो या फोटो को प्रसारित करने पर स्टे ले लिया। कार्तिक के मुताबिक, देवराजे गौड़ा ने कोर्ट ऑर्डर के मद्देनजर अश्लील क्लिप की एक कॉपी देने को कहा, जिससे उसे सीधे जज को देकर स्टे वेकेट किया जा सके। प्रज्वल के पिता एचडी रेवन्ना ने कहा कि मैं नहीं जानता ये कैसी साजिश रची गई है। मैं उन लोगों में से नहीं हूं जो आसानी से डर कर भाग जाऊं। उन्होंने जो वीडियो रिलीज किए हैं, वे 4-5 साल पुराने हैं। हालांकि मामले में रेवन्ना को जांच पूरी होने तक पार्टी से सस्पेंड कर दिया गया है।रेवन्ना पर पूरा मामला रेवन्ना के घर पर काम करने वाली हाउस हेल्प की एफआईआर से सामने आया। महिला ने एचडी रेवन्ना और उनके बेटे प्रज्वल पर यौन शोषण का आरोप लगाया है। इस मामले में पुलिस ने आईपीसी की धारा 354 (A) यौन शोषण, 354(D) पीछा करना, 506 धमकाना और 509 बोलकर या इशारों से महिलाकी गरिमा का अपमान करना के तहत केस दर्ज किया लेकिन एसआइटी ने शुरुआती जांच के बाद विधायक पिता व पुत्र के खिलाफ अपहरण और बलात्कार का केस धारा 376(2)(n) (बार-बार बलात्कार करना), 506 (आपराधिक धमकी), 354a(1)(ii) (सेक्स की डिमांड करना), 354(b) (किसी महिला को निर्वस्त्र करने के इरादे से उस पर हमला या बल प्रयोग करना), 354(c) (नंगी या अर्ध-नग्न तस्वीरें अपलोड करना) आइटी एक्ट को जोड़ा गया है। प्रज्वल रेवन्ना के वायरल वीडियो को लेकर जेडीएस और भाजपा के बीच राजनीतिक तनातनी है। सेक्स टेप विवाद के बाद भाजपा ने उनसे दूरी बना ली है। प्रज्वल रेवन्ना पूर्व प्रधानमंत्री देवगौड़ा के पोते पूर्व मुख्यमंत्री एचडी कुमारस्वामी के भतीजे हैं। उन के पिता पूर्व मंत्री व मौजूदा विधायक हैं। प्रज्वल रेवन्ना ने 2014 में बैंगलोर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बीटेक की डिग्री ली थी। उसके बाद से वह राजनीति में सक्रिय हो गए। नवंबर 2019 में जब प्रज्वल रेवन्ना 29 साल के थे उन्हें जेडीएस का राज्य महासचिव नियुक्त किया गया था। इस सारे प्रकरण को लेकर भाजपा भी काफी असहज महसूस कर रही है क्योंकि रेवन्ना के साथ चुनाव प्रचार के दौरान भाजपा के वरिष्ठ नेताओं के साथ मंच साझा कर रहे थे। सारे प्रकरण ने भाजपा हाइकमान को भी बेहद धक्का लगा है। राजनीतिक सत्ता के कारण बौराए कुछ लोग किस तरह राक्षस बन कर सफेदपोश होने का नाटक कर महिलाओं की गरिमा व जीवन से खिलवाड़ करते हैं और कानून समाज नैतिकता का तनिक भी ध्यान नहीं रखते ऐसे अपराधी को उच्च स्तरीय जांच कर जल्द से जल्द सींखचों के भीतर कर सख्त सजा देना सुनिश्चित करना चाहिए।

मेष राशि : आज का दिन आपके लिए उमंग से भरा रहने वाला है। आज शिक्षा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। आज आप में चुस्ती फुर्ती रहेगी, आपका स्वास्थ्य आज पूरी तरह से आपका साथ देगा। आज बिना किसी मदद के भी आप धन कमा पाने में सक्षम होंगे, बस आपको खुद पर विश्वास करने की जरूरत है।

वृष राशि: आज का दिन आपके लिए सकारात्मक परिणाम लेकर आएगा। पहले से चली आ रही कोई समस्या आज सुलझ सकती है। आज आपका व्यापार अच्छा चलेगा। आज आप पुराने दोस्तों से मिलने की कोशिश करेंगे। आज आपके मदद की जरूरत के समय कोई ऐसा व्यक्ति आपकी मदद करेगा जिसकी आपने कल्पना भी नहीं की होगी।

मिथुन राशि: आज का दिन आपके लिए व्यस्ताता से भरा हो सकता हैं। आज आपका दिन दोस्तों और परिवार के साथ बीतेगा। आपको कोई बड़ा काम निपटाने की जिम्मेदारी मिल सकती है जिसे पूरा करने के लिए आप खूब मेहनत करेंगे। आपके द्वारा किये गये काम के कारण आज समाज में आपको सम्मान मिल सकता है।

कर्क राशि: आज का दिन आपके लिए फेवरेबल रहने वाला है। आज निजी जीवन में सकारात्मकता लाने की कोशिश करेंगे और इसके लिए आप किसी महापुरुष का अनुशरण करेंगे। आपकी ज्यादातर योजनाएं पूरी हो सकती है। आज लोगों से मिलने और बात करने में खुशी महसूस करेंगे। जीवनसाथी के साथ रिश्ते में तालमेल बना रहेगा।

सिंह राशि: आज आपका दिन खुशियों से भरा रहेगा। आज आपके शत्रु परास्त होंगे। अगर आप नया वाहन लेने का विचार कर रहे है तो परिवार वालों से आपको मदद मिल सकती है। काम के प्रति मेहनत देख कर आपके जूनियर आपसे सीखने की कोशिश करेंगे।

कन्या राशि: आज आपका दिन शानदार रहेगा। आपके रिश्तों में नई चेतना का संचार होगा। स्टूडेंट्स को करियर से संबंधित अच्छे मौके मिलेंगे। नये लक्ष्य को निर्धारित करने के लिए आज का दिन शुभ है। आज आपसे कोई मदद मांग सकता है। आप उन्हें निराश नहीं करेंगे। किसी काम के लिए आज आप कई बड़े फैसले ले सकते हैं।

तुला राशि: आज का दिन आपके लिए दिन शुभ होने वाला है। जो भी नया करना है, आज पूरा करने का निश्चय करेंगे। आज आप घर की जिम्मेदारियों को अच्छी तरह निपटा सकते हैं और कामकाज निपटाने में आप बहुत हद तक सफल भी रहेंगे। आज अपनी तरफ से हर मामले पर आपको सकारात्मक रहना होगा साथ ही धैर्य और विनम्रता रखें। आज अपनी किसी पुरानी समस्याओं पर दोस्तों से बातचीत कर सकते हैं, आपको समाधान मिल सकता है।

वृश्चिक राशि: आज का दिन आपके लिए अच्छा होने वाला है। आज आपके धार्मिक गतिविधि में भी शामिल होने के योग बन रहे हैं। आज दूसरों के साथ बातचीत या सलाह करने से फायदा हो सकता है। आज आप जरूरी काम और रिश्तों के बारे में विचार करेंगे और नयी योजना बनाएंगे। आज आप दूसरों की जरूरतों और भावनाओं को लेकर सेंसिटिव हो सकते हैं। आज जॉब सम्बन्धी परेशानी खत्म होने के योग हैं। आज आपका काम में मन लगा रहेगा पिता के सहयोग से सफलता मिल सकती है।

धनु राशि: आज का दिन आपके लिए बढ़िया रहने वाला है। आज शांति से कामकाज निपटाने की कोशिश करेंगे। आज पुरानी देनदारी भी निपटा सकते हैं। आज जीवनसाथी की भावनाओं को समझने में बहुत हद तक आपको सफलता मिलेगी। आज कोई भी कार्य करते समय धैर्य और समझदारी रखें। आज परिवार के कामों में आपका पैसा लग सकता है। आज आप कोई भी फैसला शांति से लें। वाणी भी मधुर रखें तो आपके लिए अच्छा है।

मकर राशि: आज का दिन आपके लिए शानदार रहने वाला है। अपने से बड़े या किसी अनुभवी से सलाह लेकर ही आगे बढ़ने की कोशिश करेंगे। मेहनत, धैर्य और समझदारी से काम निपटा लेंगे। आपके पास बहुत-सी जिम्मेदारियां हो सकती हैं। धैर्य से काम लेंगे तो काम आसानी से पूरा हो जायेगा। आज का दिन आपके लिए दिन संतोषजनक साबित होगा। आज रोजगार में स्थितियां पहले से ठीक होने के योग है। आज आपके परिवार में मांगलिक कार्य की योजना बन सकती है।

कुंभ राशि: आज का दिन आपके लिए बेहतर रहने वाला है। अपना व्यवहार लचीला रखें और दूसरों की बातें समझने का मन बनाकर चलेंगे। आज कोई बुजुर्ग या वरिष्ठ व्यक्ति आपको सही सलाह दे सकता है। आज आपको पुरानी बातें भी याद आ सकती हैं। आज व्यापारिक मामलों में आपकी व्यस्तता बढ़ेगी। आज आपके व्यवहार में सकारात्मक बदलाव आयेगा। किसी मौके पर आपका व्यवहार ही आपके लिए सफलता के मार्ग खोलेगा। कोई दोस्त या परिचित अपने काम से आपको काफी समय तक बिजी रख सकता है।

मीन राशि: आज का दिन आपके लिए खुशियों से भरा रहने वाला है। आज ट्रांसफर या प्रमोशन के लिए किसी से बात हो सकती है। इसमें आपको सफलता भी मिलेगी। आज आप अपने करियर को बेहतर बनाने के लिये किसी अनुभवी व्यक्ति से सलाह लेंगे। आज आज कोई महत्वपूर्ण काम निपट सकते हैं। आज आपके सोच में सकारात्मक बदलाव आयेगा। आज आपका दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। आज आपको वाहन का सुख भी मिलेगा।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

संपादकीय

कोविशील्ड- लकीर पीटने से लाभ क्या

कोरोना काल में भारत में करोड़ों लोगों को लगाई गई कोविशील्ड वैक्सीन के दुष्प्रभावों को लेकर इसकी निर्माता कंपनी एस्ट्राजेनेका ने ब्रिटेन की अदालत में जो स्वीकारोक्ति दी है, उससे भारत में भी करोड़ों लोगों का चिंतित होना स्वाभाविक है। हालांकि यह सांप निकल जाने के बाद लकीर पीटने जैसा ही है। डॉक्टरों का कहना है कि इस वैक्सीन से खून का थक्का जमने वाली बीमारी होने की संभावना है, लेकिन बहुत विरल। कोरोना के आफ्टर इफेक्ट्स के चलते बाद में कई लोगों की मौतें हुई हैं। कोविशील्ड को लेकर सवाल तो तब भी उठ रहे थे, जब लोग जान बचाने के लिए कोई भी दवा लेने पर विवश थे। लेकिन तब लोगों को यह कहकर आश्वस्त किया गया था कि डरने की कोई बात नहीं है। भारत में इस वैक्सीन का उत्पादन ब्रिटिश कंपनी एस्ट्राजेनेका के साथ सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया ने किया था। इसके अलावा भारत बायोटेक ने कोवैक्सीन नामक देशी विकसित की थी। लेकिन उस वक्त जितने बड़े पैमाने पर इन वैक्सीनों की जरूरत थी, उसे देखते हुए कोविशील्ड को भी सरकार ने बड़े पैमाने पर खरीदा और लोगों को लगाया। डॉक्टरों का कहना है कि कोविशील्ड के कारण किसी की मौत हुई हो, इसका कोई पुष्टिकारक प्रमाण नहीं है। हालांकि इसके साइड इफेक्ट से इंकार नहीं किया जा सकता। कोविशील्ड निर्माता एस्ट्राजेनेका ने भी ब्रिटेन की अदालत में माना कि कोविशील्ड सौ फीसदी सुरक्षित नहीं है। ब्रिटिश अखबार टेलीग्राफ के अनुसार, कंपनी ने ब्रिटिश हाई कोर्ट में दिए अपने एक बयान में स्वीकार किया है कि बहुत रेयर मामलों में वैक्सीन से ब्लड क्लॉट बन रहे हैं। गौरतलब है कि कंपनी ने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के साथ मिलकर कोरोना वायरस के खिलाफ वैक्सीन विकसित की है। एस्ट्राजेनेका का जो फॉर्मूला था उसी से भारत में सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (SII) ने कोविशील्ड नाम से वैक्सीन बनाई। एस्ट्राजेनेका के अनुसार विरल मामलों में कुछ लोगों में टीके के दुष्प्रभाव हो सकते हैं, जिससे थ्रोम्बोसिस विद थ्रोम्बोसाइटोपेनिया सिंड्रोम (टीटीएस) होने का जोखिम बढ़ जाता है। इस बीमारी में मरीज में खून के थक्के बन जाते हैं। उसे कार्डियक अरेस्ट हो सकता है। थ्रोम्बोसाइटोपेनिया तब होता है जब किसी व्यक्ति में प्लेटलेट काउंट कम हो जाता है। प्लेटलेट्स रक्त के महत्वपूर्ण घटक होते हैं जो प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया में मदद करते हैं। टीटीएस के लक्षणों में गंभीर सिरदर्द, धुंधली दृष्टि, बोलने में कठिनाई, सीने में दर्द, पेट में दर्द, सांस लेने में तकलीफ और पैर में सूजन आदि शामिल हैं। कंपनी के इस खुलासे के बाद कई लोगों के मन में डर पैठ गया है। लेकिन डॉक्टरों ने स्पष्ट किया है कि कोविशील्ड का इफेक्ट भी छ माह तक ही रहता है। वैक्सीन लगने के दो साल बाद इसका कोई असर नहीं रहता। इस वैक्सीन के आफ्टर इफेक्ट्स पर किए शोध में भी ऐसा मामला सामने नहीं आया कि जिसमें टीटीएस के लक्षण दिखे हों। कोविशील्ड के प्रभावों के बारे में वैज्ञानिक तथ्य जो भी हों, लेकिन कंपनी के खुलासे के बाद इस वैक्सीन पर से लोगों का विश्वास कम हो गया है, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। सवाल तो अब यह भी उठ रहा है कि क्या कोविशील्ड की तुलना में भारत में आविष्कृत कोवैक्सीन ज्यादा बेहतर और सुरक्षित है। हकीकत में कोई भी ऐलोपैथिक दवा आफ्टर इफेक्ट्स से मुक्त नहीं होती। लेकिन दवा पर पूरी तरह अविश्वास भी ठीक नहीं है।

ऑफलाइन बनाम ऑनलाइन का द्वंद : भारत में ट्विटर एक्टविज्म का एक दशक

पुस्तक समीक्षा

डॉ. मुकेश कुमार

अर्चना आर. सिंह की किताब ÷बियॉन्ड द हैशटैग ः ए डिकेड ऑफ़ ट्विटर एक्टविज्म इन इंडिया÷ नागरिक समाज द्वारा ट्विटर (एक्स) के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन और सत्ता की यथास्थितिवाद के प्रतिरोध पर एक प्रमाणिक और शोधपरक रचना है. यह किताब डिजिटल विमर्श के इस परिदृश्य में ऑनलाइन सक्रियता और ऑफ़लाइन गतिशीलता के बीच बढ़ते अंतरसंबंध को दर्शाता है. इसमें 2012 की दिल्ली बलात्कार कांड (निर्भया) और 2021-2022 के किसान आंदोलन के संदर्भों और घटनाओं के आधार सोशल मीडिया विशेषकर ट्विटर की विश्लेषणात्मक विवेचना की गई है. इसमें अर्चना आर. सिंह ने यह स्थापित किया है कि वर्चुअल प्लेटफ़ॉर्म ट्विटर लोगों को अपनी आवाज़ उठाने, न्याय दिलाने और सामाजिक परिवर्तन की मांग में एकता की भावना को बढ़ावा देने के लिए संगठित करने हेतु उत्प्रेरक बन गया है.

ट्विटर के विकासक्रम और अध्ययन के लिहाज से यह किताब इस अर्थ में भी महत्वपूर्ण हो जाती है, यह अपने पाठकों को बताती है कि ट्विटर सूचनाओं के आदान-प्रदान और विरोध प्रदर्शनों को संगठित करने का एक महत्वपूर्ण मंच बन गया है. सोशल मीडिया का माध्यम ट्विटर अब वास्तविक दुनिया में नागरिक समाज की कार्रवाई को वैश्विक पटल पर प्रसारित-प्रकाशित-प्रचारित करने का उपकरण बन गया है. इसका उपयोग उन लोगों को सशक्त बनाने के लिए किया गया जिनकी आवाजें सत्ता की गलियारों तक नहीं पहुंच पाती है. ट्विटर ने आभासी (वर्चुअल) सक्रियता और वास्तविक (रियल) दुनिया की गतिविधियों के बीच सीधा संबंध बनाया.

÷बियॉन्ड द हैशटैग÷ कुल आठ अध्याय में बांटकर लिखी गई. इस किताब में यह रेखांकित करने का प्रयास किया गया है कि सोशल मीडिया ऑनलाइन और ऑफलाइन समुदायों के बीच सक्रियता की सुविधा प्रदान कर रहा है.आभासी और वास्तविक दुनिया के बीच अपरिवर्तित संबंध को ने सार्वजनिक चर्चा हेतु आकार देने, जनता की राय को प्रभावित करने और सामूहिक कार्रवाई को संगठित करने के तौर पर डिजिटल प्लेटफार्म ट्विटर की परिवर्तनकारी क्षमता को रेखांकित किया गया है. किताब यह बताने का प्रयास करती है कि ट्विटर ने निर्भया कांड (2012) और किसान आंदोलन (2020-2021) में व्यक्ति का रूपांतरण नागरिक समाज में किया. जिन्होंने महिला सुरक्षा और किसानों के मुद्दे पर अन्याय के खिलाफ प्रतिरोध हेतु ऑफलाइन और ऑनलाइन समुदायों के बीच संचार को स्थापित किया. इन दोनों घटनाओं के माध्यम से यह पड़ताल की गई कि ट्विटर ने सूचनाओं को वैश्विक स्तर पर प्रसारित करके एक नया वर्चुयल स्पेस निर्मित की है.

इस किताब में एक दशक (2012-2021) के बीच की दो महत्वपूर्ण आन्दोलनों के माध्यम से ट्विटर की उपयोगिता और उसकी भूमिका का विशद विवेचना की गई है. ट्विटर ने सामान्य व्यक्ति को पत्रकार में बदल दिया. ट्विटर ने आन्दोलनों के माध्यम से संचार का एक वैकल्पिक माध्यम के रूप में अपने को विकसित कर लिया. इसने सामाजिक गतिविधि की गतिशीलता को बदल दिया. ट्विटर क्रांति ने एक वैकल्पिक प्रेस या मीडिया के रूप में उभरने के साथ-साथ एक सामान्य व्यक्ति को सूचनाओं को प्राप्त करने और फैलाने हेतु उपकरण के रूप में काम किया. ट्विटर ने जन मीडिया का लोकतंत्रीकरण करके न्यू मीडिया द्वारा सामजिक और राजनीतिक मुद्दों पर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. इसने वर्चुअल स्पेस और रियल स्पेस के बीच सहसंबंध निर्मित

करती है.

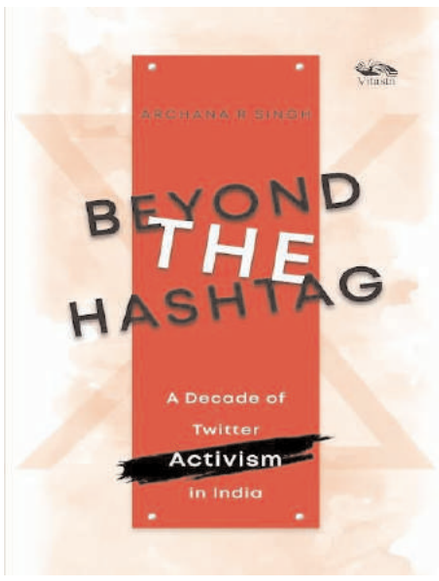

ट्विटर का प्रयोग एक समाचार नेटवर्क की तरह किया जा सकता है के तौर पर यह किताब रेखांकित करती है. पिछले एक दशक में ट्विटर की सहायता से नागरिक समाज ने एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया है. इसका उपयोग राजनीतिक जागरूकता से लेकर सामाजिक न्याय तक विभिन्न उद्देश्यों के लिए लोगों को संगठित करने हेतु किया गया है. विरोध प्रदर्शन और आंदोलन के लिए ट्विटर के प्रयोग का का मुख्य लाभ सूचना को तेजी से और व्यापक रूप से फैलाने की क्षमता से है. प्रतिरोध के दौरान समय और स्थान के साथ-साथ सभी सूचनाओं का संजाल इसके द्वारा वास्तविक समय (रियल टाइम) द्वारा किया जा सकता है. ट्विटर ने असहमति की आवाज़ों को स्वर देने का काम किया है. ट्विटर ने एक वैचारिक मंच प्रदान करके निर्भया कांड और किसान आंदोलन के मुद्दे को को सार्वजनिक स्वरूप दिया. ÷बियॉन्ड द हैशटैग÷ में यह बताया गया है कि ट्विटर के रूप में सोशल मीडिया का प्रभावी ढंग से उपयोग किया गया और ट्विटर ने एक सार्वजनिक मंच प्रदान किया. निर्भया कांड और किसान आंदोलन के अध्ययन द्वारा यह स्थापित करने का प्रयास किया है कि ट्विटर ने आम आदमी को शामिल करने की सुविधा प्रदान करके एक समतामूलक और लोकतांत्रिक माध्यम विकसित किया. जिसके माध्यम से किसी अन्याय या प्रतिरोध के खिलाफ ऑनलाइन और ऑफलाइन आकर संघर्ष करने कि सामूहिक लामबंदी करती है.

यह किताब ट्विटर के माध्यम से निर्भया मामले में लिंग आधारित हिंसा और महिला सुरक्षा के मुद्दों को संबोधित किया, जबकि किसानों का आंदोलन कृषि सुधारों और आजीविका से संबंधित चिंताओं के इर्द-गिर्द घूमता रहा, दोनों मुद्दों में वांछित बदलाव लाने में सफल रहे. इंटरनेट के माध्यम से ट्विटर ने चर्चा हेतु एक मंच प्रदान किया. इनके माध्यम से समझा जा सकता है कि राजनीतिक संचार और लामबंदी के लिए ट्विटर एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरा है. इसका उपयोग नागरिक समाज, पत्रकारों और नागरिकों द्वारा अपनी विचार रखने, सूचनाओं को फैलाने और राजनीतिक चर्चा में शामिल होने के लिए किया गया. ट्विटर ने वैश्विक स्तर पर प्रमुख सामाजिक-राजनीतिक-पर्यावरणीय मुद्दों हेतु एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में योगदान दिया है, 'ब्लैक लाइफ मैटर', 'मी टू' और 'जलवायु परिवर्तन' जैसे मामलों में इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. जिससे व्यक्ति को समुदायों के निर्माण से लेकर सूचना तक पहुंच बढ़ाने तक सार्थक सामाजिक परिवर्तन में योगदान करने की प्रभावशाली क्षमता का पता चलता है. यह व्यक्तियों को जुड़ने और बदलाव लाने हेतु अद्वितीय तरीके प्रदान करता है.भारतीय संदर्भ में दोनों मामले अपने सामाजिक राजनीतिक संदर्भ में भिन्न हैं, लेकिन दोनों मामलों में ट्विटर की भूमिका को महत्वपूर्ण माना जा सकता है

इस पुस्तक का उद्देश्य सामाजिक आंदोलनों और विरोध प्रदर्शनों को संगठित करने और समन्वय में ट्विटर की भूमिका का पता लगाना है. पुस्तक की पृष्ठभूमि सोशल मीडिया के उपयोग और सामूहिक लामबंदी में ट्विटर के बढ़ते महत्व को बताया गया है कि भारत में सामाजिक आंदोलनों को संगठित करने और समन्वय करने के लिए ट्विटर का उपयोग कैसे किया गया. यह पुस्तक इस बात की अंतर्दृष्टि भी प्रदान करती है कि प्रभावी सामूहिक कार्रवाई के लिए सोशल मीडिया का लाभ कैसे उठाया जा सकता है.

इस किताब में यह बताया गया है कि सामजिक और राजनीतिक आंदोलन मानव का अभिन्न हिस्सा रहा है. भारत की आज़ादी हेतु संघर्ष भारत में सबसे लंबे समय तक चलने वाला प्रभावशाली सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन था. जिसमें समाचार पत्रों और पैम्फलेटों के माध्यम से सामूहिक लामबंदी निर्मित की गई थी. समाचार पत्र सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने, सामाजिक न्याय और असमानता के लिए ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष की पृष्ठभूमि निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. तकनीकी विकास ने इंटरनेट और डिजिटल माध्यम से वर्तमान परिदृश्य में पत्रकारिता का एक नया रूप सामने आया इस पत्रकारिता को हैशटैग (म) जर्नलिज्म कहा जाता है. ट्विटर में इसका प्रयोग करके 'अरब स्प्रिंग', 'हांगकांग में लोकतंत्र आंदोलन', 'ब्लैक लाइफ मैटर' 'मी टू' और 'ग्लोबल जलवायु मुद्दा' के मामलों के दौरान सबसे प्रभावी ढंग से किया गया. ट्विटर ने दुनिया भर में सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन की श्रृंखलाओं में उत्प्रेरक के रूप में कार्य किया. वर्तमान यथास्थितिवाद के पोषक शक्ति संरचना और संस्थानों को सामूहिक कार्रवाई के माध्यम से चुनौती देने हेतु जागरूकता बढ़ाने, समर्थकों को संगठित करने और जनमत को प्रभावित करके सार्थक परिवर्तन लाने का प्रयास किया. सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म अक्सर बड़े समूह तक पहुँचता है. ट्विटर यह एक ऐसी जगह है जहां लोग विचारों को साझा करने के लिए एक साथ आते हैं, दूसरों के साथ जुड़ते हैं और अपने आसपास की दुनिया के बारे में सीखते हैं. यह वह स्थान भी है जहां लोग स्वयं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त कर सकते हैं और समुदाय का निर्माण कर सकते हैं. ट्विटर सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली उपकरण के तौर पर विकसित हुआ है.

'यदि पत्रकारिता इतिहास का पहला रफ ड्राफ्ट है तो ट्विटर पत्रकारिता का पहला रफ ड्राफ्ट है' के विचार को स्थापित करने का प्रयास करती है. ट्विटर ने लोकतांत्रिक विरोध प्रदर्शनों हेतु एक वैकल्पिक स्रोत के रूप में कार्य किया. 2012 के निर्भया कांड और 2020 -21 के किसान आंदोलनों के माध्यम से इस किताब में ट्विटर कि दशकीय विस्तार में यह बताने का प्रयास किया गया है कि मौजूदा सामाजिक-राजनीतिक शक्ति संरचना को चुनौती देने के लिए ट्यूटर ने एक भूमिका निभाई. इन दोनों घटनाओं में ट्विटर ने सूचना प्रसारित करने, सामूहिक लामबंदी और सार्वजनिक समर्थन जुटाने के लिए एक मंच के रूप में प्रभावशाली भूमिका का निर्वाह किया.

यह किताब पत्रकारिता और जनसंचार के सभी छात्रों के लिए आवश्यक है जो मीडिया विशेषकर सोशल मीडिया में रूचि रखते हैं. जिन शोधार्थियों की अभिरुचि नागरिक समाज द्वारा ट्विटर की सहायता से सामाजिक आंदोलन और सोशल मीडिया के द्वारा व्यक्ति का नागरिक बनने और उसके माध्यम से सत्ता और समाज को बदलने हेतु संघर्षरत नागरिकों पर शोध करना है उनके लिए भी उपयोगी हो सकता है. यह उन शोधार्थियों हेतु भी महत्वपूर्ण है जो डिजिटल माध्यम में शोध करना चाहते हैं. मीडिया में अभिरुचि रखने वाले, सोशल मीडिया से संबंधित नीति-निर्माताओं हेतु उपयोगी होने के साथ-साथ यह किताब मीडिया संस्थानों की अकादमिक जगत में महत्वपूर्ण है. इस किताब को पढ़ते समय इंटरनेट, सोशल मीडिया और ट्विटर की सैद्धांतिक और व्यवहारिक पक्ष की गहरी, शोधपरक और विवेचनात्मक समझ बन जाती है.

अर्चना आर. सिह, ÷बियॉन्ड द हैशटैग ः ए डिकेड ऑफ़ ट्विटर एक्टविज्म इन इंडिया÷ वितस्ता, नई दिल्ली, 2024, मूल्य ः695

अध्यात्म

कपटी का अंत बुरा होता है

सेठ बीमार पड़ा और अच्छे-अच्छे हकीम तथा वैद्य उसकी दवा-दारू करने लगे, परन्तु सेठ को आराम मिलना तो दूर रहा उसकी बीमारी दिनोंदिन बढ़ती गई। जब हकीम और वैद्य दवा-दारू करते-करते थक गए तो उन्होंने एक दिन सेठ को साफ़-साफ़ जवाब दे दिया बीमार घेरी है आप बचेंगे नहीं, दवा-दारू करना बेकार है। हकीम और वैद्यों का वह जवाब सूना तो सेठ बहुत घबड़ाया और लगा गिड़-गिड़ाकर देवता को पुकारने-हे महाशय यदि आपको एक हजार मोहरे चढ़ाऊँ तो... सेठ को इस पुकार पर सेठानी बहुत घबराई और बोली-देखिए। आप अच्छे हो जायें तो देवता को एक हजार मोहर चढ़ाने का ध्यान अवश्य रखिये। सेठ ने बिगड़कर कहा-बेकार घबराती हो ! देवता को मोहर चढ़ाने का ध्यान क्यों रखूंगा ? अच्छा हो जाऊं तो एक हजार क्या दो हजार मोहरे चढ़ा दूंगा। भला प्राणों के सामने मोहर की कीमत ही क्या है, समझी ? कुछ दिन बाद सेठ सचमुच बिना दवा-दारू के ही अच्छा हो गया और चलने फिरने लगा। परन्तु उसे मानो देवता के मोहरें चढ़ाने का स्मरण ही न रहा। यह देखकर सेठानी ने उससे कहा-अब चढ़ा दीजिए न देवता को एक हजार मोहरें ? सेठ ने उत्तर दिया-ओह! मुझे तो सुध ही नहीं रही थी। तुमने अच्छी याद दिलाई। बस कल ही लो, देवता को आटे की एक हजार गोलियां चढ़ा दूंगा-पूरी एक हजार। सेठानी घबड़ाकर बोली-कहते क्या हो ? देवता को आटे की गोलियां! सोने की मोहरों के बदले आटे की गोलियां ? सेठ ने हंसकर कहा-जानती समझती तो कुछ नहीं, बेकार को घबड़ाकर बोली-कहते क्या हो ? देवता के लिए जैसे सोने की मोहरों वैसे आटे की गोलियां। वे तो केवल पूजा चाहते हैं और पाते प्रसन्न हो जाते हैं। सेठानी गिड़-गिड़ाकर बोली-ऐसा न करो। जो कह चुके हो वही करो। घर में भगवान का दिया हुआ सब कुछ तो है, फिर देवता को अप्रसन्न करने की क्या आवश्यकता है ? सेठ झुंझलाकर बोला-क्यों बेकार बक-बक करती हो। मैंने अच्छे-अच्छे लोगों को बुद्धू बनाया है। ये बेकार देवता किस गिनती में है। अप्रसन्न हो भी जायेंगे तो क्या बिगाड़ लेंगे ? सेठ ने सचमुच दूसरे दिन देवता को आटे की एक हजार गोलियां चढ़ा दी। रात को सपने में उसे एक बहुत ने दर्शन दिए और उससे कहा - आज तूने, देवता की जो पूजा की है। वह, उनको प्रसन्न आई है और वे तुझ पर बहुत प्रसन्न हैं। बस तू सबेरा होते ही अमुक जंगल में जा। वहां धरती खोदने पर मुझसे हजारों क्या लाखों मोहरें मिलेगी। अब सेठ को ख़ुशी का क्या कहना था। वह सबेरा होते ही उस जंगल में जा पहुंचा। वहां चोरों का राज्य था। चोरों ने उसे देखते ही पकड़ लिया। चोरों के हाथ पकड़े जाने पर वो बहुत रोया-गिड़गिड़या और बोला-भाइयों! कृपा कर मुझे छोड़ दो। चाहो तो मुझसे हजार दो हजार मोहरों भले ही ले लो।

आप जितने अधिक 'असभ्य', उतने ही 'बेहतर'

इस तीखे, मसालेदार लोकसभा चुनाव प्रचार के मौसम में हमारे नेतागण अपशब्दों और अनुचित भाषा का प्रयोग कर रहे हैं जिससे लोगों का बदबूदार मनोरंजन हो रहा है और इस चुनाव प्रचार के दौरान पैसों की खनक सुनाई दे रही है। लोग इन बातों पर सीटी बजा रहे हैं और जिसके चलते राजनीतिक विरोधियों और कट्टर दुश्मनों के बीच की पंक्ति धुंधली हो गई है और यह इसलिए किया जा रहा है कि हमारे नेतागणों को आशा है कि इससे उन्हें राजनीतिक तृप्ति मिलेगी। वर्तमान में जारी अपशब्दपूर्ण निंदाजनक और अशिष्ट चुनाव प्रचार को इससे बेहतर कुछ वर्णित नहीं कर सकता कि इसमें सामान्य शिष्टाचार और गरिमा को ताक पर रख दिया गया है तथा स्वस्थ प्रतिद्वंद्वियों के बीच भाईचारा, सहिष्णुता और आदर समाप्त हो गया है।

पूनम आई. कौशिश

यह इस बात को रेखांकित करता है कि अपशब्द, अशिष्टता, कीचड़ उछालना आदि नई राजनीतिक भाषा बन गई है और इसमें जो जितना बेहतर वह उतना सफल दिखाई दे रहा है। आज हर कोई और हर बात खेल बन गया है-देशभक्ति से देशद्रोही। कांग्रेस अपने जनाधार के बारे में भ्रमित है। उसके पास कोई चुनावी मुद्दा नहीं है और वह भाजपा को सत्ता में वापस आने से रोकने के लिए हताश है और इसलिए उसने गाली और अपशब्दों का प्रयोग करने तथा जातिवाद को बढ़ावा देने के अपने चिरपरिचित फार्मूले को अपनाया। भगवा संघ के लिए अपने पोस्टर ब्वॉय प्रधानमंत्री मोदी के दस साल के शासन को आगे जारी रखना सुनिश्चित करने हेतु यह करो या मरो की लड़ाई है।

कांग्रेस द्वारा निर्वाचन आयोग के समक्ष यह शिकायत दर्ज करने पर खूब शोर-शराबा हो रहा है कि मोदी यह कहते हुए लोगों को गुमराह कर रहे हैं कि कांग्रेस लोगों की सम्पत्ति तथा महिलाओं के मंगलसूत्र को घुसपैठियों अर्थात मुसलमानों को बांटना चाहती है और हमारे चुनाव घोषणा पत्र को मुस्लिम लीग का घोषणा पत्र कह रहे हैं। यह न तो संविधान में लिखा है और न ही हमारे चुनाव घोषणा पत्र में कहीं लिखा है। कांग्रेस ने अपने प्रतिद्वंद्वियों पर आरोप लगाया कि उसने विरासत कर के बारे में एक नेता की टिप्पणी को विकृत किया है। मोदी ने इसे जिंदगी के साथ भी और जिंदगी के बाद भी लोगों को लूटने के लिए विपक्ष का मंत्र बताया है। यह भी कहा गया कि मोदी बहुत झूठ बोलते हैं।

मोदी कहते हैं कि मोदी की 56 इंच की छाती है। हम 56 इंच की छाती का क्या करेंगे। वे बताएं कि उन्होंने पेट के लिए क्या किया है, आप हमें भोजन के लिए क्या दे रहे हैं। आज महंगाई एक बड़ा मुद्दा है जिससे लोग ड्क्ष्चतित हैं। भाजपा ने इसके प्रत्युत्तर में शहजादे राहुल गांधी पर यह आरोप लगाया कि वह भाषा और क्षेत्र के आधार पर निरंतर उत्तर और दक्षिण को बांटने का प्रयास कर रहे हैं और साथ ही वोट बैंक की राजनीति के लिए मुसलमानों के तुष्टीकरण हेतु धार्मिक आधार पर आरक्षण देने की योजना बना रहे हैं। कर्नाटक की कांग्रेस सरकार ने ओ.बी.सी. के आरक्षण का एक हिस्सा पहले ही मुसलमानों को दे दिया है।

भाजपा ने राहुल पर आरोप लगाया कि वह मूर्खों और झूठों का सरदार है जो स्वयं को एक एक्सीडेंटल हिन्दू कहते हैं। उसे भारत के इतिहास और भूगोल का समुचित ज्ञान नहीं है। साथ ही वह यह झूठ फैला रहे हैं कि देश में गरीबी बढ़ी है और पार्टी ने निर्वाचन आयोग से कहा है कि वह राहुल के विरुद्ध कार्रवाई करे। इस पर राहुल ने कहा कि पी.एम. का मतलब पनौती मोदी और जेबकतरा। तृणमूल कांग्रेस की ममता मोदी को पापी कहती हैं तो राकांपा के शरद पवार ने उन्हें निर्लज्ज कहा। शिवसेना के उद्धव ठाकरे ने कहा कि मोदी के लिए वोट देने का मतलब है विनाश के लिए वोट देना। बसपा ने भाजपानीत राजग को आतंकवादी सरकार कहा है तो एक माकपा नेता ने कहा कि क्या राहुल नेहरू गांधी परिवार में पैदा हुआ था। मुझे इस बारे में संदेह है। उसके डी.एन.ए. की जांच की जानी चाहिए। तो ए.आई.एम.एम. के ओवैसी कहते हैं कि कोई माई का लाल पैदा नहीं हुआ है जो मुझे रोक सके। निःसंदेह दोषी पूर्ण रूप से पार्टियां हैं और निर्वाचन आयोग की आदर्श आचार संहिता राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों और जानी दुश्मनों के शस्त्रों में सबसे शक्तिशाली मिसाइल बन गई है। कोई भी आदर्श आचार संहिता में सामान्य आचरण, बैठकों, रैलियों, मतदान के दिन मतदान केन्द्र पर्यवेक्षकों और सत्तारूढ़ पार्टी के बारे में दिए गए निर्देशों की परवाह नहीं कर रहा है। हर कोई तुरंत शिकायत कर देता है और अपने प्रतिद्वंद्वियों से अनुशासित रहने की मांग करता है किन्तु स्वयं ऐसा व्यवहार नहीं करता है। प्रत्येक पार्टी ने घृणा फैलाने, जाति, धर्म, समुदाय या भाषा के आधार पर विभाजन करने के आरोप लगाए हैं।

निःसहाय निर्वाचन आयोग केवल अपनी अप्रसन्नता व्यक्त करता है और लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 76 का स्मरण कराता है और पार्टी के अध्यक्ष को इसके लिए दोषी ठहराता है और पहले कदम के रूप में उन्हें स्टार प्रचारकों से दूर रखता है। निर्वाचन आयोग का कहना है कि राजनीतिक दलों को अपने उम्मीदवारों और विशेषकर स्टार प्रचारकों के आचरण के बारे में पूर्ण जिम्मेदारी लेनी चाहिए। उच्च पदों पर आसीन लोगों द्वारा प्रचार के दौरान दिए गए भाषणों का गंभीर प्रभाव पड़ता है। चुनाव प्रचार पर दो-तीन दिन का प्रतिबंध लगाने के अलावा हेट स्पीच के बारे में निर्वाचन आयोग की कार्रवाई केवल फटकार लगाना होता है। श्रोताओं के समक्ष जितनी अशिष्ट भाषा का प्रयोग किया जाए, उतना बेहतर और हमेशा दिल मांगे मोर की मांग होती है क्योंकि हमारे राजनेताओं के पाखंड सफल नहीं हो सकते हैं यदि नैतिकता का उपदेश देने वाला इसका स्वयं अनुकरण करने लगे। चुनाव का मतलब कि अपने प्रतिद्वंद्वियों के विरुद्ध बढ़त हासिल करना है। निर्वाचन आयोग और आदर्श आचार संहिता के अंतर्गत दिए गए निर्देशों को भूल जाइए। उनके लिए परिणाम महत्वपूर्ण है, उसको प्राप्त करने का साधन नहीं। किन्तु क्या इन अपशब्दों और अशिष्टता पर रोक लगेगी? बिल्कुल नहीं क्योंकि सभी एक ही रंग में रंगे हुए हैं। चाहे कोई भी दल हो। कोई भी इस महत्वपूर्ण प्रश्न का निराकरण नहीं करना चाहता है कि राजनेताओं की भाषा और भाषण विषाक्त क्यों होते जा रहे हैं? क्या ऐसी भाषा और भाषण को नजरअंदाज किया जा सकता है? दिल्ली में भाजपा पर आरोप है कि उसने आप के केजरीवाल को एक कुत्ता कहा है और उसकी एक महिला उम्मीदवार के विरुद्ध जातिसूचक शब्दों के प्रयोग के साथ साथ उसे वेश्या कहा है किन्तु मैं इससे चकित नहीं हूं क्योंकि हमारे नेतागण अपना गिरगिट वाला असली रंग दिखा रहे हैं और सारी शालीनता और शिष्टाचार को ताक पर रख रहे हैं। अब वे दिन नहीं रह गए जब प्रतिद्वंद्वियों के विरुद्ध उपहासपूर्ण, व्यंग्यात्मक टिप्पणियां की जाती थीं और नेता उसे सहजता से स्वीकार कर लेते थे। केवल इस चुनाव में नहीं हर चुनाव में यही स्थिति देखने को मिलती है और निर्वाचन आयोग को हर बार इन्हीं प्रश्नों का सामना करना पड़ता है और जब तक निर्वाचन आयोग इस संबंध में कोई कदम उठाता है तब तक मतदान हो चुका होता है। फिर आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन के मामले में क्या होता है। कुछ नहीं वे स्वतः ही भुला दिए जाते हैं। इस बुरे दौर में राजनीति में नैतिकता के मानदंडों में गिरावट के बारे में बात करना बेवकूफी होगी। जब भारत में मतदान हो रहा हो हमें नेताओं को अपने साथ खिलवाड़ करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। हमें ऐसे बयानों पर रोक लगाने की मांग करनी चाहिए जो हमारे लोकतंत्र के लिए अवांछित और अस्वस्थकर हैं और साथ ही इस बात पर भी बल देना चाहिए कि चुनाव सुधारों को शीघ्रातिशीघ्र लागू किया जाए ताकि हमारा लोकतंत्र सच्चे अर्थों में प्रातिनिधिक बन सके। निर्लज्ज और स्वार्थी नेताओं को वोट देना बंद करना चाहिए जो अनैतिकता पर अधिक विश्वास करते हैं। हमारे नेताओं को विभाजनकारी और व्यक्तिगत हमलों से बचना होगा तथा जनता और राष्ट्र को प्रभावित मुद्दों पर एक-दूसरे से बहस करनी होगी न कि व्यक्तित्व पर ताकि चुनाव प्रचार गरिमापूर्ण बहस की पटरी पर पुनः वापस आ सके तथा आक्रामक और अशिष्ट भाषा के प्रयोग को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं किया जाना चाहिए। हमारा उद्देश्य यह होना चाहिए कि सार्वजनिक बहस का स्तर बढ़ाया जाए क्योंकि यदि आप किसी की ओर एक उंगली उठाते हैं तो आपकी ओर चार उंगलियां उठती हैं। फिर हम कब तक इसका खमियाजा भुगतते रहेंगे। क्या कोई राष्ट्र शर्म और नैतिकता के बिना रह सकता है?

आज का कार्टून

राशिफल

मेष

अपने सिद्धान्त को लेकर जड़ व्यवहार रखने से हानि हो सकती है। आज आप इलेक्ट्रॉनिक्स के सामान खरीदने में धन खर्च कर सकते हैं।

वृषभ

व्यवसाय से जुड़े लोगों को अपने ग्राहकों के प्रति अच्छा भाव रखना चाहिये। शरीर में थोड़ी थकावट रहेगी। हर कार्य में जल्दबाज़ी और लापरवाही से बचना चाहिये।

मिथुन

व्यापार में आप बड़ा धन निवेश कर सकते हैं। सहकर्मियों के साथ आपको काम करने में आसानी में होगी। ससुराल पक्ष से धन लाभ प्राप्त होगा।

कर्क

किसी बड़े समारोह में सम्मिलित हो सकते हैं। समय रहते आप अपना काम पूर्ण करने का प्रयास करें। पिता के मार्गदर्शन से व्यवसाय में बढ़ोतरी होगी।

सिंह

महत्वपूर्ण कार्यों में रोक लगने की आशंका है। सरकारी नौकरी कर रहे लोगों को बॉस की नाराजगी झेलनी पड़ेगी। घर में अशान्ति का माहौल हो सकता है।

कन्या

कारोबार में सावधानी पूर्वक निवेश करें। कड़वे वचन बोलने से बचें। स्वभाव में लचीलापन बनाये रखें। एसिडिटी और गैस की समस्या हो सकती है।

तुला

तुला (अप्रैल 28)
कार्यक्षेत्र में आपको उत्तम सफलता मिलेगी। वैवाहिक जीवन बहुत ही सुखमय रहेगा। महत्वपूर्ण काम आसानी से बनते जायेंगे।

वृश्चिक

आक्रामक भाषा शैली के कारण आपके सम्बन्ध बिगड़ सकते हैं। किसी पर भी बहुत भरोसा न करें। रिश्तेदारों के बीच आपकी छवि मजबूत होगी।

धनु

तीर्थयात्रा की योजना बनायेंगे। अपनों से बड़ों का सम्मान करें। आप आज नया ज्ञान सीखने का प्रयास करेंगे। बाहरी विवादों का असर आपके पारिवारिक जीवन पर पड़ सकता है।

मकर

नया रोजगार शुरू करने के लिये दिन सही नहीं है। स्वजनों की अनदेखी के कारण आपको बुरा लगेगा। आपके मान-सम्मान में कमी आ सकती है। भाग्य आज आपका साथ नहीं दे रहा है।

कुंभ

परिवार के लोगों को आज आप उपहार दे सकते हैं। राजनीति से जुड़े जातकों को बड़ा राजनीतिक पद मिल सकता है। बच्चों के साथ आज बहुत अच्छा समय बितायेंगे।

मीन

नये प्रोजेक्ट्स को शुरू करने के लिये अच्छा दिन है। प्रेम सम्बन्धों को लेकर विवाह में परिणित कर सकते हैं। बच्चों के जिद्दी व्यवहार से थोड़े परेशान रहेंगे।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

"सफल कूटनीति वही है, जो उद्देश्यों और साधनों के बीच तालमेल बिठाती है।"
-डेनिस रॉस

एडीबी की ताजा रिपोर्ट आयुष्मान योजना की सराहना करने के बावजूद बुजुर्गों के स्वास्थ्य बीमा के मामले में भारत की स्थिति को चिंताजनक बताती है। ऐसे में बुजुर्गों के गरिमापूर्ण जीवन और उनकी उत्पादकता का लाभ उठाने के लिए उनकी सामाजिक सुरक्षा पर बल दिए जाने की जरूरत है।

उम्र चुनौती दे रही है

एशियाई विकास बैंक (एडीबी) द्वारा 'एजिंग वेल इन एशिया' शीर्षक से जारी एक रिपोर्ट में बुजुर्गों के लिए स्वास्थ्य बीमा के मामले में भारत को एशिया-प्रशांत देशों में सबसे निचली कतार में दर्शाना बताता है कि देश की आबादी के एक महत्वपूर्ण हिस्से के लिए अभी काफी कुछ किया जाना बाकी है। हालांकि रिपोर्ट में आयुष्मान योजना की तारीफ की गई है, जिससे स्वास्थ्य सुविधाओं तक बुजुर्गों की पहुंच आसान हुई है, इसके बावजूद भारत, बांग्लादेश और इंडोनेशिया जैसे देशों के बुजुर्गों की स्वास्थ्य बीमा तक पहुंच करीब 21 फीसदी है, जो वाकई चिंताजनक है। रिपोर्ट बताती है कि भारत की विकास दर की गति को बनाए रखने और बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए सबको स्वास्थ्य बीमा के दायरे में लाने की जरूरत है। उल्लेखनीय है कि नीति आयोग की हाल में जारी रिपोर्ट भी कहती है कि देश में 78 फीसदी बुजुर्गों के पास कोई पेंशन योजना नहीं है। एडीबी की रिपोर्ट के मुताबिक, एशिया-प्रशांत देशों में 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों की संख्या 2050 तक कुल आबादी का करीब एक-चौथाई हो जाएगी। सिर्फ भारत की बात करें, तो नीति आयोग के अनुसार, अभी देश में 60 वर्ष से अधिक उम्र के 12.8 फीसदी लोग हैं, जो 2031 तक 13.2 फीसदी और 2050 तक 19 फीसदी हो जाएंगे। यह देश के जनसांख्यिकीय बदलाव की झलक तो देता ही है, पेंशन व कल्याण कार्यक्रमों के अलावा स्वास्थ्य बीमा की बढ़ती जरूरत को भी दर्शाता है। हाल ही में, बीमा नियामक इरडा द्वारा स्वास्थ्य बीमा खरीदने में 65 साल की उम्र की अनिवार्यता को खत्म किया जाना सराहनीय कदम है, जिससे देश में स्वास्थ्य बीमा की पहुंच निश्चित ही बढ़ेगी। लेकिन नहीं भूलना चाहिए कि बुजुर्गों की आबादी में एक बड़ी संख्या मजदूरों व असंगठित क्षेत्र में कार्यरत लोगों की भी है, जिनकी सामाजिक सुरक्षा का विषय महत्वपूर्ण है। हालांकि केंद्र सरकार बुजुर्गों के लिए एक व्यापक राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम चलाती है, लेकिन जैसा कि संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की हालिया रिपोर्ट भी कहती है, इन कार्यक्रमों व योजनाओं के बारे में जागरूकता की कमी और इनमें निहित प्रशासनिक प्रक्रियाओं की जटिलताएं अक्सर बुजुर्गों को इनका लाभ उठाने नहीं देतीं। बुजुर्गों की क्षमताओं के बेहतर उपयोग के लिए स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार जरूरी है, तभी अर्थव्यवस्था को उनकी अतिरिक्त उत्पादकता का लाभांश मिल सकेगा। तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था में वरिष्ठ नागरिकों के आत्मसम्मानपूर्ण जीवन के अधिकार की रक्षा भी बेहद जरूरी है। उम्मीद है कि लोकसभा चुनावों के उपरांत गठित होने वाली नई सरकार इस ओर ध्यान देगी।

जीवन धारा

स्वामी विवेकानंद

मनुष्य पर जो प्रभाव पड़ता है, वह सिर्फ शब्दों से नहीं होता। विचार भी शायद प्रभाव का एक-तिहाई ही पैदा करते होंगे। पर बाकी दो-तिहाई प्रभाव उसके व्यक्तित्व का ही होता है।

हमारे कर्म हमारे व्यक्तित्व के बाह्य आविष्कार मात्र हैं

देखो, *हमारे आसपास दुनिया में क्या चल रहा है। अपना प्रभाव चलाना, यही दुनिया है। हमारी शक्ति का कुछ अंश तो हमारे शरीर धारण के उपयोग में आता है, पर हमारी शक्तियों का प्रत्येक अंश दूसरों पर अपना प्रभाव डालने में व्यय होता रहता है। हमारे शरीर, गुण, बुद्धि और हमारा आत्मिक बल-ये सब लगातार दूसरों पर प्रभाव डालते आ रहे हैं। इसी प्रकार दूसरों का प्रभाव भी हम पर पड़ता चला आ रहा है। हमारे आसपास यही चल रहा है।*

एक प्रत्यक्ष उदाहरण है। एक मनुष्य तुम्हारे पास आता है। वह खूब शिक्षित है, उसकी भाषा भी सुंदर है। वह तुमसे एक घंटा बात करता है, फिर भी वह अपना असर नहीं छोड़ पाता। दूसरा मनुष्य आता है। वह चंद शब्द बोलता है।

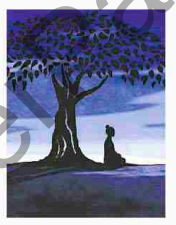

शायद वे शब्द शुद्ध और व्यवस्थित भी नहीं होते, फिर भी वह खूब असर कर जाता है। यह तुममें से बहुतों ने अनुभव किया है। इससे स्पष्ट है कि मनुष्य पर जो प्रभाव पड़ता है, वह सिर्फ शब्दों से नहीं होता। विचार भी शायद प्रभाव का एक-तिहाई ही पैदा करते होंगे। पर बाकी दो-तिहाई प्रभाव उसके व्यक्तित्व का ही होता है। जिसे तुम व्यक्तित्व का आकर्षण कहते हो, वही प्रकट होकर तुम पर अपना असर डाल देता है। प्रत्येक कुटुंब में एक मुख्य संचालक होता है। कोई संचालक यशस्वी होता है, कोई नहीं। ऐसा क्यों? जब हमें अपवश मिलता है, तो हम दूसरों को कोसते हैं। अपयश आने पर प्रत्येक मनुष्य अपना कसूर और अपने दोष नहीं, बल्कि यह दिखलाने की कोशिश करता है कि वह निर्दोष है और सारा दोष वह किसी मनुष्य या किसी वस्तु पर, और दुर्भाग्य पर मढ़ना चाहता है। जब घर का प्रमुख कर्ता सफलता न प्राप्त कर सके, तो उसे सोचना चाहिए कि कुछ लोग अपना घर किस प्रकार अच्छी तरह चला सकते हैं और दूसरे क्यों नहीं? मनुष्य जाति के बड़े-बड़े नेताओं की बात की जाए, तो हमें यही दिखाई देगा कि उनका व्यक्तित्व ही उनके प्रभाव का कारण था। अब बड़े-बड़े प्राचीन लेखकों और दार्शनिकों की बात लो। सच पूछो, तो असल और सच्चे विचार उन्होंने हमारे सम्मुख कितने रखे हैं? बीते समय के नेताओं ने जो कुछ लिख छोड़ा है उसका विचार करो। उनकी लिखी हुई पुस्तकों को देखो और प्रत्येक का मूल्य आंको। जिन्हें हम असल, नए और स्वतंत्र विचार कह सकते हैं, वे इस संसार में सिर्फ मुट्ठी भर ही हैं। लोगों ने जो विचार हमारे लिए छोड़े हैं, उनको उन्हीं की पुस्तकों में से पढ़ो, तो वे हमें कोई बहुत बड़े नहीं प्रतीत होते। फिर भी अपने जमाने में वे बहुत बड़े हो गए हैं। ऐसा क्यों होता है? सिर्फ उनके सोचे हुए विचारों के कारण ही नहीं, न उनकी लिखी हुई पुस्तकों के कारण ही, और न यह कि अपने दिए हुए भाषणों के कारण ही वे बहुत बड़े प्रतीत होते थे, बल्कि किसी दूसरे ही बात के कारण ऐसा प्रतीत होता है और वह है उनका व्यक्तित्व। हमारे कर्म हमारे व्यक्तित्व के बाह्य आविष्कार मात्र हैं। प्रभावी व्यक्तित्व कर्म के रूप से प्रकट होगा ही।

दोष न ढूंढें...

सूत्र

व्यक्तित्व प्रभावी होगा तो कर्म में प्रकट होगा, यह आपको जीवन में साफ-साफ दिखाई देने लग जाएगा। आपके विचारों से ही आपका व्यक्तित्व बनता है और वही आपको सफलता और असफलता दिखाता है। किसी भी चीज के लिए मनुष्य को किसी और पर दोष नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि जीवन की चाबी केवल आपके पास होती है...

पाकिस्तान में फलस्तीन

पाकिस्तान में इस्राइल के विरोध का आलम यह है कि शांति कार्यकर्ता अस्मा जहांगीर की स्मृति में होने वाले शांतिपूर्ण वार्षिक सम्मेलन में भी इस्राइल समर्थक जर्मनी के राजदूत को कड़े विरोध का सामना करना पड़ा। सोशल मीडिया पर वायरल जर्मन राजदूत की उग्र प्रतिक्रिया के भी कई अर्थ निकाले जा रहे हैं।

पाकिस्तान में भारतीय उच्चायोग की पहली महिला प्रभारी गीतिका श्रीवास्तव समेत इस्लामाबाद में एक दर्जन से ज्यादा महिला राजदूत हैं। इन राजनयिकों की मौजूदगी से यह संदेश जाता है कि पाकिस्तान किस तरह से महिला राजनयिकों की सुरक्षा करता है। राजदूतों के अलावा हरेक दूतावास में कई विदेशी एवं स्थानीय महिलाएं कार्यरत हैं। आम तौर पर ये राजनयिक तब भी सुरक्षित महसूस करती हैं, जब वे बैठकों या कार्यक्रमों में पाकिस्तानियों से मिलती हैं। आम पाकिस्तानी स्वभाव से विनम्र होते हैं और यहां आने वाले विदेशी या भारतीय पर्यटक इस बात को समझते हैं और इसकी पुष्टि भी करते हैं।

मरिआना बाबर
वरिष्ठ पाकिस्तानी पत्रकार

लेकिन इस हफ्ते लाहौर में यह सब कुछ बदल गया, जहां दुनिया की प्रसिद्ध वकील और शांति कार्यकर्ता अस्मा जहांगीर की याद में उनकी लॉ कंपनी और उनकी बेटियों ने एक बेहद लोकप्रिय सालाना कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया। पिछले पांच वर्षों से अस्मा जहांगीर की स्मृति में होने वाला यह आयोजन दुनिया भर में प्रसिद्ध हो गया है, जिसमें पाकिस्तानी प्रतिभागी, विदेशी राजदूत और विदेशी प्रतिनिधि भी भाग लेते हैं। इस वर्ष भारतीय मीडिया का एक प्रतिभागी भी शामिल था।

यह सम्मेलन इसलिए भी प्रसिद्ध हुआ, क्योंकि यह ऐसी दुर्लभ जगह है, जहां असंतुष्ट और वैसे लोग भी, जिन्हें बोलने का अवसर या स्थान नहीं मिलता, स्वतंत्र रूप से खुलकर अपनी बात रख सकते हैं, जिन्हें दुनिया सुनती है। अतीत में कई बार सरकारी अधिकारियों, राजनेताओं एवं यहां तक कि न्यायाधीशों के भाषण के दौरान प्रदर्शनकारियों द्वारा बाधा डाली गई है। यही इस सम्मेलन की खूबसूरती है, जहां हर कोई बोलने के लिए स्वतंत्र है।

इस बार कार्यक्रम में 'दक्षिण एशिया में नागरिक अधिकारों की सुरक्षा' विषय पर एक सत्र था और प्रतिभागियों में जर्मन राजदूत अल्फ्रेड ग्रेनास भी थे, जो इस्लामाबाद में सबसे वरिष्ठ राजनयिक हैं। इन दिनों जर्मनी

गाजा युद्ध में इस्राइल के समर्थन के लिए चर्चा में है। पाकिस्तान और अन्य मुल्कों में भी जर्मनी के खिलाफ आवाजें उठ रही हैं और उस पर इस्राइल का समर्थन करने फलस्तीनियों के नरसंहार में सहयोग करने का आरोप लगाया जा रहा है।

हर जगह, विशेष रूप से अमेरिका में छात्र सरकारी नीतियों का विरोध कर रहे हैं, विशेषकर उन नीतियों का, जो इस्राइल का समर्थन कर रही हैं। इसलिए यह कोई हैरानी की बात नहीं थी कि सम्मेलन में युवा छात्र प्रदर्शनकारियों ने जर्मन राजदूत के भाषण में बाधा डाली। एक युवा प्रदर्शनकारी ने चिल्लाकर कहा, 'माफ कीजिएगा राजदूत महोदय, मैं आपके इस दुस्साहस से हैरान हूं कि आप यहां नागरिक अधिकार की बात करने आए हैं, जबकि आपका मुल्क फलस्तीनियों के अधिकारों के लिए बोलने वालों के साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार कर रहा है।' उसको इस बात का कई लोगों ने समर्थन किया।

यूरोपीय देशों के कई राजदूतों ने भी उसी मंच से भाषण दिया, लेकिन उनके भाषणों में कोई बाधा नहीं डाली गई। उनमें कई महिला राजदूत भी थीं। कई लोगों ने अपनी सीट से खड़े होकर कहा, 'नदी से समुद्र तक' फलस्तीन को स्वतंत्र करो। असल में 'नदी से समुद्र तक' एक राजनीतिक वाक्यांश है, जो जॉर्डन नदी और भूमध्यसागर के बीच के क्षेत्र को बताता है, जिसे फलस्तीन माना जाता है।

लेकिन जर्मन राजदूत की प्रतिक्रिया सबसे हैरान करने वाली थी, जैसे यह उनके लिए अविश्वसनीय था कि कोई उनके भाषण में रुकावट डालेगा और गाजा युद्ध में जर्मनी की भूमिका के खिलाफ प्रदर्शन करेगा। कोई सोच सकता था कि जर्मन राजदूत रुककर थोड़ा मुस्कराएंगे और फिर प्रदर्शनकारी से विनम्रता से बैठने के लिए कहेंगे और सवाल-जवाब के सत्र में सवालों का स्वागत करेंगे। वह भी यह जानते थे कि ऐसे व्यवधान को हमेशा आयोजक या तो शांत करा देते हैं या प्रदर्शनकारी को हॉल छोड़कर चले जाने के लिए मना लेते हैं।

लेकिन ऐसा करने के बजाय जर्मन राजदूत बेहद नाराज हो गए और अपनी बांहें फड़काते हुए प्रदर्शनकारी की तरफ इशारा करते हुए गुस्से में बोले, 'यदि तुम चिल्लाना चाहते हो, तो बाहर चले जाओ, वहां तुम चिल्ला सकते हो, लेकिन चिल्लाना विमर्श नहीं है। यदि तुम विमर्श करना चाहते हो, तो यहां आओ। हम चर्चा करेंगे, लेकिन चिल्लाओ मत। चिल्लाना कोई अच्छी बात नहीं है, तुम्हें शर्म आनी चाहिए।'

मंच पर बैठे हुए कुछ राजदूतों और अन्य लोगों ने जर्मन राजदूत से शांत होने और अपना भाषण आगे बढ़ाने के लिए कहा, लेकिन वह इतने ज्यादा गुस्से में कि सुन ही नहीं रहे थे। चूंकि इस सम्मेलन का लाइव प्रसारण हो रहा था, इसलिए पूरे पाकिस्तान ने उनका भयावह गुस्सा देखा और जर्मन राजदूत का व्यवहार देखकर लोग हैरान थे। तुरंत आयोजकों ने उस प्रदर्शनकारी को धक्के देकर बाहर निकाल दिया।

अचानक जर्मन राजदूत की उग्र प्रतिक्रिया सोशल मीडिया पर वायरल हो गई और पाकिस्तानियों ने पूछा कि क्या यह जर्मनी है, जो किसी को बाहर जाने के लिए कहता है। एक्स पर एक व्यक्ति ने टिप्पणी की, 'जर्मन कूटनीति के लिए यह अच्छी बात नहीं है। पश्चिमी देशों में इस तरह के व्यवधान अपवाद नहीं, बल्कि आदर्श बन जाएंगे।' सभी टीवी चैनलों एवं अगले दिन अखबारों ने भी इस घटना को प्रमुखता से जगह दी। युवा पाकिस्तानी इतिहासकार और कार्यकर्ता अम्मार अली जान भी जर्मन राजदूत के व्यवहार से बहुत नाराज थे। 'जर्मन राजदूत पाकिस्तानियों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर व्याख्यान देते हैं, जबकि जर्मनी सरकार गाजा पर किसी भी चर्चा को प्रतिबंधित करती है।'

कराची में भी ब्रिटिश उच्चायुक्त के आवास पर भी एक अन्य घटना घटी। पाकिस्तानी शास्त्रीय नृत्यांगना एवं मानवाधिकार कार्यकर्ता सीमा केरमानी ने गाजा में संघर्ष विराम के लिए आवाज उठाई, तो उन्हें कार्यक्रम छोड़ने के लिए कहा गया और बाहर निकाल दिया गया।

जो मुल्क गाजा युद्ध में इस्राइल का समर्थन कर रहे हैं, उन्हें लगातार ऐसे विरोध प्रदर्शनों का सामना करना पड़ेगा और दुनिया भर में उनके राजदूतों को शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शनों का सामना करना पड़ेगा। वरिष्ठ राजनयिक होने के बावजूद जर्मन राजदूत ने जैसी प्रतिक्रिया दी, वह कूटनीति की विफलता है।

दूसरा पहलू

पिछले एक दशक में यूक्रेन में कॉफी की दुकानों में भारी वृद्धि हुई है। राजधानी कीव में आज करीब 2,500 दुकानें हैं।

युद्ध के बीच भी कॉफी का जुनून

लगभग दो साल पहले जब रूसी टैंक यूक्रेन में घुसे थे, तब अर्तेम ब्रादी मान चुके थे कि उनका कारोबार ठप हो जाएगा। 'युद्ध के बीच कॉफी के बारे में भला कौन सोचेगा', मैड हेड्स के सह-संस्थापक ब्रादी का कहना था। यह राजधानी कीव में कॉफी के बीज पीसकर घरों और रेस्टोरेंट्स में कॉफी की आपूर्ति करने वाली प्रमुख दुकान है। लेकिन युद्ध शुरू होने के तीन-चार दिन बाद ही उन्हें यूक्रेनी सैनिकों की तरफ से कॉफी भेजने के संदेश मिलने लगे। एक सैनिक ने कॉफी के कुछ बैग मोर्चे पर भेजने के बारे में लिखा, क्योंकि सेना द्वारा मुहैया कराए गए एनर्जी ड्रिंक्स से उनका काम नहीं चल रहा था।

यूक्रेन के ये उदाहरण यहां कॉफी के प्रति लोगों के जुनून के बारे में बताते हैं। पिछले एक दशक में यूक्रेन के छोटे-बड़े शहरों में कॉफी शॉप्स की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। राजधानी कीव की हर गली में कॉफी की दुकानें हैं। आज वहां कॉफी की करीब 2,500 दुकानें हैं, जिनमें से अनेक दुकानें तो रूसी हमले के बाद ही खुली हैं।

हाल के दौर में दुनिया भर में कॉफी की लोकप्रियता बढ़ी है। चाय के लिए मशहूर ब्रिटेन में भी कॉफी पीने वाले बढ़े हैं, लेकिन पहले से ही इसके दीवाने यूक्रेनी नागरिकों के बीच रूसी हमले के बाद कॉफी अब प्रतिरोध और जुनून का दूसरा नाम है। 'युद्ध जारी रहने के बावजूद यूक्रेन के लोग कॉफी पीने के बारे में सोचते हैं। वे अपना घर छोड़ सकते हैं, अपनी आदतें छोड़ सकते हैं, पर कॉफी के बगैर नहीं रह सकते', ब्रादी कहते हैं।

यूरोप के नजदीक आने का असर भी यहां की कॉफी पर पड़ा है। पहले कॉफी की ज्यादातर दुकानों में ग्राहकों को सामान्य कॉफी ही पिलाई जाती थी। लेकिन अनेक लोगों ने पाया कि यूरोप में कुछ बड़े कॉफी शॉप्स कॉफी के भुने हुए बीज पीसकर अपने यहां ही कॉफी पाउडर तैयार करते हैं। यूक्रेन के अनेक कॉफी शॉप्स ने इसे अपनाया। यूक्रेन में रह रहे एक अमेरिकी माइकल मैक्लॉगलिन कहते हैं, 'दुनिया में सबसे अच्छी कॉफी यहां के कैफे में मिलती है।' विशेषज्ञों के मुताबिक, आधुनिक कॉफी कल्चर अपनाकर यूक्रेन दरअसल अपनी जड़ों की ओर लौट रहा है, क्योंकि 17वीं शताब्दी में वियना में पहला कैफे खोलने वाला यूक्रेन का ही एक सैनिक था। उसी व्यक्ति ने यूरोप को कॉफी के स्वाद से परिचित कराया था।

-साथ में डारिया मिटिक

कॉन्सर्टेंट मेहेट
पहले से ही कॉफी की दीवाने यूक्रेनी नागरिकों के बीच रूसी हमले के बाद कॉफी अब प्रतिरोध और जुनून का दूसरा नाम है।

आधुनिक कॉफी कल्चर अपनाकर यूक्रेन अपनी जड़ों की ओर लौट रहा है, क्योंकि 17वीं शताब्दी में वियना में पहला कैफे खोलने वाला यूक्रेन का एक सैनिक था। उसने ही यूरोप को कॉफी से परिचित कराया था।

आंकड़े

कर राजस्व

हमारे देश में कुल कर राजस्व जीडीपी का 7.8 फीसदी होता है, जिनमें से सबसे ज्यादा हिस्सा प्रत्यक्ष कर का होता है।

प्रत्यक्ष कर	6.6%
अप्रत्यक्ष कर	5.0%
आय कर	3.3%
जीएसटी संग्रह	3.2%
कॉरपोरेट कर	3.1%

(आंकड़े जीडीपी का प्रतिशत, 2023-24 का संशोधित अनुमान)
स्रोत : RBI

आत्म-कल्याण ही मनुष्य जीवन का सच्चा लक्ष्य है, इसे ही पूरा करना चाहिए। कोई भी किसी के प्रेम में मरता नहीं है।

जीवन का सच्चा लक्ष्य

अंतर्यात्रा
संकलित

एक युवक एक महात्मा के आश्रम में आया करता था। महात्मा ने एक दिन उससे कहा, आत्म-कल्याण ही मनुष्य जीवन का सच्चा लक्ष्य है, इसे ही पूरा करना चाहिए। यह सुनकर युवक ने कहा-महाराज! वैराग्य धारण करने पर मेरे घर के लोग तो मेरे वियोग में मर ही जाएंगे। महात्मा बोले, कोई नहीं मरेगा! यह सब दिखावटी प्रेम है। तू नहीं मानता, तो परीक्षा कर ले।

युवक राजी हो गया, तो महात्मा ने उसे प्राणायाम करना सिखाया और घर जाकर सांस रोक लेने का आदेश दिया। युवक ने घर जाकर वही किया। बड़े-बड़े वैद्यों को बुलाया गया, लेकिन उसने इस तरह से सांस रोकी कि सबने उसे मरा ही समझा। घर वाले रोने-बिलखने लगे। पड़ोस के लोग भी इकट्ठा हो गए। तभी महात्मा भी वहां पहुंचे और बोले-हम इस लड़के को जीवित कर देंगे, परंतु तुम में से किसी को अपने प्राण देने पड़ेंगे। लेकिन मरने के लिए माता-पिता और पत्नी सहित कोई रिश्तेदार और पड़ोसी भी तैयार नहीं हुआ। तभी महात्मा ने युवक को झकझोरते हुए कहा-अब तो तुझे ज्ञान हो गया कि कौन तेरे लिए प्राण देता है? युवक तुरंत उठ पड़ा और महात्मा के चरणों में गिर पड़ा। वह सांसारिक मोह त्यागकर आत्म-कल्याण की साधना करने लगा।

आज का इतिहास

पूरे यूरोप की पहली महिला प्रधानमंत्री मार्गरेट थैचर

साल के बाकी दिनों की तरह चार मई ने भी कई घटनाओं के कारण इतिहास में अपना नाम दर्ज कराया है। ब्रिटेन ही नहीं बल्कि पूरे यूरोप की पहली महिला प्रधानमंत्री मार्गरेट थैचर को दुनिया में आयरन लेडी के तौर पर जाना जाता है। उन्हें चार मई के दिन ही ब्रिटेन की प्रधानमंत्री चुना गया था। इस दिन से जुड़ीं कुछ अन्य घटनाओं की बात करें तो लंदन डेली मेल का पहला संस्करण चार मई को ही प्रकाशित हुआ था और आस्कर पुरस्कार देने वाली मोशन पिक्चर आर्ट्स एकेडमी की स्थापना भी अमेरिका में चार मई के दिन ही हुई थी। 1799 में मैसूर के टीपू सुल्तान की श्रीरंगपत्तनम की लड़ाई में मृत्यु। 1854 में भारत की पहली डाक टिकट को औपचारिक तौर पर जारी किया गया। 1927 में अमरीका में फ.लिम कला अकादमी (मोशन पिक्चर आर्ट्स एकेडेमी) की स्थापना, जिसने 'ऑस्कर' पुरस्कार देने शुरू किए।

ज्ञान का सूरज कहीं अस्त न हो जाए

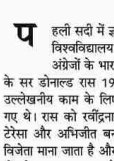

बंगाल के शिक्षा घोटाले में घूस देने वाले शिक्षकों को बचाने के लिए ममता सरकार ने 19-20 हजार योग्य शिक्षकों की नौकरी खतरे में डाल दी है।

विमल राय | सियासत

पहली सदी में ज्ञान का सूरज पूरब में नालंदा विश्वविद्यालय से आलोकित हुआ था और अंग्रेजों के भारत आने के बाद से कलकत्ता के सर डोनाल्ड रास 1902 में चिकित्सा के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम के लिए नोबेल पुरस्कार से नवाजे गए थे। रास को रवींद्रनाथ टैगोर, अमर्त्य सेन, मदर टेरेसा और अभिजीत बनर्जी के बाद पांचवां नोबेल विजेता माना जाता है और सी. वी. रमण को भी जोड़ लें, तो कहा जा सकता है कि इस बंग प्रदेश से भारत के छह नोबेल विजेता निकले हैं। यह चर्चा सामान्य ज्ञान के लिए नहीं, बल्कि असामान्य ज्ञान के लिए की जा रही है। घनघोर अराजकता पैदा करने वाले सत्ताधारियों ने बंगाल की शिक्षा व्यवस्था की जो दुर्दशा की है, उसे अभी सुधार योग्य भी नहीं माना जा रहा।

एक ऐतिहासिक फैसले में कलकत्ता हाईकोर्ट ने हाल में बंगाल में 2016 के राज्य स्तरीय चयन परीक्षा के जरिये नियुक्त करीब 26 हजार शिक्षकों की नियुक्तियां रद्द कर दीं। इनमें से केवल छह-सात हजार लोगों की ही नौकरी जाती, अगर राज्य सरकार ने घूस देकर नौकरी करने वालों का नाम अलग से बताया होता। मगर सरकार ने वोट की राजनीति और निर्ममता की नई व दुर्लभ नजीर पेश करते हुए मूल ओएमआर शीट के आंकड़े नहीं दिए और उस प्रपत्र को गायब बता दिया। मजबूरी में अदालत को पूरा पैनल ही रद्द करना पड़ा। चार सप्ताह में अब तक उठाए गए वेतन को 12 प्रतिशत सूद के साथ लौटाने का आदेश भी कम पीड़ादायी नहीं है। मगर सरकार को सिर्फ मोटी कमाई कराने वाले फर्जी शिक्षकों की ही चिंता है। राज्य सरकार सुप्रीम कोर्ट गई, पर वहां भी हाईकोर्ट के आदेश पर स्टे नहीं मिला। अगली सुनवाई 6 मई को होनी है।

इससे पहले 2023 में कलकत्ता हाईकोर्ट के पूर्व न्यायाधीश अभिजीत गांगुली ने 36,000 प्राइमरी शिक्षकों की नौकरी रद्द की थी। इस मामले पर भी अंतिम फैसला आना बाकी है। आरोप है कि इन लोगों को शिक्षक पात्रता परीक्षा (टेट) पास किए बिना ही घूस लेकर भर्ती किया गया है।

हाल के अदालती फैसले पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने जो प्रतिक्रिया दी है, वह अदालत की अवमानना है और एक वकील ने हाईकोर्ट में स्वतः संज्ञान लेकर कार्यवाही करने की याचिका डाली है। दीदी ने कहा कि दिल्ली से चुन-चुनकर भाजपा समर्थक जजों को कलकत्ता हाईकोर्ट में भेजा गया है। पिछले साल 5 सितंबर को, जब पूरा देश शिक्षक दिवस मना रहा था, मुख्यमंत्री राज्य विश्वविद्यालयों के अंतरिम कुलपतियों को धमका रही थीं कि अगर वे कुलाधिपति राज्यपाल सीवी आनंद बोस के निर्देशों का पालन करना जारी रखेंगे, तो उनकी 'आर्थिक नाकेबंदी' की जाएगी। अब चुनावी सभाओं में वह कह रही हैं कि हम नौकरियां दे रहे हैं, भाजपा अदालतों के जरिये नौकरियां खा रही है।

यह तो कहना ही होगा कि शिक्षा क्षेत्र के पतन के ग्राफ में बंगाल नंबर एक पर है। दो नंबर पर हरियाणा को मान सकते हैं। यहां के जेबीटी घोटाले में पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला ने 10 साल की कैद काटी, पर इसमें 3 हजार शिक्षकों की ही अवैध भर्ती हुई थी। तीसरा राज्य त्रिपुरा है, जहां तत्कालीन वामपंथी सरकार की रोजगार नीति, 2003 को 2014 में त्रिपुरा हाईकोर्ट ने अमान्य घोषित किया था और इस कारण 10,300 शिक्षक बर्खास्त हुए थे। नतीजा यह हुआ कि 152 लोगों की मौत हो गई और 10 से 12 शिक्षकों ने आत्महत्या कर ली थी। हालांकि यह मामला अब भी सुप्रीम कोर्ट में लंबित है।

कलकत्ता हाईकोर्ट ने बर्खास्त अयोग्य शिक्षकों को खपाने के लिए मंत्रिमंडल की बैठक कर हजारों खाली पदों का सृजन करने के फैसले की सीबीआई जांच के आदेश दिए हैं।

Special arrangements by Amar Ujala

स्वत्वाधिकारी रामगोपाल इन्वेस्टमेन्ट्स प्रा.लि. के लिए मुद्रक, प्रकाशक समीर माहेश्वरी द्वारा नवभारत प्रेस, नवभारत भवन, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जी.ई.रोड, रायपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित. प्रधान संपादक : समीर माहेश्वरी, संपादक : राजेश आर. जोशी* (पी.आर.बी. कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिये जिम्मेदार)
■ रायपुर फोन : 0771-4343434, 2535555-66-77, ■ भुवनेश्वर : 0674-2380511/2380518 ■ बिलासपुर : 07752-230591, 407748, 224563 ■ वर्ष 65 ■ अंक 78 (रजि.नं. 13045/59 आरएनआई), पो. रजिस्टर्ड नं. छ.ग./रायपुर संभाग/61/2022-24 ■ भिलाई फोन : (0788) 2294181, 4030655

हिन्दू विवाह पर सर्वोच्च अदालत का स्वागतयोग्य फैसला

ललित गर्ग

हाल के वर्षों में, भारत में हिन्दू विवाह परम्परा एवं संस्कृति से अनेक विसंगतियां एवं विकृतियां जुड़ गयी है, डेटिंग संस्कृति की शुरूआत के साथ, लव-मेरिज का प्रचलन बढ़ा है। संभावित दूल्हा और दुल्हन अपने दम पर जीवनसाथी चुनना पसंद करते हैं। आज के रोमांटिक-रिश्ते वास्तव में विवाह नहीं हैं, बल्कि एक नई प्रथा है, जिसके विपरीत प्रभाव से परिवार-संस्था बिखरने लगी है। विवाह के साथ प्रीवेडिंग का प्रचलन भी अनेक विकृतियों का वाहक बना है, बड़े-बडे. भव्य आयोजन एवं होटल संस्कृति ने भी विवाह की पवित्रता को धुंधलाया है। आयोजनों में शराब एवं अन्य नशों का बड़ा प्रचलन भी दुर्घटनाओं का कारण बना है। जिनके कारण विवाह होने से पहले ही उसमें दरारें पड़ते हुए देखी गयी है।

देश की सर्वोच्च अदालत ने हिन्दू विवाह को लेकर बड़ा फैसला देकर न केवल हिन्दू विवाह के संस्कारों एवं पारंपरिक रिवाजों को पुष्ट किया है बल्कि उन्हें कानूनी दृष्टि से आवश्यक स्वीकार किया है। आज जबकि हिन्दू विवाह की पवित्रता एवं परम्परा तथाकथित आधुनिक जीवन एवं प्रभाव के कारण धुंधली होती जा रही है, पाश्चात्य संस्कृति की आंधी में हिन्दू विवाह की पवित्रता समाज में समय के साथ घटी है और उसमें सुधार एवं सुदृढ़ता की जरूरत है। जो लोग विवाह को मात्र एक पंजीकरण मानते हैं, उन्हें चेत जाना चाहिए। उन्हें सात फेरों का अर्थ समझना होगा। बिना सात फेरों, हिन्दू रीति-रिवाजों एवं वैवाहिक आयोजनों के कोर्ट की दृष्टि में भी विवाह मान्य नहीं होगा। हिंदू विवाह पर कोर्ट का ताजा फैसला न केवल स्वागतयोग्य है बल्कि इसके दूरगामी परिणाम सुखद होंगे। इससे हिन्दू संस्कृति एवं संस्कारों को बल मिलेगा। पारिवारिक-संस्था को मजबूती मिलेगी।

हिंदू विवाह से जुड़ा यह फैसला सुनाते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि शादी ह्यगाने और डांसह्ल, ह्यशराब पीने और खानेह्ल का आयोजन या अनुचित दबाव डालकर दहेज और गिफ्ट्स की मांग करने का मौका नहीं है। विवाह कमर्शियल ट्रांजैक्शन नहीं है। यह एक गंभीर बुनियादी सांस्कृतिक एवं पारिवारिक आयोजन है, जिसे एक पुरुष और एक महिला के बीच संबंध बनाने के लिए मनाया जाता है, जो भविष्य में एक अच्छे परिवार के लिए पति और पत्नी का दर्जा प्राप्त करते हैं। यह भारतीय हिन्दू समाज-व्यवस्था की एक बुनियादी इकाई एवं मजबूत सांस्कृतिक एवं पारिवारिक आयाम है। दरअसल सुप्रीम कोर्ट ने साफ किया है कि बिना सात फेरों के हिन्दू विवाह को मान्यता नहीं मिल सकती है अर्थात शादी के लिए हिन्दू विवाह अधिनियम में जो नियम और प्रावधान बनाए गए हैं उसका पालन करना होगा। इस तरह कोर्ट ने अपने फैसले में हिंदू विवाह अधिनियम 1955 के तहत हिंदू विवाह की कानूनी आवश्यकताओं और पवित्रता को स्पष्ट किया है। अधिनियम के अनुसार, एक हिंदू विवाह किसी भी पक्ष के पारंपरिक संस्कारों और समारोहों के अनुसार संपन्न किया जाएगा। समारोहों में सप्तपदी (दूल्हा और दुल्हन द्वारा पवित्र अग्नि के चारों ओर संयुक्त रूप से सात कदम उठाना) शामिल है, और जब वे सातवां चरण एक साथ लेते हैं तो विवाह पूर्ण और बाध्यकारी हो जाता है। कुल मिलाकर हिन्दू विवाह एक संस्था है, संस्कार है और विवाह कोई व्यावसायिक लेन-देन नहीं है।

कोर्ट ने जोर दिया है कि हिंदू विवाह की वैधता के लिए

सप्तपदी (पवित्र अग्नि के चारों ओर सात फेरे) जैसे उचित संस्कार और उससे जुड़े समारोह जरूरी है। विवाद की स्थिति में समारोह के प्रमाण पेश करना जरूरी है। कोर्ट की सात फेरों और उससे जुड़े समारोह का मूल्य समझाने की यह कोशिश हिन्दू विवाह को न केवल मजबूती प्रदान करेंगी बल्कि आधुनिकता की आंधी में धुंधलाते मूल्यों को नियंत्रित करने का काम करेगी। इसमें कोई शक नहीं कि विवाह संस्कार का मूल महत्व पहले की तुलना में कम हुआ है, अब विवाह बहुतों के लिए एक दिखावा, मजबूरी या समझौता भर रह गया है। न्यायमूर्ति बी नागरत्ना ने अपने प्रासंगिक एवं उपयोगी फैसले में बिल्कुल सही कहा है कि हिंदू विवाह एक संस्कार है, जिसे भारतीय समाज में एक महान मूल्य की संस्था के रूप में दर्जा दिया जाना चाहिए। पारंपरिक संस्कारों या सात फेरों जैसी रीतियों के बिना हुए विवाह को हिंदू विवाह अधिनियम की धारा 7 के अनुसार हिंदू विवाह नहीं माना जाएगा। इस वजह से कोर्ट ने युवा पुरुषों और महिलाओं से आग्रह किया हैं कि वो विवाह की संस्था में प्रवेश करने से पहले इसके बारे में गहराई से सोचें और भारतीय समाज में उक्त संस्था कितनी पवित्र है, इस पर विचार करें।

प्रश्न है कि हिन्दू विवाह को लेकर कोर्ट को जागरूक होने एवं हिन्दू संस्कारों को मजबूती देने की जरूरत क्यों पड़ी? हिन्दू विवाह से जुड़े संस्कारों एवं पारंपरिक रीति-रिवाजों को लेकर अनेक मामले कोर्ट की चौखट पर आते रहे हैं, हर बार कोर्ट सजगता, दूरदर्शिता एवं विवेक से विवाह-संस्था से जुड़े मामलों पर अपना नजरिया प्रस्तुत करती रही है। इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ ने पिछले दिनों यह माना कि हिंदू विवाह अधिनियम के अनुसार, हिंदू विवाह को संपन्न करने के लिए कन्यादान का समारोह जरूरी नहीं है। उस फैसले में भी सप्तपदी के महत्व को दशार्या गया था। मध्यप्रदेश की एक परिवार अदालत के फैसले में महिला पक्ष को यह समझाया गया था कि सिंदूर लगाना एक विवाहित हिंदू महिला का धार्मिक कर्तव्य होता है। सर्वोच्च न्यायालय के ताजा फैसले में ऐसी ही समझाइश की कोशिश झलकती है। कुल मिलाकर, न्यायालय का संदेश यह है कि फिजूल के तमाशे-दिखावे से बचते हुए विवाह के मूल अर्थ को समझना चाहिए। हिंदू विवाह को लेकर अब ज्यादा स्पष्टता की जरूरत है और विशेषतः हिन्दू संस्कारों एवं संस्कृति को बल देने की भी। क्योंकि भारत में परिवार संस्था कायम है तो इसका कारण हिन्दू संस्कार एवं परम्पराएं ही हैं। इस तरह कोर्ट ने अपने फैसले में हिंदू विवाह अधिनियम 1955 के तहत हिंदू विवाह की कानूनी आवश्यकताओं और पवित्रता को स्पष्ट किया है।

हिन्दू विवाह एक आदर्श परम्परा एवं संस्कार है। हिंदू धर्म में विवाह को सोलह संस्कारों में से एक संस्कार माना गया है। विवाह = वि $ वाह, अतः इसका शाब्दिक अर्थ है - विशेष रूप से उत्तरदायित्व का वहन करना। पाणिग्रहण संस्कार को सामान्य रूप से हिंदू विवाह के नाम से जाना जाता है। अन्य धर्मों में विवाह पति और पत्नी के बीच एक प्रकार का करार होता है जिसे विशेष परिस्थितियों में तोड़ा भी जा सकता है परंतु हिंदू विवाह पति और पत्नी क बीच जन्म-जन्मांतरों का सम्बंध होता है जिसे किसी भी परिस्थिति में नहीं तोड़ा जा सकता। अग्नि के सात फेरे लेकर और ध्रुव तारा को साक्षी मान कर दो तन, मन तथा आत्मा एक पवित्र बंधन में बंध जाते हैं। यह दो परिवारों का भी मिलन है। हिंदू विवाह में पति और पत्नी के बीच शारीरिक संम्बंध से अधिक आत्मिक संम्बंध होता है और इस सम्बंध को अत्यंत पवित्र माना गया है।

हिन्दू विवाह का न केवल पारिवारिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व है, बल्कि उसका गहन आध्यात्मिक महत्व भी है। हिंदू धर्म ने चार पुरुषार्थ (जीवन की चार बुनियादी खोज), यानी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष निर्धारित किया है। विवाह संस्कार का उद्देश्य ह्यकामह्ल के पुरुषार्थ को पूरा करना और फिर धीरे-धीरे ह्यमोक्षह्ल की ओर बढ़ना है। एक पुरुष और महिला के जीवन में कई महत्वपूर्ण चीजें शादी से जुड़ी होती हैं; उदाहरण के लिए, पुरुष और महिला के बीच प्यार, उनका रिश्ता, संतान, उनके माता-पिता, उनके जीवन में विभिन्न सुखद घटनाएं, सामाजिक स्थिति और समृद्धि। हिंदू समाज में एक विवाहित महिला को अत्यंत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। उसके माथे पर कुमकुम-सिन्दूर के साथ एक महिला की दृष्टि, उसके गले में एक मंगलसूत्र पहने हुए, हरी चूड़ियाँ, पैर के अंगूठे के छल्ले और छह या नौ-यार्ड साड़ी स्वचालित रूप से एक पर्यवेक्षक के मन में उसके लिए सम्मान उत्पन्न करता है। हिंदू विवाह के सात वचनों में से, कम से कम तीन ऐसे हैं, जहां जोडे अपने बुजुर्गों की देखभाल करने का वादा करते हैं। पांचवां वचन अपनी संतान पैदा करने और उसकी देखभाल करने का है।

हाल के वर्षों में, भारत में हिन्दू विवाह परम्परा एवं संस्कृति से अनेक विसंगतियां एवं विकृतियां जुड़ गयी है, डेटिंग संस्कृति की शुरूआत के साथ, लव-मेरिज का प्रचलन बढ़ा है। संभावित दूल्हा और दुल्हन अपने दम पर जीवनसाथी चुनना पसंद करते हैं। आज के रोमांटिक-रिश्ते वास्तव में विवाह नहीं हैं, बल्कि एक नई प्रथा है, जिसके विपरीत प्रभाव से परिवार-संस्था बिखरने लगी है। विवाह के साथ प्रीवेडिंग का प्रचलन भी अनेक विकृतियों का वाहक बना है, बड़े-बडे.भव्य आयोजन एवं होटल संस्कृति ने भी विवाह की पवित्रता को धुंधलाया है। आयोजनों में शराब एवं अन्य नशों का बड़ा प्रचलन भी दुर्घटनाओं का कारण बना है। जिनके कारण विवाह होने से पहले ही उसमें दरारें पड़ते हुए देखी गयी है।

(लेखक, पत्रकार, स्तंभकार)

संपादकीय

आदर्श संहिता उल्लंघन मामले में पहली कार्रवाई

निर्वाचन आयोग ने प्रधानमंत्री के बांसवाड़ा में दिए भाषण पर भाजपा से जवाब मांगा है। कांग्रेस और वामदलों ने नरेन्द्र मोदी के भाषण को विभाजनकारी और महाहानिकर बताते हुए आयोग से शिकायत की थी। इसी पर संज्ञान लेते हुए आयोग ने नोटिस दिया है। किसी पदेन प्रधानमंत्री के विरु द्ध आदर्श संहिता उल्लंघन मामले में यह पहली कार्रवाई है। आयोग का अपनी याददाश्त के आधार पर ऐसा दावा है। दूसरी तरफ, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और उनकी पार्टी के नेता राहुल गांधी के विरु द्ध भाजपा की शिकायतों पर जवाब मांगा गया है। ये जवाब 29 अप्रैल तक दिए जाने हैं। इस तरह से आयोग ने निष्पक्षता एवं पारदर्शिता का एक कठिन पड़ाव पार कर लिया है। उसे इसका श्रेय मिलना चाहिए कि उसने संहिता उल्लंघन पर प्रधानमंत्री तक को नहीं बख्शा। यह आरोप भी कमजोर हुआ है कि आयोग विपक्ष और कमजोर दलों के नेता को ही निर्देशित करने में आगे रहता है। पर उसका निर्णायक इम्तिहान दोनों दलों के जवाब पर की जाने वाली कार्रवाई में होगा जो आयोग की शक्ति और क्षेत्र को परिभाषित करने वाला होगा। सार्वजनिक जीवन में गरिमा-मयार्दा और नियम-कायदे का आग्रही तबके ही नहीं, पूरे देश ने देखा-सुना कि बांसवाड़ा में और फिर अलीगढ़ तक में खास समुदाय और धर्म के लोगों के बारे में क्या-क्या न कहा गया। माना कि चुनाव बाद एक प्रधानमंत्री के रूप में आप समुदाय-धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं करते पर यही भाव चुनावी सभाओं में भी रहना बुरा नहीं होता। यह सामान्य जन अपेक्षा है कि प्रधानमंत्री को तमाम विभाजनों और दोष-रेखाओं से ऊपर होना चाहिए। तब आयोग को भी रिकार्ड बनाने का मौका नहीं मिलता। चुनाव की घोषणा करते हुए आयोग ने भाषणों में सभ्यता के निर्वाह का अनुरोध दलों से किया था, जिसका पालन किसी ने नहीं किया। विपक्ष में स्थितिजन्य आक्रामकता स्वाभाविक ही होती है। सत्ता अपने व्यवहार से उसको परिमार्जित करती है। खरगे और राहुल सरकार की नीतियों की आलोचना के अधिकार के प्रयोग में सभ्यता भूलते रहे हैं। वे न केवल प्रधानमंत्री को निजी स्तर चोट पहुंचाने वाली भाषा का धड़ल्ले से प्रयोग करते सुने-देखे गए हैं, बल्कि तू-तड़ाक पर भी उतर आए हैं। यह भी रिकार्ड है कि नरेन्द्र मोदी देश के सर्वाधिक आलोच्य प्रधानमंत्री हैं। अगर यही एक परिपक्व लोकतंत्र की भाषा है तो यह वाकई बेहद पीड़ादायक परिदृश्य है।

चिंतन-मनन

संत की उदारता

संत बेनजोई के पास कई बालक शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे। वह अपने सभी शिष्यों की शिक्षा पूर्ण करने के बाद ही उन्हें वहां से जाने की अनुमति देते थे। वह उद्दंड व शरारती शिष्यों को भी आज्ञाकारी और संस्कारी बनाकर ही दम लेते थे। एक बार उनके आश्रम में बहुत ही शरारती और बदतमीज लड़का आया। एक दिन वह चोरी करते हुए पकड़ा गया। बेनजोई ने उसे चोरी की बुराइयों से अवगत कराया और क्षमा कर दिया, लेकिन वह लड़का इतना बिगड़ैल था कि उस पर बेनजोई की शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसने दोबारा चोरी की और एक शिष्य को बेवजह पीट दिया। यह शिकायत बेनजोई तक पहुंची तो उन्होंने उसे फिर बुलाकर प्रेम से समझाया और एक बार फिर क्षमा कर दिया। यह देखकर आश्रम के अन्य शिष्य आगबबूला हो गए। शाम की प्रार्थना के समय सभी शिष्य एकजुट होकर बोले, गुरुजी, यह बार-बार चोरी करता रहेगा, हमें पीटता रहेगा और आप उसे क्षमा करते रहेंगे। यह कैसा न्याय है? यदि आप इसे आश्रम से नहीं निकाल सकते तो हम सभी यह आश्रम छोड़कर चले जाते हैं।

इस पर बेनजोई विनम्रता से बोले, मैंने माना कि तुम सब अच्छे हो, संस्कारी हो। कभी किसी कुसंग में न रहने के कारण दुष्कर्मों से दूर हो। यह अबोध किशोर अपने दुर्व्यसनी पिता और भाइयों द्वारा ठुकराया हुआ है। इसे मैं सुधारने, संस्कारित करने के उद्देश्य से यहां लेकर आया हूं। मुझे यह भी मालूम है कि तुम यदि इस आश्रम से चले गए तो अन्य किसी शिक्षक से शिक्षा प्राप्त कर सकते हो, किंतु इस बिगड़ैल लड़के को कौन अपने यहां रखेगा? इसे सुधरने का मौका कैसे मिलेगा? वह किशोर भी यह सब सुन रहा था। उसकी आंखें भर आईं। वह उनसे क्षमा मांगते हुए बोला, गुरुजी, मुझे माफ कर दीजिए। फिर कभी आपको शिकायत का मौका नहीं मिलेगा। उसने अन्य शिष्यों से भी माफी मांगी।

संसद के अंगने में गरीबों का क्या काम

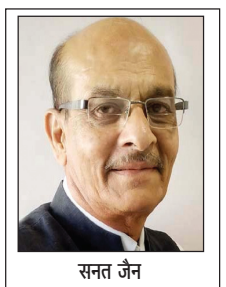

सनत जैन

संसद के अंदर साल दर साल करोड़पति सांसदों की संख्या बढ़ती चली जा रही है। चुनाव खर्च भी चुनाव आयोग बढाता जा रहा है। 2024 के लोकसभा चुनाव में चुनाव आयोग ने अधिकतम खर्च की सीमा 95 लाख तय कर दी है। जिस तरह से लोकसभा और विधानसभा के चुनाव हो रहे हैं। लोकसभा और विधानसभा का चुनाव लड़ना, मध्यम एवं निम्न वर्गीय ईमानदार व्यक्ति के लिये चुनाव लड़ने की बात सपने में भी नहीं सोच सकता है। लोकसभा में 2004 में 156 सांसद करोड़पति और अरबपति थे। 2009 में यह संख्या बढ़कर 315 हो गई है। 2014 में संख्या बढ़कर 443 हो गई। रही सही कसर 2019 के लोकसभा चुनाव में करोड़पतियों और अरबपति सांसदों की संख्या बढ़कर 475 हो गई। 2024 के लोकसभा चुनाव चल रहे हैं। इसमें भी अरबपति और करोड़पति उम्मीदवार बड़ी संख्या में

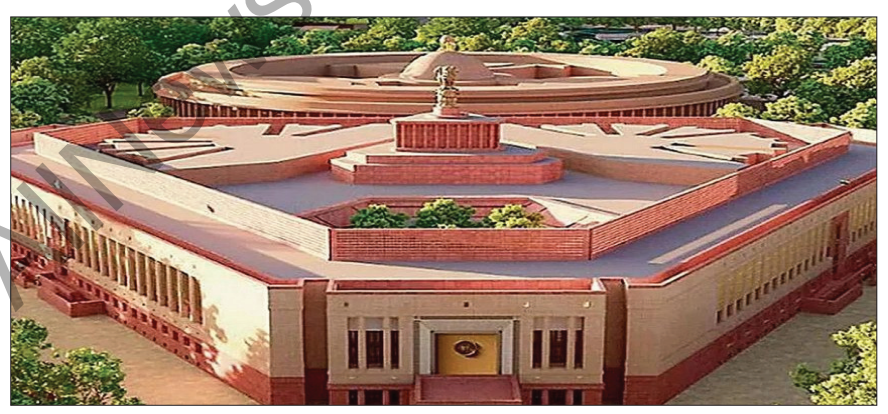

सांसद का चुनाव लड़ रहे हैं। चुनाव आयोग द्वारा खर्च की अधिकतम सीमा प्रत्येक उम्मीदवार के लिए 95 लाख तय की गई है। राजनीतिक दल अपने उम्मीदवार के चुनाव खर्च के लिए अलग से खर्च करते हैं। राजनीतिक दलों द्वारा जिस तरह से पूंजीपतियों को टिकट दी जा रही है। राजनीतिक दलों में सामान्य कार्यकर्ता और नेता हैं, उसे राजनीतिक दलों की टिकट नहीं मिलती है। टिकट लेने के लिये पार्टी फंड में दान करने और स्वयं चुनाव खर्च उठाने वाले उम्मीदवारों को पंजीकृत राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक पार्टियों द्वारा टिकट दी जाती है। सांसद और विधानसभा के अंदर मध्य और निम्न वर्ग की आवाज उठाने वाला सांसद अथवा विधायक निर्वाचित होकर सदन में नहीं पहुंच रहे है। कुछ इसी तरीके की स्थिति जिला पंचायत, जनपद पंचायत और पार्षद के चुनाव में भी देखने को मिलने लगी है। पंचायत के चुनाव में भी लाखों और करोड़ों रुपए के खर्च होने की बात सामने आती है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में चुनाव लगातार महंगे होते चले जा रहे हैं। चुनाव में जब उम्मीदवार लाखों और करोड़ों रुपए खर्च करते हैं। चुनाव जीतने के बाद फिर वह धंधे तरह खर्च की भरपाई करने के लिए हर संभव कोशिश करते हैं। जिसके कारण जनसेवा भी एक धंधा बन गया है। जिसके फल स्वरुप चुनाव से धीरे-धीरे मध्य और निम्न वर्ग के लोग बाहर होते चले जा रहे हैं। संसद और विधानसभा जहां कानून बनते हैं। वहां केवल करोड़पति और अरबपतियों की संख्या बहुतायत में होने के कारण, निम्न एवं मध्यम वर्ग प्रतिनिधित्व अब सांसद और विधानसभा में करने वाला भी कोई नहीं रहा। पिछले 20 साल में यह स्थिति तेजी के साथ बदली है। पिछले 10 साल में संसद में 204 फीसदी की दर से करोड़पति और अरबपति सांसदों की संख्या बढी है। 2019 के लोकसभा चुनाव की बात करें, तो कुल 21 फीसदी सांसद ऐसे थे जिनकी संपत्ति एक करोड रुपए से कम थी यदि आरक्षण की व्यवस्था लागू नहीं होती, तो इनका भी चुना जाना संभव नहीं होता। राजनीतिक दल एसटी और एससी वर्ग के जो उम्मीदवार खड़ा करते हैं। उनके लिए पार्टी फंड से उन्हें चुनाव लड़ाया जाता है। ऐसी स्थिति में वह पार्टी में बंधक के रूप में रहते हैं। वह अपनी बात मुखर होकर पार्टी के अंदर भी नहीं कह पाते हैं। विधानसभा और लोकसभा में विहिप में बंधे होने के कारण उनकी अपनी अलग से कोई आवाज नहीं होती है। भारतीय लोकतंत्र के लिए यह सबसे बड़ी चिंता का है। 542 सांसदों में से यदि 475 सांसद करोड़पति और अरबपति हैं। शेष 21फीसदी सांसद आरक्षित वर्ग से आते हैं। जिसके कारण लोकसभा और विधानसभा में सभी वर्गों को समान प्रतिनिधित्व नहीं मिल पाता है। वर्तमान स्थिति को देखते हुए यही कहा जा सकता है, लोकतंत्र के अंगने में गरीबों का क्या काम है।

आम चुनाव और मुस्लिम तुष्टीकरण का विकृत खेल

आम चुनाव के मतदान के दो चरण समाप्त हो जाने के बाद सभी राजनीतिक दलों को जनता के मध्य अपनी स्थिति की वास्तविकता का कुछ सीमा तक पता चल गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में लगातार तीसरी बार सत्ता में आने की सम्भावना वाली भारतीय जनता पार्टी को रोकने के लिए विपक्ष ने एक बार फिर मुस्लिम तुष्टीकरण का विकृत खेल खेलना प्रारम्भ कर दिया है। तथाकथित इंडी गठबंधन में शामिल दलों के नेता लगातार भड़काऊ और नफरत भरी बयानबाजी कर रहे हैं, जिसमें अब वोट जिहाद और तालिबान भी आ गया है। दिल्ली के मंडी हाउस इलाके में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के साथ आतंकी फंडिंग मामले में सजा काट रहे यासीन मलिक का फोटो लगाया गया है।

पोस्टर में यासीन मलिक की रिहाई के साथ कांग्रेस को वोट देने की अपील की गई है। हालांकि जानकारी मिलते ही दिल्ली पुलिस ने यह पोस्टर हटा दिया। आतंकी यासीन मलिक कुख्यात अलगवावादी है जिससे 2006 में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने मुलाकात की थी। अब मलिक आजीवन कारावास की सजा काट रहा है और अभी उस पर कई और मुकदमे चल रहे हैं। कांग्रेस केरल में प्रतिबंधित पीएफआई जैसे संगठनों का सहयोग ले रही रही है और सनातन विरोधी बयानों पर चुप्पी साधे हुए है।

मुस्लिम तुष्टीकरण का यह खुला खेल कांग्रेस ही नहीं अपितु भारत की सभी वामपंथी और अधिकांश क्षेत्रीय पार्टियां जमकर खेल रही हैं फिर चाहे वो उत्तर प्रदेश हो बिहार हो या पश्चिम बंगाल। विगत 10 वर्ष और अटल जी के कार्यकाल को छोड़ दें तो केंद्र तथा राज्यों में कांग्रेस व उसके गर्भ से निकले दलों व नेताओं ने ही सत्ता पर एकछत्र राज किया। ये सभी धर्मनिरपेक्षता के नाम पर भाजपा को हराने की बात करने वालों तथा कट्टरपंथियों का समर्थन कर मतदान को मजहब के आधार पर प्रभावित किया करते थे।

भाजपा द्वारा धर्मनिरपेक्षता की सच्ची रेखा खींचने के बाद इन दलों के नेताओं के सामने अपना राजनीतिक अस्तित्व बचाने का संकट खड़ा हो गया है और ये वोट जिहाद की अपील कर रहे हैं।

उत्तर प्रदेश में अभी तक सपा, बसपा, कांग्रेस सहित विभिन्न दल अतीक अहमद, मुख्तार अंसारी जैसे माफिया को अपने राजनीतिक लाभ के लिए पाला पोसा करते थे अब उनके लिए फातिहा पढ़ रहे हैं और धूर्तता के साथ उन्हें गरीबों का मसीहा बताकर मुसलमानों का वोट मांग रहे हैं । पहले ये माफिया बूथ लूटकर व मतदान के समय बम, गोलियां दागकर वोट जिहाद किया करते थे अब उनके नेता व गुर्गे इनको शहीद बताकर मुस्लिम समाज को भड़का रहे हैं।

उत्तर प्रदेश के फरुर्खाबाद में कायमगंज के अल्पसंख्यक बहुल क्षेत्र में इंडी गठबंधन के प्रत्याशी के समर्थन में पूर्व विदेशमंत्री सलमान खुर्शीद की भतीजी सपा नेता मारिया आलम खां ने वोट जिहाद का नारा देकर समाजवादियों की मुश्किल बढ़ा दी है। मारिया आलम खां ने कहा कि हर महिला और हर पुरुष वोट जिहाद करके संविधान बचाने की इस जंग को लड़ेगा।

प्रदेश में वोट जिहाद शब्द को लेकर राजनीतिक बयानबाजी अब काफी तल्ख हो गई है। सपा-कांग्रेस गठबंधन हो जाने के कारण इस बार सलमान खुर्शीद का परिवार चुनावी मैदान से भले ही दूर हो गया हो किंतु अपने सहयोगी दलों के उम्मीदवारों के लिए चुनाव प्रचार कर रहा है। सलमान खुर्शीद का परिवार कई बार विवादों के घेरे में रहा है। खुर्शीद की पत्नी लुईस खुर्शीद पर दिव्यांगों की सहायता करने के नाम पर घोटाला करने का मुकदमा चल रहा है।

सलमान खुर्शीद बाटला हाउस एनकाउंटर व प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर भी विवादित बयानबाजी कर चुके हैं। जब लुईस खुर्शीद को इस बात का आभास हो गया था कि इस बार उनके परिवार को टिकट नहीं मिलने जा रहा तब उन्होंने मीडिया के सामने अपने कार्यकर्ता से कहा था कि अगर कांग्रेस का कोई पदाधिकारी उनसे मिलने आए तो उसे चप्पल से मारें। अब उसी परिवार की भतीजी मारिया एक बार फिर वोट जिहाद की अपील कर रही हैं।

इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के संभल से पूर्व सांसद डॉ. शफीकुर्रहमान वर्क के पोते एवं सपा प्रत्याशी जियाउर्रहमान वर्क अपनी नुक्कड़ सभा के वायरल वीडियो में मुख्तार अंसारी, अतीक अहमद और शहाबुद्दीन की मौत को कुबार्नी बता रहा है। वीडियो वायरल हो जाने के बाद वर्क पर मुकदमा दर्ज हो गया है। उसके बाद भी वह नहीं रुका और उसने चुनाव आयोग के अधिकारियों को धमकी देते हुए बयान दिया कि जब वक्त बदलेगा तब बदला लिया जाएगा। बहुजन समाजवादी पार्टी अपनी नैया पार लगाने व जनता के मध्य अपनी उपस्थिति को दर्ज कराने के लिए चुनावी मैदान में अपने युवा कोआर्डिनेटर, पूर्व मुख्यमंत्री मायावती के भतीजे आकाश आनंद के नेतृत्व में रण मे उतरी है और कुछ-कुछ बदली बदली सी नजर आ रही है। पार्टी ने 2022 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में अपनी जमीन को फिर से प्राप्त करने के लिए, सवर्णो को खुश करने के लिए रामनाम का विरोध नहीं किया था किंतु वह अब काफी पीछे छूट चुका है।

बसपा ने इस बार नया नारा दिया है,ह्ल बहुजन हिताय बहुजन सुखाय काह्ल किंतु पार्टी का एक मुश्त मुस्लिम मतों का लालच छूटा नहीं है इसलिए बसपा ने सबसे अधिक मुसलमानों को अपना उम्मीदवार बनाया है। बसपा के युवा नेता आकाश आनंद मुस्लिम तुष्टीकरण के लिए आक्रामक बयानबाजी कर रहे हैं जिसके कारण उनके खिलाफ सीतापुर जिले में केस भी दर्ज हो गया है। सीतापुर की एक जनसभा में आकाश ने अपनी सभी सीमाओं को लांघते हुए उत्तर प्रदेश सरकार की तुलना तालिबान से कर डाली। अतीक, मुख्तार अंसारी व शहाबुद्दीन जैसे माफिया का राजनीतिक लाभ के लिए उपयोग बसपा ने भी समय -समय पर किया है।

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

प्रधान संपादक : राघवेंद्र, पटना कार्यालय : रामनगरी आशियाना रोड, पटना/रांची कार्यालय: 201 मानस भवन,कांके रोड, रांची। संपर्क : 7488117482...

जिस तरह वेश्या धन के समाप्त होने पर पुरुष से मुंह मोड़ लेती है। उसी तरह जब राजा शक्तिहीन हो जाता है तो प्रजा उसका साथ छोड़ देती है। इसी प्रकार वृक्षों पर रहने वाले पक्षी भी तभी तक किसी वृक्ष पर बसेरा रखते हैं, जब तक वहां से उन्हें फल प्राप्त होते रहते हैं। अतिथि का जब पूरा स्वागत-सत्कार कर दिया जाता है तो वह भी उस घर को छोड़ देता है। **चाणक्य**

सन्मार्ग
पटना, शनिवार 04 मई 2024
www.live7tv.com

सत्ताकामी राजनीति में अतृप्त आत्माएं

विश्वनाथ सचदेव

पहले टिकट के लिए और फिर चुनाव जीतने के लिए भटकते उम्मीदवारों की राजनीति के बारे में तो अक्सर सुनते रहे हैं, पर अब देश की राजनीति में भटकती आत्माओं ने भी प्रवेश कर लिया है। यह खोज करने का श्रेय भाजपा के शीर्ष नेतृत्व को जाता है। पुणे की एक चुनावी सभा में प्रधानमंत्री ने श्रोताओं को बताया कि यह भटकती आत्माएं वे हैं जिनकी इच्छाएं पूरी नहीं होती तो वे दूसरों के काम खराब करने लगती हैं। प्रधानमंत्री ने ऐसी किसी आत्मा का नाम तो नहीं लिया, पर यह समझना किसी के लिए भी मुश्किल नहीं था कि उनका निशाना किस पर है। बिना नाम लिये ही प्रधानमंत्री ने यह स्पष्ट कर दिया था कि पैंतालीस साल पहले महाराष्ट्र में कौन-सी आत्मा ने इस तमाशे की शुरूआत की थी। पैंतालीस साल पहले महाराष्ट्र के तब के युवा नेता शरद पवार ने राज्य की कांग्रेस सरकार में विद्रोह कराया था और वे राज्य में सबसे युवा मुख्यमंत्री बन गये थे। तब से लेकर आज तक शरद पवार कई पार्टियां बना-बिगाड़ चुके हैं। इस दौरान यह बात भी कई बार सामने आई कि पवार स्वयं प्रधानमंत्री बनने का सपना देखते रहे थे। उनकी यह इच्छा पूरी नहीं हो पायी, और अब इसकी कोई संभावना भी नहीं दिख रही। प्रधानमंत्री मोदी ने इसी बात पर निशाना साधते हुए हमारी राजनीति की अतृप्त आत्माओं के भटकने वाली बात कही है। प्रधानमंत्री के निशाने पर भले ही शरद पवार रहे हों, पर हमारी आज की राजनीति की यह एक कड़वी सच्चाई है कि अतृप्त आत्माएं लगातार भटकती फिर रही हैं। जिस तरह से, और जिस गति से आज यह भटकाव दिख रहा

है, वह साफ-सुथरी और सकारात्मक राजनीति की अपेक्षा करने वालों के लिए आश्चर्य और पीड़ा का विषय होना चाहिए। दल-बदल हमारी राजनीति का एक स्थाई मुद्दा बन चुका है। सच बात तो यह है कि अब यह एक ऐसी बीमारी बन चुका है जिसका शिकार हर राजनीतिक दल हो रहा है। था कोई जमाना जब अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए दल बदल करने वाले को घटिया राजनीति का उदाहरण माना जाता था, उसे घटिया नजर से देखा जाता था। बहुत ज्यादा उदाहरण नहीं दिखते थे इस बात के। पर अब ऐसी कोई बात नहीं रही। अब न दल बदलने वाले को शर्म आती है और न ही किसी राजनीतिक दल को इस बात की कोई चिंता है कि उस पर घटिया राजनीति करने का आरोप लगता है। हमारी राजनीति की इन भटकती आत्माओं का ताजा उदाहरण सूरत और इंदौर में देखने को मिला है। सूरत में कांग्रेस के एक प्रत्याशी पर जान-बूझकर अपना नामांकन पत्र रद्द करवाने का आरोप लगा है और इंदौर में ऐसे ही एक प्रत्याशी ने अपना नामांकन वापस ले लिया है! दोनों ही प्रत्याशी, सुना है, सत्तारूढ़ दल भाजपा का दामन थाम कर अपना राजनीतिक भविष्य सुरक्षित महसूस कर रहे हैं! सच तो यह है कि भटकती आत्माओं को अपने दामन की सुरक्षा का अहसास देने वाले दल को भी अपने कृत्य पर कोई शर्म नहीं आती। हैरानी तो इस बात पर भी होती है कि दस साल तक पूर्ण बहुमत की सरकार चलाने और अबकी बार चार सौ पार का नारा लगाने वाली भारतीय जनता पार्टी को ऐसी अतृप्त आत्माओं की जरूरत महसूस हो रही है! स्पष्ट है, हमारी राजनीति आज सत्ताकामी बनकर रह गयी है। सेवा के लिए राजनीति अब सिर्फ एक जुमला है। आये दिन हमारे राजनेता नए-नए जुमले उछाल रहे हैं। राजनीतिक दल लंबे-चौड़े घोषणापत्र जारी कर रहे हैं, नए-नए नाम देकर इन घोषणापत्रों को भरोसेमंद बनाने के दावे कर रहे हैं। हैरानी की बात तो यह भी है कि जहां तक दस साल तक राज करने के बाद भी सत्तारूढ़ दल अपने किये काम की दुहाई देने की बजाय प्रतिपक्षी की कथित कमियों के नाम पर वोट मांग रहा है, वहीं प्रतिपक्ष कोई वैकल्पिक कार्यक्रम नहीं दे रहा। कुल मिलाकर हमारा विपक्ष सत्तारूढ़ दल के आरोपों के उत्तर देने, या फिर स्वयं को बेहतर कहने तक ही सीमित लग रहा है। दोनों ही पक्ष यह तो कहते हैं कि वे जनता के हित की राजनीति में विश्वास करते हैं, पर, दुर्भाग्य से, जनता को यह विश्वास दिलाने में असफल सिद्ध हो रहे हैं कि सत्ता पाने के अलावा भी उनका कोई लक्ष्य है। भटकती आत्माओं जैसे जुमले उछाल कर तालियां तो बटोरी जा सकती हैं, इन आत्माओं की तृप्ति के लिए आश्वासन भी दिये जा सकते हैं, लेकिन जनता के हितों को साधने वाली राजनीति का दुर्भाग्य से, अभाव अब ज्यादा खलने लगा है। हिंदू-मुस्लिम, मंदिर-मस्जिद, अगड़ी जाति-पिछड़ी जाति जैसे मुद्दों को उछालकर आज जो राजनीति की जा रही है, वह भविष्य के प्रति किसी प्रकार की आशाएं जगाने वाली तो नहीं ही है। सुना है किसी चुनावी सभा में कांग्रेसी नेता ने राजों-महाराजों के अत्याचारों की दुहाई दी थी। पलटवार प्रधानमंत्री की तरफ से हुआ। नहीं, उन्होंने यह नहीं कहा कि राजों-महाराजों की आलोचना क्यों हुई, उनकी शिकायत यह है कि राजों-महाराजों की बात करने वाले ने नवाबों-बादशाहों का नाम क्यों नहीं लिया? हमारी राजनीति का यह गिरता स्तर निराश भी करता है और चिंतित भी। हैरानी की बात है कि शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण जैसे गंभीर मुद्दे हमारी राजनीति में कोई जगह नहीं पा रहे। भटकती आत्माओं का सच भी किसी की चिंता का विषय नहीं है। रोजगार की बात सिर्फ विपक्ष कर रहा है, और वह भी दबी जुबान से। यह सच्चाई भी किसी को परेशान करती नहीं दिखाई दे रही कि पिछले पांच साल में देश में दो करोड़ से अधिक रोजगार घटे हैं और 45 करोड़ लोग ऐसे हैं जिन्होंने निराश होकर काम की उम्मीद ही छोड़ दी है। यह बात भी किसी को परेशान नहीं करती दिखती कि आर्थिक असमानताएं लगातार बढ़ रही हैं। अमीर और अमीर होते जा रहे हैं, गरीब और मार झेल रहे हैं। महिलाओं के सशक्तीकरण की बात तो हो रही है, पर सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमिक (सीएसआईई) का यह निष्कर्ष किसी की चिंता नहीं बनता दिख रहा कि काम न मिलने से देश की महिलाएं अधिक परेशान हैं। किसी भी पार्टी का कोई नेता यह नहीं बता रहा कि 2017 से 2020 के बीच कुल कामगारों की संख्या 46 प्रतिशत से घटकर 40 प्रतिशत क्यों हो गयी है। राजनीति की भटकती आत्माओं वाली बात सुनने में आकर्षक तो लगती है, पर हमारी राजनीति की चालों को देखते हुए यह भी एक चुनावी जुमला है। हमारे राजनेताओं ने जनता को देश का भाग्य-विधाता नहीं माना। यह भूमिका उन्होंने अपने लिए सुरक्षित रख छोड़ी है। जनता को भीड़ समझ लिया है हमारे नेताओं ने। एक ऐसी ही भीड़ जो आसानी से बहलायी-बहकाई जा सकती है। लोकतंत्र की सार्थकता की दृष्टि से यह स्थिति कतई ठीक नहीं है। जहां तक हमारी राजनीति की भटकती आत्माओं का सवाल है हकीकत यह भी है कि किसी भी रंग का राजनेता इसके दुष्प्रभाव से नहीं बचा है। हमारे लोकतंत्र को बदसूरत करने में इन सबका योगदान है। इन सब पर जागरूक जनता को नजर रखनी होगी। जनतंत्र में चुनाव राजनेताओं की ही नहीं, जनता की भी परीक्षा होती हैं। राजनेता तो हार कर भटकती आत्मा भी बन सकते हैं, पर जनता को तो सिर्फ जीतना ही होता है। जनता जीतेगी, तभी जनतंत्र जियेगा!

वैक्सीन के साइड इफेक्ट

हाल ही में कोरोना वैक्सीन बनाने वाली कंपनी एस्ट्राजेनेका ने स्वीकारा कि उसकी कोविशील्ड वैक्सीन के रेयर साइड इफेक्ट हो सकते हैं। जिसको लेकर देश में नए सिरे से बहस शुरू हुई। विशेषज्ञ सलाह दे रहे हैं कि घबराएं नहीं, टीके से जुड़ा खतरा दस लाख में से एक व्यक्ति को होता है। वैसे देश के चुनावी माहौल के बीच आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति के कोलाहल में यह तय कर पाना कठिन हो जाता है कि हवा में तैर रही खबर की तार्किकता क्या है। यह भी कि यह खबर वास्तविक है या राजनीतिक लक्ष्यों के लिये गढ़ी गई है। वहीं दूसरी ओर व्यापारिक प्रतिस्पर्धा के चलते भारत के खिलाफ जो वैश्विक गुटबंदी चल रही है, कहीं आरोप इस कड़ी का हिस्सा तो नहीं है। वैसे विशेषज्ञ कह रहे हैं कि कोविशील्ड वैक्सीन लेने के चार से बयालीस दिनों के भीतर टीटीएस प्रभाव हो सकता है, जो ब्लड क्लॉट बना सकता है। जिससे कालांतर प्लेटलेट्स की कमी शरीर में हो सकती है। दरअसल, वैक्सीन बनाने वाली कंपनी एस्ट्राजेनेका ने ब्रिटेन में एक अदालती सुनवाई के दौरान वैक्सीन के दुर्लभ प्रभावों की बात को माना था। कंपनी के विशेषज्ञों का कहना है कि टीटीएस दिमाग, फेफड़ों, आंत की खून की नली आदि में तो पाया गया लेकिन किसी को हार्ट अटैक की समस्या नहीं हुई। साथ ही यह भी कि कोविड संक्रमण के कारण भी ब्लड क्लॉट के मामले सामने आए हैं। कुछ विशेषज्ञ मानते हैं कि वैक्सीन से इम्यून सिस्टम में टी व बी सेल गतिशील होने से इम्यून प्रतिक्रिया बढ़ती है, जिसके बाद खून की नली में सूजन से ब्लड क्लॉट बनता है। जिसमें ज्यादा प्लेटलेट्स इस्तेमाल होने लगते हैं। जो कि टीटीएस की स्थिति होती है। विशेषज्ञ मानते हैं कि वैक्सीन ने महामारी की घातकता को नब्बे प्रतिशत तक घटाकर रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाई। वहीं वैक्सीन के साइड इफेक्ट छह माह के भीतर सामने आ जाते हैं, इसके उपयोग को दो साल से अधिक का समय हो चुका है। उल्लेखनीय है सरकार ने कोरोना संकट के दौरान कोविशील्ड लेने हेतु व्यापक जनसंपर्क अभियान चलाया था। अब जब इसके दुष्प्रभावों को लेकर संशय पैदा हुआ है तो उसे अपने संसाधनों का इस्तेमाल करके लोगों की शंकाओं का निवारण भी करना चाहिए। सेहत से जुड़े किसी भी मामले में किसी तरह का समझौता नहीं किया जा सकता। यदि किसी तरह असुरक्षा की भावना बढ़ती है तो सरकार को तुरंत दूर करना चाहिए। नागरिकों की शंकाओं का तुरंत ही समाधान किया जाना चाहिए। पब्लिक डोमेन में कंपनी द्वारा चुनावी बांड खरीदे जाने को लेकर भी सवाल उठाये जा रहे हैं। जिसके चलते लोगों के मन में कई तरह के सवाल उपजे हैं, जिनका निराकरण भी सरकार का प्राथमिक दायित्व है।

मसालों की गुणवत्ता व व्यापारिक कूटनीति के प्रश्न

प्रेम प्रकाश

समय और संदर्भ मिलकर साझे तौर पर हमारे देशकाल को रचते हैं। इस लिहाज से देखें तो हमारा देशकाल बीसवीं सदी के आखिरी दशक से लेकर अब तक कई ठोस निर्मितियों को लेकर आया है। हम इस पूरे दौर को देखेंगे तो कई बातें जहां साफ होती हैं, वहीं इससे हम अपने समकाल को भी ज्यादा बेहतर समझ पाते हैं। गौरतलब है कि दुनियाभर में बाजार के दरवाजे एक साथ खुलने से जो स्थिति पैदा हुई है, उसमें भारत जैसे बड़ी आबादी और उत्पादक संभावनाओं वाले देश ने बीते दो-तीन दशक में बड़ी छलांग लगाई है। अब इससे आगे की स्थिति पगबाधा दौड़ जैसी है। भारत के लिए यह स्थिति इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि उसे खासतौर पर व्यापारिक मोर्चे पर न सिर्फ कठिन अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा से गुजरना पड़ रहा है, बल्कि विभिन्न स्तरों पर सक्रिय अंतर्राष्ट्रीय लॉबी भी उसके खिलाफ है। बड़ी बात यह कि खासतौर पर कोविड बाद के दौर में भारतीय अर्थव्यवस्था की बढ़ी मजबूती ने भारत के खिलाफ अघोषित रूप से अंतर्राष्ट्रीय सांठगांठ को जन्म दिया है। लिहाजा इसे व्यापारिक कूटनीति के रूप में देखना ज्यादा सही होगा। किसी एक देश के खिलाफ इस तरह कूटनीतिक मोर्चा खुलना बिल्कुल नई बात है। इसी पूरे मामले में नई खबर यह है कि भारत में बने कफ सिरप पर रोक से शुरू हुआ मामला अब भारत से निर्यात हुए मसालों तक आ पहुंचा है। सिंगापुर और हांगकांग द्वारा भारत के कुछ बड़े ब्रांड के मसालों को बैन करने के बाद अमेरिकी फूड और ड्रग्स एडमिनिस्ट्रेशन (एफडीए) भी इस मामले में सक्रिय हो गया है। हैरत नहीं कि बैन का फैसला अमेरिका की तरफ से भी देर-सवेर आ जाए। फिलहाल की स्थिति में एफडीए ने कहा है वह भारतीय कंपनियों को लेकर जारी रिपोर्ट्स को लेकर गंभीर है और वह इस बाबत ज्यादा जानकारी जुटाने में लगा है। वैसे

एफडीआई की जांच या किसी निर्णायक जांच या निर्देश से पहले ही अमेरिका में भारतीय मसालों को लेकर सख्ती बढ़ गई है। आलम यह है कि बीते छह महीने में अमेरिका ने भारत की सबसे बड़ी मसाला कंपनी के 31 फीसदी मसालों के शिपमेंट को लेने से मना कर दिया है। अमेरिका से भारतीय मसालों के शिपमेंट को लौटाने के पीछे फिलहाल कारण यह बताया जा रहा है कि यह फैसला साल्मोनेला संक्रमण के खतरों को लेकर लिया गया है। अलबत्ता भारतीय मसालों को लेकर अस्वीकार की स्थिति अमेरिका में नई नहीं है। बल्कि देखा जाए तो यह सिंगापुर और हांगकांग के बैन के पहले से चला आ रहा मामला है। अमेरिकी सीमा शुल्क अधिकारियों ने पिछले साल भी भारत से आने वाले 15 फीसद मसालों को लौटाया था। वैसे भारत और अमेरिका से आगे बढ़कर यह मामला अब मालदीव तक पहुंच गया है। मालदीव ने भारतीय मसालों की बिक्री पर रोक लगा दी है। मालदीव की फूड एंड ड्रग अथॉरिटी का कहना है कि भारत के दो मशहूर ब्रांड के मसालों में एथिलीन ऑक्साइड मिला है जिसके कारण इनकी बिक्री पर रोक लगाई गई है। इससे पहले सिंगापुर और हांगकांग ने इन भारतीय ब्रांडों के कुछ उत्पादों में पेस्टिसाइड एथिलीन ऑक्साइड की लिमिट से ज्यादा मात्रा होने के कारण उन्हें प्रतिबंधित किया था। बताया गया कि इनमें पेस्टिसाइड की ज्यादा मात्रा से कैंसर होने का खतरा है। बात अंतर्राष्ट्रीय मानक और चेतावनियों की करें तो विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की इंटरनेशनल एजेंसी फॉर रिसर्च ऑन कैंसर (आईएआरसी) एथिलीन ऑक्साइड को ग्रुप वन के कार्सिनोजेन के रूप में देखती और वर्गीकृत करती है। लिहाजा इस निष्कर्ष से इनकार मुश्किल है यह लोगों में कैंसर का कारण बन सकता है। अंतर्राष्ट्रीय जगत से आई इन खबरों के बाद भारत का सक्रिय होना स्वाभाविक है। यह उसके लिए व्यापार में नुकसान से ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय साख का सवाल है। लिहाजा दो देशों के बैन के घोषित फैसले के बाद भारतीय खाद्य सुरक्षा नियामक (एफएसएसएआई) भी इन दोनों कंपनियों के मसालों की जांच कर रहा है। हालिया चर्चा में आए मसालों के दोनों ही ब्रांड देश में भी खासे लोकप्रिय हैं। बात इनकी अंतर्राष्ट्रीय साख और व्यापारिक नेटवर्क की करें तो ये मसाले यूरोप, एशिया और उत्तरी अमेरिका में खूब प्रचलन में हैं। फूडिंग, कुकिंग और रेसिपी को लेकर प्रभावशाली तरीके से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लिखने-बोलने वालों ने यह बात बीते वर्षों में बार-बार कही है कि भारतीय मसालों ने दुनियाभर के लोगों का स्वाद बदल दिया है। यह बदलाव इतना बड़ा है कि अलग-अलग प्रकार और स्वाद वाले इंडियन करीज और इंटरनेशनल रेसिपीज का हिस्सा हैं। मौजूदा घटनाक्रम का भारत के लिए व्यापारिक महत्व कितना बड़ा है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 2022-23 में भारत ने करीब 32 हजार करोड़ रुपये के मसालों का निर्यात किया। मिर्च, जीरा, हल्दी, करी पाउडर और इलायची भारत से निर्यात होने वाले कुछ प्रमुख मसाले हैं। इस बात से कतई इनकार नहीं किया जा सकता कि सेहत और उससे जुड़ी गुणवत्ता को लेकर सख्ती जरूरी है। इस मुद्दे पर किसी तरह की लापरवाही को हतोत्साहित किया ही जाना चाहिए। आखिरकार यह व्यापार से ज्यादा स्वास्थ्य और मानवता से जुड़ा संवेदनशील मसला है। पर इस मामले को हथियार बनाकर जब किसी एक देश के खिलाफ कार्रवाई हो तो यह भी कहीं से न्यायसंगत नहीं है। माना जाना चाहिए कि जो स्थिति है उसमें भारतीय उद्योग जगत के साथ सरकार भी दूरगामी नीति और विवेक के साथ कार्य करने का सबक लेंगे।

किसानों पर शिकंजे जैसा है फ्री ट्रेड फार्मूला

देविंदर शर्मा

मुक्त व्यापार कभी भी निष्पक्ष नहीं रहा। पहले की फेयर एंड लवली क्रीम, जिसे अब ग्लो एंड लवली नाम दिया गया है, की तरह फ्री ट्रेड दुनियाभर के बड़े कारोबारों को आसानी से आकर्षित कर सकता है ताकि ग्लोबल साउथ के देशों यानी गरीब व विकासशील देशों को इसकी विशाल आर्थिक क्षमता पर विश्वास हो सके। विवादास्पद फेयर एंड लवली क्रीम ने भी त्वचा को कथित गोरा करने वाले कॉस्मेटिक उत्पाद के साथ ऐसा ही किया। गोरे को सुंदर और सांवले को बदसूरत समझना सांवली त्वचा वाले लोगों का उपहास करने जैसा था और अंततः कंपनी को जनता के दबाव के आगे झुकना पड़ा। मुक्त व्यापार को लेकर दबाव का सिलसिला बढ़ता जा रहा है। इस साल की शुरूआत में यूरोप में विशाल किसान आंदोलन हुए। 27 यूरोपीय देशों में से 24 किसी न किसी स्तर पर विरोधों का सामना कर रहे हैं। इन आंदोलनों में फ्री ट्रेड एग्रीमेंट्स (एफटीए) को उखाड़ फेंकने का आह्वान कर रहे थे जिसकी वजह से यूरोप में भोजन व फल-सब्जियां सस्ते हो गये व घरेलू किसानों की आजीविका सुरक्षित करना मुश्किल हो रहा था। फ्रांस अकेले अपनी फल और सब्जी की जरूरत का 71 फीसदी आयात करता है। भारत में, किसान आंदोलन 2.0 मुख्य रूप से कृषि उपज के लिए कानूनन बाध्यकारी न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की मांग कर रहा है, और इसकी अन्य मांगों में भारत को विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) से हटने के लिए कहना भी शामिल है। इस लेख में अमेरिका द्वारा हाल ही में अपनाए गये उस कड़े कदम का विश्लेषण करने का प्रयास किया जायेगा जो विकासशील देशों में बाजार की पकड़ और ज्यादा मजबूत करने को लेकर है। अमेरिका की तो हमेशा से विकासशील देशों के बाजार में पहुंच बनाने की तीव्र इच्छा रही है। जिसमें ध्यान का केंद्र स्वाभाविक तौर पर भारत का विशाल बाजार रहा है। अमेरिकी वित्त समिति की हालिया सुनवाई में, सीनेटरों के सवालों का जवाब देते हुए, अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि (यूएसटीआर) कैथरीन टाई ने कहा-ह्यहम कड़ी मेहनत करने वाले अमेरिकी परिवारों और समुदायों, विशेष रूप से हमारे ग्रामीण समुदायों के लिए बाजार खोल रहे हैं। बातचीत के माध्यम से, हमारे प्रशासन ने पिछले तीन वर्षों में नए कृषि बाजारों तक 21 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक की पहुंच सुनिश्चित की है, और आगे कहा, इसमें वृद्धिमान बाजार, भारत के साथ 12 टैरिफ श्रेणियां शामिल हैं जो अमेरिकी निर्यातकों के लिए तरक्की का मौका हैं। हालांकि मेहनतकश अमेरिकी परिवारों और ग्रामीण समुदायों की सुरक्षा को लेकर अमेरिका की रुचि समझी जा सकती है लेकिन भूमंडलीकरण के तहत हर देश को उन दसियों हजारों किसानों की आजीविका की भी रक्षा करनी चाहिए जो दुनिया के किसी और हिस्से में सस्ते आयातों के चलते तबाह हो जाते हैं। यह न भूलें कि भोजन का आयात करना बेरोजगारी का आयात करने के समान है। मुझे याद है कि मैंने जर्मन किसानों से भी कमोबेश इसी तरह का प्रश्न पूछा था, जो दक्षिणी जर्मनी के लैंड्सफुहल में एक फार्म हाउस में डिनर के दौरान जीएटीटी निर्यातकों के एक छोटे समूह से मिलने आए थे (मेरी पुस्तकः

गैट टू डब्ल्यूटीओ : निराशा के बीज 1995. कोणार्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली)। यह 1990 के दशक के मध्य में किसी समय का वाकया है। मानता हूं कि आप सरप्लस खाद्यान्न का उत्पादन करते हैं जिसके लिए आप दक्षिण में एक स्थाई बाजार की तलाश कर रहे हैं। लेकिन शायद आपको इस बात का अहसास नहीं है कि आप यहां जो सरप्लस अनाज पैदा करेंगे, वह भारत जैसे देशों में लाखों छोटे और सीमांत किसानों को उनके खेतों से दूर कर देगा। उन व्यापार वातार्कारों के उलट, जो नष्ट हो रही कृषि आजीविका के बारे में दूर-दूर तक चिंतित हुए बिना, आजकल व्यापार वार्ता की अगुवाई करते हैं, मुझे वहां किसानों से जो उत्तर मिला, वह अत्यधिक समर्थन प्रदान करने वाला था। भारतीय किसानों के साथ एकजुटता व्यक्त करते हुए उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था कि उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि उनका अधिशेष खाद्यान्न भारत में आजीविका को नष्ट कर देगा। जर्मनवासी किसान भारतीय किसानों की पीड़ा को समझ सकते थे और इसलिए चाहते थे कि सुधारात्मक कदम उठाए जाएं। मैंने सोचा कि अमेरिका को भी उस असर का आकलन करना चाहिये जो बादाम, अखरोट और सेब समेत अन्य चीजों पर प्रतिरोधात्मक आयात शुल्क वापस लेने के बाद भारत पर पड़ेगा। चलो यहां सेब की बात करते हैं। समाचार रिपोर्टों के अनुसार, 20 फीसदी आयात शुल्क वृद्धि वापस लेने के बाद जब पहली खेप भारत के लिए रवाना हुई तो सिएटल बंदरगाह पर उत्सव मनाया गया। जाहिर है, भारत वाशिंगटन के सेब के लिए 120 मिलियन डॉलर का बाजार प्रदान करता है, जिससे अमेरिका में 68,000 सेब उत्पादक किसानों को लाभ होगा। रिपोर्ट्स के मुताबिक, नवंबर 2023 में आयात शुल्क आंशिक रूप से वापस लेने के एक महीने के भीतर 19.5 मिलियन डॉलर मूल्य के वाशिंगटन सेब भारत भेजे गए। जैसा कि उम्मीद थी, यूएस कांग्रेस की सुनवाई में एक सीनेटर को यह कहते हुए उद्धृत किया गया था कि भारतीय गेहूं सब्सिडी कीमतों को बिगाड़ रही है और इससे अमेरिकी किसानों को नुकसान हो रहा है। एक अन्य सीनेटर ने चावल सब्सिडी के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि अगर चावल सब्सिडी डब्ल्यूटीओ के मापदंडों के भीतर होती, तो इससे अमेरिकी धान किसानों के लिए 850 मिलियन डॉलर के व्यापार के अवसर खुल जाते। यदि आपका अंदाजा सही है, तो ये सीनेटर भारत में एमएसपी व्यवस्था पर सवाल उठा रहे हैं जिसके तहत खासकर पंजाब और हरियाणा में गेहूं और चावल उत्पादक किसान, उच्च सुनिश्चित कीमतों से लाभान्वित होते हैं। अमेरिका ने बार-बार कहा है कि भारत किसानों को उत्पाद-विशेष के लिए समर्थन की 10 प्रतिशत की सीमा से अधिक एमएसपी भुगतान करके डब्ल्यूटीओ की शर्तों का उल्लंघन करता है। आश्चर्यजनक तौर पर, ये आक्षेप बार-बार उस देश द्वारा लगाये जाते हैं जो दुनियाभर के कपास उत्पादकों को हानि पहुंचाने के लिए अपने देश के कपास उत्पादकों को दी जाने वाली भारी-भरकम सब्सिडी को बंद करने में विफल रहा हो। जरा तुलना ही करें तो, नई दिल्ली स्थित डब्ल्यूटीओ अध्ययन केंद्र के अनुसार, अमेरिका अपने 8,100 कपास उत्पादकों को प्रति किसान 117,494 डॉलर की घरेलू मदद प्रदान करता है। इसके विपरीत, 9 मिलियन से अधिक संख्या वाले भारतीय कपास उत्पादकों को प्रति किसान मामूली 27 डॉलर मिलते हैं। अमेरिका द्वारा अपने किसानों को प्रदान की जाने वाली कपास सब्सिडी का विवादास्पद मुद्दा पश्चिमी अफ्रीका के देशों और भारत में लाखों कृषकों की आजीविका को खत्म करने के लिए जाना जाता है, साल 2003 में असफल कैनकन डब्ल्यूटीओ मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में एक प्रमुख मुद्दे के रूप में सामने आने के वक्त से अनसुलझा बना हुआ है। मुझे यह भी अजीब लगता है कि जब अमेरिकी सीनेटर उस हालात में भारत के झींगा उद्योग में बाल मजदूरी पर सवाल उठाते हैं जब अमेरिकी कृषि क्षेत्र सैकड़ों की तादाद में 18 साल से कम उम्र के बच्चों को नियुक्त करने के लिए जाना जाता है, और कुछ तो 10-12 वर्ष की नाजुक उम्र में वाणिज्यिक फार्म्स में श्रम करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की तरह, मैं भी संसार में कहीं भी खेती के काम में बालश्रम का विरोधी हूं। लेकिन जब खेती के कार्य में बाल श्रमिकों को लगाने की बात आती है तो अमेरिका भी इससे अछूता नहीं। यह निष्पक्ष स्थिति नहीं जो स्वतंत्र व्यापार सुनिश्चित करती हो। फ्री ट्रेड का अपने आप में यह मतलब नहीं कि यह फेयर और लवली है।

देशप्राण
स्वतंत्र हिन्दी दैनिक
शनिवार
रांची, 04 मई, 2024

कर-सुधार से जीएसटी दो लाख करोड़ पार

यह सुखद ही है कि देश कर संग्रहण सिस्टम में सुधार की दिशा में सार्थक पहल से एक कदम आगे बढ़ा है। देश में पहली बार जीएसटी का संग्रहण दो लाख करोड़ रुपये से पार चला गया है। कर विशेषज्ञ इसे टैक्स सिस्टम में सुधार के प्रयासों की सफलता बता रहे हैं। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था का भविष्य उसके समृद्ध आर्थिक संसाधनों पर ही निर्भर होता है। भारत के अड़ोस-पड़ोस के कई देशों की अर्थव्यवस्था नियोजन के अभाव, भ्रष्टाचार तथा लोकलुभावन नीतियों के व्यय बोझ से चरमरा गई। इसलिये आर्थिक अनुशासन और वित्तीय संसाधनों को समृद्ध करने का प्रयास बेहद जरूरी हो जाता है। यहां उल्लेखनीय है कि अप्रैल में जहां देसी गतिविधियों से कर संग्रह में 13.4 फीसदी का इजाफा हुआ है, वहीं पिछले अप्रैल के मुकाबले में आयात से होने वाला राजस्व संग्रह भी 8.3 फीसदी बढ़ा है। निश्चय ही चालू वित्त वर्ष के पहले ही महीने यानी अप्रैल में सकल वस्तु एवं सेवा कर संग्रह पहली बार रिकॉर्ड 2.1 लाख करोड़ रुपये होना अर्थव्यवस्था के लिये शुभ संकेत है, जबकि दुनिया की कई बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में फिलहाल मंदी के रुझान नजर आ रहे हैं। यह वृद्धि बीते साल अप्रैल में एकत्र जीएसटी के मुकाबले 12.4 फीसदी अधिक है। आर्थिक विशेषज्ञ मान रहे हैं कि वैश्विक स्तर पर उथल-पुथल के बीच रूस-यूक्रेन युद्ध तथा गाजा में हमास इजरायल संघर्ष जैसी बा चुनौतियों के बावजूद चालू वित्त वर्ष में जीएसटी संग्रह में वृद्धि देश की आर्थिक उन्नति के लिए अच्छा संकेत है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि कर प्राप्तियों में बढ़ोतरी के मूल में आर्थिक गतिविधियों में तेजी के रुझानों का असर है। उल्लेखनीय है कि वृद्धि आयात उपकर में भी हुई है। वैसे एक तथ्य यह भी है कि आम तौर पर किसी भी नये वित्तीय वर्ष में पहले माह अप्रैल में सरकार को सर्वाधिक वस्तु एवं सेवा कर मिलता है। इस वित्त वर्ष के आने वाले महीनों में जीएसटी संग्रहण से होने वाली आय से अर्थव्यवस्था के स्थायी रुझानों का पता चल सकेगा। निश्चित रूप से आने वाले महीनों में यह देखना दिलचस्प होगा कि किन-किन महीनों में जीएसटी संग्रह दो लाख करोड़ रुपये का आंकड़ा पार करता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि अप्रैल माह में केंद्रीय जीएसटी में इस बार 27.8 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ संगृहीत राशि 94,153 करोड़ रुपये रही। दूसरी ओर राज्य जीएसटी संग्रह में आशातीत 25.9 फीसदी की वृद्धि हुई। इस तरह राज्यों की जीएसटी संग्रह राशि 95,138 करोड़ हो गई। यानी राजस्व प्राप्ति की राह में राज्यों की भागीदारी में भी सुधार देखा गया है। केंद्रशासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर, लक्षद्वीप और अंडमान निकोबार, सिक्किम, मेघालय नगालैंड को छोड़कर सभी राज्यों में इस साल के पहले महीने जीएसटी राजस्व में वृद्धि हुई है। आर्थिक विशेषज्ञ जीएसटी वृद्धि के मूल में उपभोक्ता उत्पादों की ज्यादा खपत का योगदान बता रहे हैं। गर्मी बढ़ने की चिंता में उपभोक्ता बड़े पैमाने पर एसी व फ्रिज आदि खरीदते हैं। बच्चों के शैक्षिक सत्र समापन के चलते बच्चों की छुट्टियों में पर्यटन बढ़ने को भी एक वजह माना जा रहा है। निस्संदेह, लंबी यात्राओं के चलते आर्थिक गतिविधियों में तेजी आती है। वहीं आम चुनावों के चलते चुनाव प्रक्रिया में जुड़े व्यवसायों की आय में हुई वृद्धि की भी इसमें भूमिका हो सकती है। वहीं दूसरी ओर हमें मानना होगा कि वित्तीय नियामक एजेंसियों की सक्रियता तथा जीएसटी अधिकारियों द्वारा प्रशासनिक सुधारों को प्राथमिकता देने से भी जीएसटी संग्रह में वृद्धि का रुझान देखा जा सकता है। इसमें जहां रिटर्न भरने के लिए सख्ती, फर्जी चालान पर अंकुश, पंजीकरण की अनिवार्यता को लेकर सख्ती से भी वस्तु-सेवा कर संग्रहण में वृद्धि हुई है। विश्वास जताया जा रहा है कि जीएसटी राजस्व में वृद्धि से उत्साहित नई सरकार कर उगाही व्यवस्था में बदलाव के लिए नई पहल कर सकती है। सरकार दावा कर सकती है कि एक देश, एक कर की सोच सार्थक परिणाम लेकर सामने आ रही है। जो इस क्षेत्र में नये सुधारों का मार्ग भी प्रशस्त कर रही है।

अमन की फिजा में कश्मीर घाटी की अवाम भी करेगी मतदान

आरके सिन्हा
(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)

2019 में जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में गृहमंत्री अमित शाह ने धारा 370 को हटाया जिस ऐतिहासिक संसद के सत्र में मैं भी भागीदार था, तब उनमें एक उम्मीद जगी है। तब से उन्हें यही महसूस हो रहा है कि अब वे किस तरह अपने कश्मीर जाकर फिर से अपनी जड़ों की ओर लौट सकेंगे। कश्मीर घाटी में आतंकवाद के दौर के बाद लाखों पंडितों ने अपमान और अत्याचार के दौर में घाटी को छोड़ा था। वे आगामी 13 मई को अपना वोट राजधानी के पृथ्वीराज रोड पर स्थित जम्मू-कश्मीर हाउस में जाकर डालेंगे।

कश्मीर की राजधानी श्रीनगर के जिस लाल चौक पर कुछ साल पहले तक सिर्फ सुरक्षा बलों के जवान ही झुण्ड के झुण्ड दिखाई दिया करते थे, वहां आजकल लोकसभा चुनाव को लेकर स्थानीय लोग खुलकर राजनीतिक चचाएं कर रहे हैं। कश्मीर घाटी में धारा 370 को हटाये जाने के बाद पहली बार कोई चुनाव हो रहे हैं। तब से घाटी की स्थिति में भी अभूतपूर्व बदलाव आया है। घाटी में आतंकवाद जब चरम पर चल रहा था, तब बड़ी संख्या में कश्मीरी पंडितों और अन्य लोग वहां से भागकर दिल्ली और दूसरे राज्यों में शरण ली थी। तब इनके सामने विस्थापन का संकट झेलने से लेकर अनिश्चित भविष्य की मुश्किलों का सामना करने के अलावा कोई दिशा या रास्ता भी तो नहीं था।

2019 में जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में गृहमंत्री अमित शाह ने जब धारा 370 को हटाया जिस ऐतिहासिक संसद के सत्र में मैं भी भागीदार था, तब उनमें एक उम्मीद जगी है। तब से उन्हें यही महसूस हो रहा है कि अब वे किस तरह अपने कश्मीर जाकर फिर से अपनी जड़ों की ओर लौट सकेंगे। कश्मीर घाटी में आतंकवाद के दौर के बाद लाखों पंडितों ने अपमान और अत्याचार के दौर में घाटी को छोड़ा था। वे आगामी 13 मई को अपना वोट राजधानी के पृथ्वीराज रोड पर स्थित जम्मू-कश्मीर हाउस में जाकर डालेंगे। उस दिन श्रीनगर सीट के लिए वोटिंग होनी है। यहां कश्मीरी पंडितों को लोकसभा चुनाव के लिए मतदान करने की सुविधा दी गई है। इसके बाद 20 मई (बारामूला) और 25 मई को (अनंतनाग-राजौरी) में मतदान होगा। तब भी राजधानी और इसके आसपास रहने वाले कश्मीरी पंडित यहां आकर अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकेंगे कसरकार का कहना है कि जम्मू-कश्मीर में जल्द ही विधानसभा चुनाव भी कराकर वहां की जनता की चुनी हुई सरकार को लाने और विकास कार्य में तेजी लाकर देश की मुख्यधारा से राज्य को जोड़ने के लिए प्रयास शुरू हो चुके हैं। लोकसभा चुनाव के लिए प्रचार अभियान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में राज्य के अपने दौरे में इस बात को साफ तौर पर कहा भी था। साल 2019 में धारा 370 हटाए जाने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का राज्य का यह पहला दौरा था। श्रीनगर के बख्शी स्टेडियम में प्रधानमंत्री मोदी को सुनने के लिए करीब दो लाख लोग वहां पहुंचे थे। इस मौके पर प्रधानमंत्री मोदी ने विस्तार से बताया था कि कैसे उनकी सरकार जम्मू-कश्मीर के हालात को बदलने और वहां के युवाओं के लिए भविष्य को संवारने के लिए काम कर रही है। राजधानी और एनसीआर में आज भी हजारों कश्मीरी पंडित रहते हैं।

ये अधिकतर दक्षिण दिल्ली में ही रहते हैं। दिल्ली में रहने वाले कश्मीरी प्रवासियों को सरकार की ओर से हर महीने मासिक राहत पैकेज दिया जाता है। पहले यह 10,000 रुपये था, लेकिन पिछले साल 2023 में दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने इसको 10,000 रुपये से बढ़ाकर 27,000 रुपये प्रति माह कर दिया था। उप राज्यपाल ने दिल्ली सरकार के कश्मीरी प्रवासी कार्डों में नाम जोड़ने को भी मंजूरी दे दी थी। इससे प्रवासियों के बड़े और विवाहित बच्चों को अपने स्वयं के कश्मीरी प्रवासी कार्ड प्राप्त करने और एएमआर के लिए पात्र बनने की अनुमति मिल गई।

उग्रवाद के दौरान विस्थापित हुए कश्मीरी परिवारों के राहत और पुनर्वास के लिए सरकार 1989-90 में एडहॉक मंथली रिलीफ (एएमआर) शुरू की थी। 16 साल बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली में रह रहे कश्मीर लोगों के लिए इसको बढ़ाकर कश्मीरियों के लिए एक बड़ी राहत दी है। इससे पहले 2007 में सरकार ने एएमआर को 5,000 रुपये से बढ़ाकर 10,000 रुपये कर दिया था। राहत पाने वालों की संख्या भी इस बीच काफी बढ़ी है। शुरू में जितने कश्मीरी परिवार दिल्ली में थे, अब तो उसमें काफी इजाफा हो गया है।

राजधानी के जामिया मिल्लिया इस्लामिया समेत राजधानी के तमाम विश्वविद्यालयों और कालेजों में बड़ी संख्या में कश्मीरी छात्र-छात्राएं पढ़ते हैं। काफी लोग विभिन्न सरकारी सेवाओं की प्रतियोगिताओं की तैयारी में जुटे हैं। सिविल सर्विस से लेकर सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों में काफी कश्मीरी युवक-युवतियां नौकरी भी कर रहे हैं। बड़ी संख्या में घाटी के युवक और युवतियां यहां अपना खुद का व्यवसाय कर रहे है।

दिल्ली के अलावा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और दिल्ली से सटे दूसरे शहरों में भी कश्मीर से विस्थापित बड़ी संख्या में लोग रह रहे हैं। राजधानी में रह रहे कश्मीरी समुदाय का मानना है कि वर्षों बाद उनमें एक उम्मीद की किरण जगी है। घाटी से विस्थापन के बाद कश्मीरी दंपतियों के दिल्ली में जन्म लेने वाले बच्चे भी अब बड़े हो गये हैं। वे भी अब अपने पूर्वजों की जगह कश्मीर को जाकर देखना चाहते हैं।

इस बीच, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा है कि सरकार जम्मू-कश्मीर से सशस्त्र बल विशिष्ट शक्ति (विशेष शक्तियाँ) अधिनियम कानून (एएफएसपीए) को भी रद करने पर विचार कर रही है। सरकार केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर से सैनिकों को वापस बुलाने की योजना बना रही है और कश्मीर की कानून व्यवस्था को अब पूरी तरह जम्मू-कश्मीर पुलिस के हवाले किया जाएगा। सरकार भी मान रही है कि जम्मू कश्मीर में आतंकियों का मूवमेंट कम हुआ है। आंकड़े बताते हैं कि आतंकवाद में 80 फीसदी कमी आई है। पत्थरबाजी की घटनाएं तो पूरी तरह खत्म ही हो गई हैं । बंद, प्रदर्शन और हड़तालें भी नहीं हो रही हैं। गृह मंत्री ने कहा, 2010 में पथराव की 2564 घटनाएं हुई थीं, जो अब शून्य हैं। 2004 से 2014 तक मौतों की कुल संख्या 2829 थी और 2014-23 के दौरान यह घटकर 915 हो गई है। यह 68 प्रतिशत की कमी है। नागरिकों की मृत्यु 1770 थी और घटकर 341 हो गई है, जो 81 प्रतिशत की गिरावट है। सुरक्षा बलों की मौतें 1060 से घटकर 574 हो गईं, जो 46 प्रतिशत की कमी है।

मोदी सरकार ने आतंकवादी गतिविधियों में शामिल होने के लिए 12 संगठनों पर प्रतिबंध लगाया है। 36 लोगों को आतंकवादी घोषित किया है। टेरर फंडिंग को रोकने के लिए 22 से ज्यादा मामले दर्ज किए हैं और 150 करोड़ रुपये की संपत्ति भी जब्त की है। 90 संपत्तियां भी कुर्क की गईं और 134 बैंक खाते फ्रीज कर दिए गए हैं। एक बात बहुत साफ है कि सरकार देश विद्रोही ताकतों को कुचलने के लिए तैयार है और जो वार्ता करना चाहता है उसका सदैव स्वागत भी है।

हां, उसे वार्ता संविधान के दायरे में आकर करनी होगी। बातचीत की प्रक्रिया में हुर्रियत कॉन्फ्रेंस जैसे अलगाववादी संगठनों का कोई स्थान नहीं है। कहना न होगा कि अब देश बदला-बदला सा जम्मू-कश्मीर देख रहा है।

छात्र आंदोलन और अमेरिकी सख्ती पर सवाल

पुष्परंजन

व्हाइट हाउस के प्रवक्ता जॉन किर्बी ने मंगलवार को संवाददाताओं से कहा कि राष्ट्रपति जो बाइडेन का मानना है कि छात्रों द्वारा एक शैक्षणिक भवन पर कब्जा करना बिल्कुल गलत है। इसे शांतिपूर्ण विरोध हम कतई नहीं कह सकते। डेमोक्रेट जमाल बोमन, जो कोलंबिया विश्वविद्यालय के पास न्यूयॉर्क जिले का प्रतिनिधित्व करते हैं, ने इसे रोकने का आह्वान किया। बोमन ने एक बयान में कहा, कॉलेज परिसरों का सैन्यीकरण, पुलिस की व्यापक उपस्थिति और सैकड़ों छात्रों की गिरफ्तारी, हमारे लोकतंत्र की बुनियाद के बरअकस है। विरोध प्रदर्शनों से निपटने के तरीके को लेकर कोलंबिया की अध्यक्ष मिनोचे शफीक ने हिंसा की निंदा की और कहा कि कैंपस में शैक्षणिक स्वतंत्रता सुनिश्चित होनी चाहिए। कोलंबिया यूनिवर्सिटी में जब टैंट गाड़कर प्रदर्शनकारी अड़ गये, और पुलिस ने उसे खाली कराने के लिए जिस तरह से बल प्रयोग किया, उसे कोई भी अमन पसंद व्यक्ति सराह नहीं सकता। अमेरिका में प्रदर्शनकारियों को दोनों हाथों को पीछे कर हथकड़ी लगाकर ले जाने वाले विजुअल्स पूरी दुनिया देख रही है। वह किसी भी लोकतंत्रकामी को रास नहीं आ सकता। वही अमेरिका भारत को लोकतंत्र की नसीहत देता है।

अमेरिका में चुनाव तक गजा का सवाल विश्वविद्यालयों में गूंजता रहेगा। इसकी गूंज फ्रांस के शिक्षा केंद्रों में भी होने लगी है। क्या भारत में इसका वायरस फैलने वाला है? यह सवाल देश के कई कैंपसों से मिलना बाकी है। पिछले हफ्ते पेरिस के एक शीर्ष विश्वविद्यालय साइंसेज-पो में अमेरिका की देखादेखी फलस्तीनी समर्थक प्रदर्शन शुरू हुआ। इमैनुएल मैक्रों इस प्रदर्शन से इतने नाराज हुए कि साइंसेज-पो की फंडिंग ही निर्लंबित कर दी। साइंसेज-पो में राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों और उनके प्रधानमंत्री गाब्रिएल अट्टल पढ़ाई कर चुके हैं। लेकिन ऐसा फैसला लेते समय मैक्रों ने इसका लिहाज नहीं किया। गजा में जारी युद्ध, फ्रांस के लिए संवेदनशील मुद्दा है। फ्रांस पश्चिमी यूरोप के यहूदियों और प्रवासी मुसलमानों के लिए घर जैसा है, इसलिए दोनों तरफ से टकराव की स्थिति बनी रहती है।

फ्रांस के धुर वामपंथी एलएफआई (ला फ्रांस इंसोमाइज) के सांसदों ने छात्रों द्वारा विरोध प्रदर्शन का समर्थन किया है। मई दिवस के दिन ज्यों लुक मेलेन्कोल ने रूढ़िवादियों और मैक्रों सरकार के अवसरवादी व्यवहार की आलोचना की है। फ्रांसीसी प्रधानमंत्री गाब्रिएल अट्टल ने कहा कि बहस की गुंजाइश हमेशा रहती है, लेकिन साइंसेज-पो के शैक्षिक माहौल को अवरुद्ध करने वाले अल्पसंख्यक छात्र, बहुसंख्यकों पर अपने विचार थोप रहे थे। ऐसी विचारधारा को हम अटलांटिक पार से आयातित कह सकते हैं।

लेकिन इस समय जेरे बहस जो बाइडेन हैं, जिनके चुनाव के समय अमेरिकी विश्वविद्यालयों में जोरदार प्रदर्शन हो रहे हैं। 1 मई तक अमेरिका के 30 से अधिक कैंपसों में हुए प्रदर्शनों में 1400 से अधिक प्रदर्शनकारी गिरफ्तार किये गये हैं। गजा में नरसंहार रोकने के सवाल पर लगातार हुए प्रदर्शन को रोकने के वास्ते, और यहूदी विरोधी भावना से निपटने के लिए अमेरिकी कांग्रेस में बुधवार को एक विधेयक पास हुआ।

इसके पक्ष में 320 सांसद थे, और विरोध में 91. इक्कीस रिपब्लिकन और 70 डेमोक्रेट्स ने इसके खिलाफ मतदान किया था। बहुसंख्यक अमेरिकी जनता युद्धविराम के पक्ष में है, बावजूद इसके जो बाइडेन की जिद कहिए कि अमेरिका इस्राइल का समर्थन कर रहा है। इस समय न्यूयार्क स्थित कोलंबिया विश्वविद्यालय में तनाव की स्थिति है। बुधवार को संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक में इस्राइल के राजदूत गिलाद एर्दान ने छात्र प्रदर्शनकारियों की निंदा की। गिलाद एर्दान ने कहा, हम हमेशा से जानते थे कि हमास स्कूलों में छिपा हैड्ड हमें यह अहसास ही नहीं हुआ कि यह सिर्फ गाजा के स्कूलों में नहीं है, बल्कि अमेरिका में हार्वर्ड, कोलंबिया जैसे कुलीन विश्वविद्यालय भी इनके केंद्र हैं।

व्हाइट हाउस के प्रवक्ता जॉन किर्बी ने मंगलवार को संवाददाताओं से कहा कि राष्ट्रपति जो बाइडेन का मानना है कि छात्रों द्वारा एक शैक्षणिक भवन पर कब्जा करना बिल्कुल गलत है। इसे शांतिपूर्ण विरोध हम कतई नहीं कह सकते। डेमोक्रेट जमाल बोमन, जो कोलंबिया विश्वविद्यालय के पास न्यूयॉर्क जिले का प्रतिनिधित्व करते हैं, ने इसे रोकने का आह्वान किया। बोमन ने एक बयान में कहा, कॉलेज परिसरों का सैन्यीकरण, पुलिस की व्यापक उपस्थिति और सैकड़ों छात्रों की गिरफ्तारी, हमारे लोकतंत्र की बुनियाद के बरअकस है। विरोध प्रदर्शनों से निपटने के तरीके को लेकर कोलंबिया की अध्यक्ष मिनोचे शफीक ने हिंसा की निंदा की और कहा कि कैंपस में शैक्षणिक स्वतंत्रता सुनिश्चित होनी चाहिए। कोलंबिया यूनिवर्सिटी में जब टैंट गाड़कर प्रदर्शनकारी अड़ गये, और पुलिस ने उसे खाली कराने के लिए जिस तरह से बल प्रयोग किया, उसे कोई भी अमन पसंद व्यक्ति सराह नहीं सकता।

अमेरिका में प्रदर्शनकारियों को दोनों हाथों को पीछे कर हथकड़ी लगाकर ले जाने वाले विजुअल्स पूरी दुनिया देख रही है। वह किसी भी लोकतंत्रकामी को रास नहीं आ सकता। वही अमेरिका भारत को लोकतंत्र की नसीहत देता है। अफसोस, अमेरिका की बर्बर और बेहिस पुलिस पर सवाल करने की मनाही है। वर्ष 2005 में पेंटागन से वाशिंगटन डीसी के बाल्टीमोर तक मेट्रो के सफर को भूला नहीं हूं, जब बर्गर खा रहे एक स्कूली छात्र को पुलिस हथकड़ी लगाकर ले गई। अमेरिका में छोटी-छोटी बातों पर पुलिस द्वारा पिस्तौल तान देना, पटककर पीछे से हथकड़ी लगा देना सामान्य-सी बात है।

भारत में जघन्य आपराधिक मामलों वाले अभियुक्त को ही हथकड़ी लगाने का कोर्ट आदेश मिलता है। 80 के दशक में साधारण अपराध मामले में हथकड़ी पर रोक लगा दी गई थी। उमर खालिद को हथकड़ी लगाने के आवेदन को रद्द करते हुए दिल्ली की अदालत ने टिप्पणी की थी कि उमर कोई गैंगस्टर नहीं है। तो क्या लोकतंत्र का चौधरी बने अमेरिका को भारत से नसीहत लेने की जरूरत है? गजा के दमन चक्र के सवाल पर अमेरिकी कैंपस कुछ हफ्तों से छिटपुट प्रदर्शनों की चपेट में थे। लेकिन 22 अप्रैल, 2024 को यह प्रदर्शन फैल गया, जब न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय, येल विश्वविद्यालय, एमर्सन कॉलेज, मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) और टफ्ट्स विश्वविद्यालय सहित पूर्वी तट के कई परिसरों पर छात्रों ने टैंट लगाकर कब्जा करना शुरू कर दिया। 40 से अधिक कैंपसों में प्रोटेस्ट कैंप लगा देखकर सरकार के हाथ-पांव फूल चुके थे। प्रदर्शन स्थल पर टेंट गाड़ देने से जो बाइडेन प्रशासन की भृकुटि तन चुकी थी। कोलंबिया विश्वविद्यालय में तीन समूहों ने पिछले बुधवार को टेंट सिटी स्थापित की। ये समूह हैं स्टूडेंट फॉर जस्टिस इन फलस्तीन (एसजेपी), जेविश वॉयस फॉर पीस (जेवीपी) और विदीन ऑवर लाइफटाइम। छात्रों ने यूनिवर्सिटी प्रशासन से अपील की थी कि वह उन कंपनियों के साथ काम करना बंद करे, जो गजा में युद्ध का समर्थन कर रही हैं।

25 अप्रैल, 2024 को एमर्सन कॉलेज, दक्षिणी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय और टेक्सास विश्वविद्यालय में बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियां हुईं। प्रदर्शन यूरोप, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा में फैल गए। गत 27 अप्रैल को जारी कार्रवाई के कारण वाशिंगटन डीसी, एरिजोना और इंडियाना विश्वविद्यालयों में लगभग 275 गिरफ्तारियां हुईं। एमोरी विश्वविद्यालय में हिरासत में लिए गए लोगों में कई प्रोफेसर भी शामिल थे। वाशिंगटन विश्वविद्यालय में कर्मचारियों तक को गिरफ्तार किया गया था। लेकिन यह सब कुछ एकतरफा नहीं था। 28 अप्रैल को एमआईटी, पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजिल्स के यूसीएलए में जवाबी विरोध प्रदर्शन आयोजित किए गए। प्रोटेस्ट के जवाब में काउंटर प्रोटेस्ट। कौन करा रहा था, ये सब?चूंकि अमेरिका में यह चुनाव का वक्त है, वहां सबसे पॉवरफुल इस्राइल समर्थक लॉबी अमेरिकन इस्राइल पब्लिक अफेयर्स कमेटी (एआईपीएसी) जो बाइडेन के समर्थन में माहौल बनाने में लगी थी। उसके प्रयासों पर पानी फिर गया लगता है। एआईपीएसी के बरक्स यहूदी अरबपति जार्ज सोरोस खड़े हैं, जो इस्राइल के विरुद्ध प्रदर्शनों के लिए मोटी फंडिंग कर रहे हैं।

दैनिक
जलते दीप
जयपुर, शनिवार 4 मई 2024

इडी पर उठती अंगुलियां

इसमें कोई दोराय नहीं कि अगर कोई व्यक्ति कानून के विरुद्ध काम करता है तो उस पर कार्रवाई होना चाहिए। मगर कानून को अमल में लाने वाली कोई एजंसी अगर अपने अधिकारों को असीमित मानने लगे और उसके रवैये से मनमानी का संकेत मिलने लगे तो सवाल उठना स्वाभाविक है। पिछले कुछ समय से प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी की सक्रियता ने सबका ध्यान आकृष्ट किया है और यह धारणा बनी है कि भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों के खिलाफ कार्रवाई में तेजी आई है। मगर इसके साथ ही विपक्षी दलों ने कई बार सवाल उठाए हैं कि ईडी अपने अभियानों में सुविधा और आग्रहों के मुताबिक चुने हुए लोगों के खिलाफ कार्रवाई करती है और उसकी सक्रियता में एक खास तरह का आग्रह दिखता है। विपक्षी पार्टियों के आरोपों को यह मान कर नजरअंदाज कर दिया जा सकता कि वे अपने दल से संबंधित आरोपियों के बचाव में ईडी को कठघरे में खड़ा करती हैं। मगर यह भी सच है कि कई मौके पर खुद अदालतों की ओर से ईडी की कार्यशैली पर अंगुली उठाई गई है। सवाल है कि किसी कानून पर अमल को लेकर ईडी अगर ईमानदार है, तो बार-बार विपक्षी दलों से लेकर अदालतों तक की ओर से उसकी मंशा पर अंगुली क्यों उठ रही है! नौकरी के बदले जमीन के आरोपों से जुड़े एक मामले में राउज एवेन्यू कोर्ट की एक विशेष अदालत ने ईडी को फटकार लगाई और उसकी प्रक्रिया पर सवाल उठाते हुए कहा कि वह एक जांच एजंसी के रूप में कानून के नियमों से बंधी है और वैसे आम नागरिकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई नहीं कर सकती, जो संदिग्ध तक नहीं हैं। जाहिर है, यह ईडी के कामकाज के तौर-तरीकों पर एक बार फिर गहरा सवालिया निशान है, जो उसकी साख को कसौटी पर रखता है। अगर इससे शासन के काम का एक ढांचा तैयार होता है तो उसका लोकतंत्र और जनता के अधिकारों पर भी प्रभाव पड़ेगा। विडंबना यह है कि ईडी के रवैये की वजह से पिछले कुछ समय से इस संबंध में कई सवाल उठे हैं। शायद इसी वजह से अदालत ने यह भी कहा कि इतिहास से कोई सबक सीखना है तो यह देखना चाहिए कि मजबूत नेता, कानून और एजंसियां आमतौर पर उन्हीं नागरिकों को निशाना बनाती हैं, जिनकी रक्षा का वे संकल्प लेती हैं। इस टिप्पणी को जनता के अधिकार और राज्य के कर्तव्य के संदर्भ में देखा जा सकता है, जिसमें उम्मीद की जाती है कि लोगों के मौलिक अधिकारों का हनन नहीं किया जाएगा। करीब एक वर्ष पहले सुप्रीम कोर्ट की ओर से भी ईडी को यह सलाह दी गई थी कि वह अपनी कार्यशैली से भय का माहौल पैदा न करे। शीर्ष अदालत की टिप्पणी इस बात का इशारा थी कि एजंसी को राजनीतिक विरोधियों पर लगे आरोपों की जांच को लेकर संतुलित रुख अख्तियार करने की जरूरत है। आखिर ऐसी शिकायतों की नौबत क्यों आनी चाहिए कि किसी एजंसी के अधिकारियों के पेश आने का तरीका कई बार भयादोहन की तरह लगने लगता है। इस तरह के व्यवहार का एक स्वाभाविक नतीजा यह होता है कि वास्तविक कारण भी संदिग्ध लगने लगते हैं। ऐसे में ईडी के सामने यह विचार करने का वक्त है कि विपक्षी दलों से लेकर अदालतों तक के बीच उसकी कार्यशैली को लेकर जैसी राय बन रही है, वह उसकी साख को किस हद तक प्रभावित कर रही है और उसे अपने तौर-तरीके में क्या सुधार करने की जरूरत है!

टैक्स सिस्टम में सुधार के प्रयास

यह सुखद ही है कि देश कर संग्रहण सिस्टम में सुधार की दिशा में सार्थक पहल से एक कदम आगे बढ़ा है। देश में पहली बार जीएसटी का संग्रहण दो लाख करोड़ रुपये से पार चला गया है। कर विशेषज्ञ इसे टैक्स सिस्टम में सुधार के प्रयासों की सफलता बता रहे हैं। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था का भविष्य उसके समृद्ध आर्थिक संसाधनों पर ही निर्भर होता है। भारत के अड़ोस-पड़ोस के कई देशों की अर्थव्यवस्था नियोजन के अभाव, भ्रष्टाचार तथा लोकलुभावन नीतियों के व्यय बोझ से चरमरा गई। इसलिये आर्थिक अनुशासन और वित्तीय संसाधनों को समृद्ध करने का प्रयास बेहद जरूरी हो जाता है। यहां उल्लेखनीय है कि अप्रैल में जहां देसी गतिविधियों से कर संग्रह में 13.4 फीसदी का इजाफा हुआ है, वहीं पिछले अप्रैल के मुकाबले में आयात से होने वाला राजस्व संग्रह भी 8.3 फीसदी बढ़ा है। निश्चय ही चालू वित्त वर्ष के पहले ही महीने यानी अप्रैल में सकल वस्तु एवं सेवा कर संग्रह पहली बार रिकॉर्ड 2.1 लाख करोड़ रुपये होना अर्थव्यवस्था के लिये शुभ संकेत है, जबकि दुनिया की कई बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में फिलहाल मंदी के रुझान नजर आ रहे हैं। यह वृद्धि बीते साल अप्रैल में एकत्र जीएसटी के मुकाबले 12.4 फीसदी अधिक है। आर्थिक विशेषज्ञ मान रहे हैं कि वैश्विक स्तर पर उथल-पुथल के बीच रूस-यूक्रेन युद्ध तथा गजा में हमास इस्राइल संघर्ष जैसी बाह्य चुनौतियों के बावजूद चालू वित्त वर्ष में जीएसटी संग्रह में वृद्धि देश की आर्थिक उन्नति के लिये अच्छा संकेत है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि कर प्राप्तियों में बढ़ोतरी के मूल में आर्थिक गतिविधियों में तेजी के रुझानों का असर है। उल्लेखनीय है कि वृद्धि आयात उपकर में भी हुई है। वैसे एक तथ्य यह भी है कि आम तौर पर किसी भी नये वित्तीय वर्ष में पहले माह अप्रैल में सरकार को सर्वाधिक वस्तु एवं सेवा कर मिलता है। इस वित्त वर्ष के आने वाले महीनों में जीएसटी संग्रहण से होने वाली आय से अर्थव्यवस्था के स्थायी रुझानों का पता चल सकेगा। निश्चित रूप से आने वाले महीनों में यह देखना दिलचस्प होगा कि किन-किन महीनों में जीएसटी संग्रह दो लाख करोड़ रुपये का आकंड़ा पार करता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि अप्रैल माह में केंद्रीय जीएसटी में इस बार 27.8 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ संग्रहीत राशि 94,153 करोड़ रुपये रही। दूसरी ओर राज्य जीएसटी संग्रह में आशातीत 25.9 फीसदी की वृद्धि हुई। इस तरह राज्यों की जीएसटी संग्रह राशि 95,138 करोड़ हो गई। यानी राजस्व प्राप्ति की राह में राज्यों की भागीदारी में भी सुधार देखा गया है। केंद्रशासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर, लक्षद्वीप और अंडमान निकोबार, सिक्किम, मेघालय नगालैंड को छोड़कर सभी राज्यों में इस साल के पहले महीने जीएसटी राजस्व में वृद्धि हुई है। आर्थिक विशेषज्ञ जीएसटी वृद्धि के मूल में उपभोक्ता उत्पादों की ज्यादा खपत का योगदान बता रहे हैं। गर्मी बढ़ने की चिंता में उपभोक्ता बड़े पैमाने पर एसी व फ्रिज आदि खरीदते हैं। बच्चों के शैक्षिक सत्र समापन के चलते बच्चों की छुट्टियों में पर्यटन बढ़ने को भी एक वजह माना जा रहा है। निस्संदेह, लंबी यात्राओं के चलते आर्थिक गतिविधियों में तेजी आती है। वहीं आम चुनावों के चलते चुनाव प्रक्रिया में जुड़े व्यवसायों की आय में हुई वृद्धि की भी इसमें भूमिका हो सकती है। वहीं दूसरी ओर हमें मानना होगा कि वित्तीय नियामक एजेंसियों की सक्रियता तथा जीएसटी अधिकारियों द्वारा प्रशासनिक सुधारों को प्राथमिकता देने से भी जीएसटी संग्रह में वृद्धि का रुझान देखा जा सकता है। इसमें जहां रिटर्न भरने के लिये सख्ती, फर्जी चालान पर अंकुश, पंजीकरण की अनिवार्यता को लेकर सख्ती से भी वस्तु-सेवा कर संग्रहण में वृद्धि हुई है। विश्वास जताया जा रहा है कि जीएसटी राजस्व में वृद्धि से उत्साहित नई सरकार कर उगाही व्यवस्था में बदलाव के लिये नई पहल कर सकती है। सरकार दावा कर सकती है कि 'एक देश, एक कर' की सोच सार्थक परिणाम लेकर सामने आ रही है। जो इस क्षेत्र में नये सुधारों का मार्ग भी प्रशस्त कर रही है।

प्रसंगतः समय का उपयोग

एक बार प्रसिद्ध अंग्रेजी साहित्यकार डॉ. जॉन से उनके एक मित्र ने अपनी परेशानियों का बखान करते हुए कहा, देखिए दिन-रात में कुल मिलाकर २४ घंटे होते हैं। इनमें से ८ घंटे सोने में, ८ घंटे ऑफिस में और बाकी ८ घंटों में न जाने कितने काम करने पडते हैं। खाना-पीना, हजामत बनाना, भेंट-मुलाकात, पत्र व्यवहार जैसे काम इन्हीं ८ घंटों में निपटाने पडते हैं। मैं तो बेहद परेशान हो जाता हूं। इतनी व्यस्त जिंदगी में लाख इच्छा रहने पर भी मैं न किसी धार्मिक चर्चा में शामिल हो पाता हूं, न धर्मग्रन्थों को पढ़ने के लिए ही अवकाश निकाल पाता हूं। इनसे पीछा छूटे तभी धार्मिक क्रियाकलापों में लगूंगा। डॉ. जॉनसन मुस्कराए और बोले तब तो लगता है मुझे भूखों मरना पड़ेगा। ' क्यों?' मित्र ने पूछा। डॉ. जॉनसन ने कहा, आप जानते हैं कि मैं अधिक खाने वाला व्यक्ति हूं। लेकिन दुनिया में अन्न उपजाने के लिए सिर्फ एक चौथाई जमीन है। उसमें भी न जाने कितने पहाड, समुद्र, नदियां और रेगिस्तान हैं जबकि संसार में मेरे जैसे पेट भरने वाले करोडों हैं। मित्र बोला आप तो व्यर्थ ही परेशान होते हैं। दुनिया में सदा से करोडों लोग रहते आए हैं। उनके भोजन का इंतजाम भी होता आया है। फिर आप किसलिए चिंता कर रहे हैं। यह सुनकर डॉ. जॉनसन बोले आप ठीक कहते हैं। यदि मेरे जीवन का प्रबंध हो सकता है तो फिर कोई कारण नहीं है कि आपको धार्मिक समारोह में शामिल होने व धर्मग्रंथ पढ़ने का समय न मिले। मित्र निरुत्तर हो गया. एक बार यूनान के विख्यात दार्शनिक प्लेटो से किसी ने पूछा आपके पास दुनिया के कोने-कोने से बडे-बडे विद्वान कुछ न कुछ सीखने आते हैं। फिर यह क्या बात है कि आप इतने महान दार्शनिक होकर भी दूसरों से सीखने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। आप किसी से भी कुछ सीखने लग जाते हैं। आखिर आप कब तक सीखते रहेंगे? प्लेटो ने सहज भाव से उत्तर दिया जब तक दूसरों से सीखने में मुझे शर्म नहीं आएगी तब तक।

शंकाओं के समाधान करने की पहल जरूरी

- डॉ. शशांक द्विवेदी

कोविड वैक्सीन कोविशील्ड को लेकर देश-दुनिया में कई तरह के सवाल उठाए जा रहे हैं। ब्रिटेन की फार्मा कंपनी एस्ट्राजेनेका ने माना है कि उनकी कोविड-19 वैक्सीन से साइड इफेक्ट्स हो सकते हैं। हालांकि, ऐसा बहुत दुर्लभ मामलों में ही होगा। एस्ट्राजेनेका का जो फॉर्मूला था उसी से भारत में सीरम इंस्टिट्यूट ने कोविशील्ड नाम से वैक्सीन बनाई है। ब्रिटिश हाईकोर्ट में जमा दस्तावेजों में कंपनी ने माना है कि उसकी कोरोना वैक्सीन से कुछ मामलों में थ्रॉम्बोसिस थ्रॉम्बोसाइटोपेनिया सिंड्रोम यानी टीटीएस हो सकता है। इस बीमारी से शरीर में खून के थक्के जम जाते हैं और प्लेटलेट्स की संख्या गिर जाती है।

अप्रैल, 2021 में जेमी स्कॉट नाम के शख्स ने यह वैक्सीन लगवाई थी। इसके बाद उनकी हालत खराब हो गई। शरीर में खून के थक्के बनने का सीधा असर उनके दिमाग पर पड़ा। इसके अलावा स्कॉट के ब्रेन में इंटर्नल ब्लीडिंग भी हुई। रिपोर्ट के मुताबिक, डॉक्टरों ने उनकी पत्नी से कहा था कि वो स्कॉट को नहीं बचा पाएंगे। पिछले साल स्कॉट ने एस्ट्राजेनेका के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई। मई, 2023 में स्कॉट के आरोपों के जवाब में कंपनी ने दावा किया था कि उनकी वैक्सीन से टीटीएस नहीं हो सकता है। हालांकि, इस साल फरवरी में हाईकोर्ट में जमा किए दस्तावेजों में कंपनी इस दावे से पलट गई।

उल्लेखनीय है कि सुरक्षा संबंधित मामलों को देखते हुए यूके में अब ऑक्सफोर्ड-एस्ट्राजेनेका की वैक्सीन इस्तेमाल नहीं की जाती है। हालांकि, कई इंडिपेंडेट स्टडीज में इस वैक्सीन को महामारी से निपटने में बेहद कारगर बताया गया। वहीं, साइड इफेक्ट्स के मामलों की वजह से इस वैक्सीन के खिलाफ जांच शुरू की गई और कानूनी कार्रवाई हुई।

कोरोना से बचाने में कोविड वैक्सीन को काफी मददगार माना गया। मगर ब्रिटिश फार्मा कंपनी की एस्ट्राजेनेका ने एक मामले में कबूला कि उसकी वैक्सीन के दुर्लभ साइड इफेक्ट में हार्ट अटैक हो सकता है। भारत में बड़े पैमाने पर इसे कोविशील्ड के नाम से लगवाया गया है।

मॉडर्न लाइफ स्टाइल में ज्यादातर लोग घंटों ऑफिस में एक जगह बैठकर काम करते हैं, जिसके कारण कई सारी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। जब आप काफी देर तक एक ही जगह बैठे रहते हैं तो शरीर में खून के थक्के जमने की समस्या बढ़ जाती है। शरीर में खून के थक्के जमना को 'वेन थ्रोम्बोसिस' की बीमारी कहते हैं।

ब्लड क्लॉटिंग की बीमारी किसी भी व्यक्ति के शरीर में हो सकती है। काफी ज्यादा एक जगह बैठने के कारण यह बीमारी हो सकती है। हालांकि, यह बीमारी खतरनाक रूप तब ले लेती है जब ब्लड क्लॉट्स का एक हिस्सा टूट जाता है और फेफड़ों तक पहुंच जाता है। इसे पल्मोनरी एम्बोलिज्म कहते हैं।

थ्रोम्बोसिस के कारण हार्ट अटैक, ब्रेन स्ट्रोक और प्लेटलेट्स गिरने का खतरा बढ़ जाता है। दिल का दौरा (मायोकार्डियल इन्फ्रक्शन) बेहद खतरनाक स्थिति है, जिसमें दिल की एक या उससे अधिक धमनियों में ब्लॉकेज होने लगते हैं। इसके कारण हार्ट अटैक का खतरा बढ़ जाता है। दिल में सही तरीके से ऑक्सीजन नहीं पहुंच पाता है, जिसके कारण खून के थक्के जमने लगते हैं और बाद में हार्ट अटैक पड़ जाता है। ब्रेन स्ट्रोक की स्थिति में भी यही होता है कि ब्रेन में ब्लड ठीक तरीके से नहीं पहुंच पाता है। दिमाग में ऑक्सीजन की कमी के कारण ब्रेन स्ट्रोक का खतरा बढ़ जाता है।

खास बात यह है कि इस वैक्सीन का इस्तेमाल अब ब्रिटेन में नहीं हो रहा है। टेलीग्राफ की रिपोर्ट के मुताबिक, बाजार में आने के कुछ महीनों बाद वैज्ञानिकों ने इस वैक्सीन के खतरे को भांप लिया था। सुझाव दिया गया था कि 40 साल से कम उम्र के लोगों को दूसरी किसी वैक्सीन का भी डोज दिया जाए। ऐसा इसलिए क्योंकि एस्ट्राजेनेका की वैक्सीन से होने वाले नुकसान कोरोना के खतरे से ज्यादा थे।

मेडिसिन हेल्थकेयर प्रोडक्ट्स रेगुलेटरी (एमएचआरए) के मुताबिक ब्रिटेन में 81 मामले ऐसे हैं, जिनमें इस बात की आशंका है कि वैक्सीन की वजह से खून के थक्के जमने से लोगों की मौत हो गई। एमएचआरए के मुताबिक, साइड इफेक्ट से जूझने वाले हर 5 में से एक व्यक्ति की मौत हुई है।

रिपोर्ट के मुताबिक, फ्रीडम ऑफ इन्फॉर्मेशन के जरिए हासिल किए गए आंकड़ों के मुताबिक ब्रिटेन में फरवरी में 163 लोगों को सरकार ने मुआवजा दिया था। इनमें से 158 ऐसे थे, जिन्होंने एस्ट्राजेनेका की वैक्सीन लगवाई थी।

दूसरा पहलू यह है कि कोरोना के समय में इसी वैक्सीन ने लाखों लोगों की जान भी बचाई थी। कई स्टडीज में यह साबित हुआ है कि कोरोना महामारी के दौरान एस्ट्राजेनेका की वैक्सीन आने के बाद पहले साल में ही इससे करीब 60 लाख लोगों की जान बची है। वर्ल्ड हेल्थ ने भी कहा था कि 18 साल या उससे ज्यादा की उम्र वाले लोगों के लिए यह वैक्सीन सुरक्षित और असरदार है। इसकी लॉन्चिंग के वक्त ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने इसे ब्रिटिश साइंस के लिए एक बड़ी जीत बताया था। भारत में इसी फॉर्मूले से बनी कोविशील्ड के 175 करोड़ डोज लगे। फ़िलहाल कोविशील्ड की यह खबर आने के बाद लोगों की चिंता बढ़ गयी है। कुल मिलाकर इस संवेदनशील मामले में स्वास्थ्य मंत्रालय को स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए।

(लेखक मेवाड़ यूनिवर्सिटी में डायरेक्टर हैं।)

अमन की फिजा में कश्मीर घाटी की अवाम भी करेगी मतदान

- आर.के. सिन्हा

श्रीनगर के जिस लाल चौक पर कुछ साल पहले तक सिर्फ सुरक्षा बलों के जवानों के ही झुंड के झुंड दिखाई दिया करते थे, वहां आजकल लोकसभा चुनाव को लेकर स्थानीय लोग खुलकर राजनीतिक चर्चाएं कर रहे हैं। कश्मीर घाटी में अनुच्छेद 370 को हटाये जाने के बाद पहली बार कोई चुनाव हो रहे हैं। तब से घाटी की स्थिति में भी अभूतपूर्व बदलाव आया है। घाटी में आतंकवाद जब चरम पर चल रहा था, तब बड़ी संख्या में कश्मीरी पंडितों और अन्य लोग वहां से भागकर दिल्ली और दूसरे राज्यों में शरण ली थी। तब इनके सामने विस्थापन का संकट झेलने से लेकर अनिश्चित भविष्य की मुश्किलों का सामना करने के अलावा कोई दिशा या रास्ता भी तो नहीं था।

साल 2019 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गृहमंत्री अमित शाह ने अनुच्छेद 370 को समाप्त करने की घोषणा की थी। तबसे कश्मीरी हिन्दुओं में एक उम्मीद जगी है। तब से उन्हें यही महसूस हो रहा है कि अब वे किस तरह अपने कश्मीर जाकर फिर से अपनी जड़ों की ओर लौट सकेंगे। कश्मीर घाटी में आतंकवाद के दौर के बाद लाखों पंडितों ने अपमान और अत्याचार के दौर में घाटी को छोड़ा था। वे आगामी 13 मई को अपना वोट राजधानी के पृथ्वीराज रोड पर स्थित जम्मू-कश्मीर हाउस में जाकर डालेंगे। उस दिन श्रीनगर सीट के लिए वोटिंग होनी है। यहां कश्मीरी पंडितों को लोकसभा चुनाव के लिए मतदान करने की सुविधा दी गई है। इसके बाद 20 मई (बारामूला) और 25 मई को (अनंतनाग- राजौरी) में मतदान होगा। तब भी राजधानी और इसके आसपास रहने वाले कश्मीरी पंडित यहां आकर अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकेंगे। सरकार का कहना है कि जम्मू-कश्मीर में जल्द ही विधानसभा चुनाव भी कराकर वहां की जनता की चुनी हुई सरकार को लाने और विकास कार्य में तेजी लाकर देश की मुख्यधारा से राज्य को जोड़ने के लिए प्रयास शुरू हो चुके हैं।

लोकसभा चुनाव के लिए प्रचार अभियान में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल ही में राज्य के अपने दौरे में इस बात को साफ तौर पर कहा भी था। साल 2019 में अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद प्रधानमंत्री मोदी का राज्य का यह पहला दौरा था। श्रीनगर के बख्शी स्टेडियम में प्रधानमंत्री मोदी को सुनने के लिए करीब दो लाख लोग पहुंचे। इस मौके पर प्रधानमंत्री मोदी ने विस्तार से बताया था कि कैसे उनकी सरकार जम्मू-कश्मीर के हालात को बदलने और वहां के युवाओं के लिए भविष्य को संवारने के लिए काम कर रही है। राजधानी और एनसीआर में आज भी हजारों कश्मीरी पंडित रहते हैं।

ये अधिकतर दक्षिण दिल्ली में ही रहते हैं। दिल्ली में रहने वाले कश्मीरी प्रवासियों को सरकार की ओर से हर महीने मासिक राहत पैकेज दिया जाता है। पहले यह 10,000 रुपये था, लेकिन पिछले साल 2023 में दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने इसको 10,000 रुपये से बढ़ाकर 27,000 रुपये प्रति माह कर दिया था। उप राज्यपाल ने दिल्ली सरकार के कश्मीरी प्रवासी कार्डों में नाम जोड़ने को भी मंजूरी दे दी थी। इससे प्रवासियों के बड़े और विवाहित बच्चों को अपने स्वयं के कश्मीरी प्रवासी कार्ड प्राप्त करने और एएमआर के लिए पात्र बनने की अनुमति मिल गई।

उग्रवाद के दौरान विस्थापित हुए कश्मीरी परिवारों के राहत और पुनर्वास के लिए सरकार 1989-90 में एडहॉक मंथली रीलिफ (एएमआर) शुरू की थी। 16 साल बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दिल्ली में रह रहे कश्मीर लोगों के लिए इसको बढ़ाकर कश्मीरियों के लिए एक बड़ी राहत दी है। इससे पहले 2007 में सरकार ने एएमआर को 5,000 रुपये से बढ़ाकर 10,000 रुपये कर दिया था। राहत पाने वालों की संख्या भी इस बीच काफी बढ़ी है। शुरू में जितने कश्मीरी परिवार दिल्ली में थे, अब तो उसमें काफी इजाफा हो गया है।

राजधानी के जामिया मिल्लिया इस्लामिया समेत राजधानी के तमाम विश्वविद्यालयों और कालेजों में बड़ी संख्या में कश्मीरी छात्र-छात्राएं पढ़ते हैं। काफी लोग विभिन्न सरकारी सेवाओं की प्रतियोगिताओं की तैयारी में जुटे हैं। सिविल सर्विस से लेकर सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों में काफी कश्मीरी युवक-युवतियां नौकरी भी कर रहे हैं। बड़ी संख्या में घाटी के युवक और युवतियां यहां अपना खुद का व्यवसाय कर रहे है। दिल्ली के अलावा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और दिल्ली से सटे दूसरे शहरों में भी कश्मीर से विस्थापित बड़ी संख्या में लोग रह रहे हैं। राजधानी में रह रहे कश्मीरी समुदाय का मानना है कि वर्षों बाद उनमें एक उम्मीद की किरण जगी है। घाटी से विस्थापन के बाद कश्मीरी दंपतियों के दिल्ली में जन्म लेने वाले बच्चे भी अब बड़े हो गए हैं। वे भी अब अपने पूर्वजों की जगह कश्मीर को जाकर देखना चाहते हैं।

इस बीच, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा है कि सरकार जम्मू-कश्मीर से सशस्त्र बल विशिष्ट शक्ति (विशेष शक्तियां) अधिनियम कानून (एएफएसपीए) को भी रद्द करने पर विचार कर रही है। सरकार केंद्रशासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर से सैनिकों को वापस बुलाने की योजना बना रही है और कश्मीर की कानून व्यवस्था को अब पूरी तरह जम्मू-कश्मीर पुलिस के हवाले किया जाएगा। सरकार भी मान रही है कि जम्मू कश्मीर में आतंकियों का मूवमेंट कम हुआ है। आंकड़े बताते हैं कि आतंकवाद में 80 फीसदी कमी आई है। पत्थरबाजी की घटनाएं तो पूरी तरह खत्म ही हो गई हैं। बंद, प्रदर्शन और हड़तालें भी नहीं हो रही हैं। गृहमंत्री ने कहा, 2010 में पथराव की 2564 घटनाएं हुई थीं, जो अब शून्य हैं। 2004 से 2014 तक मौतों की कुल संख्या 2829 थी और 2014-23 के दौरान यह घटकर 915 हो गई है। यह 68 प्रतिशत की कमी है। नागरिकों की मृत्यु 1770 थी और घटकर 341 हो गई है, जो 81 प्रतिशत की गिरावट है। सुरक्षा बलों की मौतें 1060 से घटकर 574 हो गईं, जो 46 प्रतिशत की कमी है। मोदी सरकार ने आतंकवादी गतिविधियों में शामिल 12 संगठनों पर प्रतिबंध लगाया है। 36 लोगों को आतंकवादी घोषित किया है। टेरर फंडिंग को रोकने के लिए 22 से ज्यादा मामले दर्ज किए हैं और 150 करोड़ रुपये की संपत्ति भी जब्त की है। 90 संपत्तियां भी कुर्क की गईं और 134 बैंक खाते फ्रीज कर दिए गए हैं। एक बात बहुत साफ है कि सरकार देश विद्रोही ताकतों को कुचलने के लिए तैयार है और जो वार्ता करना चाहता है उसका सदैव स्वागत भी है। हां, उसे वार्ता संविधान के दायरे में आकर करनी होगी। बातचीत की प्रक्रिया में हुर्रियत कॉन्फ्रेंस जैसे अलगाववादी संगठनों का कोई स्थान नहीं है। कहना न होगा कि अब देश बदला-बदला सा जम्मू-कश्मीर देख रहा है।

(लेखक, वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं।)

छात्र आंदोलन और अमेरिकी सख्ती पर सवाल

- पुष्परंजन

अमेरिका में चुनाव तक गज़ा का सवाल विश्वविद्यालयों में गूंजता रहेगा। इसकी गूंज फ्रांस के शिक्षा केंद्रों में भी होने लगी है। क्या भारत में इसका 'वायरस' फैलने वाला है? यह सवाल देश के कई कैंपसों से मिलना बाक़ी है। पिछले हफ्ते पेरिस के एक शीर्ष विश्वविद्यालय 'साइंसेज-पो' में अमेरिका की देखादेखी फलस्तीनी समर्थक प्रदर्शन शुरू हुआ। इमैनुएल मैक्रों इस प्रदर्शन से इतने नाराज़ हुए कि 'साइंसेज-पो' की फंडिंग ही निलंबित कर दी। 'साइंसेज-पो' में राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों और उनके प्रधानमंत्री गाब्रिएल अट्टल पढ़ाई कर चुके हैं। लेकिन ऐसा फैसला लेते समय मैक्रों ने इसका लिहाज़ नहीं किया। गज़ा में जारी युद्ध, फ्रांस के लिए संवेदनशील मुद्दा है। फ्रांस पश्चिमी यूरोप के यहूदियों और प्रवासी मुसलमानों के लिए घर जैसा है, इसलिए दोनों तरफ़ से टकराव की स्थिति बनी रहती है। फ्रांस के धुर वामपंथी एलएफआई (ला फ्रांस इंसोमाइज) के सांसदों ने छात्रों द्वारा विरोध प्रदर्शन का समर्थन किया है। मई दिवस के दिन ज्यों लुक मेलेन्कोल ने रूढ़िवादियों और मैक्रों सरकार के अवसरवादी व्यवहार की आलोचना की है। फ्रांसीसी प्रधानमंत्री गाब्रिएल अट्टल ने कहा कि बहस की गुंजाइश हमेशा रहती है, लेकिन 'साइंसेज-पो' के शैक्षिक माहौल को अवरुद्ध करने वाले अल्पसंख्यक छात्र, बहुसंख्यकों पर अपने विचार थोप रहे थे। ऐसी विचारधारा को हम 'अटलांटिक पार से आयातित' कह सकते हैं। लेकिन इस समय ज़ेरे बहस जो बाइडेन हैं, जिनके चुनाव के समय अमेरिकी विश्वविद्यालयों में जोरदार प्रदर्शन हो रहे हैं। 1 मई तक अमेरिका के 30 से अधिक कैंपसों में हुए प्रदर्शनों में 1400 से अधिक प्रदर्शनकारी गिरफ्तार किये गये हैं। गज़ा में नरसंहार रोकने के सवाल पर लगातार हुए प्रदर्शन को रोकने के वास्ते, और यहूदी विरोधी भावना से निपटने के लिए अमेरिकी कांग्रेस में बुधवार को एक विधेयक पास हुआ। इसके पक्ष में 320 सांसद थे, और विरोध में 91. इक्कीस रिपब्लिकन और 70 डेमोक्रेट्स ने इसके खिलाफ मतदान किया था। बहुसंख्यक अमेरिकी जनता युद्धविराम के पक्ष में है, बावजूद इसके जो बाइडेन की ज़िद कहिए कि अमेरिका इस्राइल का समर्थन कर रहा है। इस समय न्यूयार्क स्थित कोलंबिया विश्वविद्यालय में तनाव की स्थिति है। बुधवार को संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक में इस्राइल के राजदूत गिलाद एर्दान ने छात्र प्रदर्शनकारियों की निंदा की। गिलाद एर्दान ने कहा, 'हम हमेशा से जानते थे कि हमास स्कूलों में छिपा हैज हमें यह अहसास ही नहीं हुआ कि यह सिर्फ गाजा के स्कूलों में नहीं है, बल्कि अमेरिका में हार्वर्ड, कोलंबिया जैसे कुलीन विश्वविद्यालय भी इनके केंद्र हैं।' व्हाइट हाउस के प्रवक्ता जॉन किर्बी ने मंगलवार को संवाददाताओं से कहा कि राष्ट्रपति जो बाइडेन का मानना है कि छात्रों द्वारा एक शैक्षणिक भवन पर कब्जा करना बिल्कुल गलत है। इसे शांतिपूर्ण विरोध हम कतई नहीं कह सकते। डेमोक्रेट जमाल बोमन, जो कोलंबिया विश्वविद्यालय के पास न्यूयॉर्क जिले का प्रतिनिधित्व करते हैं, ने इसे रोकने का आह्वान किया। बोमन ने एक बयान में कहा, 'कॉलेज परिसरों का सैन्यीकरण, पुलिस की व्यापक उपस्थिति और सैकड़ों छात्रों की गिरफ्तारी, हमारे लोकतंत्र की बुनियाद के बरअकस है। विरोध प्रदर्शनों से निपटने के तरीके को लेकर कोलंबिया की अध्यक्ष मिनोचे शफीक ने हिंसा की निंदा की और कहा कि कैंपस में शैक्षणिक स्वतंत्रता सुनिश्चित होनी चाहिए। कोलंबिया यूनिवर्सिटी में जब टैंट गाड़कर प्रदर्शनकारी अड़ गये, और पुलिस ने उसे ख़ाली कराने के लिए जिस तरह से बल प्रयोग किया, उसे कोई भी अमन पसंद व्यक्ति सराह नहीं सकता। अमेरिका में प्रदर्शनकारियों को दोनों हाथों को पीछे कर हथकड़ी लगाकर ले जाने वाले विज़ुअल्स पूरी दुनिया देख रही है। वह किसी भी लोकतंत्रकामी को रास नहीं आ सकता। वही अमेरिका भारत को लोकतंत्र की नसीहत देता है।

अफ़सोस, अमेरिका की बर्बर और बेहिस पुलिस पर सवाल करने की मनाही है। वर्ष 2005 में पेंटागन से वाशिंगटन डीसी के बाल्टीमोर तक मेट्रो के सफ़र को भूला नहीं हूं, जब बर्गर खा रहे एक स्कूली छात्र को पुलिस हथकड़ी लगाकर ले गई। अमेरिका में छोटी-छोटी बातों पर पुलिस द्वारा पिस्तौल तान देना, पटककर पीछे से हथकड़ी लगा देना सामान्य-सी बात है। भारत में जघन्य आपराधिक मामलों वाले अभियुक्त को ही हथकड़ी लगाने का कोर्ट आदेश मिलता है। 80 के दशक में साधारण अपराध मामले में हथकड़ी पर रोक लगा दी गई थी। उमर ख़ालिद को हथकड़ी लगाने के आवेदन को रद्द करते हुए दिल्ली की अदालत ने टिप्पणी की थी कि उमर कोई गैंगस्टर नहीं है। तो क्या लोकतंत्र का चौधरी बने अमेरिका को भारत से नसीहत लेने की ज़रूरत है? गज़ा के दमन चक्र के सवाल पर अमेरिकी कैंपस कुछ हफ्तों से छिटपुट प्रदर्शनों की चपेट में थे। लेकिन 22 अप्रैल, 2024 को यह प्रदर्शन फैल गया, जब न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय, येल विश्वविद्यालय, एमर्सन कॉलेज, मैसाचुसेट्स इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) और टफ्ट्स विश्वविद्यालय सहित पूर्वी तट के कई परिसरों पर छात्रों ने टैंट लगाकर कब्जा करना शुरू कर दिया। 40 से अधिक कैंपसों में 'प्रोटेस्ट कैंप' लगा देखकर सरकार के हाथ-पांव फुल चुके थे। प्रदर्शन स्थल पर टेंट गाड़ देने से जो बाइडेन प्रशासन की भृकुटि तन चुकी थी। कोलंबिया विश्वविद्यालय में तीन समूहों ने पिछले बुधवार को 'टेंट सिटी' स्थापित की। ये समूह हैं स्टूडेंट फॉर जस्टिस इन फलस्तीन (एसजेपी), जेविश वॉयस फॉर पीस (जेवीपी) और विदीन ऑवर लाइफटाइम। छात्रों ने यूनिवर्सिटी प्रशासन से अपील की थी कि वह उन कंपनियों के साथ काम करना बंद करे, जो गज़ा में युद्ध का समर्थन कर रही हैं। 25 अप्रैल, 2024 को एमर्सन कॉलेज, दक्षिणी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय और टेक्सास विश्वविद्यालय में बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियां हुईं। प्रदर्शन यूरोप, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा में फैल गए। गत 27 अप्रैल को जारी कार्रवाई के कारण वाशिंगटन डीसी, एरिजोना और इंडियाना विश्वविद्यालयों में लगभग 275 गिरफ्तारियां हुईं। एमोरी विश्वविद्यालय में हिरासत में लिए गए लोगों में कई प्रोफेसर भी शामिल थे। वाशिंगटन विश्वविद्यालय में कर्मचारियों तक को गिरफ्तार किया गया था। लेकिन यह सब कुछ एकतरफा नहीं था। 28 अप्रैल को एमआईटी, पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजिल्स के यूसीएलए में जवाबी विरोध प्रदर्शन आयोजित किए गए।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

सम्पादकीय

बच्चों के हाथ में मोबाइल नहीं हम बर्बादी दे रहे

हर दूसरे बच्चे की आंख पर चश्मा है। हर पांचवां बच्चा आज विपरीत लिंग के आकर्षण से बंधा है। वह बच्चा अब बच्चा नहीं रहा। वह सब कुछ जान चुका है और इसमें भूमिका है उसके हाथ में रखे मोबाइल फोन की। कई बार सुनने में आता है कि बच्चा सिर्फ इसलिए घर से भाग गया कि उसके परिजनों ने मोबाइल छीन लिया था। राजस्थान में तो मोबाइल छीनने के चलते कई बच्चों ने आत्महत्या कर डाली या फिर अपने परिजनों पर हाथ ही उठा लिया। मोबाइल के रूप में उसके पास अश्लीलता का पूरा संसार है। एक रिपोर्ट सार्वजनिक हुई है। ताज्जुब करेंगे जानकर कि अश्लील वीडियो सर्च करने के मामले में देश में राजस्थान नंबर एक पर है। इंटरनेट ट्रैफिक ट्रेंड और पूरी दुनिया में अश्लील वेबसाइट और कंटेंट निगरानी रखने वाली संस्था एनसीएमईसी के अनुसार भारत में इन दिनों अश्लील वेबसाइट व कंटेंट कुछ फेमस सोशल मीडिया वेबसाइट व ओटीटी वेबसाइट से भी ज्यादा सर्च की जा रही हैं। जनवरी से अप्रैल माह तक का ट्रेंड देखें तो टॉप-10 वेबसाइट में दो गंदी वेबसाइट है। टॉप-10 में शामिल दो अश्लील वेबसाइट पर भारत से हर माह 100 करोड़ से ज्यादा विजिट हो रहे हैं। जो पूरी दुनिया के ट्रैफिक का 60 प्रतिशत से ज्यादा है। देखने का समय औसतन 10 मिनट है। एनसीआरबी के सायबर टिप लाइन रिकॉर्ड के अनुसार राजस्थान में हर माह 20 हजार से ज्यादा बच्चों के अश्लील वीडियो शेयर कर देखे जा रहे हैं। लेकिन मात्र 0.20 फीसदी मामलों में ही केस दर्ज हो रहा है। अमेरिका का एनजीओ (एनसीएमईसी) सॉफ्टवेयर से सोशल मीडिया पर बच्चों के अश्लील वीडियो पर निगरानी रखता है। जो कंट्री वाइज रिपोर्ट भेजती है। भारत में ये रिपोर्ट नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के पास आती है। इसके अनुसार पिछले 14 माह में राजस्थान को 271533 रिपोर्ट मिली है। अश्लील कंटेंट पर पूरी निगरानी, अब तक 107 अश्लील वेबसाइट बंद कराई। दरअसल अश्लील वेबसाइट्स को ब्लॉक करने का तरीका प्रभावी नहीं हैं। वेबसाइट ब्लॉक करने के लिए सरकार सर्वर का आईपी या डोमेन ब्लॉक करती है। उसके एडमिन को कुछ ही मिनटों में पता चल जाता है। सुरक्षा एजेंसियों को प्रभावी मॉनिटरिंग की आवश्यकता है। सायबर पेट्रोलिंग बढ़ानी चाहिए। अश्लील वेबसाइट का जैसे-जैसे डोमेन व आईपी बदलता है, वैसे-वैसे उन्हें ट्रेस कर ब्लॉक करना चाहिए। उन पर कार्रवाई करनी चाहिए।

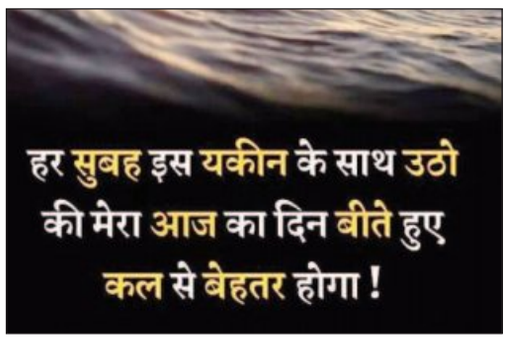

'वोट जिहाद' के बाद चुनाव में 'पाकिस्तान' की एंट्री पर बवाल

भारत के चुनाव में पाकिस्तान की एंट्री तो पहले ही हो चुकी थी। गुरुवार को बात मजबूत सरकार और कमजोर सरकार पर आ गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात के आणंद मेंभाजपा की रैली को संबोधित करते हुए फवाद चौधरी के उस बयान पर रिएक्ट किया, जिसमें उन्होंने राहुल गांधी की तारीफ की थी। मोदी ने कहा, पाकिस्तान और कांग्रेस की ये पार्टनरशिप अब पूरी तरह एक्सपोज हो गई है। देश के दुश्मनों को आज भारत में मजबूत सरकार नहीं चाहिए। उनको कमजोर सरकार चाहिए। ऐसी कमजोर सरकार जो मुंबई में आतंकी हमले के समय थी। डोजियर भेजने वाली सरकार।

अशोक भाटिया

लोकसभा चुनाव के बीच कांग्रेस नेता और पूर्व विदेशमंत्री सलमान खुर्शीद की भतीजी मारिया के वोट जिहाद वाले बयान को लेकर सियासत तेज हो गई । कन्नौज लोकसभा सीट सेभाजपा सांसद और प्रत्याशी सुब्रत पाठक ने इस बयान पर पलटवार किया । उन्होंने कहा कि इंडिया गठबंधन भारत को पाकिस्तान जैसा बनाना चाहता है, जीत के हथियारों से जिहाद करेंगी। बीजेपी सांसद सुब्रत पाठक ने कहा कि अभी तक लव जिहाद, रेड जिहाद सुना था आज इन्होंने बता दिया कि वोटों का भी जिहाद करेंगे। सरकार में आ जाएंगे तो हथियारों से जेहाद करेंगे, इनका लक्ष्य ही यही है कि हिंदुस्तान में शरिया का कानून लागू करना। भारत को इस्लामिक राज्य बनाना और पाकिस्तान जैसा भ्रष्टाचारी आतंकवादी राष्ट्र बनाकर कई टुकड़े करवा देना। अभी इस बात पर वाद विवाद चल ही रहा था कि पाकिस्तान की भी इन चुनाओं में एंट्री हो गई । ऐसा लगता है कि मोदी की हेट्रिक लगाती देख कर पाकिस्तान को अभी से चिंता सताने लगी है। पाकिस्तान के नेता घबराहट में भारत के चुनाव पर टिप्पणी कर रहे हैं। इमरान खान सरकार में सूचना मंत्री रहे फवाद चौधरी ने ऐसा बयान दिया है, जो चुनावी मैदान में बहस का मुद्दा बन गया है। इसे लेकरभाजपा नेता कांग्रेस और राहुल गांधी पर निशाना साध रहे हैं। आइए समझते हैं कि आखिर पाकिस्तान को भारत के नतीजों को लेकर इतनी दिलचस्पी क्यों है?

दरअसल, लोकसभा चुनाव से पहले द गार्जियन की एक रिपोर्ट आई थी, जिसमें कहा गया था कि भारत की विदेशी खूफिया एजेंसी 2019 के कथित तौर पर विदेशों में हत्याएं करना शुरू किया है। पुलवामा हमले के बाद से भारत ने पाकिस्तान में 20 एक्स्ट्रा जुडिशियल हत्याएं करवाई है। उस समय इस पर भारत के विदेश मंत्रालय ने इसे झूठा करार दिया था, लेकिन अंदर ही अंदर पीएम मोदी, राजनाथ सिंह समेत कई नेताओं के में लड्डू फूट रहे थे। क्योंकि ये उनके फेवर की बात थी कि जिस डोजियर को कांग्रेस सौंपती थी, उसमें से ही ये लोग है जिन्हें मारा गया है। हालांकि मेरे पास इसका कोई स्टेटमेंट नहीं है। इसके अलावा केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह से एक साक्षात्कार में पूछा गया था कि गार्जियन ने भारत पर 20 लोगों के मारने का आरोप लगाया है। इसे आप कैसे देखते हैं? अमित शाह ने जवाब में कहा था कि आप खुश हो कि नहीं हो। उन्होंने इससे इनकार भी नहीं किया था। कुल मिलाकर आज फिर चुनाव में पाकिस्तान लौट आया। 2019 का चुनावभाजपा पाकिस्तान पर किए गए स्ट्राइक के दम जीत गई थी। आने वाले दिनों में यह देखने वाली बात होगी कि किस-किस तरह से पाकिस्तान हमारे चुनाव गेस्ट अपीरियंस के रूप में आती है। बताया जाता है कि पाकिस्तान के बड़बोले नेता, पूर्व मंत्री और इमरान खान के करीबी फवाद चौधरी ने हाल ही में सोशल मीडिया पर एक वीडियो को री-पोस्ट किया था। ये वीडियो राहुल गांधी की रैली का था। इसमें वो पीएम मोदी पर निशाना साध रहे थे। फवाद चौधरी ने वीडियो को री-पोस्ट करते हुए कमेंट लिखा, पड़ोसी मुल्क से निकला वाला बयान

सोशल मीडिया पर जंगल की आग की तरह फैल गया। दिन चढ़ते-चढ़ते आग गुजरात की रैली तक पहुंच गई थी। पीएम मोदी ने आणंद की रैली में कांग्रेस और पाकिस्तान पर तंज कसे। उन्होंने कहा, संयोग देखिए।।। आज जब भारत में कांग्रेस कमजोर हो रही है। मैग्नीफाइंग ग्लास लेकर भी कांग्रेस को ढूंढना मुश्किल हो रहा है। यहां कांग्रेस मर रही है, वहां पाकिस्तान रो रहा है। कांग्रेस के लिए अब पाकिस्तानी नेता दुआ कर रहे हैं। शहजादे को प्रधानमंत्री बनाने के लिए पाकिस्तान उतावला है। एक आरटीआई के जवाब में मिले गृह मंत्रालय के आंकड़े के मुताबिक, 2004 से 2013 के बीच देश में 9,321 आतंकी घटनाएं हुईं। इनमें 4005 आतंकी मारे गए। जबकि 2014 से 2022 के बीच 2132 आतंकी घटनाएं हुईं। इनमें 1538 आतंकी मारे गए थे। इस बीच एक सवाल ये भी उठता है कि पाकिस्तान में सत्ता की दौड़ से पहले ही बाहर हो चुके फवाद चौधरी भारत में कांग्रेस के तरफदार क्यों बन रहे हैं? कहीं ये कांग्रेस के समर्थन से ज्यादाभाजपा से घबराहट को तो नहीं दिखाता है?

क्या पाकिस्तान को भी 4 जून यानी भारत में हो रहे लोकसभा इलेक्शन के रिजल्ट का इंतजार है? पाकिस्तान के साथ दिक्कत ये है कि वहां के नेताओं के पास इस वक्त कोई मुद्दा नहीं है। घर के अंदर और घर के बाहर पाकिस्तान हर मोर्चे पर जिस तरह से घिरा हुआ है, आज के पहले उसकी कभी इतनी बुरी हालत नहीं थी। चुनाव के बाद भी वहां राजनीतिक स्थिरता बहाल नहीं हो पाई है। पाकिस्तान खुद को हारा हुआ महसूस कर रहा है।जमीयत उलेमा-ए-इस्लाम के अध्यक्ष मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान कहते हैं, हिंदुस्तान और हम एक ही दिन आजाद हुए।15 अगस्त 1947 को सुबह 8 बजे। आज वो दुनिया की सुपरपावर बनने के ख्वाब देख रहा है। हम दिवालियापन से बचने के लिए भीख मांग रहे हैं। इसके लिए कौन जिम्मेदार है? मौजूदा हालत को देखकर पाकिस्तान की आवाम का भी सब्र टूट रहा। सना अमजद कहती हैं, हमारा पॉलिटिकल निजाम नाकाम है। हम ना तीतर हैं ना बटेर। स्टेट पॉलिसी है ही नहीं। खैज़र नाम के शख्स का पाकिस्तानी हुकूमत से सवाल है, इंडिया आपसे आगे निकल रहा है। इजरायल आगे है। आप इस्लामी ब्लॉक बनाने जा रहे थे। क्या हुआ? मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान कहते हैं, पाकिस्तान की अवाम जब भारत की ओर देखती है, तो अपनी सरकार को कठघरे में खड़ा करना उसकी मजबूरी हो जाती है। ये मजबूरी। फिलहाल और ज्यादा बढ़ गई है। क्योंकि चुनाव के मैदान में लगातार पाकिस्तान की आतंकी छवि का जिक्र बना हुआ है। पाकिस्तान इस समय एक साथ कई मोर्चों पर जूझ रहा है। भारत में घुसपैठ कराना अब उसके लिए आसान नहीं रहा। अलग-अलग ग्लोबल मंच पर भारत पहले ही पाकिस्तान को अलग-थलग कर चुका है। अफगानिस्तान से सटे बॉर्डर पर भी तालिबान उसे बार-बार आंख दिखा देता है। बलूचिस्तान में क्रांति की लपटें अलग उठ रही हैं। क्षय भी बार-बार इस्लामबाद को धमकी दे रहा है। इन सबके बीच पाकिस्तान की आर्थिक बदहाली उसे खोखला किए जा रही है। जाहिर है पाकिस्तान को खुद में बदलाव लाने की जरूरत है, क्योंकि आतंकवाद के खिलाफ भारत की पॉलिसी तो अटल है। पाकिस्तान के जिस नेता ने राहुल गांधी की तारीफ की है। वो भारत विरोधी ज़हरीले बयानों के लिए भी कुख्यात हैं। ये वही फवाद चौधरी हैं, जिन्होंने पाकिस्तान की संसद में सीना चौड़ा करके कबूल किया था कि पुलवामा के पाप को पाकिस्तान ने ही अंजाम दिया है। पाकिस्तान को भारत से कितना डर लगता है? खुद पाकिस्तान की संसद में इस बात की गवाही दी गई। पाकिस्तान के एक सांसद ने बताया कि उसके विदेश मंत्री को डर था कि कहीं भारत हमला ना कर दे। लेकिन पाकिस्तान की इसी संसद में कुछ साल पहले एक और वाकया हुआ। पड़ोसी मुल्क ने खुलेआम ये स्वीकार किया कि पुलवामा में जो आतंकी हमला हुआ, वो पाकिस्तान ने ही कराया था।फवाद चौधरी ने संसद में कबूल किया था, हमने हिंदुस्तान को घुसके मारा है। पुलवामा में जो हमारी कामयाबी है। इस कौम की कामयाबी है। उसके हिस्सेदार हम सब हैं।जाहिर है पुलवामा हमले को पाकिस्तान का गौरव बताने वाले फवाद चौधरी अगर राहुल गांधी की तारीफ करेंगे, तो कांग्रेस के विरोधी इसे कैसे जाने देंगे। वो भी तब, जबकि मौसम चुनावी है।

आज का इतिहास

4 मई की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- पोप एलेक्जेंडर षष्ठम ने 1493 में अमेरिका महाद्वीप को पुर्तगाल और स्पेन के बीच बांटा।
- पेरिस में खुलने और बन्द होने वाली पहली छतरी 1715 में बनाई गई।
- अमेरिकी कला एवं विज्ञान अकादमी की स्थापना 1780 में हुई।
- नीदरलैंड और ब्रिटेन ने 1818 में गैरकानूनी दास व्यापार के खिलाफ समझौता किया।
- अमेरिकी प्रांत मिशिगन में मृत्युदंड को 1846 में खत्म किया गया।
- भारत का पहला डाक टिकट आधिकारिक रूप से 1854 में जारी हुआ।
- ओपेरा थियेटर में टॉमस एल्वा एडीसन ने अपने आविष्कार फ़ोनोग्राफ़ का सार्वजनिक प्रदर्शन 1878 में किया था।
- लंदन में डेली मेल समाचार पत्र का पहला संस्करण 1896 में प्रकाशित हुआ।
- अमेरीका में फ़िल्म कला अकादमी (मोशन पिक्चर आर्ट्स एकेडेमी) की स्थापना 1927 में की गई थी, जिसने 'ऑस्कर' पुरस्कार देने शुरू किए।
- अतातुर्क मुस्तफा कमाल पाशा तुर्की के राष्ट्रपति 1931 में बने।
- जर्मनी की सेना ने नीदरलैंड, डेनमार्क और नार्वे मे आत्मसमर्पण 1945 में किया।
- पहला ग्रेमी अवॉर्ड्स 1959 को आयोजित हुआ।
- 'द किड' और 'ग्रेट डिक्टेटर' जैसी मूक फिल्मों के स्टार चार्ली चैपलिन को बकिंघम पैलेस में नाइट की उपाधि 1975 को प्रदान की गई।
- श्रीमती मार्ग्रेट थैचर ब्रिटेन की पहली महिला प्रधानमंत्री 1979 में बनीं।
- कोल माइंस डे की घोषणा 1980 में हुई।
- जिम्बाब्वे के राष्ट्रपति नेता रॉबर्ट मुगाबे ने 1980 में चुनाव में भारी जीत हासिल की और प्रथम अश्वेत राष्ट्रपति बने।
- चीन ने 1983 को परमाणु परीक्षण किया।
- अमेरिका का पहला बैंक नेशनल हिस्टोरिक लैंडमार्क नाम से सूचीबद्ध 1987 मे हुआ।
- अमेरिकी अंतरिक्ष यान एफटीएस-30 का प्रक्षेपण 1989 में हुआ।
- काहिरा में इस्रायल एवं फ़िलिस्तीनी नेताओं द्वारा फ़िलिस्तीनी स्वायत्तता से संबंधित ऐतिहासिक समझौते पर 1994 को हस्ताक्षर हुये।
- भूमिगत बारूदी सुरंगों के उत्पादन पर प्रतिबंध लगाने के लिए ओटावा संधि के सभी हस्ताक्षरकर्ता देशों की पहली बैठक मापूतो (मोजाम्बिक) 1999 में शुरू हुई।
- मैक्सिको की अन्ना गुएवेरा ने 2003 में 35.30 सेकेण्ड का समय लेकर ग्रांप्री मीटर की 300 मीटर दौड़ में विश्व रिकार्ड बनाया।

4 मई को जन्मे व्यक्ति

- प्रसिद्ध कवि तथा कर्नाटक संगीत के संगीतज्ञ त्यागराज का जन्म 1767 में हुआ।
- कर्नाटक के प्रथम मुख्यमंत्री तथा मध्य प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल के. सी. रेड्डी का जन्म 1902 में हुआ।
- भारत की पहली महिला न्यायाधीश अन्ना चांडी का जन्म 1905 में हुआ।
- शार्क लेडी के नाम से जानी जाने वाली अमेरिकी समुद्री जीवविज्ञानी यूजीनी क्लार्क का जन्म 1922 में हुआ।

स्वर कोकिला- एक विमर्श

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

गत वर्ष 6 फरवरी 2022 को स्वरसम्राज्ञी भारत रत्न लता मंगेशकर का निधन होने पर उन्हें जिन सम्मान सूचक शब्दों से याद किया गया उनमें प्रमुख शब्द था। ''स्वर कोकिला'' सुरीली गायिका को ''स्वर कोकिला'' हिन्दी में कहा ही जाता है। स्वर कोकिला नाम से कुछ संस्थाएँ भी स्थापित हैं। स्वर कोकिला शब्द सुनते ही संस्कृतज्ञों को अचम्भा होना स्वभाविक है क्योंकि संस्कृत परम्परा के हिसाब से स्वरकोकिला शब्द अपने आप में गलत है। कोकिला शब्द का प्रयोग संस्कृत में कूकने वाली कोयल के लिए होता ही नहीं है, क्योंकि उनकी मान्यता है कि कोकिला अर्थात् मादा कोयल कूक ही नहीं सकती, केवल नर कोयल ही कूक सकता है इसलिए कोकिल शब्द का प्रयोग ही कूकने वाले पक्षी के लिए होना चाहिए। इस आश्चर्यजनक सत्य को पक्षिविज्ञान ने भी प्रमाणित कर रखा है कि मादा कोयल के कण्ठ में कूकने की तन्त्री ही नहीं होती, केवल नर कोयल के कण्ठ में ही होती है। अतः वहीं कूकने की ध्वनि निकाल सकता है। इस तथ्य को संस्कृत भाषा ने तो सदियों से स्थापित कर रखा है। संस्कृत में इसीलिए कोयल के लिए ''पुंस्कोकिल शब्द सदियों से चलता है, कोकिला शब्द आता ही नहीं। पुंस्कोकिल अर्थात नर कोयल। यह विज्ञान सम्मत तथ्य हिन्दी के चलन में ओझल हो गया है इसका प्रमाण है ''स्वर कोकिला शब्द का हिन्दी में धड़ल्ले से प्रयोग। शायद यह तथ्य महाकवि जयशंकर प्रसाद को तो ज्ञात था कि कोयल ही कूकता है कोकिला नहीं, क्योंकि उन्होंने पुलिंग में ही कोकिल शब्द का प्रयोग किया है। अहा! कौन है? पंचम स्वर में कोकिल बोला ''एक पुष्प की अभिलाषा'' शीर्षक कविता के अमर रचनाकार माखनलाल चतुर्वेदी नें कोकिल शब्द का प्रयोग तो किया है पर उसे स्त्रीलिंग में प्रयुक्त किया है- ''क्या गाती हो ? क्यों रह रह जाती हो? कोकिल बोलो तो। कविता में ''कोकिल बोलो तो'' शब्द ही आते हैं पर शोषक में आ जाता है ''कैदी और कोकिला। कोकिला गा नहीं सकती यह रचनाकार को ध्यान नहीं रहा।'' उर्दू साहित्य भी इस तथ्य से परिचित है कि बुलबुल नर होने पर ही कूक सकता है। बुलबुल शब्द का वहाँ पुंलिंग में भी प्रयोग होता है ''बादल धीरे धीरे आ मेरा बुलबुल सो रहा है शोरगुल न मचा'' यह गाना गत शताब्दी में सुपरिचित था। वैज्ञानिक तथ्य को नजरन्दाज करके चलन में कैसे कैसे शब्द चल निकलते हैं इस ओर ध्यान आकर्षित करने हेतु स्वरकोकिला उपाधि की वस्तुस्थिति सूचित करना ही इस लेखन का उद्देश्य है।

विशेष आलेख

न्यूजक्लिक चीन के पैसे के बल पर भारत में हिंसा भड़काना चहता था

रामस्वरूप रावतसरे

न्यूज़क्लिक केस में बड़ा खुलासा हुआ है। न्यूजक्लिक के साथ काम करने वाले लोगों ने जाँच के दौरान चौंकाने वाले बयान दर्ज कराए हैं। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल द्वारा दाखिल की गई चार्जशीट में इन गवाहों के बयान को रखा गया है, जिसमें बताया गया है कि न्यूजक्लिक ने सीएए विरोधी हिंसा के दौरान मुस्लिमों को हिंसा और दंगों में शामिल होने के लिए उकसाने के लिए उन्हें 'आदेश' दिया था। इसके लिए उन्हें सीएए विरोधी प्रदर्शनकारियों तक पैसे पहुँचाने के लिए भारी मात्रा में नकदी दी गई थी। इन गवाहों ने बताया है कि दिल्ली के हिंदू-विरोधी दंगों में इस्तेमाल किए गए हथियारों को खरीदने के लिए न्यूजक्लिक के माध्यम से चीनी पैसों का इस्तेमाल किया गया। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, कश्मीर में आतंकवादियों को भी पैसे पहुँचाए गए थे। इन गवाहों की पहचान छिपाई गई है। ये गवाह न्यूजक्लिक में काम करते थे। यूएपीए की धारा 41 के तहत इनकी पहचान को छिपाते हुए दिल्ली पुलिस ने इनके बयानों को चार्जशीट के माध्यम से कोर्ट में पेश किया है। इन गवाहों ने बताया है कि उन्हें धर्म विशेष (हिंदुओं) के खिलाफ हिंसा भड़काने के लिए सीएए विरोधी और शाहीन बाग के प्रदर्शनों में भेजा गया था। इसके लिए न्यूजक्लिक ने अपने कर्मचारियों को पैसे देकर बाँटने के लिए कहा, ताकि अराजकता और हिंसा को भड़काया जा सके।

इस दौरान कई वॉट्सऐप ग्रुपों का इस्लेमात किया गया, खासतौर पर 2 ग्रुपों के बारे में बताया गया है, जिसमें एक ग्रुप का इस्तेमाल सीएए विरोधी प्रदर्शनों, किसानों के प्रदर्शनों और शाहीन बाग के प्रदर्शनकारियों को हिंसा के लिए उकसाया गया। दूसरा ग्रुप कश्मीर में हिंसा और तनाव भड़काने में लगा था। ये लोग न्यूजक्लिक में पत्रकार के रूप में काम कर रहे थे और न्यूजक्लिक का एजेंडा आगे बढ़ा रहे थे। इन्हीं लोगं ने संवेदनशाली कश्मीर और अरुणाचल प्रदेश के नक्शों में छेड़छाड़ भी की थी। जिन लोगों तक पैसे पहुँचाए गए, उसमें से एक नाम शरजील इमाम का है। वो सीएए-विरोधी प्रदर्शनों के दौरान हिंसा का मुख्य आरोपित है। उसने प्रबीर पुरकायस्थ से पैसे लिए और अपने नापाक एजेंडे को आगे बढ़ाता रहा। इस चार्जशीट में सभी गवाहों के ब्यान दर्ज हैं और उन्हें दिल्ली पुलिस कोर्ट में पेश कर चुकी है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, न्यूजक्लिक को विदेश से आए पैसों को तीस्ता सीतलवाड़ तक पहुँचाए गए। चार्जशीट में पुलिस ने बताया है कि अमेरिका से मिले पैसों को तीस्ता सीतलवाड़ के पोर्टल 'सबरंग इंडिया' को नया जीवन देने में किया गया। चार्जशीट के मुताबिक, 'न्यूज सिंडिकेशन स्कैम' के माध्यम से आर्टिकल लेखकों और स्तंभकारों को न्यूजक्लिक से मिले पैसे दिए गए और इन लेखों का इस्तेमाल सबरंग इंडिया पर प्रकाशित करने के लिए किया गया। खास बात ये है इन आर्टिकल्स को सबरंग इंडिया पर प्रकाशित करते समय इन्हें 'सबरंग इंडिया' द्वारा लिखा दिखाया गया, और असली लेखकों के नाम छिपा लिए गए। चार्जशीट के मुताबिक, इससे तीस्ता सीतलवाड़ को करीब 3 लाख, 1 करोड़ से ज्यादा रुपए उनके कर्मचारियों के लिए और 39 लाख रुपए उनके परिवार के निजी खर्च के लिए मिलना बताया गया है। दिल्ली पुलिस ने अपनी चार्जशीट में बताया है कि जाँच एजेंसियों के रडार पर होने के बावजूद तीस्ता सीतलवाड़ द्वारा दागी विदेशी धन पाने का यह सबसे सुविधाजनक तरीका था। पुलिस ने कहा कि ई-मेल, गवाहों की जाँच, वित्तीय उकसावे और संरक्षित गवाहों की गवाही के विश्लेषण से यह स्थापित हुआ कि तीस्ता सीतलवाड, प्रबीर पुरकायस्थ और नेविल रॉय सिंघम एक खास तिकड़ी का हिस्सा थे। नेविल रॉय सिंघम न्यूजक्लिक के संस्थापक-संपादक प्रबीर पुरकायस्थ का लंबा समय से साथी है और एक अमेरिकी करोड़पति है। उसका जुड़ाव चीन की कम्युनिस्ट पार्टी से बताया जाता है और वो चीनी एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए प्रबीर पुरकायस्थ और न्यूजक्लिक के माध्यम से भारत के अंदर काम कर रहा था। चार्जशीट के मुताबिक, इस मामले की जाँच के लिए 13 दिसंबर 2023 को दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल की टीम ने मुंबई जाकर जाँच की और तीस्ता सीतलवाड़ और उसके शौहर जावेद आनंद को नोटिस भी थमाया था। जावेद आनंद सबरंग इंडिया का सह-संपादक भी है। स्पेशल सेल ने सबरंग इंडिया और न्यूजक्लिक के फाउंडर-एडिटर के बीच मैनपॉवर शेयरिंग, सैलरी डिटेल्स और आर्टिकल/वीडियो के प्रोडक्शन को लेकर साइन हुए एग्रीमेंट की भी जाँच की। न्यूजक्लिक पर चीनी माध्यम से 80 करोड़ प्राप्त करने के आरोप हैं। एफआईआर में इस बात का जिक्र है कि न्यूजक्लिक ने भारत की संप्रभुता पर चोट करने और देश में नफरत का माहौल तैयार करने के लिए चीनी संगठनों से पैसे लिए। कुछ दिन पहले ही दिल्ली की कोर्ट ने प्रबीर पुरकायस्थ की 10 दिनों की कस्टडी बढ़ा दी थी। इस मामले में अमित चक्रवर्ती, जिसे प्रबीर के साथ ही गिरफ्तार किया गया था, वो अब सरकारी गवाह बन चुका है। गौरतलब है कि दिल्ली पुलिस ने पिछले साल 3 अक्टूबर को गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम के तहत न्यूज़क्लिक के संस्थापक और संपादक प्रबीर पुरकायस्थ और एचआर प्रमुख अमित चक्रवर्ती को गिरफ्तार किया था। इस दौरान दिल्ली पुलिस ने न्यूजक्लिक के दफ्तर को छापेमारी के बाद सील कर दिया गया था। पुलिस सुत्रों के अनुसार अक्टूबर 2023 में दिल्ली और सात अन्य राज्यों में 88 स्थानों पर छापे मारे गए, जिसमें एफआईआर में शामिल व्यक्तियों के साथ-साथ डेटा विश्लेषण के दौरान सामने आए लोगों को भी निशाना बनाया गया।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आप कई विविध लक्ष्यों को पूरा करेंगे। क्या आप यह जानना चाहते है कि आपके जीवन के ऐसे कौनसे क्षेत्र है, जहां आपके सितारे बुलंद रहेंगे और दूसरी तरफ, अपको किस बातों से सावधान रहना चाहिए। हम न सिर्फ हमारे काम में और जटिल मुद्दों को सुलझाते वक्त सकारात्मक ऊर्जा को महसूस करेंगे, बल्कि पारम्परिक संबंधों में भी, जहां यह स्थानान्तरण हमें संताप और बातचीत में लाभ प्रदान करेगा

मेष
प्रवास, सुंदर भोजन एवं प्रियजन के साथ से आप रोमांचित रहेंगे। कोर्ट-कचहरी से जुड़े मामलों के लेकर सावधानी बरतने की सलाह दी जाती है। आज मन भावनाओं से व्यथित रहेगा। कमिशन, ब्याज से आपकी आय में वृद्धि होगी।

वृष
आज रिश्तेदार एवं मित्रों के साथ मुलाकात से आप आनंद का अनुभव करेंगे। आर्थिक योजना में आपको पहले थोड़ी मुसीबत हो सकती है, आपके जरूरी काम भी शुरुआती विलंब के बाद आसानी से पूरे होने पर शांति का अहसास करेंगे।

मिथुन
आज आप के लिए नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। आप पर अधिकारियों की कृपा दृष्टि रहेगी। परिवार में उत्सव और उल्लास का माहौल बना रहेगा। मन में भावनात्मकता बढ़ेगी। मां की ओर से फायदा होगा।

कर्क
मानसिक व्यग्रता को दूर करने के लिए आध्यात्मिकता, योग का सहारा लें। महिला और पानी से बचकर रहें। अभ्यास के लिए समय मध्यम है। आज आप को ज्यादा संवेदनशील एवं भावुकता भरे विचार आएंगे। आपकी मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि हो सकती है।

सिंह
दूसरों की ओर से चिंता कम होगी। इस कारण आप का मन खुश रहेगा। परिजनों या दोस्तों के साथ अच्छे भोजन का अवसर मिलेगा। कोई आकस्मिक यात्रा हो सकती है। आर्थिक मामलों से संबंधित व्यवस्था कर सकेंगे।

कन्या
अनुकूल वातावरण रहेगा और साथियों का सहयोग मिलेगा। आज आप प्यार एवं भावना के प्रवाह में रहेंगे। दोस्त, स्वजनों और रिश्तेदारों की ओर से कोई उपहार मिल सकता है। आप उनके साथ अपना दिन खुशी में गुजार सकेंगे। उत्तम विवाह सुख प्राप्त होगा।

तुला
महिलाओं के बारे में विशेष ध्यान रखें। वाणी एवं व्यवहार में सावधानी बरतें। विदेश से कोई समाचार मिल सकता है। कानूनी बातों का निर्णय सोच-समझकर करें। आज घर, परिवार एवं व्यापार जैसे तमाम क्षेत्रों में आको लाभ होगा।

वृश्चिक
काम का बोझ ज्यादा रहेगा। नए काम की शुरुआत न करें। शारीरिक स्वास्थ्य बिगड़ेगा। मन बेचैन एवं चिंतित रहेगा। वाणी पर संयम रखें। खर्च ज्यादा होगा। आज आपका दिन शुभ है। व्यापार बढ़ाने को लेकर आपके प्रयास रंग लाएंगे।

धनु
आज आपको काफी संवेदनशीलता का अनुभव होगा। इस कारण किसी के द्वारा आपकी भावना को ठेस पहुंच सकती है। आज आपको मां की बीमारी की चिंता होगी। मकान या जमीन के दस्तावेजी काम आज न करें।

मकर
अधिकारियों का रवैया नकारात्मक रहेगा। विरोधियों के साथ वाद-विवाद न करें। संतान से मतभेद हो सकते हैं। यात्रा की संभावना है। धनखर्च होगा। कार्य सफलता में विलंब होने के कारण निराशा का अनुभव होगा।

कुंभ
मित्रों के साथ आनंददायक प्रवास होगा, तो दांपत्यजीवन में भी आप ज्यादा निकटता बना सकेंगे। धनप्राप्ति के लिए भी शुभ समय है। अविवाहितों को जीवनसाथी की तलाश में सफलता मिलेगी।

मीन
जमीन-जायदाद के दस्तावेजी काम कर सकेंगे। आपका आज का दिन प्रतिकूलताओं एवं अनुकूलताओं से भरा होगा। लेखन-साहित्य से जुड़े काम कर सकेंगे। हांलाकि, व्यवसायिक स्थल पर प्रतिकूल परिस्थिति रहेगी। इससे आपका आर्थिक स्तर मजबूत बनेगा।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

देश में उल्लू राज जिंदाबाद! (व्यंग्य)

-आत्माराम यादव पीव वरिष्ठ पत्रकार

आजादी के 75 साल बाद की सरकार ने अनुभव प्राप्त कर लिया की देश की सरकार चलाना कितना कठिन है, जबकि उल्लू बनाना सरल है। लेकिन सरकार समझ चुकी थी की अगर सरकार वक्तव्य दे की आप सभी उल्लू हो, उल्लू के पट्ठे हो तो सरकार का विरोध हो जाये इसलिए सरकार ने बुद्धिमानी से काम लिया और देशवासियों के समक्ष इतने झूठे और बेतुके वक्तव्य बार बार जारी कर उसके सत्य होने का एहसास दिला के विश्वव्यापी लोकप्रियता हासिल कर प्रजा को बताया की उल्लू माता लक्ष्मी का वाहन है और हमारे धर्म में पूजनीय है तथा सभी की श्रद्धा का पात्र है। देश की जनता रामनय थी भला उल्लू की इतनी प्रशंसा के बाद उनकी आँखों के सामने उल्लू ही उल्लू नजर नहीं आए तो क्या जाल में फसे तोता रटंत करते तोते को शिकारी जंगल में जाते हो जाल बिछाता है दाने का लोभ दिखाता है, जाल में फंसना नहीं चाहिए रटते तोते नजर आएंगे? सरकार खुश हो गई की चलो जिन्हे उल्लू बनाया जाना थे वे खुशी-खुशी उल्लू बनने को तैयार हो गए और खुद को उल्लू बनाए जाने से धन्य महसूस कर गौरवान्वित हो सरकार का आभार मानने के साथ उन्हे उल्लू बनाए जाने पर सरकार की चरण वंदना में लग गए। विपक्षी सारे दल के नेताओं का माथा ठनका कि वाकई में वे सब क्या उल्लू थे जो सरकार में आने के बाद सरकार चलाने के तरीकों में समय खपाते रहे। उन्होंने सरकार के उल्लूवाद के दम पर सफलता हासिल करने और प्रजातन्त्र में उल्लूवाद के लिए उर्वरा भूमि तैयार कर खुद व खुद लोगों के उल्लू बनने के उतावलेपन को देख उल्लू बनाने के तंत्र मंत्र यंत्र कि खोज शुरू कि जबकि इसकी आवश्यकता ही नहीं थी बल्कि जो देश की जनता को, युवाओं को, महिलाओं को, बेरोजगारो को, किसानों को, गरीब दलितो को झूठ पर झूठ के मनलुभावने वायदे करे और उन्हे पूरा न कर फिर दुबारा पहले झूठ से अच्छा बड़ा महा झूठ बोल सके वही तो उल्लू बनाने में सिद्धस्थ नेतृत्व करने वाला महात्मा राजा होता है। उल्लूवाद सत्ताधारी दल का ट्रेड बन गया है विपक्ष में सत्ताधारी दल के असंतुष्ट, लोभी, कुर्सी के लालची टिकिट कटने वाले उल्लूवादी नेता दल बदल कर सत्ताधारी दल द्वारा उपेक्षा का आरोप लगाकर दिखाते है विपक्ष के सारे नामी गिरामी नेताओं को नर्क की यातनाए दिखाकर सत्ताधारी दल उन्हे अपने सुरसारूपी दल के पेट में आहूत करता है। ये गिरगिट सा रंग बदलने वाले सारे गिरगिट नेता नए दल में मनपसंद पद मिल जाये तो गंगा स्नान समझते है करना मन मारकर पड़े रहने को विवश है, क्योंकि वे समझ जाते है की जिधर से आए उधर कुआं था और इधर खाई है इसलिए मौका मार चौका लगाने तक वे अपने को एडजेस्ट करने में लगे होते है। पहले नेता गिरगिट सा रंग बदलते थे पर अब नेताओ को उल्लू बनाने के लिए उल्लूवाद की लोकप्रियता का लाभ समूची राजनैतिक पार्टियां धर्म निरपेक्ष का नकाब पहनकर उठा रही है। उल्लूवाद से नौकरशाह भी अछूते नहीं बचे है यही कारण है की देश के शत प्रतिशत आला अफसर और कार्यपालिका का समूचा तंत्र उल्लूवाद के कट्टर समर्थक हो गए है, परिणामस्वरूप जनता दलदल बने दलों के साथ सत्ता पक्ष के दल सहित उनकी सरकार और अफसरों के थोपे गए नियमो व कानूनों की चाकी में महीन पिसने को मजबूर है, जरूरत है जनता को पीसने वाले दल सहित सरकार और सरकारी तंत्र इन्हे डबल फिल्टर होने का प्रमाणपत्र जारी कर दे ताकि ये चक्की में पिसी हुई जनता फिर से चक्की में पिसने न आ सके।

देश में उल्लूवादी राजनीति में गिरगिट से रंग बदलते नेताओं की टुच्चई चरम पर है और वे भ्रमजाल में अपने को फूल मालाओ से स्वागत को अपनी खुब लोकप्रियता मान रहे होते है। यह सच उनके गले नहीं उतरता है कि वे अपना ईमान धर्म, नीति और नीयत को गिरवी रखकर लोकप्रिय बने हो सकते है, उनकी पर बैठ ही दो कोड़ी की इज्जत हो जाती है फिर समाज में जिले में प्रदेश देश में उनकी नाक ही कटेगी न कि यशोगान होगा? पर वे अपनी मूर्खता की पराकाष्ठा को परम विद्वता के रूप में स्वीकार करते है। वे भूल जाते है कि उनके रंग बदलने को कलरफुल्लीपी गिरगिट के समान उपमा दी गई है पर इन महामूर्ख शिरोमणियों के चरणों में बड़े-बड़े विद्वान उल्लुओं को लोट लगाते हुए देख वे उल्लू के पट्ठे खुद के उल्लू होने को भुला देते है। इनका यह भ्रम कि वे उल्लू नहीं नेता है इसलिए बना रहता है कि उनके चमचे इन्हे लेकर कई झूठे किस्से कहानिया कि अफवाह फैलाते है कि अमुक उल्लूवादी नेता का चुनाव अभियान स्वयं गांधी छाप हरे नोटो के साथ देवी महालक्ष्मी, सोमरस का पान देवी महाकाली और काल भैरव करकार सभी को दुन्न किए है। बस उल्लू बनी जनता इस उल्लूवादी विचार के प्रति नतमस्तक हो जाते है। जनता और कार्यकर्ता को यह समझ होती है कि महालक्ष्मी की कृपा के बिना कोई चुनाव नहीं जीत सकता। उल्लू चूंकि लक्ष्मी का वाहन है, अतः उसके चुनाव का संचालन लक्ष्मी द्वारा किये जाने की अफवाह पर किसी तरह की शंका नहीं करते है।

आज का युग अर्थप्रधान है और संयोग से हमारे देश का प्रदान भी अपनी पार्टी के साथ लक्ष्मी का उपासक है, इसलिए उन्होंने माता महालक्ष्मी के वाहन उल्लू को चुनाव कि नीति, अनीति, कुरीति, चक्रो, महाचक्रो और कुचक्रो के महाजाल कि आँधी चलाकर अपने दल के लिए इतने कार्यकर्ताओं और समर्थकों की भीड़ जुटा ली कि दूसरे दलों के पास पैसा देकर भी भूख संभालने वालों का अकाल पड़ गया। उल्लूवादी पार्टी और नेताओ कि सभा में, रैली में लाखो उल्लू एकत्र हो जाते है और सभी कि दिलों में एक ही जुनून एक ही सपना दिखाई देता है कि देश में उल्लुओ का उत्थान हो और देश में उल्लुओं के हाथ मे देश की सत्ता हो। देश के सारे पूंजीपति, कल कारखानों के मालिक, सभी व्यापारी लक्ष्मी कि पुजा और आराधना करता है ताकि उनकी तिजोरियों में लक्ष्मी बनी रहे इसलिए वे भी उल्लूवादी दल का अनाप शनाप चंदा देकर उल्लूराज कायम किए जाने हेतु उल्लू को नाराज नहीं कर खुद उल्लू बन लक्ष्मी कि कृपा चाहते है।

आम आदमी से हटकर समूचे व्यापारी वर्ग, मजदूरवर्ग सभी का नारा है देश में उल्लूराज बना रहे, उल्लूवाद जिंदाबाद। सब उल्लुओं कि मंशानुरूप अब देश में उल्लूराज हो। उल्लूराज की पहली सबसे बड़ी आवश्यकता को समझते हुये कि लक्ष्मी मैया कि कृपा देश से हरेक घर में लगी तिजोरी मे वैभव लक्ष्मी स्वर्ण असफिया से मालामाल कर देंगी और चारो दिशाओं से लक्ष्मी प्रवेश करेंगी बस सरकार ने उन्हे प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री आवास में रहने का सपना दिखा है अब वे निवास उल्लूवादी दल के प्रवर्तक सर्वमान्य नेता उल्लूश्री के नाम कर दिया है जहा हर आम और खास व्यक्ति पर उल्लू कृपा बनाए रखने के लिए सरकार ने सभी के घरों में तिजोरियों भिजवा दी है और सबको तिजोरी पर लक्ष्मी मैया के फोटो लगाकर रोज उनकी पुजा आराधना करने के निर्देश जारी किए है ताकि सभी का घरों में लक्ष्मी मैया छम छम कर आने लगे। जो पुजा पाठ में विश्वास नहीं करते उन्हे टोना-टोटके के लिए सरकार ने उल्लू की लकड़ी मुफ्त दी ताकि वे उल्लू देवता की कृपा प्राप्त कर सके। उल्लूराज से बनी हमारी सरकार ने उल्लू बनाने से बस सभी बेरोजगार युवाओ के हाथो मे उल्लू की लकड़ी दी है तभी से सभी ने अपने को उल्लूराष्ट्र का नागरिक होने का कर्तव्य निभाते हुये अपने-अपने घरों के दरवाजों पर उल्लू की फोटो के नीचे अगरबत्ती स्टेंड बनाकर वहाँ उल्लू की लकड़ी टांग रखी है। सरकार की कृपा से देश के सभी डिग्रिधारी डाक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक आदि को रोजगार मिल गया है तथा अब उनकी चिंता समाप्त हो गई है कि उनके बच्चो कि पढ़ाई में जितना खर्च आएगा उससे हजारगुणा पैसा देकर वे उल्लू कि लकड़ी का आभार मानेंगे। दुनिया कि कोई भी कैसी भी बड़ी से बड़ी बीमारी आ जाए सरकार को शिकायत किए बिना घरो में वैभव लक्ष्मी द्वारा प्रतिदिन सौगात में देने वाले स्वर्ण भंडार से डाक्टरों को इलाज कि इतनी फीस दे देंगे कि वे अस्पताल को सोने कि बनवा सके। देश के गाँव से लेकर शहर तक के हर बेरोजगार काम पर लग गए है और वे रोज उल्लू की लकड़ी घुमाकर जिसे चाहते है उल्लू बना देते है। उल्लू बनाने की कला में जो जितना माहिर हो रहा है सरकार उसे गुरु, आचार्य, कुलाचार्य आदि सम्मान से नवाजकर उल्लूवाद की लोकप्रियता की दौड़ में पीछे छोड़ने पर उसको प्रोत्साहित कर रही है। अब उल्लू बन चुकी जनता को सरकार से कोई सरोकार नहीं रहा है, इधर जब से उल्लूवाद के नाम पर सबको उल्लू बनाकर सरकार बनी है सारे उल्लू सांसद विधायक हताश और निराश है। इन चुने हुये उल्लू सांसदों विधायकों कि चिंता का कारण यह है कि अब तक उल्लू रहते वे अपने पावन चरणों को भूखा जगह को खंडहर में काली स्याह अधिकारी रातें के साथ अपने उल्लूपन को जीने की आदि थे अब वे रोशनी से नहाई हुई दूधिया चकाचौंध में आलीशान सांसद भवन की शोभा कैसे बढ़ाएंगे, जिसमे रहने के वे अब तक आदी नहीं थे? इससे बचने के लिए उल्लूवादी पार्टी उल्लूवाद ने एक नया रास्ता ढूंढ लिया है। अब राजनैतिक दल के उल्लुओं के पट्ठों नेताओ को उल्लू जैसा सीधा करने के लिए उनके पैत्रिक महान उल्लूश्री ने सभी सांसदों के गले में उल्लू का ताबीज लटकाने के आदेश जारी किए हैं। देखना है देश के प्रजातन्त्र को उल्लूवादी राजनेता अपने सीधी चालों से सा या अब तक चली आई टेढ़ी-मेढ़ी चालों से उल्लूवाद के कायम करने में सफल होते है या असफल? उल्लूवादी नेताओं का उल्लुओं से प्रेम तब प्रगट होगा जब वे अपनी घोषणापत्र के पिटारा खोलकर उसे क्रियान्वित किए जाने हेतु कार्य कर रहे है अपने चुनिन्दा सांसदों की लाइन पर चला पाते है अथवा हमेशा कि तरह बोल बच्चन से अपना उल्लू सीधा करने के लिए यह पिटारा आगे कर सबको उल्लू बनाने में सफल होते है। उल्लूवादी नेताओं का उल्लू प्रेम जगजाहिर हो चुका है। अगर वे ऋण माफ कर रहे हैं तो लोग समझ जाते हैं कि वे अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। भूमिहीनों को जमीनों के पट्टे बांध रहे हैं तो लोग समझ जाते हैं कि वे अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। जब भी किसी मंत्री के किसी गाँव के दौरे पर आने की खबर आती है तो गांव समझ जाते है कि वे अपना उल्लू सीधा करने आ रहे हैं। इस तरह हर कोई उल्लू व्यस्त है और राजनीति के पुरोधा तथा लक्ष्मी का वाहन होने का दोहरा लाभ उठा रहे हैं। इसउल्लूवाद जिन्दाबादके नारे लगा रहे है अगर ऐसा है तो समझिए उल्लू वाद जिंदाबाद हो रहा है और रहेगा।

'वोट जिहाद' के बाद चुनाव में 'पाकिस्तान' की एंट्री पर बवाल

अशोक भाटिया

लोकसभा चुनाव के बीच कांग्रेस नेता और पूर्व विदेशमंत्री सलमान खुर्शीद की भतीजी मारिया के वोट जिहाद वाले बयान को लेकर सियासत तेज हो गई । कन्नौज लोकसभा सीट सेभाजपा सांसद और प्रत्याशी सुब्रत पाठक ने इस बयान पर पलटवार किया ।उन्होंने कहा कि ₹इंडिया गठबंधन भारत को पाकिस्तान जैसा बनाना चाहता है, जीत के हथियारों से जिहाद करेंगी।बीजेपी सांसद सुब्रत पाठक ने कहा कि अभी तक लव जिहाद, रेड जिहाद सुना था आज इन्होंने बता दिया कि वोटों का भी जिहाद करेंगे। सरकार में आ जाएंगे तो हथियारों से जेहाद करेंगे, इनका लक्ष्य ही यही है कि हिंदुस्तान में शरिया का कानून लागू करना। भारत को इस्लामिक राज्य बनाना और पाकिस्तान जैसा भ्रष्टाचारी आतंकवादी राष्ट्र बनाकर कई टुकड़े करवा देना।

अभी इस बात पर वाद विवाद चल ही रहा था कि पाकिस्तान की भी इन चुनाओं में एंट्री हो गई । ऐसा लगता है कि मोदी की हेट्रिक लगाती देख कर पाकिस्तान को अभी से चिंता सताने लगी है। पाकिस्तान के नेता घबराहट में भारत के चुनाव पर टिप्पणी कर रहे हैं। इमरान खान सरकार में सूचना मंत्री रहे फवाद चौधरी ने ऐसा बयान दिया है, जो चुनावी मैदान में बहस का मुद्दा बन गया है। इसे लेकरभाजपा नेता कांग्रेस और राहुल गांधी पर निशाना साध रहे हैं। आइए समझते हैं कि आखिर पाकिस्तान को भारत के नतीजों को लेकर इतनी दिलचस्पी क्यों है?

भारत के चुनाव में पाकिस्तान की एंट्री तो पहले ही हो चुकी थी।गुरुवार को बात मजबूत सरकार और कमजोर सरकार पर आ गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात के आणंद मेंभाजपा की रैली को संबोधित करते हुए फवाद चौधरी के उस बयान पर रिएक्ट किया, जिसमें उन्होंने राहुल गांधी की तारीफ की थी। मोदी ने कहा, ₹पाकिस्तान और कांग्रेस की ये पार्टनरशिप अब पूरी तरह एक्सपोज हो गई है। देश के दुश्मनों को आज भारत में मजबूत सरकार नहीं चाहिए। उनको कमजोर सरकार चाहिए।।।ऐसी कमजोर सरकार जो मुंबई में आतंकी हमले के समय थी। डोजियर भेजने वाली सरकार।

दरअसल, लोकसभा चुनाव से पहले द गार्जियन की एक रिपोर्ट आई थी, जिसमें कहा गया था कि भारत की विदेशी खूफिया एजेंसी 2019 के कथित तौर पर विदेशों में हत्याएं करना शुरू किया है। पुलवामा हमले के बाद से भारत ने पाकिस्तान में 20 एक्ट्रा जुडिशियल हत्याएं करवाईं है। उस समय इस पर भारत के विदेश मंत्रालय ने इसे झूठा करार दिया था, लेकिन अंदर ही अंदर पीएम मोदी, राजनाथ सिंह समेत कई नेताओं के में लड्डू फूट रहे थे। क्योंकि ये उनके फेवर की बात थी कि जिस डोजियर को कांग्रेस सौंपती थी, उसमें से ही ये लोग है जिन्हें मारा गया है। हालांकि मेरे पास इसका कोई स्टेटमेंट नहीं है। इसके अलावा केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह से एक साक्षात्कार में पूछा गया था कि गार्जियन ने भारत पर 20 लोगों के मारने का आ ?ोप लगाया है। इसे आप कैसे देखते हैं? अमित शाह ने जवाब में कहा था कि आप खुश हो कि नहीं हो। उन्होंने इससे इनकार भी नहीं किया था। कुल मिलाकर आज फिर चुनाव में पाकिस्तान लौट आया। 2019 का चुनावभाजपा पाकिस्तान पर किए गए स्ट्राइक के दम जीत गई थी। आने वाले दिनों में यह देखने वाली बात होगी कि किस-किस तरह से पाकिस्तान हमारे चुनाव गेस्ट अपीरियंस के रूप में आती है।

बताया जाता है कि पाकिस्तान के बड़बोले नेता, पूर्व मंत्री और इमरान खान के करीबी फवाद चौधरी ने हाल ही में सोशल मीडिया पर एक वीडियो को री-पोस्ट किया था। ये वीडियो राहुल गांधी की रैली का था। इसमें वो पीएम मोदी पर निशाना साध रहे थे। फवाद चौधरी ने वीडियो को री-पोस्ट करते हुए कमेंट लिखा, पड़ोसी मुल्क से निकला वाला बयान सोशल मीडिया पर जंगल की आग की तरह फैल गया। दिन चढ़ते-चढ़ते आग गुजरात की रैली तक पहुंच गई थी।पीएम मोदी ने आणंद की रैली में कांग्रेस और पाकिस्तान पर तंज कसे। उन्होंने कहा, ₹संयोग देखिए।।। आज जब भारत में कांग्रेस कमजोर हो रही है। मैग्नीफाइंग ग्लास लेकर भी कांग्रेस को ढूंढना मुश्किल हो रहा है। यहां कांग्रेस मर रही है, वहां पाकिस्तान रो रहा है। कांग्रेस के लिए अब पाकिस्तानी नेता दुआ कर रहे हैं। शहजादे को प्रधानमंत्री बनाने के लिए पाकिस्तान उतावला है। एक फ्ळकके जवाब में मिले गृह मंत्रालय के आंकड़े के मुताबिक, 2004 से 2013 के बीच देश में 9,321 आतंकी घटनाएं हुईं। इनमें 4005 आतंकी मारे गए। जबकि 2014 से 2022 के बीच 2132 आतंकी घटनाएं हुईं। इनमें 1538 आतंकी मारे गए थे।

इस बीच एक सवाल ये भी उठता है कि पाकिस्तान में सत्ता की दौड़ से पहले ही बाहर हो चुके फवाद चौधरी भारत में कांग्रेस के तरफदार क्यों बन रहे हैं? कहीं ये कांग्रेस के समर्थन से ज्यादाभाजपा से घबराहट को तो नहीं दिखाता है? क्या पाकिस्तान को भी 4 जून यानी भारत में हो रहे लोकसभा इलेक्शन के रिजल्ट का इंतजार है?

पाकिस्तान के साथ दिक्कत ये है कि वहां के नेताओं के पास इस वक्त कोई मुद्दा नहीं है। घर के अंदर और घर के बाहर पाकिस्तान हर मोर्चे पर जिस तरह से घिरा हुआ है, आज के पहले उसकी कभी इतनी बुरी हालत नहीं थी। चुनाव के बाद भी वहां राजनीतिक स्थिरता बहाल नहीं हो पाई है। पाकिस्तान खुद को हारा हुआ महसूस कर रहा है।जमीयत उलेमा-ए-इस्लाम के अध्यक्ष मौलाना फजलुर्रहमान कहते हैं, ₹हिंदुस्तान और हम एक ही दिन आजाद हुए।15 अगस्त 1947 को सुबह 8 बजे। आज वो दुनिया की सुपरपावर बनने के ख्वाब देख रहा है। हम दिवालियापन से बचने के लिए भीख मांग रहे हैं। इसके लिए कौन जिम्मेदार है?

मौजूदा हालत को देखकर पाकिस्तान की आवाम का भी सब्र टूट रहा। सना अमजद कहती हैं, ₹हमारा पॉलिटिकल निजाम नाकाम है। हम ना तीतर हैं ना बटेर। स्टेट पॉलिसी है ही नहीं।₹ खैजर नाम के शख्स का पाकिस्तानी हुकूमत से सवाल है, ₹इंडिया आपसे आगे निकल रहा है। इजरायल आगे है। आप इस्लामी ब्लॉक बनाने जा रहे थे। क्या हुआ?₹ मौलाना फजलुर्रहमान कहते हैं, ₹पाकिस्तान की अवाम जब भारत की ओर देखती है, तो अपनी सरकार को कठघरे में खड़ा करना उसकी मजबूरी हो जाती है। ये मजबूरी फिलहाल और ज्यादा बढ़ गई है। क्योंकि चुनाव के मैदान में लगातार पाकिस्तान की आतंकी छवि का जिक्र बना हुआ है।₹

पाकिस्तान इस समय एक साथ कई मोर्चों पर जूझ रहा है। भारत में घुसपैठ कराना अब उसके लिए आसान नहीं रहा। अलग-अलग ग्लोबल मंच पर भारत पहले ही पाकिस्तान को अलग-थलग कर चुका है। अफगानिस्तान से सटे बॉर्डर पर भी तालिबान उसे बार-बार आंख दिखा देता है। बलूचिस्तान में क्रांति की लपटें अलग उठ रही हैं। ढक्ङ भी बार-बार इस्लामबाद को धमकी दे रहा है। इन सबके बीच पाकिस्तान की आर्थिक बदहाली उसे खोखला किए जा रही है। जाहिर है पाकिस्तान को खुद में बदलाव लाने की जरूरत है, क्योंकि आतंकवाद के खिलाफ भारत की पॉलिसी तो अटल है। पाकिस्तान के जिस नेता ने राहुल गांधी की तारीफ की है। वो भारत विरोधी जहरीले बयानों के लिए भी कुख्यात हैं। ये वही फवाद चौधरी हैं, जिन्होंने पाकिस्तान की संसद में सीना चौड़ा करके कबूल किया था कि पुलवामा के पाप को पाकिस्तान ने ही अंजाम दिया है।

पाकिस्तान को भारत से कितना डर लगता है? खुद पाकिस्तान की संसद में इस बात की गवाही दी गई। पाकिस्तान के एक सांसद ने बताया कि उसके विदेश मंत्री को डर था कि कहीं भारत हमला ना कर दे। लेकिन पाकिस्तान की इसी संसद में कुछ साल पहले एक और वाकया हुआ। पड़ोसी मुल्क ने खुलेआम ये स्वीकार किया कि पुलवामा में जो आतंकी हमला हुआ, वो पाकिस्तान ने ही कराया था।फवाद चौधरी ने संसद में कबूल किया था, ₹हमने हिंदुस्तान को घुसके मारा है। पुलवामा में जो हमारी कामयाबी है।।। इस कौम की कामयाबी है। उसके हिस्सेदार हम सब हैं।₹जाहिर है पुलवामा हमले को पाकिस्तान का गौरव बताने वाले फवाद चौधरी अगर राहुल गांधी की तारीफ करेंगे, तो कांग्रेस के विरोधी इसे कैसे जाने देंगे। वो भी तब, जबकि मौसम चुनावी है।

हमारा चुनावी माँग-पत्र

जनभाषा में विधि-न्याय, व्यापार-व्यवसाय तथा शिक्षा और रोजगार

-डॉ. मोतीलाल गुप्ता 'आदित्य'

राष्ट्र केवल कोई भूमि का टुकड़ा नहीं होता। राष्ट्र बनता है उसकी सभ्यता और संस्कृति से, वहाँ के ज्ञान झ विज्ञान, धर्म आध्यात्म और मौलिक चिंतन से। भाषा के माध्यम से ये निरंतर आगे बढ़ते हैं। यह भी कह सकते हैं कि भाषा एक बहती हुई नदी की तरह है, जिनके किनारों पर सभ्यताएँ जन्म लेती और बढ़ती हैं। जिस प्रकार किसी नदी में विभिन्न प्रकार के जीव पलते और बढ़ते हैं, वैसे ही भाषा रूपी नदी में वहाँ का ज्ञान-विज्ञान, साहित्य-संस्कृति, धर्म-आध्यात्म, विचार-चिंतन, समय और स्थान के साथ-साथ अपना स्वरूप बदलते हुए पलते और आगे बढ़ते है। भाषा रूपी नदी सूखी तो इनमें से कुछ न बचेगा। इसीलिए विश्व के सभी विद्वानों, चिंतकों, शिक्षाविदों एवं दार्शनिकों ने मातृभाषा को श्रेष्ठतम भाषा माना है।

अगर हम पीछे मुड़कर देखें तो यह माना जाता रहा है और बार- बार यह हुआ है कि किसी देश को मिटाना हो तो उसकी भाषाएँ मिटा दीजिए, उनका अपना तो कुछ भी है स्वतः मिट जाएगा. स्वाभिमान तक भी न बचेगा। जब कोई भाषा मिटती है या सिमटती है तो उसके साथ-साथ उसकी पूरी संस्कृति और हजारों वर्ष की विरासत भी बह जाती है। भाषा जाएगी तो उसका मौलिक ज्ञान - विज्ञान उसकी संस्कृति और हजारों वर्षों से अर्जित उसकन ज्ञान-विज्ञान सब मिटता जाएगा। इतिहास गवाह है, जब कोई आक्रांता या विदेशी शासक आता है तो पहले वहाँ की भाषा-संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास करता है। जब भाषा जाएगी तो उसमें निहित समग्र ज्ञान-विज्ञान को भी बहा कर ले जाएगी। फिर जो भाषा आएगी वह अपने साथ अपनी संस्कृति भी लाएगी, और वहाँ के लोगों के दिलो-दिमाग को उसके माध्यम से मानसिक गुलाम भी बनाएगी।

यहाँ यह बताना अनुचित न होगा कि समाज को अपने धर्म और आध्यात्म से मिटा कर अपना लाने के लिए भी भाषा को मिटाया जाता है। यदि हम लॉर्ड मैकॉले द्वारा अपने पिता को लिखे गए पत्रों को देखें तो उससे साफ समझ में आता है कि भारत के अंग्रेजीकरण के पीछे उसका एक उद्देश्य भारत के लोगों को मानसिक रूप से गुलाम बनाने, अपने स्वाभिमान तथा आत्म गौरव के साथ-साथ धर्मांतरण का मार्ग प्रशस्त करना भी था।

यदि हम विश्व की बात करें तो भी हम पाते हैं कि किसी भी देश में विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा अपना शासन अपनी सत्ता स्थापित करने के लिए स्थानीय भाषा अथवा भाषाओं को मिटाते हुए वहाँ पर उन्होंने अपनी भाषाओं का आधिपत्य स्थापित किया। इंग्लैंड ही नहीं फ्रांस, पुर्तगाल, हॉलैंड आदि अनेक देश जिन्होंने अनेक देशों पर शासन किया और उन्हें अपना उपनिवेश बनाया, वहाँ आज भी कमोबेश उनकी भाषा का आधिपत्य है। आज भी वहाँ के लोगों को अपनी भाषा, अपनी विरासत और अपने ज्ञान-विज्ञान से अधिक उस देश की भाषा-संस्कृति और ज्ञान-विज्ञान पर गर्व है, जिन्होंने उन पर शासन किया था, जिन्होंने उन पर अत्याचार किए और जिन्होंने उन पर तरह-तरह के जुल्म किए थे। अगर भारत की बात की जाए तो भारत पर करीब 1300 वर्ष विदेशी शासन रहा। लगभग सभी आक्रांताओं ने हम पर लगातार अनेक जुल्म किए। इस्लामी आक्रांता कभी लूट के लिए या कभी सत्ता के लिए भारत पर आक्रमण करते रहे और उन सब ने लूट के अलावा तलवार की नोक पर बड़े पैमाने पर भारत के लोगों का धर्मांतरण भी किया। भारत पर इस्लामी आक्रांता अलग- अलग समय में किसी एक जगह से नहीं बल्कि अलग-अलग दिशाओं से आते रहे। जो आया उसने अपनी भाषा चलाने की कोशिश की। इनमें से कुछ ने भारत के अलग-अलग हिस्सों पर अपना शासन भी कायम किया। इसीका परिणाम था कि कभी अरबी, कभी फारसी और कभी इनके मिश्रित रूप शासन, प्रशासन, न्याय और रोजगार का माध्यम बने रहे। इस्लामी शासन के दौर की कुछ कहावतें आज भी इनकी पुष्टि करती दिखाई देती हैं। 'हाथ कंगन को आरसी क्या और पढ़े लिखे को फारसी क्या?' एक और कहावत है, ह्यपढ़े फारसी बेचे तेल' यानी उस दौर में पढ़ा-लिखा, विद्वान और बड़े पदों का दावेदार उसे ही माना जाता था जो उनकी भाषा यानी 'फारसी' जानता था। क्योंकि विदेशी आक्रांता तो मुट्ठी भर थे, बाकी उनकी पालकी ढोने वाले और उनके शासन-प्रशासन और लश्कर में शामिल लोग तो स्थानीय ही थे। इसलिए आगे चलकर स्थानीय भाषाओं में अरबी, फारसी के शब्द मिलकर एक नई भाषा का जन्म हुआ जिसे उर्दू कहा गया। उर्दू के लिए फारसी लिपि को अपनाया गया। अगर लिपि की बात छोड़ दें तो यह भाषा, अरबी फारसी आदि के शब्दों से लदी हिंदी ही तो है। यदि इसमें जबरन ठूँसे गए अरबी-फारसी के कुछ जटिल शब्दों को कम कर दें तो यह सरल हिंदी या हिंदुस्तानी ही तो है।

मुगल साम्राज्य के पतन के दौरान ही भारत में क्रमशः पुर्तगालियों, फ्रांसीसियों और अंग्रेजों का आगमन शुरू हो गया था, जो भारत के विभिन्न भागों में अपनी सत्ता कायम करते जा रहे थे। सभी ने जनभाषा की उपेक्षा करते हुए स्थानीय भारतीय भाषाओं को मिटा कर शासन-प्रशासन और व्यवस्था में अपनी भाषा को स्थापित किया। आगे चलकर उनके बीच भारत में सत्ता के लिए संघर्ष भी हुआ। अंततः जब इस संघर्ष में अंग्रेज विजयी रहे तो भारत पर अंग्रेजों का साम्राज्य छाने लगा। स्वतंत्रता पूर्व के समय तक भी गोवा, दमण-दीव और दादरा नगर हवेली में पुर्तगाली शासन कायम रहा और पुडुचेरी में फ्रांसीसियों का शासन रहा। आज भी आपको बड़ी संख्या में वहाँ ऐसे लोग मिल जाएंगे जो अपने स्थानीय भाषा कोंकणी के बजाय पुर्तगाली भाषा यानी पोर्तगीज पर गर्व करते मिलेंगे। पुडुचेरी जो की भाषा संस्कृति की दृष्टि से तमिल क्षेत्र है, वहां भी फ्रेंच पर गर्व करने वालों की कमी नहीं है। शेष भारत पर अंग्रेजी की वर्चस्व आज भी है। कारण साफ है कि विदेशी भाषा मौलिकता के बजाए विदेशी-गुलामी, विदेशी-सोच की ओर ले जाती है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान महात्मा गांधी, विनोबा भावे, सुभाष चंद्र बोस, वीर सावरकर, सेठ गोविंद दास, पुरुषोत्तम दास टंजन, सरोजिनी मायडू, लाला लाजपत राय जैसे नेताओं के विचारों और प्रयासों के बावजूद अंग्रेजी-परस्तों की अच्छी खासी संख्या थी। संविधान सभा में भी डॉ. भीमराव अंबेडकर ने अंग्रेजी के प्रयोग की छूट केनल 15 वर्ष के लिए ही दी थी। स्वतंत्रता के समय पूरे देश की आकांक्षा थी कि अंग्रेजों के साथ अंग्रेजी की सत्ता को भी हटाया जाए और देश का काम देश की भाषाओं में हो। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। हुआ इसके ठीक उलट। स्वतंत्रता के समय भी देश में 99% से अधिक आबादी मातृभाषा में ही पड़ती थी लेकिन आगे चलकर जिस प्रकार की नीतियां अपनाई गई गांव-गांव तक और उच्च शिक्षा नहीं नर्सरी स्तर तक अंग्रेजी माध्यम को पहुंचा दिया गया व्यवस्था की रग-रग में अंग्रेजी को बसा दिया गया।

पूरे भारत में एक ऐसा वातावरण बना गया है कि ज्ञान-विज्ञान का मतलब अंग्रेजी है, शिक्षा रोजगार का मतलब अंग्रेजी है। संपन्नता और महत्वपूर्ण होने का मतलब अंग्रेजी है। एक प्रसिद्ध पुराना फिल्मी गाना है, 'जाना था जापान पहुंच गए चीन, समझ गए ना।' भारतीय भाषाओं के साथ यही हुआ। कहा तो यह गया था कि भारतीय भाषाओं को बढ़ाया जाएगा और अंग्रेजी को धीरे-धीरे हटाया जाएगा। देश की व्यवस्था देश की भाषाओं में चलेगी, लेकिन हुआ उसकी ठीक विपरीत। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के नाम पर लोग नाचते रहे, गाते रहे, धूम मचाते रहे, भाषा के दिवस मनाते रहे, सम्मेलन रचाते रहे, खाते और कमाते रहे। लेकिन धीरे-धीरे भारतीय भाषाओं को बहुत ही कमजोर कर दिया गया। तत्कालीन सरकारों ने हर क्षेत्र में अंग्रेजी को पुरजोर ढंग से बढ़ाया। आज भी देश के उच्च और सर्वोच्च न्यायालयों में भारतीय भाषाओं का नहीं अंग्रेजी का वर्चस्व है। जबकि सच्चाई तो यह है कि विश्व के सभी संपन्न और विकसित देश वही है जहाँ अपनी मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाई होती है और काम होता है। उन देशों की समग्र व्यवस्था और विधि व न्याय-प्रणाली उनकी भाषा में ही है। लाकिन भारत में इसके ठीक विपरीत धारणा विकसित की गई है।

नई शिक्षा नीति के माध्यम से भारत सरकार भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ाती हुई दिख तो रही है लेकिन इस मामले में कोई ठोस प्रगति अभी धरातल पर नजर नहीं आती। यहाँ भी न्यायपालिका अंग्रेजी के पक्ष में खड़ी दिखाई देती है। शासन-प्रशासन में भी भारतीय भाषाओं को ले कर कोई बड़ा परिवर्तन दिखाई नहीं देता।

ऐसी में हमारी तो सभी राजनीतिक दलों से यह माँग है कि वे वादा करें कि वे भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ाएंगे, कम से कम स्कूली स्तर पर इस शिक्षा का माध्यम बनाएंगे। नई शिक्षा नीति के अनुसार स्कूलों में दो भारतीय भाषाएं कम से कम पढ़ने की व्यवस्था करेंगे। जब पूरी दुनिया के लोकतांत्रिक देश में सभी स्तरों पर जनभाषा में न्याय मिलता है तो हमारे यहां यह अन्याय क्यों है? नौकरी पाने के लिए विषय के ज्ञान की बजाए अंग्रेजी के ज्ञान पर जोर क्यों है ? लोगों को अपनी भाषा में नौकरी क्यों न मिले ? क्या कोई राजनीतिक दल इसके लिए अपनी बात कहेगा।

विदेशी भाषा के रूप में अंग्रेजी पढ़ाई जाए, इसमें किसी को कोई एतराज नहीं। अंग्रेजी ही नहीं, किसी विशेष उद्देश्य के लिए यदि कोई विद्यार्थी कोई अन्य विदेशी भाषा भी यदि विद्यार्थी सीखना चाहे तो विश्वविद्यालयों में विदेशी भाषा विभागों के माध्यम से उसकी व्यवस्था भी की जाए। हमारा मानना स्पष्ट है कि ज्ञान का कोई भी द्वारा कहीं से भी बंद न किया जाए। लेकिन अपनी भाषा की जगह विदेशी भाषा को ना लादा जाए। किसी देश में ज्ञान-विज्ञान का विकाल मौलिक चिंतन से ही होता है और मौलिक चिंतन अपनी भाषा में ही संभव है।

महात्मा गांधी का नाम और उनकी विरासत की राजनीति करने वालों को इस संबंध में महात्मा गांधी को पढ़ना भी चाहिए। उन्होंने कहा था ति यदि भारत में विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा से दी जाती तो आज जो हम भारत के तीन-चार आविष्कारकों के नाम लेते हैं, हमारे यहाँ इतने आविष्कारक होते कि हम इन्हें याद तक न करते। लेकिन अंग्रेजी-परस्ती के इतिहास ने मौलिक-चिंतन के माध्यम, यानी मातृभाषा में शिक्षा के मार्ग को पूरी तरह बंद कर दिया।

देश के करोड़ों विद्यार्थी, प्रतिभाशाली और मेधावी विद्यार्थी केवल इसलिए आगे नहीं बढ़ पाए और पीछे रह जाते हैं क्योंकि सारी व्यवस्थाएं अंग्रेजी में है और अंग्रेजी की बड़े-बड़े विद्यालय उनकी पहुंच से दूर हैं। केवल अंग्रेजी के बल पर काम योग्य लोग भी आगे बढ़ रहे हैं और मेधावी पीछे छूट रहे हैं। यदि भारतीय भाषाओं के माध्यम से देश की शिक्षा और संपूर्ण व्यवस्था चलने लगे तो कुछ करोड़ ही नहीं बल्कि 140 करोड लोग तेजी से आगे बढ़ने लगेंगे और निश्चित ही भारत अति शीघ्र विश्व की महान शक्ति बन सकेगा।

हमारा चुनावी माँग-पत्र बहुत ही सपष्ट है। हमें चाहिए जनभाषा में विधि- न्याय, व्यापार,-व्यवसाय, सभी स्तरों पर सरकारी या गैर सरकारी आवश्यक सूचनाएँ (जो कानूनी रूप से दी जानी आवश्यक हैं।) जनभाषा में शिक्षा ही नहीं रोजगार भी देने की व्यवस्था की जाए। सरकारी कार्यालयों और कंपनियों में ही नहीं निजी स्तर पर भी भारतीय भाषाओं में पढ़ने वालों के लिए रोजगार की व्यवस्था करवाई जाए। भारतीय ज्ञान-विज्ञान, साहित्य-संकृति को शिक्षा में समुचित स्थान दिया जाए। अंग्रेजी के नकलतंत्र के स्थान पर मौलिक चितंन और मौलिक आविष्कारों का मार्ग प्रशस्त किया जाए।

आर्थिक क्षेत्र में नित नए विश्व रिकार्ड बनाता भारत

दिनांक 1 मई 2024 को अप्रेल 2024 माह में वस्तु एवं सेवा कर के संग्रहण से सम्बंधित जानकारी जारी की गई है। हम सभी के लिए यह हर्ष का विषय है कि माह अप्रेल 2024 के दौरान वस्तु एवं सेवा कर का संग्रहण पिछले सारे रिकार्ड तोड़ते हुए 2.10 लाख करोड़ रुपए के रिकार्ड स्तर पर पहुंच गया है, जो निश्चित ही, भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती को दर्शा रहा है। वित्तीय वर्ष 2022 में वस्तु एवं सेवा कर का औसत कुल मासिक संग्रहण 1.20 लाख करोड़ रुपए रहा था, जो वित्तीय वर्ष 2023 में बढ़कर 1.50 लाख करोड़ रुपए हो गया एवं वित्तीय वर्ष 2024 में 1.70 लाख करोड़ रुपए के स्तर को पार कर गया। अब तो अप्रेल 2024 में 2.10 लाख करोड़ रुपए के स्तर से भी आगे निकल गया है। इससे यह आभास हो रहा है कि देश के नागरिकों में आर्थिक नियमों के अनुपालन के प्रति रुचि बढ़ी है, देश में अर्थव्यवस्था का तेजी से औपचारीकरण हो रहा है एवं भारत में आर्थिक विकास की दर तेज गति से आगे बढ़ रही है। कुल मिलाकर अब यह कहा जा सकता है कि भारत आगे आने वाले 2/3 वर्षों में 5 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की ओर मजबूती से आगे बढ़ रहा है। भारत में वर्ष 2014 के पूर्व एक ऐसा समय था जब केंद्रीय नेतृत्व में नीतिगत फैसले लेने में भारी हिचकिचाहट रहती थी और भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की हिचकोले खाने वाली 5 अर्थव्यवस्थाओं में शामिल थी। परंतु, केवल 10 वर्ष पश्चात केंद्र में मजबूत नेतृत्व एवं मजबूत लोकतंत्र के चलते आज वर्ष 2024 में भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है और विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर तेजी से आगे बढ़ रही है।

आज भारत आर्थिक क्षेत्र में वैश्विक मंच पर नित नए रिकार्ड बना रहा है। वैश्विक स्तर पर विदेशी प्रेषण के मामले में आज भारत प्रेषण प्राप्तकर्ता के रूप में प्रथम स्थान पर पहुंच गया है। भारत में आज सबसे बड़ा सिंक्रोनाईजड बिजली ग्रिड है। बैंकिंग क्षेत्र में वास्तविक समय लेनदेन की सबसे बड़ी संख्या आज भारत में ही सम्पन्न हो रही है। भारत आज विश्व में दूसरा सबसे बड़ा स्टील उत्पादक देश है एवं भारत आज पूरे विश्व में मोबाइल फोन का निर्माण करने वाला दूसरा सबसे बड़ा निमार्ता बन गया है। भारत में आज विश्व का दूसरा सबसे बड़ा सड़क नेट्वर्क है। मात्रा की दृष्टि से भारत में आज विश्व का तीसरा सबसे बड़ा फामार्सीयूटिकल उद्योग है। भारत में आज पूरे विश्व में तीसरा सबसे बड़ा मेट्रो नेट्वर्क है। भारत ने स्टार्टअप को विकसित करने के उद्देश्य से विश्व का तीसरा सबसे बड़ा पारिस्थितिकी तंत्र खड़ा कर लिया है। भारत का स्टॉक बाजार, पूंजीकरण के मामले में, विश्व में चौथे स्थान पर आ गया है। भारत में आज विश्व का चौथा सबसे बड़ा रेल नेट्वर्क है। विश्व में पैटेंट हेतु आवेदन किए जाने वाले देशों में भारत आज छठे स्थान पर आ गया है। आर्थिक क्षेत्र में भारत को यह सभी उपलब्धियां पिछले 10 वर्षों के दौरान प्राप्त हुई हैं।

पिछले केवल 10 वर्षों के दौरान शेयर बाजार में निवेशकों को अपार सफलता हासिल हुई है और सेन्सेक्स ने 200 प्रतिशत की रिकार्ड वृद्धि दर्ज की है, इसी प्रकार निफ्टी भी इसी अवधि में 206 प्रतिशत की रिकार्ड वृद्धि दर्ज करने में सफल रहा है। यह स्थानीय एवं विदेशी निवेशकों का भारतीय अर्थव्यवस्था पर अपना विश्वास जता रहा है। भारत में शेयर बाजार में व्यवहार करने के उद्देश्य से खोले जाने वाले डीमेट खातों की संख्या वर्ष 2014 में 2.2 करोड़ थी जो वर्ष 2024 में बढ़कर 15.13 करोड़ हो गई है अर्थात इन 10 वर्षों में 7 गुणा से अधिक की वृद्धि दर अर्जित की गई है। देश का प्रत्येक उद्यमी/उपक्रमी/व्यवसायी बहुत उत्साह में है कि देश में व्यापार करने हेतु वातावरण में बहुत सुधार हुआ है एवं ईज आफ डूइंग बिजनेस में काफी सुधार हुआ है। आज भारत ही नहीं बल्कि भारतीय कम्पनियों द्वारा विदेश में भी पूंजी उगाहना बहुत आसान हो गया है। अतः एक प्रकार से उद्यमियों के लिए पूंजी की समस्या तो नहीं के बराबर रह गई है। भारतीय नागरिकों में आज स्व का भाव जगाने में भी कामयाबी मिली है, जिसके चलते स्वदेश में निर्मित वस्तुओं का उपयोग बढ़ रहा है एवं अन्य देशों से विभिन्न उत्पादों के आयात कम हो रहे हैं। इसके चलते भारत के विदेशी व्यापार घाटे में सुधार दृष्टिगोचर है। आज भारत से विभिन्न उत्पादों के निर्यात में मामूली वृद्धि दर्ज हो रही है तो कई उत्पादों के आयात में कमी दिखाई देने लगी है। इसे भारतीय नागरिकों के आत्म निर्भर भारत की ओर बढ़ते कदम के रूप में देखा जा सकता है। फरवरी 2024 माह में भारत का व्यापारिक निर्यात 11.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करते हुए 4140 करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो गया, जो पिछले 20 महीनों में उच्चतम स्तर पर है। इसके अतिरिक्त, सेवा निर्यात 3210 करोड़ अमेरिकी डॉलर के रिकार्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया है। फरवरी 2024 माह में माल एवं सेवाओं को मिलाकर कुल निर्यात 7355 करोड़ अमेरिकी डॉलर का रहा है, जो फरवर 2023 की तुलना में 14.2 प्रतिशत अधिक है। इसी कारण से, भारत का विदेशी मुद्रा भंडार भी आज 64,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर को पार कर गया है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

संपादकीय

भरी सरकारी झोली

यह सुखद ही है कि देश कर संग्रहण सिस्टम में सुधार की दिशा में सार्थक पहल से एक कदम आगे बढ़ा है। देश में पहली बार जीएसटी का संग्रहण दो लाख करोड़ रुपये से पार चला गया है। कर विशेषज्ञ इसे टैक्स सिस्टम में सुधार के प्रयासों की सफलता बता रहे हैं। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था का भविष्य उसके समृद्ध आर्थिक संसाधनों पर ही निर्भर होता है। भारत के अड़ोस-पड़ोस के कई देशों की अर्थव्यवस्था नियोजन के अभाव, भ्रष्टाचार तथा लोकलुभावन नीतियों के व्यय बोझ से चरमरा गई। इसलिये आर्थिक अनुशासन और वित्तीय संसाधनों को समृद्ध करने का प्रयास बेहद जरूरी हो जाता है। यहां उल्लेखनीय है कि अप्रैल में जहां देसी गतिविधियों से कर संग्रह में 13.4 फीसदी का इजाफा हुआ है, वहीं पिछले अप्रैल के मुकाबले में आयात से होने वाला राजस्व संग्रह भी 8.3 फीसदी बढ़ा है। निश्चय ही चालू वित्त वर्ष के पहले ही महीने यानी अप्रैल में सकल वस्तु एवं सेवा कर संग्रह पहली बार रिकॉर्ड 2.1 लाख करोड़ रुपये होना अर्थव्यवस्था के लिये शुभ संकेत है, जबकि दुनिया की कई बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में फिलहाल मंदी के रुझान नजर आ रहे हैं। यह वृद्धि बीते साल अप्रैल में एकत्र जीएसटी के मुकाबले 12.4 फीसदी अधिक है। आर्थिक विशेषज्ञ मान रहे हैं कि वैश्विक स्तर पर उथल-पुथल के बीच रूस-यूक्रेन युद्ध तथा गजा में हमास इस्राइल संघर्ष जैसी बाह्य चुनौतियों के बावजूद चालू वित्त वर्ष में जीएसटी संग्रह में वृद्धि देश की आर्थिक उन्नति के लिये अच्छा संकेत है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि कर प्राप्तियों में बढ़ोतरी के मूल में आर्थिक गतिविधियों में तेजी के रुझानों का असर है। उल्लेखनीय है कि वृद्धि आयात उपकर में भी हुई है। वैसे एक तथ्य यह भी है कि आम तौर पर किसी भी नये वित्तीय वर्ष में पहले माह अप्रैल में सरकार को सर्वाधिक वस्तु एवं सेवा कर मिलता है। इस वित्त वर्ष के आने वाले महीनों में जीएसटी संग्रहण से होने वाली आय से अर्थव्यवस्था के स्थायी रुझानों का पता चल सकेगा।

निश्चित रूप से आने वाले महीनों में यह देखना दिलचस्प होगा कि किन-किन महीनों में जीएसटी संग्रह दो लाख करोड़ रुपये का आकंड़ा पार करता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि अप्रैल माह में केंद्रीय जीएसटी में इस बार 27.8 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ संगृहीत राशि 94,153 करोड़ रुपये रही। दूसरी ओर राज्य जीएसटी संग्रह में आशातीत 25.9 फीसदी की वृद्धि हुई। इस तरह राज्यों की जीएसटी संग्रह राशि 95,138 करोड़ हो गई। यानी राजस्व प्राप्ति की राह में राज्यों की भागीदारी में भी सुधार देखा गया है। केंद्रशासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर, लक्षद्वीप और अंडमान निकोबार, सिक्किम, मेघालय नगालैंड को छोड़कर सभी राज्यों में इस साल के पहले महीने जीएसटी राजस्व में वृद्धि हुई है। आर्थिक विशेषज्ञ जीएसटी वृद्धि के मूल में उपभोक्ता उत्पादों की ज्यादा खपत का योगदान बता रहे हैं। गर्मी बढ़ने की चिंता में उपभोक्ता बड़े पैमाने पर एसी व फ्रिज आदि खरीदते हैं। बच्चों के शैक्षिक सत्र समापन के चलते बच्चों की छुट्टियों में पर्यटन बढ़ने को भी एक वजह माना जा रहा है। निस्संदेह, लंबी यात्राओं के चलते आर्थिक गतिविधियों में तेजी आती है। वहीं आम चुनावों के चलते चुनाव प्रक्रिया में जुड़े व्यवसायों की आय में हुई वृद्धि की भी इसमें भूमिका हो सकती है। वहीं दूसरी ओर हमें मानना होगा कि वित्तीय नियामक एजेंसियों की सक्रियता तथा जीएसटी अधिकारियों द्वारा प्रशासनिक सुधारों को प्राथमिकता देने से भी जीएसटी संग्रह में वृद्धि का रुझान देखा जा सकता है। इसमें जहां रिटर्न भरने के लिये सख्ती, फर्जी चालान पर अंकुश, पंजीकरण की अनिवार्यता को लेकर सख्ती से भी वस्तु-सेवा कर संग्रहण में वृद्धि हुई है। विश्वास जताया जा रहा है कि जीएसटी राजस्व में वृद्धि से उत्साहित नई सरकार कर उगाही व्यवस्था में बदलाव के लिये नई पहल कर सकती है। सरकार दावा कर सकती है कि 'एक देश, एक कर' की सोच सार्थक परिणाम लेकर सामने आ रही है। जो इस क्षेत्र में नये सुधारों का मार्ग भी प्रशस्त कर रही है।

छात्र आंदोलन और अमेरिकी सख्ती पर सवाल

अमेरिका में प्रदर्शनकारियों को दोनों हाथों को पीछे कर हथकड़ी लगाकर ले जाने वाले विजुअल्स पूरी दुनिया देख रही है। वह किसी भी लोकतंत्रकामी को रास नहीं आ सकता। वही अमेरिका भारत को लोकतंत्र की नसीहत देता है। अफ़सोस, अमेरिका की बर्बर और बेहिस पुलिस पर सवाल करने की मनाही है। वर्ष 2005 में पेंटागन से वाशिंगटन डीसी के बाल्टीमोर तक मेट्रो के सफ़र को भूला नहीं हूं, जब बर्गर खा रहे एक स्कूली छात्र को पुलिस हथकड़ी लगाकर ले गई।

अमेरिका में चुनाव तक गज़ा का सवाल विश्वविद्यालयों में गूंजता रहेगा। इसकी गूंज फ्रांस के शिक्षा केंद्रों में भी होने लगी है। क्या भारत में इसका 'वायरस' फैलने वाला है? यह सवाल देश के कई कैंपसों से मिलना बाक़ी है। पिछले हफ्ते पेरिस के एक शीर्ष विश्वविद्यालय 'साइंसेज-पो' में अमेरिका की देखादेखी फलस्तीनी समर्थक प्रदर्शन शुरू हुआ। इमैनुएल मैक्रों इस प्रदर्शन से इतने नाराज़ हुए कि 'साइंसेज-पो' की फंडिंग ही निलंबित कर दी। 'साइंसेज-पो' में राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों और उनके प्रधानमंत्री गाब्रिएल अट्टल पढ़ाई कर चुके हैं। लेकिन ऐसा फैसला लेते समय मैक्रों ने इसका लिहाज़ नहीं किया। गज़ा में जारी युद्ध, फ्रांस के लिए संवेदनशील मुद्दा है। फ्रांस पश्चिमी यूरोप के यहूदियों और प्रवासी मुसलमानों के लिए घर जैसा है, इसलिए दोनों तरफ़ से टकराव की स्थिति बनी रहती है।

फ्रांस के धुर वामपंथी एलएफआई (ला फ्रांस इंसोमाइज) के सांसदों ने छात्रों द्वारा विरोध प्रदर्शन का समर्थन किया है। मई दिवस के दिन ज्यों लुक मेलेन्कोल ने रूढ़िवादियों और मैक्रों सरकार के अवसरवादी व्यवहार की आलोचना की है। फ्रांसीसी प्रधानमंत्री गाब्रिएल अट्टल ने कहा कि बहस की गुंजाइश हमेशा रहती है, लेकिन 'साइंसेज-पो' के शैक्षिक माहौल को अवरुद्ध करने वाले अल्पसंख्यक छात्र, बहुसंख्यकों पर अपने विचार थोप रहे थे। ऐसी विचारधारा को हम 'अटलांटिक पार से आयातित' कह सकते हैं।

लेकिन इस समय ज़ेरे बहस जो बाइडेन हैं, जिनके चुनाव के समय अमेरिकी विश्वविद्यालयों में जोरदार प्रदर्शन हो रहे हैं। 1 मई तक अमेरिका के 30 से अधिक कैंपसों में हुए प्रदर्शनों में 1400 से अधिक प्रदर्शनकारी गिरफ्तार किये गये हैं। गज़ा में नरसंहार रोकने के सवाल पर लगातार हुए प्रदर्शन को रोकने के वास्ते, और यहूदी विरोधी भावना से निपटने के लिए अमेरिकी कांग्रेस में बुधवार को एक विधेयक पास हुआ।

इसके पक्ष में 320 सांसद थे, और विरोध में 91. इक्कीस रिपब्लिकन और 70 डेमोक्रेट्स ने इसके खिलाफ मतदान किया था। बहुसंख्यक अमेरिकी जनता युद्धविराम के पक्ष में है, बावजूद इसके जो बाइडेन की ज़िद कहिए कि अमेरिका इस्राइल का समर्थन कर रहा है। इस समय न्यूयार्क स्थित कोलंबिया विश्वविद्यालय में तनाव की स्थिति है। बुधवार को संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक में इस्राइल के राजदूत गिलाद एर्दान ने छात्र प्रदर्शनकारियों की निंदा की। गिलाद एर्दान ने कहा, 'हम हमेशा से जानते थे कि हमास स्कूलों में छिपा हैज हमें यह अहसास ही नहीं हुआ कि यह सिर्फ गाजा के स्कूलों में नहीं है, बल्कि अमेरिका में हार्वर्ड, कोलंबिया जैसे कुलीन विश्वविद्यालय भी इनके केंद्र हैं।'

व्हाइट हाउस के प्रवक्ता जॉन किर्बी ने मंगलवार को संवाददाताओं से कहा कि राष्ट्रपति जो बाइडेन का मानना है कि छात्रों द्वारा एक शैक्षणिक भवन पर कब्जा करना बिल्कुल गलत है। इसे शांतिपूर्ण विरोध हम कतई नहीं कह सकते। डेमोक्रेट जमाल बोमन, जो कोलंबिया विश्वविद्यालय के पास न्यूयॉर्क जिले का प्रतिनिधित्व करते हैं, ने इसे रोकने का आह्वान किया। बोमन ने एक बयान में कहा, 'कॉलेज परिसरों का सैन्यीकरण, पुलिस की व्यापक उपस्थिति और सैकड़ों छात्रों की गिरफ्तारी, हमारे लोकतंत्र की बुनियाद के बरअकस है। विरोध प्रदर्शनों से निपटने के तरीके को लेकर कोलंबिया की अध्यक्ष मिनोचे शफ़ीक ने हिंसा की निंदा की और कहा कि कैंपस में शैक्षणिक स्वतंत्रता सुनिश्चित होनी चाहिए। कोलंबिया यूनिवर्सिटी में जब टैंट गाड़कर प्रदर्शनकारी अड़ गये, और पुलिस ने उसे ख़ाली कराने के लिए जिस तरह से बल प्रयोग किया, उसे कोई भी अमन पसंद व्यक्ति सराह नहीं सकता।

अमेरिका में प्रदर्शनकारियों को दोनों हाथों को पीछे कर हथकड़ी लगाकर ले जाने वाले विजुअल्स पूरी दुनिया देख रही है। वह किसी भी लोकतंत्रकामी को रास नहीं आ सकता। वही अमेरिका भारत को लोकतंत्र की नसीहत देता है। अफ़सोस, अमेरिका की बर्बर और बेहिस पुलिस पर सवाल करने की मनाही है। वर्ष 2005 में पेंटागन से वाशिंगटन डीसी के बाल्टीमोर तक मेट्रो के सफ़र को भूला नहीं हूं, जब बर्गर खा रहे एक स्कूली छात्र को पुलिस हथकड़ी लगाकर ले गई। अमेरिका में छोटी-छोटी बातों पर पुलिस द्वारा पिस्तौल तान देना, पटककर पीछे से हथकड़ी लगा देना सामान्य-सी बात है।

भारत में जघन्य आपराधिक मामलों वाले अभियुक्त को ही हथकड़ी लगाने का कोर्ट आदेश मिलता है। 80 के दशक में साधारण अपराध मामले में हथकड़ी पर रोक लगा दी गई थी। उमर ख़ालिद को हथकड़ी लगाने के आवेदन को रद्द करते हुए दिल्ली की अदालत ने टिप्पणी की थी कि उमर कोई गैंगस्टर नहीं है। तो क्या लोकतंत्र का चौधरी बने अमेरिका को भारत से नसीहत लेने की ज़रूरत है? गज़ा के दमन चक्र के सवाल पर अमेरिकी कैंपस कुछ हफ्तों से छिटपुट प्रदर्शनों की चपेट में थे। लेकिन 22 अप्रैल, 2024 को यह प्रदर्शन फैल गया, जब न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय, येल विश्वविद्यालय, एमर्सन कॉलेज, मैसाचुसेट्स इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) और टफ्ट्स विश्वविद्यालय सहित पूर्वी तट के कई परिसरों पर छात्रों ने टैंट लगाकर कब्जा करना शुरू कर दिया। 40 से अधिक कैंपसों में 'प्रोटेस्ट कैंप' लगा देखकर सरकार के हाथ-पांव फुल चुके थे। प्रदर्शन स्थल पर टेंट गाड़ देने से जो बाइडेन प्रशासन की भृकुटि तन चुकी थी। कोलंबिया विश्वविद्यालय में तीन समूहों ने पिछले बुधवार को 'टेंट सिटी' स्थापित की। ये समूह हैं स्टूडेंट फॉर जस्टिस इन फलस्तीन (एसजेपी), जेविश वॉयस फॉर पीस (जेवीपी) और विदीन ऑवर लाइफटाइम। छात्रों ने यूनिवर्सिटी प्रशासन से अपील की थी कि वह उन कंपनियों के साथ काम करना बंद करे, जो गज़ा में युद्ध का समर्थन कर रही हैं।

25 अप्रैल, 2024 को एमर्सन कॉलेज, दक्षिणी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय और टेक्सास विश्वविद्यालय में बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियां हुईं। प्रदर्शन यूरोप, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा में फैल गए। गत 27 अप्रैल को जारी कार्रवाई के कारण वाशिंगटन डीसी, एरिजोना और इंडियाना विश्वविद्यालयों में लगभग 275 गिरफ्तारियां हुईं। एमोरी विश्वविद्यालय में हिरासत में लिए गए लोगों में कई प्रोफेसर भी शामिल थे। वाशिंगटन विश्वविद्यालय में कर्मचारियों तक को गिरफ्तार किया गया था। लेकिन यह सब कुछ एकतरफा नहीं था। 28 अप्रैल को एमआईटी, पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजिल्स के यूसीएलए में जवाबी विरोध प्रदर्शन आयोजित किए गए। प्रोटेस्ट के जवाब में काउंटर प्रोटेस्ट। कौन करा रहा था, ये सब?

चूंकि अमेरिका में यह चुनाव का वक्त है, वहां सबसे पॉवरफुल इस्राइल समर्थक लॉबी 'अमेरिकन इस्राइल पब्लिक अफेयर्स कमेटी' (एआईपीएसी) जो बाइडेन के समर्थन में माहौल बनाने में लगी थी। उसके प्रयासों पर पानी फिर गया लगता है। एआईपीएसी के बरक्स यहूदी अरबपति जार्ज सोरोस खड़े हैं, जो इस्राइल के विरुद्ध प्रदर्शनों के लिए मोटी फंडिंग कर रहे हैं।

आज का इतिहास

- पोप एलेक्जेंडर षष्ठम ने 1493 में अमेरिका महाद्वीप को पुर्तगाल और स्पेन के बीच बांटा।
- पेरिस में खुलने और बन्द होने वाली पहली छतरी 1715 में बनाई गई।
- अमेरिकी कला एवं विज्ञान अकादमी की स्थापना 1780 में हुई।
- नीदरलैंड और ब्रिटेन ने 1818 में गैरकानूनी दास व्यापार के खिलाफ समझौता किया।
- अमेरिकी प्रांत मिशिगन में मृत्युदंड को 1846 में खत्म किया गया।
- भारत का पहला डाक टिकट आधिकारिक रूप से 1854 में जारी हुआ।
- ओपेरा थियेटर में टॉमस एल्वा एडीसन ने अपने आविष्कार फ़ोनोग्राफ़ का सार्वजनिक प्रदर्शन 1878 में किया था।
- लंदन में डेली मेल समाचार पत्र का पहला संस्करण 1896 में प्रकाशित हुआ।
- फ्रांस में पेरिस बाजार में आग लगने से 1897 में करीब 200 लोगों की मौत हुई।
- अमेरीका में फ़िल्म कला अकादमी (मोशन पिक्चर आर्ट्स एकेडेमी) की स्थापना 1927 में की गई थी, जिसने 'ऑस्कर' पुरस्कार देने शुरू किए।
- अतातुर्क मुस्तफा कमाल पाशा तुर्की के राष्ट्रपति 1931 में बने।
- जर्मनी की सेना ने नीदरलैंड, डेनमार्क और नार्वे मे आत्मसमर्पण 1945 में किया।
- पहला ग्रेमी अवॉर्ड्स 1959 को आयोजित हुआ।
- 'द किड' और 'ग्रेट डिक्टेटर' जैसी मूक फिल्मों के स्टार चार्ली चैपलिन को बकिंघम पैलेस में नाइट की उपाधि 1975 को प्रदान की गई।
- श्रीमती मार्गरेट थैचर ब्रिटेन की पहली महिला प्रधानमंत्री 1979 में बनीं।
- कोल माइंस डे की घोषणा 1980 में हुई।
- जिम्बाब्वे के राष्ट्रपति नेता रॉबर्ट मुगाबे ने 1980 में चुनाव में भारी जीत हासिल की और प्रथम अश्वेत राष्ट्रपति बने।
- चीन ने 1983 को परमाणु परीक्षण किया।
- अमेरिका का पहला बैंक नेशनल हिस्टोरिक लैंडमार्क नाम से सूचीबद्ध 1987 मे हुआ।
- अमेरिकी अंतरिक्ष यान एफटीएस-30 का प्रक्षेपण 1989 में हुआ।
- काहिरा में इस्रायल एवं फ़िलिस्तीनी नेताओं द्वारा फ़िलिस्तीनी स्वायत्तता से संबंधित ऐतिहासिक समझौते पर 1994 को हस्ताक्षर हुये।
- भूमिगत बारूदी सुरंगों के उत्पादन पर प्रतिबंध लगाने के लिए ओटावा संधि के सभी हस्ताक्षरकर्ता देशों की पहली बैठक मापूतो (मोजाम्बिक) 1999 में शुरू हुई।
- मैक्सिको की अन्ना गुएवेरा ने 2003 में 35.30 सेकेण्ड का समय लेकर ग्रांप्री मीटर की 300 मीटर दौड़ में विश्व रिकार्ड बनाया।
- बैंकॉक में ग्लोवल वार्मिंग पर बैठक 2007 में सम्पन्न हुई।

शंकाओं के समाधान करने की पहल जरूरी

कोविड वैक्सीन कोविशील्ड को लेकर देश-दुनिया में कई तरह के सवाल उठाए जा रहे हैं। ब्रिटेन की फार्मा कंपनी एस्ट्राजेनेका ने माना है कि उनकी कोविड-19 वैक्सीन से साइड इफेक्ट्स हो सकते हैं। हालांकि, ऐसा बहुत दुर्लभ मामलों में ही होगा। एस्ट्राजेनेका का जो फॉर्मूला था उसी से भारत में सीरम इंस्टिट्यूट ने कोविशील्ड नाम से वैक्सीन बनाई है। ब्रिटिश हाईकोर्ट में जमा दस्तावेजों में कंपनी ने माना है कि उसकी कोरोना वैक्सीन से कुछ मामलों में थ्रॉम्बोसिस थ्रॉम्बोसाइटोपेनिया सिंड्रोम यानी टीटीएस हो सकता है। इस बीमारी से शरीर में खून के थक्के जम जाते हैं और प्लेटलेट्स की संख्या गिर जाती है।

अप्रैल, 2021 में जेमी स्कॉट नाम के शख्स ने यह वैक्सीन लगवाई थी। इसके बाद उनकी हालत खराब हो गई। शरीर में खून के थक्के बनने का सीधा असर उनके दिमाग पर पड़ा। इसके अलावा स्कॉट के ब्रेन में इंटर्नल ब्लीडिंग भी हुई। रिपोर्ट के मुताबिक, डॉक्टरों ने उनकी पत्नी से कहा था कि वो स्कॉट को नहीं बचा पाएंगे। पिछले साल स्कॉट ने एस्ट्राजेनेका के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई। मई, 2023 में स्कॉट के आरोपों के जवाब में कंपनी ने दावा किया था कि उनकी वैक्सीन से टीटीएस नहीं हो सकता है। हालांकि, इस साल फरवरी में हाईकोर्ट में जमा किए दस्तावेजों में कंपनी इस दावे से पलट गई।

उल्लेखनीय है कि सुरक्षा संबंधित मामलों को देखते हुए यूके में अब ऑक्सफोर्ड-एस्ट्राजेनेका की वैक्सीन इस्तेमाल नहीं की जाती है। हालांकि, कई इंडिपेंडेंट स्टडीज में इस वैक्सीन को महामारी से निपटने में बेहद कारगर बताया गया। वहीं, साइड इफेक्ट्स के मामलों की वजह से इस वैक्सीन के खिलाफ जांच शुरू की गई और कानूनी कार्रवाई हुई।

कोरोना से बचाने में कोविड वैक्सीन को काफी मददगार माना गया। मगर ब्रिटिश फार्मा कंपनी की एस्ट्राजेनेका ने एक मामले में कबूला कि उसकी वैक्सीन के दुर्लभ साइड इफेक्ट में हार्ट अटैक हो सकता है। भारत में बड़े पैमाने पर इसे कोविशील्ड के नाम से लगवाया गया है।

मॉडर्न लाइफ स्टाइल में ज्यादातर लोग घंटों ऑफिस में एक जगह बैठकर काम करते हैं, जिसके कारण कई सारी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। जब आप काफी देर तक एक ही जगह बैठे रहते हैं तो शरीर में खून के थक्के जमने की समस्या बढ़ जाती है। शरीर में खून के थक्के जमना को 'वेन थ्रोम्बोसिस' की बीमारी कहते हैं।

ब्लड क्लॉटिंग की बीमारी किसी भी व्यक्ति के शरीर में हो सकती है। काफी ज्यादा एक जगह बैठने के कारण यह बीमारी हो सकती है। हालांकि, यह बीमारी खतरनाक रूप तब ले लेती है जब ब्लड क्लॉट्स का एक हिस्सा टूट जाता है और फेफड़ों तक पहुंच जाता है। इसे पल्मोनरी एम्बोलिज्म कहते हैं।

थ्रोम्बोसिस के कारण हार्ट अटैक, ब्रेन स्ट्रोक और प्लेटलेट्स गिरने का खतरा बढ़ जाता है। दिल का दौरा (मायोकार्डियल इन्फ्रक्शन) बेहद खतरनाक स्थिति है, जिसमें दिल की एक या उससे अधिक धमनियों में ब्लॉकेज होने लगते हैं। इसके कारण हार्ट अटैक का खतरा बढ़ जाता है। दिल में सही तरीके से ऑक्सीजन नहीं पहुंच पाता है, जिसके कारण खून के थक्के जमने लगते हैं और बाद में हार्ट अटैक पड़ जाता है। ब्रेन स्ट्रोक की स्थिति में भी यही होता है कि ब्रेन में ब्लड ठीक तरीके से नहीं पहुंच पाता है। दिमाग में ऑक्सीजन की कमी के कारण ब्रेन स्ट्रोक का खतरा बढ़ जाता है।

खास बात यह है कि इस वैक्सीन का इस्तेमाल अब ब्रिटेन में नहीं हो रहा है। टेलीग्राफ की रिपोर्ट के मुताबिक, बाजार में आने के कुछ महीनों बाद वैज्ञानिकों ने इस वैक्सीन के खतरे को भांप लिया था। सुझाव दिया गया था कि 40 साल से कम उम्र के लोगों को दूसरी किसी वैक्सीन का भी डोज दिया जाए। ऐसा इसलिए क्योंकि एस्ट्राजेनेका की वैक्सीन से होने वाले नुकसान कोरोना के खतरे से ज्यादा थे।

मेडिसिन हेल्थकेयर प्रोडक्ट्स रेगुलेटरी (एमएचआरए) के मुताबिक ब्रिटेन में 81 मामले ऐसे हैं, जिनमें इस बात की आशंका है कि वैक्सीन की वजह से खून के थक्के जमने से लोगों की मौत हो गई। एमएचआरए के मुताबिक, साइड इफेक्ट से जूझने वाले हर 5 में से एक व्यक्ति की मौत हुई है।

रिपोर्ट के मुताबिक, फ्रीडम ऑफ इन्फॉर्मेशन के जरिए हासिल किए गए आंकड़ों के मुताबिक ब्रिटेन में फरवरी में 163 लोगों को सरकार ने मुआवजा दिया था। इनमें से 158 ऐसे थे, जिन्होंने एस्ट्राजेनेका की वैक्सीन लगवाई थी।

दूसरा पहलू यह है कि कोरोना के समय में इसी वैक्सीन ने लाखों लोगों की जान भी बचाई थी। कई स्टडीज में यह साबित हुआ है कि कोरोना महामारी के दौरान एस्ट्राजेनेका की वैक्सीन आने के बाद पहले साल में ही इससे करीब 60 लाख लोगों की जान बची है। वर्ल्ड हेल्थ ने भी कहा था कि 18 साल या उससे ज्यादा की उम्र वाले लोगों के लिए यह वैक्सीन सुरक्षित और असरदार है। इसकी लॉन्चिंग के वक्त ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने इसे ब्रिटिश साइंस के लिए एक बड़ी जीत बताया था। भारत में इसी फॉर्मूले से बनी कोविशील्ड के 175 करोड़ डोज लगे। फ़िलहाल कोविशील्ड की यह खबर आने के बाद लोगों की चिंता बढ़ गयी है। कुल मिलाकर इस संवेदनशील मामले में स्वास्थ्य मंत्रालय को स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए।

लाइक, व्यूज के चक्कर में कानून तोड़ते युवा

इस साल की शुरुआत में बिहार के खगड़िया में भी ऐसी ही घटना देखने को मिली। 32 साल की एक महिला अपने सास-ससुर के साथ रहती थी। उसके पति बाहर मजदूरी करते थे। एक दिन अकेले में वह इंस्टाग्राम के इसी ट्रेंड पर फांसी के फंदे से लटकने की रील बना रही थी। उसने अपने पांव के नीचे ईंटें लगा रखी थी लेकिन ऐन वक्त पर ईंटें भरभरा कर गिर गईं और महिला फांसी के फंदे से झूल गई। सास-ससुर जब घर लौटे तो फंदे से लटकी बहू और सामने ट्राइपॉड पर लगा फोन मिला।

क्या युवा पीढ़ी सोशल मीडिया पर रात ही रात में स्टार बनने के लिए मानसिक तौर पर गुलाम हो चुकी है? क्या युवा गलत और सही की पहचान नहीं कर पा रहे? ज्यादा से ज्यादा लाइक और व्यूज हासिल करने के लिए वे कानून और नियमों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। लोकप्रियता हासिल करने के लिए युवा जेल जाने से भी नहीं कतरा रहे। आखिर ऐसी विकृत मानसिकता कहां से पैदा हो रही है। इन सभी सवालों का जवाब ढूंढना कोई मुश्किल बात नहीं है। पिछले दिनों राजधानी दिल्ली में बाइक सवार स्पाइडर जोड़े के विरुद्ध कार्रवाई की गई जो स्पाइडरमैन जैसी ड्रेस पहने बाइक दौड़ा रहे थे। एक व्यक्ति को सड़क के मध्य कुर्सी पर बैठकर ट्रैफिक नियमों के उल्लंघन के आरोप में भारी-भरकम जुर्माना लगाया गया। बाइक पर स्टंट करते अनेक युवाओं के विरुद्ध कार्रवाई की जा चुकी है।

सोशल मीडिया पर फेमस होने के लिए दिल्ली में कुछ लोग अजब-गजब हरकत कर रहे हैं। ऐसे लोग इंस्टाग्राम, यू ट्यूब और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अपने फॉलोअर्स और वीडियो पर लाइक बढ़ाने के लिए बहुत रिस्की चीजें कर रहे हैं। हाल ही में पुलिस ने ऐसे लोगों पर सख्ती दिखानी शुरू कर दी है जो वीडियो बनाने के लिए कानून तोड़ते हैं। पिछले कुछ हफ्तों में ऐसे दर्जनभर से ज्यादा लोगों को पकड़ा गया है या उनके खिलाफ शिकायत दर्ज कराई गई है। पुलिस की जांच में पता चला है कि हाल की घटनाओं में एक परेशान करने वाला ट्रेंड सामने आया है, जिसमें 20-25 साल के युवा जिनके अक्सर 1-2 लाख फॉलोअर्स होते हैं, वीडियो बनाने के लिए खास तरीकों से सोशल मीडिया के फीचर्स का इस्तेमाल करते हैं ताकि लोगों का ध्यान खींच सकें।

आजकल युवक ही नहीं युवतियां भी रील्स बनाने के चक्कर में नियमों को ताक पर रख रही हैं। कोई खतरनाक स्टंट कर रहा है तो कोई कार का दरवाजा खोलकर खड़ा है। कई युवतियां अर्द्धनग्न होकर मैट्रो में सवार हो जाती हैं तो कोई नृत्य करती है तो कोई गीत गुनगुनाती है। उद्देश्य सिर्फ एक ही है कि उन्हें सोशल मीडिया पर ज्यादा से ज्यादा लाइक और व्यूज मिलें। रील्स और रियल लाइफ में बहुत अंतर होता है। रील्स बनाने के चक्कर में रोमांचकारी स्थलों पर जाकर स्टंट करने से कुछ युवा जान भी गंवा चुके हैं। यह समस्या सिर्फ बड़े शहरों में रहने वाली युवा पीढ़ी की नहीं है। इस साल की शुरुआत में बिहार के खगड़िया में भी ऐसी ही घटना देखने को मिली। 32 साल की एक महिला अपने सास-ससुर के साथ रहती थी। उसके पति बाहर मजदूरी करते थे। एक दिन अकेले में वह इंस्टाग्राम के इसी ट्रेंड पर फांसी के फंदे से लटकने की रील बना रही थी। उसने अपने पांव के नीचे ईंटें लगा रखी थी लेकिन ऐन वक्त पर ईंटें भरभरा कर गिर गईं और महिला फांसी के फंदे से झूल गई। सास-ससुर जब घर लौटे तो फंदे से लटकी बहू और सामने ट्राइपॉड पर लगा फोन मिला। फोन में उसके तड़पने का वीडियो भी रिकॉर्ड हुआ था।

कुछ दिन पहले केदारनाथ मंदिर में शिवलिंग के ऊपर नोट उड़ा रही एक लड़की की रील भी वायरल हुई थी। जिसके बाद मंदिर में फोटोग्राफी-वीडियोग्राफी को ही बैन कर दिया गया। हालांकि, सोशल मीडिया यूजर्स इन खतरनाक रील्स की शिकायत कर रहे हैं और एक्स या इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म पर पुलिस और ट्रैफिक अधिकारियों को टैग कर रहे हैं। पुलिस मानती है कि इन शिकायतों की वजह से ही कई लोगों पर कार्रवाई हो सकी है। 'पिछले 3-4 महीनों में रील्स से जुड़े मामलों में काफी बढ़ौतरी हुई है, शायद इसलिए क्योंकि अब इन वीडियो को बनाने पर पैसा भी मिलता है। ज्यादातर ये युवा लोग हैं, इसलिए पुलिस लोगों को जागरूक करने का प्रयास कर रही है। रेडियो जॉकी और मीडिया संस्थानों से भी मदद ली जा रही है। साथ ही जिला और ट्रैफिक पुलिस इन रील्स पर ज्यादा निगरानी रख रही है और सोशल मीडिया पर ऐसे कंटेंट को ढूंढने के लिए विशेष हैशटैग और पेजों का सहारा ले रही है। मौजूदा वक्त में रील बनाने वाले लोग खुद को कंटेंट क्रिएटर और इन्फ्लुएंसर्स कहलाना पसंद करते हैं। शॉर्ट वीडियो प्लेटफॉर्म भी उन्हें इसी रूप में प्रमोट करते हैं। कई शॉर्ट वीडियो प्लेटफॉर्म दावा करते हैं कि उनके यहां 'कंटेंट क्रिएटर्स' अच्छी कमाई कर रहे हैं तो कई ऐसे भी हैं जो सिर्फ लोगों तक पहुंचने और शोहरत के लिए ऐसा करते हैं।

गालियां निकालने वाला समाज असभ्य ही है!

कुछ इतिहासकारों ने यह खोज करने का प्रयास किया कि अपने समाज में गालियां कब से चलती हैं। विभिन्न भाषाओं, विभिन्न देशों और विभिन्न समाजों में पिछले लगभग पांच सौ वर्षों से अलग-अलग ढंग से गाली निकाली गई। कहीं किसी को पशु कहकर या जाति के नाम पर अथवा चीन की तरह जो अशुभ अंक हैं उनका प्रयोग करके।

अपने देश में और पड़ोसी देशों में भी पुरुष समाज गालियों का प्रयोग खूब करता है। बिना संकोच के और बिना यह जाने हुए कि इसमें सीधा- सीधा अपने समाज की औरतों का, परिवार की महिलाओं का वे खुला अपमान कर रहे हैं। शायद गाली निकालना पुरुष के पौरुष का प्रतीक बन गया है। इसका प्रमाण यह है कि अगर दस पुरुष किसी भी आयु के और चौदह साल की ऊपर की आयु के लड़के भी बैठे हों तो वहां गालियां सुनी जा सकती हैं। यह ठीक है कि बच्चे गालियां कुछ कम निकालते हैं लेकिन युवा, प्रौढ़ और वृद्ध गाली ऐसे निकालते हैं जैसे यह उनके मुहावरे हैं उनके जीवन का हिस्सा हैं, उनके सामाजिक जीवन की शोभा है। अभी इसी अप्रैल माह में एक वृद्ध जिसकी आयु 84 वर्ष के लगभग और सामाजिक दृष्टि से प्रतिष्ठित है, बातचीत में कहते हैं कि मर्द तो गालियां निकालते ही हैं, पर उनका एक साथी जो गाली निकालता है वह बहुत गंदी हैं। उनसे सीधा प्रश्न था कि जब देश पर विदेशी आक्रमण या आतंकवाद का संकट आए तब बोरी-बिस्तर लेकर पलायन करते समय यह मर्दानगी कहां चली जाती है।

कुछ इतिहासकारों ने यह खोज करने का प्रयास किया कि अपने समाज में गालियां कब से चलती हैं। विभिन्न भाषाओं, विभिन्न देशों और विभिन्न समाजों में पिछले लगभग पांच सौ वर्षों से अलग-अलग ढंग से गाली निकाली गई। कहीं किसी को पशु कहकर या जाति के नाम पर अथवा चीन की तरह जो अशुभ अंक हैं उनका प्रयोग करके।

महाभारत काल में एक प्रसंग आता है कि भगवान श्रीकृष्ण जी ने शिशुपाल का वध भरी सभा में किया। राजसुय यज्ञ का आयोजन जब युधिष्ठिर ने किया तो शिशुपाल जो कि श्रीकृष्ण जी की बुआ का बेटा था अपशब्दों का प्रयोग करता गया। कुछ इतिहासकार इसे गालियां कहते हैं, पर कुछ गलतियां। कृष्ण जी ने अपनी बुआ को यह वचन दिया था कि शिशुपाल की सौ गालियां या गलतियां वे क्षमा कर देंगे, पर इसके बाद उसका सिर काट देंगे। वही हुआ शिशुपाल बोलता गया अपशब्द या गालियां और भगवान श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र से उसका सिर काट दिया।

आक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के पहले संस्करण में उस शब्द का प्रयोग मिलता ही नहीं है जिसे ब्रिटिश समाज में गाली कहा जाता है, क्योंकि वे इसे बुरा शब्द मानते थे। लिखित अंग्रेजी साहित्य में पहली बार इस गाली जैसे शब्द का खुला इस्तेमाल कवि सर डेविड लिंडेसी ने सन् 1535 में किया। आम ब्रिटिश लोग एक दूसरे को ब्लडी कहते थे, पर पिछली सदी की शुरुआत तक ब्रिटेन के कुलीन समाज में ब्लडी बहुत ही बुरा शब्द माना जाता था। ऐसा वर्णन मिलता है कि 1914 में जार्ज बर्नाड शाह के नाटक प्यग्मलिओन में एक पात्र इस शब्द का इस्तेमाल करता है तो लंदन के सभ्य समूह द्वारा इसका विरोध किया गया और ब्रिटिश समाज में सामूहिक रूप से भी इसके विरुद्ध मानों एक स्कैंडल ही मच जाता है, पर भारत और ब्रिटेन के बहुत प्रसिद्ध ग्रंथों में कहीं गाली का प्रयोग नहीं था। अंग्रेजी के कवि होमर के महाकाव्य इलियड और ओडिसी में कहीं गाली नहीं।

भारत में भी महाकवि कालिदास के लिखे किसी भी महाकाव्य में गाली नहीं। हमारे जितने भी संस्कृत व हिंदी के ग्रंथ हैं, पिछले एक हजार वर्ष में एक भी गाली पढ़ने को नहीं मिलती, पर आज अपने समाज को न जाने क्या हो गया। केवल गालियां ही चलती हैं और लगभग सभी गालियां महिलाओं के लिए अपमानसूचक ही हैं। महिलाएं हर युद्ध में, हर दंगे में सांप्रदायिक संघर्ष में हमेशा शारीरिक शोषण, अपमान का शिकार हुई। उसकी तो हम लोग निंदा करते हैं। बलात्कार शब्द को बहुत बुरा मानते हैं, पर यह शाब्दिक महिलाओं का बलात्कार, अपमान धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक नेता और बड़े बड़े समाज सेवक खुले रूप से करते हैं।

कहा जा रहा है ?िक जो गालियों में कहा जाता है और विद्यार्थियों से भी पूछा गया कि क्या वह पाप कर सकते हैं जिसकी घोषणा गालियों में करते हैं। गाली वीर अगर गालियों का बच्चों को अर्थ बताएं और फिर खुद भी जो कहते हैं करके दिखाए तो जिंदगी भर वे जेल की चक्की में पिसेंगे, वे भी जानते हैं, पर कोई भी सभ्य समाज यह गालियां कैसे स्वीकार कर लेता है, यह आश्चर्य है।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

पायनियर
नई दिल्ली , शनिवार, 4 मई , 2024

उदासीन मतदाता

चिंतन का विषय

उदासीन मतदाता राजनीतिक पार्टियों, निर्वाचन आयोग तथा लोकतंत्र के लिए चिंतन का विषय होना चाहिए। लोकसभा चुनाव के पहले दो चरणों में मतदाताओं की सुस्त प्रतिक्रिया उनकी उदासीनता पर अनेक सवाल उठाती है। क्या मौसम खराब होने के कारण ऐसा हुआ अथवा स्थानीय प्रशासन से निराशा, उम्मीदवारों व पार्टियों के प्रति संदेह या ईवीएम के प्रति विश्वास की कमी इसका कारण है? मतदाताओं में जोश पैदा करने तथा चुनाव प्रक्रिया में उसकी सहभागिता बढ़ाना जरूरी हो गया है। कम मतदान प्रतिशत के पीछे मौसम खराब होना तथा शादी-विवाहों या फसल कटाई में व्यवस्तता जैसे कारण हो सकते हैं। तेज गर्मी मतदाताओं को हतोत्साहित कर सकती है। लेकिन मौसम मतदाताओं की सहभागिता सुनिश्चित करने वाला एकमात्र कारण नहीं है। नागरिकों की निराशा का कारण राजनीतिक पार्टियों द्वारा किए अधूरे वादे, निचले स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार तथा अक्षम प्रशासन हो सकता है। अक्सर इन समस्याओं को 'मामूली' समझा जाता है, पर कई स्थानों पर इनके कारण 'मतदान बहिष्कार' की घटनायें सामने आई हैं। बहुत से लोग इसके कारण राजनीतिक प्रक्रिया से ही निराश हो सकते हैं। राजनेताओं के पालाबदल और राजनीतिक अवसरवाद से भी मतदाताओं में निराशा पैदा हो सकती है। 'वंशवादी' राजनीति तथा 'भाई-भतीजावाद' के आधार पर उम्मीदवारों का चयन कुछ खास राजनीतिक पार्टियों से भारी निराशा का कारण बनता है। इससे मतदान प्रतिशत में कमी आ सकती है। सभी समस्याओं पर गंभीर चिंतन कर इनके निराकरण के उपाय राजनीतिक सहमति से किए जाने चाहिए।

वर्तमान लोकसभा चुनाव पर गौर करें तो स्पष्ट होगा कि मतदान प्रतिशत में भले ही 2019 की तुलना में थोड़ी कमी आई हो, पर यह इतनी अधिक नहीं है जितना विपक्ष शोर मचा रहा है। निर्वाचन आयोग ने पिछले कई चुनावों के डेटा से स्पष्ट किया है कि 2019 में सर्वाधिक मतदान हुआ था, अत: केवल उसकी तुलना में मतदान कम दिख सकता है। मतदान प्रतिशत कम होने का कारण अनेक राजनीतिक दलों द्वारा मतदाताओं में पैदा की जाने वाली 'निराशा' तथा देश के भविष्य के प्रति 'अविश्वास' क भावना भी है। ऐसे 'वंशवादी' व 'निहित स्वार्थी' राजनेताओं ने पुरानी लकीर पर चलते हुए फिर ईवीएम पर सवाल उठाए। सर्वोच्च न्यायालय ने अनेक याचिकाओं पर गंभीरता से विचार करते हुए एक व्यापक निर्णय दिया है जिसमें ईवीएम को सही ठहराते हुए वर्तमान चुनाव प्रक्रिया पर लगभग पूर्ण विश्वास प्रकट किया गया है। न्यायालय ने यह भी कहा है कि 'चुनाव प्रक्रिया' पर बार-बार बिना सबूतों के सवाल उठाना देश के लोकतंत्र के लिए खतरनाक हो सकता है। लेकिन विडंबना है कि सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय के बावजूद कई राजनीतिक दलों ने ईवीएम-विरोधी 'संघर्ष' जारी रखने का निर्णय किया है। विडंबना है कि जब ऐसी राजनीतिक पार्टियां राज्यों में इन्हीं ईवीएम से चुनाव जीतती हैं तो खामोश रहती हैं, पर चुनाव हारने पर अपनी पराजय का ठीकरा ईवीएम पर फोड़ती हैं। भारत के कई राजनीतिक दल देश की बदलती परिस्थितियों तथा खासकर युवा मतदाताओं की आकांक्षाओं के प्रति स्वयं को ढाल नहीं पा रहे हैं। समाज में विभाजन, जातिबाद, वंशवाद और तुष्टीकरण की राजनीति करने वाले ऐसे राजनीतिक दल मतदाताओं में निराशा की भावना पैदा करते हैं और मतदान प्रतिशत कम होने का यह भी एक कारण है। आदर्श स्थिति में सभी मतदाताओं को अपने मताधिकार का प्रयोग करना चाहिए। हमें इसी दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करना होगा।

कश्मीर से अफस्पा हटने की उम्मीद

अमित शाह ने जम्मू कश्मीर से अफ्स्पा हटाने का प्रस्ताव किया है। इससे सामान्य स्थिति बहाल होगी, पर इसके क्षेत्र की सुरक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव पर भी गौर किया जाना चाहिए।

अभिनव नारायण
(लेखक, पेशेवर वकील हैं)

हाल ही में केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा है कि केन्द्र जम्मू कश्मीर से अफस्पा हटाने पर विचार करेगा। यह बयान महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे जम्मू कश्मीर पर सरकार और खासकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किए 'नया कश्मीर' वादे का दृष्टिकोण स्पष्ट होता है। लोकसभा चुनाव के फौरन बाद जम्मू कश्मीर पर ध्यान जाएगा क्योंकि इस संघशासित क्षेत्र में इस वर्ष सितंबर में चुनाव होना है। अनुच्छेद 370 समाप्त करने के बाद सरकार संभवत: जम्मू कश्मीर में लंबे समय से व्याप्त अफस्पा की पहेली हल करना चाहती है। सुरक्षा और रणनीति के स्तर पर इस प्रयास से पाकिस्तान के प्रचार को निष्प्रभावी करने का अवसर मिलेगा जिसने जम्मू कश्मीर में मनोवैज्ञानिक युद्ध जैसी स्थिति पैदा की है। इससे समग्र विकास का रास्ता पूरी तरह खुल जाएगा।

लेकिन सरकार को इस दृष्टिकोण पर चलने से पहले व्यापक परिदृश्य पर गौर करना होगा। सशस्त्र सेना विशेषाधिकार कानून सशस्त्र बलों को व्यापक शक्तियां देता है जिसमें धारा 2 के अंतर्गत सीएपीएफ को भी शामिल किया गया है। इस कानून की धारा 7 के अंतर्गत बलों को कानूनी सुरक्षा प्रदान की गई है। हालांकि, सर्वोच्च न्यायालय ने 2016 में अभियोजन से पूर्ण सुरक्षा देने वाला यह प्राविधान हटा दिया था। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा था, 'इससे फर्क नहीं पड़ता है कि पीड़ित कोई आम आदमी था या चरमपंथी या आतंकी। इससे भी फर्क नहीं पड़ता है कि आक्रामक कोई आम व्यक्ति या राज्य है। कानून दोनों के लिए समान है और दोनों पर समान रूप से लागू होता है।' धारा 4 के अंतर्गत अनेक व्यापक किस्म की शक्तियां शामिल हैं।

इनमें 1. बिना वारंट गिरफ्तारी। 2. बिना चेतावनी दिए गोली चलाना या इस प्रकार का बल प्रयोग करना जिससे मौत हो सकती है। इसका प्रयोग किसी ऐसे व्यक्ति के खिलाफ हो सकता है जो अशांत क्षेत्र में सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के खिलाफ व कानून-व्यवस्था के खिलाफ काम कर रहा हो। 3. ऐसी गिरफ्तारी करने के लिए किसी परिसर में प्रवेश करना और तलाशी लेना अथवा किसी ऐसे व्यक्ति को मुक्त कराना जिसे गलत तरीके से बाधित किया गया हो या किसी हथियार, गोला-बारूद या विस्फोटक सामग्री को जब्त करना शामिल है। 4. किसी वाहन को रोकना और उसकी तलाशी लेना जिस पर ऐसे व्यक्ति या हथियारों को ले जाने का संदेह हो।

अफस्पा पर बहस दो दृष्टिकोण से होती है। पहला, सुरक्षा जरूरी है और दूसरा पूर्वोत्तर में न्यायेत्तर हत्यायें। दूसरे हिस्से पर तीखी बहस हुई है और उसने कानून को विवादास्पद बना दिया है। 2004 में जस्टिस जीवन रेड्डी आयोग ने इस कानून की व्यापक समीक्षा की थी। उसने नतीजा निकाला था कि इस कानून को वापस लिया जाना चाहिए तथा कहा था कि 'मणिपुर और दूसरे स्थानों पर होने वाले आंदोलन केवल बीमारी का लक्षण हैं जो बहुत गहरी है।' उसने सरकार का आह्वान किया था कि उसे 'प्रमुख मुद्दों' को संबोधित करना चाहिए। लेकिन कुछ मामलों में कानून के दुरुपयोग को राष्ट्रीय सुरक्षा के महत्व पर भारी नहीं पड़ने देना चाहिए। अफस्पा लागू करने का आह्वान कुछ असाधारण स्थितियों में किया जाता है जिनको समाप्त न करने या कम न करने के गंभीर नतीजे निकल सकते हैं। इनमें 1990 में कश्मीरी पंडितों का नरसंहार तथा 1986 में कश्मीर में हुए दंगे शामिल हैं जिनमें 2,000 लोग मारे गए थे। मरने वालों में मुख्यत: हिंदू थे। इसके साथ ही जनवरी, 1993 में सोपोर गोलीबारी में 40 लोग तथा अक्टूबर, 1993 में बीज बहेड़ा की गोलीबारी में 60 लोग मारे गए थे। इन भयानक घटनाओं के कारण कठोर उपाय जरूरी हो गए थे और एक प्रकार से इसने सक्षम कार्रवाई में सहायता की थी। श्रीनगर में सेना के 15 कार्पर्स के लेफ्टीनेंट जनरल तथा जनरल आफिसर कमांडिंग-जीओसी सैयद अता हुसने ने 2011 में कहा था, 'हमें लगता है कि यहां लागू विशेष कानूनी प्राविधान हटाने से निश्चित रूप से हमारी आपरेशनल क्षमताओं को नुकसान होगा।' रोज रोज होने वाली ऐसी स्थितियों से निपटने के लिए राज्य में विरोधियों के खिलाफ प्रभावी आपरेशनल प्रभुत्व की आवश्यकता थी। इसे केवल सशस्त्र बलों को कार्रवाई की पूरी छूट देने पर ही संभव बनाया जा सकता था।

किसी राज्य या संघशासित क्षेत्र में अफस्पा लागू करने का अर्थ यही है कि राज्य स्थिति से निपटने में पूर्णत: विफल रहा है। राज्य द्वारा अपनी यह क्षमता खोने का अर्थ होता है कि जल्द ही कोई विपरीत स्थिति राज्य में तबाही या राष्ट्रीय सुरक्षा भंग होने का कारण बन सकती है। कानून-व्यवस्था भंग होने की ऐसी स्थिति सामान्य नहीं होती है और इसके लिए अत्यन्त कठोर कदमों की जरूरत होती है। स्थिति को सामान्य बनाने के लिए किए जाने वाले हस्तक्षेप पर कोई बंधन सामान्यीकरण प्रक्रिया को बाधित करता है। इसलिए 'सामान्यीकरण' की प्रगति के लिए प्रभावी आपातकालीन व्यवस्था जरूरी होती है जिसका प्राविधान अफस्पा में किया गया है।

अफस्पा हटाने का आह्वान केवल तभी होना चाहिए जब सुरक्षा परिवेश में महत्वपूर्ण सुधार हुआ हो अथवा जल्दबाजी में इसे हटाने से पुरानी स्थिति फिर वापस आ सकती है। आतंकवाद के 'पोस्टर ब्वाय' बुरहान वानी की जम्मू कश्मीर में हत्या के बाद 2018 में उग्रवादीकरण की नई लहर पैदा हुई थी। यह एक घटना स्पष्ट करती है कि अफस्पा हटाने का निर्णय बहुत सोच-विचार कर ही होना चाहिए। अफस्पा कोई आदर्श स्थिति नहीं है, बल्कि इसकी सीमायें हैं और इसका दुरुपयोग हो सकता है। उदाहरणार्थ, नगालैंड में 2021 में 14 निरपराध सिविलियन मारे गए थे या 1995 के कोहिमा नरसंहार में 16वीं राष्ट्रीय राइफल्स ने टायर फटने को गलती से बम धमाका समझ कर सिविलियनों पर गोली चला दी थी जिसमें 7 लोग मारे गए थे तथा 36 घायल हुए थे। आपरेशनल क्षमताओं के नाम पर 'फ्री पास' या 'फ्रीनेस' के भी गंभीर परिणाम निकले हैं जिनसे कानून का मूल उद्देश्य नष्ट हो जाता है। अफस्पा का उद्देश्य किसी राज्य में अत्यधिक गंभीर स्थिति में सुधार करना है, उसे और गंभीर बनाना नहीं। ऐसी घटनाओं से स्थिति और खराब होती है तथा राज्य में स्थिति और जटिल हो जाती है। इसलिए इन विशेषाधिकारों को हटाने या कम करने के पहले सशस्त्र बलों द्वारा समुचित कार्रवाइयों में सावधानी बरतना जरूरी हो जाता है। सर्वोच्च न्यायालय ने 2016 में यही काम किया था।

अफस्पा लंबे समय तक लागू नहीं रह सकता है क्योंकि असाधारण या अत्यधिक खराब स्थिति अस्थाई होती है और इस पर नियंत्रण होने के बाद अफस्पा हटाया जा सकता है। यदि इसे आवश्यकता से अधिक समय तक लागू रखा जाए तो अफस्पा की उपस्थिति सामान्यीकरण प्रक्रिया में बाधा पैदा करती है। सामान्यीकरण प्रक्रिया का अर्थ केवल विरोधी के खिलाफ युद्ध करना ही नहीं है, बल्कि इसमें शांतिपूर्ण व सद्भावनापूर्ण परिवेश सुनिश्चित करना भी शामिल है। किसी राज्य को तभी सामान्य कहा जा सकता है जब राज्य बिना किसी बंधन, भय या बेचैनी के काम करना शुरू कर दे। अफस्पा लागू होने का अर्थ 'सामान्य' स्थिति की अनुपस्थिति होता है। इससे बेचैनी और भय बढ़ता है तथा इसका दीर्घकालीन प्रभाव राज्य में लोकतांत्रिक परिवेश तथा प्रशासन पर पड़ता है। अनदेखा करने पर इसके कारण सामाजिक-राजनीतिक अस्थिरता पैदा हो सकती है।

जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370 हटाने के बाद से स्थिति में काफी सुधार हुआ है तथा आतंकी घटनाओं में 66 प्रतिशत कमी आई है। सेना के आपरेशन 'सही रास्ता' के अंतर्गत राज्य में आतंकियों की भर्ती में भी भारी कमी आई है। खबरों के अनुसार पिछले साल केवल 7 नौजवान आतंकी समूहों में शामिल हुए हैं। जम्मू कश्मीर में सुरक्षा परिवेश में व्यापक सुधार के कारण अब अफस्पा को हटाने का आह्वान उचित जान पड़ता है। अब सीएपीएफ की उपस्थिति किसी संभावित सुरक्षा चुनौती से निपटने में सक्षम है।

अफस्पा हटाने से लोगों में विश्वास तथा शांति की भावना बहाल करने में सहायता मिलेगी। इससे सामजिक-राजनीतिक स्तर पर सामान्यीकरण की गति और विकास के बारे में भय की भावना समाप्त होगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'नया कश्मीर' का वादा किया है जो समाज और राजनीति को सुरक्षा से आगे ले जाता है। यह स्थिति अफस्पा हटाने से और मजबूत होगी।

भारत में चुनावी गतिविधियों का रंगमंच

"राजनीतिक रंगमंच के क्षेत्र में, उम्मीदवार तनाव और प्रत्याशा के साथ मंच तैयार करते हुए, सत्ता के हिंडोले में अपनी बारी का इंतजार करते हैं।"

राजदीप पाठक
(लेखक, गांधी दर्शन एवं स्मृति समिति से संबद्ध हैं)

भारत में 18वीं लोकसभा चुनावों की प्रत्याशा में, चुनाव आयोग द्वारा आधिकारिक घोषणा (19 अप्रैल से निर्धारित) से बहुत पहले, राजनीतिक दल उम्मीदवारों के चयन, मुद्दों की वकालत और सार्वजनिक चर्चा सहित चुनाव-पूर्व गतिविधियों में उत्साहपूर्वक लगे हुए हैं। 1 जून, 2024)। विशेष महत्व 18 मिलियन पहली बार मतदाताओं के बढ़ते समूह का है, जो चुनावी तमाशे को गहरी दिलचस्पी से देखते हैं क्योंकि पार्टियां महत्वाकांक्षी प्रतिज्ञाएं देकर उनके समर्थन के लिए होड़ कर रही हैं। इस नाटकीय परिवेश में, लोकसभा की संरचना, जिसमें देश भर के 543 संसदीय क्षेत्र शामिल हैं, सर्वोपरि महत्व रखती है। प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र एक विलक्षण प्रतिनिधि को चुनने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो संसद के निचले सदन के भीतर अपने मतदाताओं की चिंताओं को व्यक्त करने का दायित्व संभालता है। इस प्रकार, लोकतांत्रिक उत्साह के शोर के बीच, (18वीं) लोकसभा का गठन एक केंद्र बिंदु के रूप में उभरता है, जो लोकतांत्रिक लोकाचार और भारत की विविध राजनीति के भीतर चुनावी प्रतिनिधित्व की जटिलताओं को दर्शाता है - जैसा कि हम इस अराजक कार्निवल (नृत्य पढ़ें) को देख रहे हैं। प्रजातंत्र।

अब इसकी कल्पना करें- रिहर्सल की गई भाषण कला से गूंजती रैलियाँ; %स्क्रिप्टेड% प्रवचन के नीरस ड्रोन से गूंजती बैठकें; और विशाल होर्डिंग्स और मनमोहक विज्ञापनों से अटा हुआ परिदृश्य - सभी एक रियलिटी टीवी शो में हताश प्रतियोगियों की तरह ध्यान आकर्षित करने की होड़ कर रहे हैं। प्रत्येक उम्मीदवार, इस भव्य तमाशे में अपने भाग्य का उत्सुकता से इंतजार कर रहा है, राजनीतिक अस्पष्टता की छाया में धकेले जाने से बचने के लिए पर्याप्त उज्ज्वल चमकने की उम्मीद कर रहा है। लेकिन, जैसा कि कहा जाता है, एक बार राजनेता, हमेशा एक राजनेता।

लोकतंत्र के इस भव्य ऑर्केस्ट्रा में लगभग एक अरब लोगों को मवेशियों की तरह एक लाख से अधिक मतदान केंद्रों में इकट्ठा होते देखा जाएगा, जिनसे भावी सरकार का निर्धारण करने के लिए एक कोरियोग्राफ किए गए नाटक में अपने वोट डालने की उम्मीद है।

चुनावी राजनीति के क्षेत्र में, राजनेता कुशल भ्रम फैलाने वालों की भूमिका निभाते हैं, जो मतदाताओं को लुभाने के लिए कुशलतापूर्वक वादे गढ़ते हैं। कलात्मक बयानबाजी के माध्यम से, वे वास्तविकता के साथ संभावित असमानता के बावजूद मतदाताओं की भावनाओं को आकर्षित करते हुए, विकास और समावेशिता के दृष्टिकोण को सामने लाते हैं। पार्टियाँ नाटकीय तमाशे में व्यस्त रहती हैं, विस्तृत वेशभूषा धारण करती हैं और बुनियादी ढाँचे, कल्याण और समृद्धि के वादों के साथ ध्यान आकर्षित करने की होड़ करती हैं। हालाँकि, मतदाताओं के निर्णय अंतत: उनकी संवेदनशीलता और राजनेताओं की जोड़-तोड़ क्षमता दोनों को दर्शाते हैं। यह चुनावी तमाशा समकालीन लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में बयानबाजी, धारणा और मतदाता एजेंसी के बीच जटिल अंतरसंबंध को रेखांकित करता है। यहां पिछला प्रदर्शन मायने रखता है। सबका साथ, सबका विकास की लहरों पर सवार होकर, बाद में सबका प्रयास के साथ नरेंद्र मोदी सरकार में प्रवेश करें। 2014 के बाद से, मोदी प्रशासन किसी जादूगर से भी अधिक तेजी से खरगोशों को बाहर निकाल रहा है - गांवों में बिजली पहुंचाने से लेकर भारत को शौच मुक्त बनाने के लिए देश भर में शौचालयों के निर्माण तक, शासन को डिजिटल बनाने (डिजिटल इंडिया), स्टार्टअप इंडिया और स्टैंडिंग तक। ष्टश्1द्बस्न19 जैसी आपात स्थिति के दौरान लोगों और दुनिया के लिए। बेशक, किसी भी अच्छे जादू शो की तरह, चीजों को दिलचस्प बनाए रखने के लिए हमेशा आलोचना की एक स्वस्थ खुराक होती है - आखिरकार, नाटक के थोड़े से स्पर्श के बिना राजनीतिक तमाशा क्या है? भारत के कूटनीतिक प्रयासों ने इसके वैश्विक कद को बढ़ाया है, जो प्रमुख शक्तियों के साथ रणनीतिक गठजोड़ और अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन आदि जैसी पहलों द्वारा चिह्नित है, जिससे व्यापार, प्रौद्योगिकी और सतत विकास में सहयोग को बढ़ावा मिला है। समवर्ती रूप से, स्वास्थ्य देखभाल के लिए आयुष्मान भारत, ग्रामीण विद्युतीकरण के लिए सौभाग्य, वित्तीय समावेशन के लिए जन-धन योजना आदि जैसे घरेलू विकास, समावेशी प्रगति की दिशा में प्रयासों को रेखांकित करते हैं। बहरहाल, विश्व मंच पर भारत के लोकतांत्रिक विकास के बीच चल रही चुनौतियों का प्रतीक सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ बनी हुई हैं।

भारतीय चुनावी प्रक्रिया असाधारण रैलियों की विशेषता है, जो लोकतंत्र के जीवंत प्रदर्शन के रूप में कार्य करती है, जहां आम नागरिकों को राजनीति के असाधारण रंगमंच में शामिल किया जाता है। चाहे उपस्थित लोग स्वेच्छा से आएं या सामूहिक रूप से ले जाए जाएं, ये सभाएं लोकतांत्रिक जुड़ाव के सार का प्रतीक हैं। लहराते झंडों और गूँजते नारों की पृष्ठभूमि के बीच, लोकतांत्रिक भावना चमकती है, जो प्रतिस्पर्धी राजनीतिक गुटों की जीत और कठिनाइयों दोनों की झलक पेश करती है। इस तमाशे के केंद्र में, पार्टी कार्यकर्ताओं के अथक प्रयास हैं, जो इन अवसरों के लिए समर्थकों को एकजुट कर रहे हैं।

कोई यह नहीं भूल सकता कि इस भव्य समारोह में, चुनाव आयोग धुरी के रूप में खड़ा है, जो बार-बार होने वाली आलोचनाओं के बावजूद स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों की पवित्रता सुनिश्चित करता है। कल्पना कीजिए कि दिग्गज दिग्गज उत्सुकता से अपने फोन से चिपके हुए हैं और राजनीतिक सुर्खियों में अपने अनुभव के एक और प्रदर्शन के लिए प्रार्थना कर रहे हैं, जबकि वर्तमान चेहरे (चुने हुए सांसद पढ़ें) सत्ता के गलियारों में बेचैन शेरों की तरह दौड़ रहे हैं, या तो पुनर्निर्वाचन के मधुर आलिंगन से डर रहे हैं या अस्वीकृति का कड़वा दंश।

लेकिन डरने की कोई बात नहीं है. राजनीति की अप्रत्याशित दुनिया में, कोई नहीं जानता कि भाग्य का पेंडुलम कब अनुकूल रूप से वापस आ जाएगा। तो आइए वोट करें ताकि चुनी हुई पार्टियां अपने घोषणापत्र को पूरा करने के लिए काम करें।

आप की बात

विपक्ष में बिखराव

वरिष्ठ कांग्रेसी नेता अधीर रंजन ने कहा कि टीएमसी के बजाय आप भाजपा को वोट दें। उनके इस वीडियो के वायरल होने से टीएमसी में गुस्सा भर गया है और वह कांग्रेस को भाजपा की आँख-कान बता रही है। अधीर रंजन चौधरी काफी समय से टीएमसी की आंख की किरकिरी बने हुए हैं। अफवाहें थीं कि ममता बनर्जी ने सोनिया गांधी से उनको प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पद से हटाने की सिफारिश की थी। लेकिन इसे न माने जाने के कारण ही पश्चिम बंगाल में टीएमसी ने कांग्रेस से गठबंधन करने के बजाय अलग रास्ता अपनाया। आशंका है कि अधीर रंजन चौधरी के इस वायरल वीडियो से टीएमसी को नुकसान पहुँच सकता है। हालांकि, अधीर रंजन चौधरी और कांग्रेस पार्टी ने बाद में मामले पर लीपापोती के काफी प्रयास किए हैं, लेकिन इस प्रकरण से विपक्षी गठबंधन इंडिया में बिखराव साफ नजर आता है। वैसे तो पश्चिम बंगाल में लगभग 34 साल शासन कर चुकी वामपंथी पार्टियां भी कांग्रेस के साथ हैं, पर केरल में माकपा मुख्यमंत्री पिनारई विजयन ने राहुल गांधी का डीएनए टेस्ट कराने तक की बात कही है। विजयन राहुल गांधी को प्रधानमंत्री उम्मीदवार भी नहीं मानते हैं। विपक्ष में भयानक बिखराव और टकराव जनता की नजर में भाजपा की छवि मजबूत कर रहा है।

– **शकुंतला महेश नेनावा,** इंदौर

गर्भपात का मुद्दा

आगामी अमेरिकी चुनाव में गर्भपात का अधिकार महत्वपूर्ण मुद्दा बन सकता है। रूढ़िवादी रिपब्लिकन पार्टी के लिए यह एक भावनात्मक मुद्दा है। वह गर्भपात को जीव हत्या के रूप में देखती है और इसे ईश्वर-विरोधी दुष्कृत्य बताती है। हालांकि, अब रिपब्लिकन पार्टी प्रत्याशी डोनाल्ड ट्रम्प खुद को इससे अलग रखना चाहते हैं। उन्होंने भांप लिया है कि अधिकांश अमेरिकी महिलाओं को उनके शरीर में उनके अपने अधिकार को हर कीमत पर स्वीकार करते हैं। विडंबना है कि स्वयं को दुनिया का सबसे पुराना लोकतंत्र मानने वाले अमेरिका तथा सारी दुनिया को लोकतंत्र और उदारवाद का पाठ पढ़ाने वाले यूरोपीय देशों में आज भी समाज के कुछ तबके महिलाओं को गर्भपात का अधिकार देने के घोर विरोधी हैं। यह एक प्रकार से महिला-अधिकारों तथा मूलत: लोकतांत्रिक भावनाओं का घोर हनन है। स्वयं को एशियाई, अफ्रीकी व चीनी मूल वाले देशों से श्रेष्ठ समझने वाले अनेक यूरोपीय श्वेत समाज के लोग महिला अधिकारों के मामले में इतने पिछड़े और कट्टरपंथी हैं कि महिलाओं को उनके अपने शरीर पर अधिकार की सैकड़ों साल पुरानी अवधारणा भी स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। लेकिन महिलायें अब गुलामी झेलने को तैयार नहीं हैं।

– **जंग बहादुर सिंह,** जमशेदपुर

न्याय में विलम्ब

यह हमारे देश में न्याय व्यवस्था की सबसे बड़ी विडंबना है कि न्याय पाने में लोगों को कई.कई वर्ष लग जाते हैं। जिन विचाराधीन लोगों को जेल में डाला जाता उनमें से कई की तो कई महीनो तक पुलिस चार्जशीट ही कोर्ट में पेश नहीं करती। कुछ मामलों में जमानतदार नहीं मिलने से भी जमानती अपराधों में गरीब लोगों को जेल में लंबे समय तक रहना पड़ता है। सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि लंबे समय तक जेल में रहने के बद जब कोर्ट किसी को निर्दोष करार दे देती है तब भी उसे अकारण जेल में होने वाले दुख और समाज में इसके कारण हुई बदनामी का कोई मुआवजा नहीं दिया जाता। कई परिवारों में कमाने वाले एकमात्र मुखिया को ही जब जेल में डाला जाता है तो उसका पूरा परिवार बर्बाद हो जाता है और उनके लिए रोटी का जुगाड़ तक नहीं होता। जेल से छूटे व्यक्ति को कोई नौकरी नहीं देता और अनेक मामलों में बेकसूर होने के बावजूद उसके सिर पर काला टीका लग जाता है। उम्मीद है कि संसद द्वारा पास तीन नए अपराध न्याय कानून जुलाई से लागू होने पर इस स्थिति में सुधार आएगा। लेकिन इसके लिए इन कानूनों के सटीक जमीनी क्रियान्वयन के साथ ही इनकी विभिन्न स्तरों पर नियमित समीक्षा और सुधार की जरूरत होगी।

सुभाष बुडावन वाला, रतलाम

मजबूत अर्थव्यवस्था

वस्तु एवं सेवाकर-जी एस टी में अप्रैल महीने में मिली धनराशि ने पिछले सारे रेकॉर्ड तोड़ दिए हैं। इस माह 2.10 लाख करोड़ रुपये का संग्रह हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि देश की अर्थव्यवस्था मजबूत है और टैक्स डिपार्टमेंट की जांच-पड़ताल व ऑडिट व्यवस्था उच्च दर्जे की है। यह रिकॉर्ड यह संकेत भी करता है कि आने वाली सरकार को जीएसटी रिफार्म की ओर ध्यान होगा ताकि देश को इससे और अधिक राजस्व प्राप्त हो सके। विमान ईंधन के साथ ही प्राकृतिक गैस, पेट्रोल व डीजल को भी जीएसटी के दायरे में लाने पर विचार करने से देश की जनता को भी राहत मिलेगी क्योंकि इससे राज्यों द्वारा ली जाने वाली भारी वैट राशि में कमी आएगी। यदि जीएसटी से ऐसा बम्पर कलेक्शन हर महीने आता और बढ़ता रहा तो अगली सरकार के पास ढांचागत संरचना निर्माण तथा जन-कल्याण के लिए पैसे की कमी नहीं होगी। उत्तर प्रदेश ने संग्रह के मामले में तमिलनाडु को इस बार पीछे छोड़ दिया है और वह चौथे नंबर पर आ गया है। यह उत्तर प्रदेश की मजबूत होती अर्थव्यवस्था तथा योगी सरकार की क्षमता का प्रतीक है।

–बाल गोविंद, नोएडा

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 17 अंक 67

प्लास्टिक प्रदूषण का सामना

तकरीबन 175 देशों के प्रतिनिधियों के नैरोबी में एकत्रित होने और प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने के लिए कानूनी रूप से प्रभावी पहली संधि करने पर सहमति होने के दो वर्ष बाद भी इस बात की बहुत कम उम्मीद है कि निकट भविष्य में दुनिया इस विषय पर किसी सहमति पर पहुंच सकेगी और प्लास्टिक से पर्यावरण को होने वाले नुकसान को लेकर कोई संधि हो सकेगी। प्लास्टिक प्रदूषण को लेकर अंतरसरकारी वार्ता समिति की ओटावा में चौथी बैठक हाल ही में हुई। बहरहाल, आश्चर्य नहीं कि आधी रात के बाद तक बातचीत के बावजूद प्लास्टिक उत्पादन की सीमा तय करने को लेकर कोई साझा सहमति नहीं बन सकी। अधिकांश देश जहां इस बात पर सहमत थे कि प्लास्टिक उत्पादन के लिए जीवाश्म ईंधन के आरंभिक खनन से लेकर प्लाटिस्क कचरे के अंतिम निपटान तक इसके संपूर्ण जीवनचक्र में प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने की आवश्यकता है लेकिन कुछ देशों ने कहा कि इसके उत्पादन पर कोई सीमा आरोपित करना संभव नहीं प्रतीत होता। पेट्रोकेमिकल संपन्न देशों और कई औद्योगिक समूहों ने इस प्रस्ताव के खिलाफ लॉबीइंग की। इसके बजाय वे चाहते हैं कि संधि में प्लास्टिक के पुनर्चक्रण और कचरा प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित किया जाए।

यह बात सभी जानते हैं कि कचरा प्रबंधन और पुनर्चक्रण पर ध्यान केंद्रित करना भर प्लास्टिक संकट से निपटने के लिए पर्याप्त नहीं होगा। पूरी दुनिया में हर वर्ष 40 करोड़ टन प्लास्टिक कचरा उत्पादित होता है। दुनिया भर में अब तक उत्पन्न सात अरब टन प्लास्टिक कचरे में से 10 फीसदी से भी कम का पुनर्चक्रण हुआ है। अधिकांश प्लास्टिक कचरा समुद्रों और कचरे के ढेरों में जाता है। प्लास्टिक सिंथेटिक पॉलिमर होता है जिसका जैविक अपघटन नहीं होता है। समस्या यहीं समाप्त नहीं होती है। इसकी उत्पादन प्रक्रिया भी ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करती है। पॉलिमराइजेशन की प्रक्रिया और उत्सर्जन करती है। अमेरिका की लॉरेंस बर्कली नैशनल लैबोरेटरी के अनुमानों के मुताबिक 2019 में प्लास्टिक निर्माण के कारण 2.24 गीगाटन ऐसा प्रदूषण हुआ जो धरती का तापमान बढ़ाने वाला है। यह 600 कोयला संचालित ताप बिजली घरों के उत्सर्जन के बराबर है। चार फीसदी वार्षिक वृद्धि के अनुमान के साथ देखें तो 2050 तक प्लास्टिक उत्पादन 5.13 गीगाटन हो जाएगा, भले ही तब तक हम सफलतापूर्वक पावर ग्रिड का अकार्बनीकरण कर चुके हों।

इस संदर्भ में वैश्विक समझौते पर नहीं पहुंच पाना दिखाता है कि कारोबारी और आर्थिक हित संभावित पर्यावरणीय लाभों पर भारी पड़ रहे हैं। दुनिया की सात शीर्ष प्लास्टिक उत्पादन कंपनियां जीवाश्म ईंधन कंपनियां ही हैं। बीते कुछ दशकों में प्लास्टिक को लेकर एक नई चिंता सामने आई है और वह है मानव स्वास्थ्य पर इसका दुष्प्रभाव। सूक्ष्म और नैनो प्लास्टिक के अंश न केवल इंसानी खून में बल्कि गर्भनाल में भी पाए गए हैं। समुचित निपटान प्रणाली और कचरा संग्रहण तकनीक प्लास्टिक के जलवायु प्रभाव को रोकने या उन्हें मनुष्य के शरीर में पहुंचने से रोकने के लिए अपर्याप्त हैं। ऐसा कचरे के प्लास्टिक बन जाने के बहुत पहले हो जाता है। ऐसे में उत्पादन कम करके ही लंबी अवधि में इस समस्या से निपटा जा सकता है।

सन 2022 में भारत ने प्लास्टिक कचरा प्रबंधन (संशोधन) नियम 2021 लागू किया था जिसके तहत 19 श्रेणियों में एकल इस्तेमाल वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाया गया था हालांकि वे देश में एकल इस्तेमाल वाले कुल प्लास्टिक का केवल 11 फीसदी है। परंतु अब भी उनका इस्तेमाल धड़ल्ले से किया जा रहा है। तमाम स्थानों पर इनकी बिक्री चल रही है। यह दुर्भाग्य की बात है कि प्लास्टिक की समस्या को लेकर निजी या सार्वजनिक रूप से पर्याप्त फंडिंग नहीं आ रही है। इसके चलते बेहतर लागत वाले विकल्प सामने नहीं आ रहे हैं। फोटो-ऑक्सिडेशन या प्लास्टिक खाने वाले माइक्रोब्स मसलन नेट्रिजिएंस बैक्टीरिया का उत्पादन भी नहीं बढ़ाया जा सका है। फिलहाल बुसान की राह अनिश्चित है जहां वार्ता समिति की पांचवें दौर की बातचीत इस वर्ष के अंत में होनी है।

विनय सिन्हा

भारत के लिए पश्चिम एशिया की सुरक्षा कितनी अहम

इस क्षेत्र में भारत के अपने हित भी जुड़े हैं, इसके बावजूद इसकी नीति के लक्ष्य इस क्षेत्र की दीर्घकालिक स्थिरता पर केंद्रित नहीं हैं। बता रहे हैं श्याम सरन

इजरायल-हमास युद्ध की शुरुआत हुए अब सात महीने हो चुके हैं लेकिन अब भी इसका कोई अंत नहीं दिख रहा है। इसकी वजह यह है कि इजरायल के नेता बेंजामिन नेतन्याहू का राजनीतिक अस्तित्व संभवतः युद्ध की निरंतरता और इसका विस्तार क्षेत्रीय संघर्ष के रूप में होने पर निर्भर करता है। दमिश्क में 1 अप्रैल को ईरानी वाणिज्य दूतावास पर हवाई बमबारी और इसके परिसर में मौजूद ईरान के रिवॉल्यूशनरी गार्ड्स के कई वरिष्ठ अधिकारियों की हत्या ईरान के प्रतिशोध को भड़काने का एक सुनियोजित और निंदनीय प्रयास था।

हालांकि अमेरिका के हस्तक्षेप और ईरान के संयम बरतने के साथ ही हालात और बिगड़ने न देने के मकसद से नियंत्रण बनाने की कोशिश की गई। लेकिन गाजा में इजरायल की फिलिस्तीनियों पर बढ़ती बर्बरता और कब्जे वाले वेस्ट बैंक में रह रहे फिलिस्तीनियों पर इजरायल के बढ़ते हमले पर से ध्यान हट गया है। इन क्षेत्रों में इजरायल की अवैध बस्तियों का विस्तार हो रहा है जो भविष्य में फिलिस्तीन का क्षेत्र बन सकता था। इन बस्तियों का उन्मादी विस्तार और अपने पूर्वजों की जमीन पर रहने वाले फिलिस्तीनियों का विस्थापन और उनकी जबरन निकासी जैसा मुद्दा किसी भी दो स्वतंत्र राष्ट्र वाले समाधान को असंभव बना देता है।

गाजा युद्ध के बाद इसके फिर से चर्चा में आने के बावजूद किसी तरह के संघर्ष विराम को कोई भी गंभीर विश्लेषक इसे यथार्थवादी संभावना नहीं मानेगा, खासतौर पर 7 अक्टूबर को इजरायल पर हुए हमास के आतंकवादी हमले के बाद और गाजा में पैदा हुई मानवीय संकट की स्थिति के बाद, जिसके लिए इजरायल सीधे जिम्मेदार है।

दो राष्ट्र-राज्य जैसे सिद्धांत के व्यावहारिक समाधान के लिए इजरायल और फिलिस्तीनियों के बीच जरूरी न्यूनतम पारस्परिक आत्मविश्वास और भरोसा भी खत्म हो गया है। अब 1993 के ओस्लो समझौते के दौर में वापस लौटना भी मुमकिन नहीं है जिसके तहत बेहद अलग परिस्थितियों में नतीजे की कल्पना की गई थी। दरअसल इससे जुड़े मुख्य पक्षों, इजरायल और फिलिस्तीन लिबरेशन ऑर्गेनाइजेशन ने पूरी गंभीरता से इसको लेकर कभी पहल नहीं की थी। फिलिस्तीन लिबरेशन ऑर्गेनाइजेशन का नेतृत्व तब मशहूर नेता यासिर अराफात कर रहे थे। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद एकध्रुवीय दौर में अपनी असीमित शक्ति के बावजूद अमेरिका इस मुद्दे का कोई समाधान निकालने में विफल रहा जब इसके लिए वह समय उपयुक्त था। कोई भी रणनीतिक अवसर कभी भी बैठे बिठाए नहीं मिल सकता है जिसे अपनी इच्छानुसार चुना जा सके।

अमेरिका के नजरिये में 11 सितंबर, 2001 को हुए आतंकी हमले के बाद बदलाव आया। इसके बाद, इस्लाम विरोधी भावना व्यापक हो गई और यह अब भी बनी हुई है। ओस्लो समझौते के मुताबिक इजरायल को अपने हिस्से का योगदान देने को लेकर अब कोई दबाव नहीं है। दो स्वतंत्र राष्ट्र-राज्य के प्रस्ताव से जुड़े समाधान की बात कब की खत्म हो चुकी है। अमेरिका, अरब देशों और भारत सहित संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिनिधित्व किए जाने वाले अंतरराष्ट्रीय समुदाय के द्वारा इसे मौजूदा संघर्ष के समाधान के रूप में पेश करना सही नहीं है, खासतौर पर इस बात से वाकिफ होते हुए कि जिन परिस्थितियों में ऐसी साहसिक और यथार्थवादी पहल की गई थी वे अब नहीं हैं।

अमेरिका को 1990 के दशक की शुरुआत में जो ताकत हासिल थी अब वैसी स्थिति नहीं है। इजरायल के साथ ही इसका मानना है कि फिलिस्तीन के मुद्दे पर एक कठिन और जटिल राजनीतिक समाधान की मांग करने के बजाय, अपने सुरक्षा प्रबंधन की बात करना भविष्य के लिए अधिक यथार्थवादी रास्ता हो सकता है। हमने दुनिया के अन्य हिस्से में लंबे समय से चले रहे संघर्षों में इसे देखा है। दमनकारी राज्य सत्ता के उपकरणों के माध्यम से प्रबंधित होने वाले संघर्ष को राजनीतिक संघर्ष के बजाय, सुरक्षा चुनौती के रूप में देखना आसान लग सकता है, लेकिन यह अदूरदर्शिता है। जमीनी स्तर पर यही एक उपयुक्त रास्ता लग सकता है।

दूसरी ओर अरब देशों का भी इस नजरिये को बढ़ावा देने में मिलीभगत है। इजरायल ने अब तक मिस्र और जॉर्डन, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और बहरीन सहित महत्त्वपूर्ण खाड़ी और पश्चिम एशियाई देशों के साथ अपने संबंधों को लेकर कोई कीमत नहीं चुकाई है। ऐसा तब है जब इन सभी देशों में लोग इजरायली फौजों द्वारा गाजा और वेस्ट बैंक में अपने फिलिस्तीनी भाइयों पर किए जा रहे अमानवीय हमले को लेकर काफी उत्तेजित हो रहे हैं। हालांकि भारत में फिलिस्तीनियों के प्रति सहानुभूति का भाव है और यह भारत की आजादी के बाद से ही लगातार मजबूत रहा है लेकिन अब इसे हतोत्साहित किया जा रहा है।

भारत को उम्मीद है कि यह इजरायल और अरब देशों के साथ अपने पारस्परिक लाभदायक संबंधों को सफलतापूर्वक बनाए रखने में सक्षम होगा। अब तक इसे किसी भी पक्ष को चुनने के लिए मजबूर नहीं किया गया है। पश्चिम एशिया में भारत के दांव को देखते हुए, इसकी वर्तमान नीति सबसे अनुकूल प्रतीत हो सकती है। तेल संपदा से भरपूर देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाकर भारत अपनी ऊर्जा सुरक्षा को सुनिश्चित कर रहा है। इसके साथ ही यह इस क्षेत्र में रहने और काम करने वाले लगभग 60 लाख भारतीयों के कल्याण को भी ध्यान में रख रहा है। इससे एक विस्तारित भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए आर्थिक और व्यावसायिक मौके भी बन रहे हैं।

इजरायल के साथ मजबूत साझेदारी के चलते भारत की रक्षा क्षमता में मजबूती आ रही है और यह अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद से निपटने में मददगार साबित हो रहा है। इजरायल-हमास युद्ध और फिलिस्तीनियों के लिए चीन के खुले समर्थन के बाद अब हालात ऐसे हैं कि चीन के प्रति इजरायल खुले तौर पर आक्रामक हो गया है। इसने पश्चिम एशिया क्षेत्र और उसके बाहर दोनों जगह चीन का मुकाबला करने को लेकर भारत के साथ संवाद शुरू कर दिया है। चीन और इसकी दुनिया भर की गतिविधियों पर पूरी तरह से ध्यान केंद्रित करने के लिए एक नया इजरायली थिंक टैंक स्थापित किया गया है। इससे भारत के लिए इस क्षेत्र में और इससे बाहर भी मौके तैयार हो रहे हैं। भारत ने ईरान के साथ अच्छे संबंध बनाए रखे हैं लेकिन यह अमेरिका द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर ही है। उदाहरण के तौर पर तेल खरीद मामले को ही देखा जा सकता है। हालांकि यह समय के साथ कम हो गया है। यह बात अमेरिका के प्रतिबंधों के बावजूद रूस से तेल खरीद जारी रखने और इसका विस्तार करने के संकेत से भी स्पष्ट होती है।

पश्चिम एशिया भारत के लिए रणनीतिक तौर पर अहम है। इस क्षेत्र में किसी भी तरह की राजनीतिक अशांति, सशस्त्र संघर्ष या ऊर्जा आपूर्ति में बाधा का भारत पर बड़ा प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इसमें फिलिस्तीन का जटिल मुद्दा भी शामिल है।

इस क्षेत्र के सभी प्रमुख पक्षों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखना महत्त्वपूर्ण है और भारत ने पूरी कुशलता के साथ ऐसे संबंधों पर आगे बढ़ने की पहल की है। लेकिन भारत वास्तव में इस क्षेत्र में दीर्घकालिक शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने में कोई महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालने में सक्षम नहीं रहा है जिससे इसके अपने हितों की रक्षा भी हो सकती है।

भारत ने विभिन्न देशों के साथ संतुलित दूरी और निकटता की रणनीति अपनाई है और इसका द्विपक्षीय संबंधों का एक नेटवर्क सबसे ज्यादा अहम है जो एक सुसंगत क्षेत्रीय रणनीति के लिहाज से मजबूत पक्ष है। ऐसी क्षेत्रीय रणनीति के बिना, भारत की पश्चिम एशिया नीति प्रतिक्रियावादी बनी रहेगी जो उभरती आकस्मिक परिस्थितियों से निपटने के बजाय क्षेत्र की सुरक्षा और आर्थिक ढांचे को आकार देने पर केंद्रित होगी।

(लेखक पूर्व विदेश सचिव हैं और सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च में मानद फेलो हैं)

कपड़ा नगरी सूरत में अलग तरह का संकट

सामयिक सवाल
निवेदिता मुखर्जी

गुजरात की टेक्सटाइल सिटी के नाम से मशहूर शहर सूरत में इन दिनों चीन की काफी चर्चा हो रही है। सूरत वही शहर है जहां चुनाव से पहले ही सांसद निर्विरोध चुना जा चुका है। चीन का कथानक न केवल यहां के उद्योग जगत की आंतरिक चर्चा का हिस्सा है बल्कि राजनीतिक दलों और कारोबारियों के बीच होने वाली हितधारकों की बैठकों में भी यह उठता है। कम से कम 7 मई के मतदान के पहले सूरत में होने वाली बातचीत से तो यही अंदाजा लगता है।

हितधारकों की बैठकों में आमतौर पर 500 से 1,000 कारोबारी प्रतिनिधि और स्थानीय नेता आते हैं। इंदौर के साथ देश के सबसे स्वच्छ शहर आंके गए सूरत में इनकी शुरुआत करीब एक पखवाड़ा पहले बहुत धूमधाम से की गई थी। यह अलग बात है कि सूरत और इंदौर दोनों में एक और समानता है। दोनों संसदीय क्षेत्रों से कांग्रेस के प्रत्याशी नाटकीय ढंग से चुनाव मैदान से बाहर हो गए। कांग्रेस प्रत्याशी के सदस्यता के अयोग्य घोषित होने तथा अन्य उम्मीदवारों के नाम वापस लेने के बाद सूरत से भाजपा के मुकेश दलाल सांसद बन चुके हैं लेकिन शहर में चुनावी माहौल बदस्तूर बना हुआ है। शहर के होटल, पार्क और बाजारों में प्रचार अभियान और रैलियां जारी हैं। ऐसा इसलिए कि दो करीबी शहर नवसारी (इसे सूरत का जुड़वा शहर भी कहा जाता है) और बारडोली भी सूरत क्षेत्र में आते हैं। बारडोली मिंढोला नदी के तट पर स्थित है। सूरत से करीब 35 किलोमीटर पूर्व में स्थित इस शहर को सत्याग्रह आंदोलन के लिए जाना जाता है। सूरत से 37 किलोमीटर दक्षिण में स्थित नवसारी शहर भी ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। दांडी गांव इसके करीब ही स्थित है जो महात्मा गांधी के नमक सत्याग्रह के लिए प्रसिद्ध है।

अतीत के मोह से जुड़े इस परिदृश्य में चीन का जिक्र गुणवत्ता नियंत्रण आदेशों यानी क्यूसीओ की वजह से आ रहा है। यह आदेश केंद्र सरकार ने जारी किया है। बीते एक वर्ष में ऐसे आठ आदेश आए हैं जिनमें जियो-टेक्सटाइल, एग्रो-टेक्सटाइल और मेडिकल टेक्सटाइल जैसे तकनीकी क्षेत्रों से जुड़े संशोधन भी शामिल हैं। यह चिंता की बात है। उद्योग जगत पहले ही इस मामले को केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, वाणिज्य एवं कपड़ा मंत्री पीयूष गोयल तथा स्वास्थ्य, रसायन और उर्वरक मंत्री मनसुख मांडविया तक पहुंचा चुका है। मांडविया उन मंत्रियों में शामिल हैं जो गुजरात से लोक सभा चुनाव लड़ रहे हैं। चूंकि कपड़ों से जुड़े कुछ मुद्दे रसायनों से संबंधित होते हैं इसलिए मांडविया का नाम इसमें शामिल हो गया।

क्यूसीओ का उद्देश्य जहां खराब गुणवत्ता वाले उत्पादों का आयात रोकना है, वहीं विचार यह भी है कि चीन से सस्ती दरों पर आने वाले माल को रोका जा सके तथा आपूर्ति श्रृंखला में भारत की स्थिति को मजबूत किया जा सके। यह बात करीब 13.7 लाख करोड़ रुपये के टेक्सटाइल उद्योग को परेशान कर रही है। चीन से बहुत बड़ी मात्रा में सस्ता धागा आता है। ऐसे में वहां से होने वाला आयात रोकने से धागे की कमी हो गई। उद्योग जगत के मुताबिक चीन कीमतों और गुणवत्ता दोनों में स्थिरता प्रदान करता है। इससे टेक्सटाइल उद्योग के लिए एक नई समस्या खड़ी हो गई है क्योंकि बीते कुछ समय में घरेलू तथा अंतरराष्ट्रीय वजहों से उसे कई प्रकार की परेशानी का सामना करना पड़ा है। उद्योग जगत की मांग है कि इन क्यूसीओ को हटा लिया जाए क्योंकि इनकी वजह से कारोबार बाधित हो रहा है। उनका सवाल है कि अगर चीन के उत्पादों को कुछ अन्य क्षेत्रों में आने की इजाजत है तो टेक्सटाइल क्षेत्र में ऐसा क्यों नहीं हो सकता।

सूक्ष्म, लघु और मझोले उपक्रमों (एमएसएमई) तथा छोटे बुनकरों की बात करें तो वे पहले ही परेशान हैं क्योंकि टेक्सटाइल क्षेत्र की उत्पादन संबद्ध प्रोत्साहन योजना यानी पीएलआई में उनके लिए कोई व्यवस्था नहीं है। उनका कहना है कि क्यूसीओ एक ऐसी बाधा है जिसके बिना वे काम कर सकते हैं।

गुणवत्ता नियंत्रण संबंधी आदेशों की सूची में जटिल तकनीकी विशिष्टताओं की बात की गई है जिन्हें कई कपड़ा कारोबारी ठीक से नहीं समझ सकते। क्यूसीओ के तहत आने वाले उत्पादों में वाटरप्रूफिंग के काम आने वाली लैमिनेटेड उच्च घनत्व वाली पॉलिथिलीन की बनी जियोमेम्बरेन से लेकर सीमित फ्लेम स्प्रेड मटीरियल से बने कपड़ों समेत अनेक उत्पाद शामिल हैं।

देश में वातानुकूलकों से लेकर रसोई के सामान और कपड़ों तक तमाम वस्तुओं के गुणवत्ता मानकीकरण का काम भारतीय मानक ब्यूरो के पास है। केंद्र सरकार के मंत्रालय और विभाग मानक ब्यूरो के साथ मशविरा करने के बाद ही क्यूसीओ जारी करते हैं। इसके आदेश का उल्लंघन करने पर भारी भरकम जुर्माना लग सकता है और कैद भी हो सकती है।

ऐसी भी खबरें हैं जो बताती हैं कि इस वर्ष इस सूची का और अधिक विस्तार होगा तथा क्यूसीओ में कुछ नए क्षेत्र शामिल किए जाएंगे। उम्मीद की जानी चाहिए कि इससे सूरत की कारोबारी भावना प्रभावित नहीं होगी। यह वह शहर है जो पहले रेशम की बुनाई के लिए प्रसिद्ध था और अब कपड़ों का बड़ा व्यावसायिक केंद्र बन चुका है। उम्मीद की जानी चाहिए कि सहारा दरवाजे से पुराना बंबई बाजार तक यहां के व्यस्त कपड़ा बाजार चुनावी मौसम में या उसके अलावा भी व्यस्त बने रहेंगे।

आपका पक्ष

चुनाव में भ्रामक खबरों पर कैसे लगे रोक

सोशल मीडिया ने बेशक आम लोगों को सवाल उठाने और जानकारी पाने का सशक्त मंच मुहैया कराया है। साथ ही भारत एक उभरती हुई डिजिटल ताकत है लेकिन इससे इतर सोशल मीडिया कंपनियां खबरों के कथानक और भरोसे को लेकर अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकती हैं। फेक न्यूज का सबसे बड़ा माध्यम सोशल मीडिया है, जिसमें मुख्य रूप से फेस बुक और व्हाट्सऐप शामिल हैं। सोशल मीडिया सेवा प्रदाताओं को अपनी प्रणाली में ऐसे फर्जी समाचारों की पहचान सुनिश्चित कर, उन पर रोक लगाने की तकनीकी व न्यायसंगत व्यवस्था करनी चाहिए। फेक न्यूज रोकने के लिए तेलंगाना की एक आईपीएस अधिकारी के जागरूकता अभियान का अनुसरण किया जाना चाहिए, जिसके तहत उन्होंने 500 अधिकारियों को प्रशिक्षण देकर प्रदेश के 400 गांवों में अपना अभियान चलाया है। अब गांव के लोगों ने इन्हें अपने व्हाट्सऐप ग्रुप में जोड़ना शुरू कर दिया है जिससे वे कई व्हाट्सऐप ग्रुप पर नजर रखती हैं। उत्तर प्रदेश पुलिस ने डिजिटल वॉलंटियर तैयार करने का जो फैसला किया है, वह भी कारगर हो सकता है। इसके तहत विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संस्थानों से जुड़े लोगों को डिजिटल वॉलंटियर बनाया गया है जो सोशल मीडिया पर नजर रखने के साथ साइबर अपराध और इसकी रोकथाम के बारे में जनता को शिक्षित कर पुलिस की मदद करेंगे। सभी राजनीतिक दलों को भी सोशल मीडिया को संभालने के लिए वॉलंटियरों की अपनी-अपनी टीमें तैयार कर फेक न्यूज पर अंकुश लगाने के लिए कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करना चाहिए।

सुधीर कुमार सोमानी, देवास

अहमदाबाद के एक शॉपिंग मॉल में लोक सभा चुनाव के तीसरे चरण के मतदान के लिए शुक्रवार को जागरूकता अभियान चलाया गया

कराधान की व्यापक दृष्टि

लेख 'कराधान की दृष्टि से सही विचार नहीं' वर्तमान में संपत्ति और विरासत पर करारोपण पर सार्थक चर्चा करता है। विपक्षी दलों के विरासत पर कर लगाने के विचारों का राजनीतिक पटल और जनमानस में घोर विरोध हो रहा है और देर से ही सही जनता के विरोध को देखते हुए बुद्धिजीवी और विशेषज्ञ भी इसका तार्किक विरोध करने लगे हैं। नतीजा यह हुआ है कि विपक्षी दलों ने भी विषय की गंभीरता और जनमानस के विरोध को देखते हुए फिलहाल इस विमर्श को विराम दे दिया है। छह दशकों तक सरकार चलाने वाले दल यह क्यों नहीं समझ सके कि केंद्र सरकार द्वारा संग्रहीत राजस्व का 85 प्रतिशत तो राज्य सरकारों के जरिए आवंटित होता है और बाकी गरीब जनता के लिए कल्याणकारी योजनाओं और विकास कार्यों में जाता है। संक्षेप में करयोग्य आय वाले और समृद्ध वर्ग की आय का 25-30 प्रतिशत भाग तो पहले से ही गरीबों में बांटा जा रहा है तो फिर विरोध किस बात का है? विरासत में जमा पूंजी भी तो आयकर देने के बाद ही संचित होती है और व्यापारिक परिवारों में व्यापार में ही निवेशित रहती है तो बार बार उस पर कर लगाने की बात क्यों हो रही है? समृद्ध अर्थव्यवस्था में देश को वेल्थ क्रियेटर्स चाहिए। इसलिए विरासत पर कर की बात सिरे से खारिज हो जानी चाहिए थी।

विनोद जौहरी, दिल्ली

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिज़नेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in
पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो - पीटीआई

नई दिल्ली स्थित संसद भवन में शुक्रवार को एनएसजी कमांडो ने संसद की सुरक्षा की एक मॉकड्रिल की। इस अभ्यास के तहत सीमा सुरक्षा बल के हेलीकॉप्टरों ने भी संसद भवन के ऊपर उड़ान भरी।

https://t.me/AllNewsPaperPaid

संवाद

नवभारत टाइम्स

नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली। शनिवार, 4 मई 2024

परंपरा का प्रश्न

सोनिया की सीट रायबरेली से लड़ेंगे राहुल

लंबी कशमकश के बाद आखिरकार कांग्रेस पार्टी ने उत्तर प्रदेश की रायबरेली और अमेठी सीटों पर अपने प्रत्याशियों की घोषणा कर दी। पिछले कुछ दिनों से इन दोनों सीटों के संभावित उम्मीदवारों को लेकर जैसी गहन चर्चा देखी जा रही थी, उससे साफ है कि यह महज दो सीटों का मामला नहीं रह गया था।

गांधी परिवार का जुड़ाव | ये दोनों सीटें न सिर्फ लंबे समय से कांग्रेस का गढ़ रही हैं बल्कि गांधी परिवार का पसंदीदा अखाड़ा मानी जाती रही हैं। हालांकि, अतीत में एकाधिक मौकों पर इन सीटों की नुमाइंदगी गांधी परिवार से बाहर के व्यक्ति के हाथों में भी गई है, लेकिन इन सीटों को गांधी परिवार के चुनाव क्षेत्र के ही रूप में देखा जाता रहा है। ऐसे में 2019 लोकसभा चुनाव में अमेठी से राहुल गांधी की हार और इस बार सोनिया गांधी के लोकसभा चुनाव से बाहर रहने की वजह से कांग्रेस में इन दोनों सीटों पर शून्य बन गया था, जिसे भरे जाने की जरूरत शिद्दत से महसूस की जा रही थी।

आखिरी पलों में हुआ फैसला

फैसले में देरी के मायने | इसमें दो राय नहीं कि रायबरेली से राहुल गांधी और अमेठी से केएल शर्मा को प्रत्याशी बनाने का फैसला करने में कांग्रेस ने काफी देर लगाई। इस देरी को लेकर तरह-तरह की कयासबाजी होती रही। लेकिन भूलना नहीं चाहिए कि राजनीति में विलंब का भी अपना शास्त्र होता है। यह दावे से नहीं कहा जा सकता कि कांग्रेस नेतृत्व या गांधी परिवार के फैसले में हुई देर के पीछे अनिश्चय या असमंजस की ही भूमिका थी। इसकी कई और व्याख्याएं की जा सकती हैं।

प्रतिष्ठा का सवाल | सोनिया गांधी के राज्यसभा का रुख करने के बाद राहुल गांधी के रायबरेली सीट को चुनने और प्रियंका के चुनाव में खड़ा न होने के फैसले पर भी कई तरह से टीका-टिप्पणी की जा सकती है। BJP के कुछ नेता इसे राहुल का अमेठी से भागना बताने भी लगे हैं। हालांकि प्रत्याशी कोई भी हो, ये दोनों सीटें गांधी परिवार की प्रतिष्ठा से जुड़ी हुई हैं। इन सीटों पर जीत-हार को गांधी परिवार की जीत-हार के ही रूप में देखा जाएगा।

कांग्रेस का संकेत | बहरहाल, राहुल को रायबरेली सीट से प्रत्याशी बनाकर कांग्रेस ने संकेत दिया है कि साउथ के राज्यों से विशेष उम्मीदें रखते हुए भी उसने नॉर्थ और खासकर यूपी में अपनी दिलचस्पी कम नहीं होने दी है। भले राज्य में कांग्रेस का संगठनात्मक आधार हाल के वर्षों में काफी कमजोर हो गया हो, यह राजनीतिक संदेश काफी मायने रखता है।

क्या होगा असर | कांग्रेस समर्थक इसे पार्टी के आक्रामक रुख के रूप में देख सकते हैं। विरोधी, जाहिर तौर पर, इस पर सवाल उठाएंगे। बहरहाल, अब जब पांच चरणों की वोटिंग बाकी है, कांग्रेस नेतृत्व और गांधी परिवार का यह कथित आक्रामक रुख उत्तर भारत में मतदाताओं के मन को प्रभावित कर पाता है या नहीं, देखना अब दिलचस्प होगा।

ऑफ दि ट्रैक

यादों में नाराज़गी

दिलीप लाल

यादें हम सबका पीछा करती हैं। चाहे-अनचाहे हम भी यादों के पीछे पड़े ही रहते हैं। यादें अच्छी होती हैं तो खराब भी होती हैं। कभी अच्छी याद आती है तो हम मन ही मन मुस्कुराने लगते हैं। लेकिन जब खराब यादों की बिजली दिमाग में कौंधती है, तो पल भर के लिए ही सही, हमें क्रोध तो आ ही जाता है। याद के जाते ही यह क्रोध भले ही पानी के झाग की तरह बैठ जाता है, लेकिन हमारी देह पर एक अमिट निशान भी छोड़ जाता है। एक नई रिसर्च में पता चला है कि खराब यादों के साथ आने वाला पल भर का भी गुस्सा हमारे दिल पर उन्हीं खराब यादों जैसा ही असर डालता है। अमेरिकन हार्ट असोसिएशन का एक हालिया अध्ययन बताता है कि पल भर का यह क्रोध भी हमारी रक्त वाहिकाओं (blood vessels) का कामकाज डिस्टर्ब कर सकता है। यह भी कि इस क्षणिक गुस्से के आने के साथ ही रक्त वाहिकाओं की आंतरिक परत की कोशिकाओं में रक्त प्रवाह में बाधा आ सकती है। बड़ी बात यह कि ऐसा तब भी होता है, जब वे अपने क्रोध को सामने नहीं लाते, चुपचाप उसे पी जाते हैं। अध्ययन में प्रतिभागियों को उनके जीवन की ऐसी घटनाओं को याद करने के लिए कहा गया, जो उन्हें क्रोधित या दुखी करती हैं। पता चला कि प्रतिभागियों की रक्त वाहिकाएं 40 मिनट तक कम फैली दिख रही थीं, और खून का दौरा भी कम हो रहा था। हालांकि 40 मिनट बाद रक्त का बहाव नॉर्मल हो गया।

गैलरी

सुंदरता के शाहकार

किसी इमारत का आर्किटेक्चर खूबसूरती ही नहीं दिखाता, वह एक कहानी भी बयान करता है। यह कहानी तब और भी खिलकर सामने आती है, जब एक कुशल फटॉग्रफर लाइट और एंगल की सबसे सही सेटिंग पाने में कामयाब हो जाए। आर्किटेक्चर की दुनिया में जो इस तक पहुंचते हैं, उनके लिए हर साल आर्किटेक्चरल फटॉग्रफी अवॉर्ड्स का आयोजन होता है। आइए देखें हाल में घोषित कुछ बेहतरीन विजेता तस्वीरें:

खिड़कियां : नीदरलैंड के आईजेबर्ग में बनी इस इमारत का नाम है स्लुइशुइज। इसकी फोटो ग्राहम हैंडफर्ड ने ली।

रेखाओं का खेल : मालदीव में रेखागणित से बनी यह इमारत है गेट ऑफ जीरो। फोटो लेइना सेवेले ने खींची।

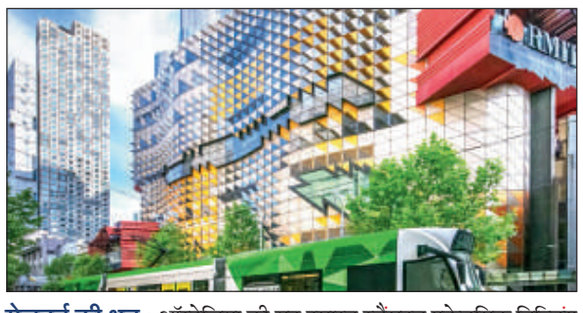

मेलबर्न की धुन : ऑस्ट्रेलिया की यह इमारत स्वैंसटन एकेडमिक बिल्डिंग है, जिसे लियोन बंधुओं ने डिजाइन किया। फोटो कैथी वेलास ने क्लिक की।

चुनाव में महिलाओं को प्रत्याशी बनाने में सारे ही दलों ने की कंजूसी

फिर मारा गया औरतों का हक

राज कुमार सिंह

नए संसद भवन में पिछले साल पहला संसद सत्र बुलाया गया। तब भारी सस्पेंस के बीच राजनीति में महिला आरक्षण के लिए नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित हुआ। बेशक संसद और विधानसभाओं में 33% महिला आरक्षण लागू करने की कोई तारीख तय नहीं है, लेकिन उसके बाद यह पहला आम चुनाव है और उस दिशा में ईमानदार पहल की अपेक्षा बेवजह नहीं थी। हालांकि वह उम्मीद पूरी होती नजर नहीं आई।

कहते कुछ, करते कुछ | विधेयक पारित होने के बाद पिछले साल के अंत में पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव हुए। तब भी राजनीतिक दलों की कथनी-करनी का अंतर दिख गया था। फिर भी उम्मीद थी कि जिस संसद ने महिला आरक्षण पर मुहर लगाई, उसके चुनाव में तो कुछ पहलकदमी दिखेगी। अब नाउम्मीदी का आलम यह है कि पहले दो चरणों में जहां चुनाव हुए, वहां महिला उम्मीदवारों का प्रतिशत मात्र 8 रहा। अगर 7 मई को होने वाले तीसरे चरण को भी जोड़ लें, तो यह आंकड़ा 9% तक ही पहुंचता है। अति आशावादी भी यह खुशफहमी नहीं पालना चाहेंगे कि शेष चरणों में यह 33% पर पहुंच जाएगा।

वैचारिक बेईमानी | पहले चरण में लोकसभा की 102 सीटों पर वोटिंग हुई। इनमें कुल 1625 उम्मीदवार मैदान में थे, जिनमें से 135 ही महिलाएं थीं। दूसरे चरण में 89 सीटों के लिए कुल 1198 उम्मीदवार मैदान में थे, जिनमें से मात्र 100 महिलाएं थीं। वचनबद्धता 33% की और अमल की ईमानदारी 10% की भी नहीं! यह वैचारिक बेईमानी नहीं तो और क्या है?

दक्षिण रहा आगे | पहले चरण में जो 135 महिला उम्मीदवार थीं, उनमें भी राज्य की दृष्टि से सबसे ज्यादा हिस्सेदारी उन्हें तमिलनाडु में मिली। तमिलनाडु में 76 महिलाएं चुनाव लड़ रही हैं। हालांकि राज्य के कुल उम्मीदवारों में उनका प्रतिशत भी 8 ही बैठता है। दूसरे चरण में भी राज्य की दृष्टि से महिला उम्मीदवारी में एक और दक्षिण भारतीय राज्य केरल टॉप पर रहा। केरल में 24 महिला उम्मीदवार रहीं। राजनीतिक दलों की बात करें तो BJP ने सबसे ज्यादा 69 महिलाओं को टिकट दिए, जबकि मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस ने 44 को।

मुश्किल लड़ाई | राजनीतिक दलों की कंजूसी के चलते आधी आबादी को उनकी जायज हिस्सेदारी बहुत जल्द और आसानी से मिलने के आसार नहीं दिखते। माना कि अभी तक महिलाओं को संसद और विधानसभाओं में 33% हिस्सेदारी की कोई कानूनी बाध्यता नहीं है, लेकिन क्या राजनीति में वैचारिक वचनबद्धता और नैतिक ईमानदारी का कोई अर्थ नहीं?

AI image

कैसे मिलेगा हक
- पहले तीन चरण में केवल 9% महिला उम्मीदवार
- ज्यादातर टिकट राजनीतिक परिवारों से
- BJP ने 69, कांग्रेस ने 44 महिला प्रत्याशी उतारे

BJD का अपवाद | नारी शक्ति वंदन अधिनियम पर संसद में बहस के दौरान कमोबेश सभी दलों ने कहा कि महिलाओं को उनकी अरसे से लंबित राजनीतिक हिस्सेदारी मिलनी ही चाहिए। फिर उन्हें टिकट देने में भी ऐसी हीलाहवाली क्यों? क्या इसलिए कि अभी तक संगठन में भी महिलाओं को अग्रिम पंक्ति में नहीं लाया गया है? ओडिशा में सत्तारूढ़ बीजू जनता दल ही देश में एकमात्र ऐसा दल है, जो महिलाओं को 33% टिकट देने की अपनी वचनबद्धता पर हर चुनाव में ईमानदारी से अमल करता है।

हक में पक्षपात | महिला प्रतिनिधित्व के नाम पर टिकट पाने वाली महिलाएं भी आम परिवारों से नहीं बल्कि राजनीतिक परिवारों से आती हैं या फिर सिलेब्रिटी मानी जाती हैं। इसके लिए इतिहास के पन्ने भी पलटने की जरूरत नहीं। वर्तमान लोकसभा चुनाव में जो महिलाएं टिकट पाने में सफल रहीं, उनकी पृष्ठभूमि पर नजर डालना ही पर्याप्त होगा। फिल्म अभिनेत्री हेमा मालिनी क्या सिलेब्रिटी होने के चलते ही तीसरी बार मथुरा से चुनाव नहीं लड़ रहीं?

पारिवारिक पृष्ठभूमि | बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू यादव की दो बेटियां, मीसा भारती और रोहिणी आचार्य चुनाव मैदान में हैं। महाराष्ट्र के बारामती से NCP उम्मीदवार सुप्रिया सुले, पार्टी प्रमुख शरद पवार की बेटी हैं, जबकि उनके विरुद्ध चुनाव लड़ रहीं उनकी भाभी सुनेत्रा, बागी भतीजे और उप-मुख्यमंत्री अजित पवार की पत्नी हैं। बीड़ में BJP उम्मीदवार पंकजा मुंडे, पूर्व उप-मुख्यमंत्री गोपीनाथ मुंडे की बेटी हैं। वैसे बीड़ से निवर्तमान BJP सांसद प्रीतम मुंडे भी पंकजा की बहन हैं। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की शिवसेना ने यवतमाल-वाशिम से निवर्तमान सांसद हेमंत पाटिल की पत्नी राजश्री पाटिल को टिकट दिया है। दिंदौरी से BJP उम्मीदवार डॉ. भारती पवार पूर्व मंत्री एटी पवार की पुत्रवधू हैं।

निराशाजनक रवैया | आधी आबादी के प्रति राजनीतिक दलों का यह रवैया तब और भी निराशाजनक लगता है, जब निवर्तमान लोकसभा में ही सबसे ज्यादा 78 महिलाओं के निर्वाचित होने का आंकड़ा सामने हो और महिलाएं मतदान में भागीदारी से पुरुषों को लगातार पीछे छोड़ रही हों।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

क्यों हों ये रिफॉर्म

अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर भारत अच्छा कर रहा है। हालांकि कुछ चुनौतियां बनी हुई हैं। ऐसे में चुनाव के बाद जो सरकार आएगी उससे उम्मीद होगी कि वह चुनौतियों का हल निकालने के साथ ही और बेहतर परफॉर्म करे :

AI image

कम करनी होगी यह खाई
आर्थिक असमानता के मामले में ब्राजील के बाद भारत दुनिया में दूसरे नंबर पर है। टॉप 1% भारतीयों का वेल्थ शेयर 41% है और यह गैप बढ़ता जा रहा। देश के कुछ हिस्से तेजी से तरक्की कर रहे, जबकि कई अब भी बेसिक जरूरतों के लिए तरस रहे।

भूमि और श्रम सुधार
भारत ने आर्थिक सुधारों की राह पकड़ी 1990 के दशक में, लेकिन भूमि और श्रम सुधार के मामले में हम चीन के मुकाबले पीछे रह गए। नए उद्योग लगाना आज भी मुश्किल है। संबंधित राज्य facilitate नहीं कर पाते।

निर्यात बढ़ाने पर ध्यान
कोरोना के बाद दुनिया चीन के विकल्प में भारत को देख रही, लेकिन निर्यात के मामले में राह मुश्किल बनी हुई है। logistics costs और tariff वगैरह की वजह से भारतीय व्यापारी अब भी चीनियों से पिछड़ जा रहे हैं। ट्रेड एग्रीमेंट और निर्यातकों को सब्सिडी जैसे कुछ कदम उठाए जा रहे हैं, जिन्हें जारी रखना होगा। मैन्युफैक्चरिंग बढ़ाने के रास्ते तलाशने होंगे।

महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़े
Periodic Labour Force Survey के 2022-23 के डेटा बताते हैं कि वर्कफोर्स में महिला हिस्सेदारी 37% है। महिलाओं के काम करने में सामाजिक बंधन आड़े आ जाते हैं। काम के घंटे और वक्त पर समझौते करने पड़ते हैं। पुरुषों के मुकाबले सैलरी कम है। काम का माहौल बेहतर बनाने की जरूरत है।

Internal Migration को बढ़ावा
इसका अर्थ है देश के भीतर ही एक से दूसरी जगह माइग्रेशन। विकसित देशों के मुकाबले भारत इसमें भी पीछे है। इंटरनल माइग्रेशन से शहरी इकॉनमी को गति मिलती है। लोग कमाई का हिस्सा गांव भेजते हैं, जिससे वहां की इकॉनमी भी चलती है।

प्रस्तुति : शैलेंद्र पांडेय

अच्छा नेता बनना कोई हंसी-खेल नहीं

सप्ताह का इंटरव्यू

चेतन भगत

*जाने माने लेखक चेतन भगत युवाओं के मन-मिजाज को तो बारीकी से समझते ही हैं, देश की राजनीति पर भी खासी पकड़ रखते हैं। मौजूदा चुनावी माहौल पर उनसे बातचीत की **प्रशांत जैन** ने। पेश हैं बातचीत के अहम अंश :*

■ देश की राजनीतिक पार्टियों के बारे में आपकी क्या राय है?

मैं जो कह रहा हूं, वह किसी की तारीफ नहीं है। मैं सिर्फ ऑब्जर्वर के तौर पर ऐसा कह रहा हूं कि BJP कुछ चीजें बहुत सही करती है। दरअसल, मैं खुद भी उसकी तरह भारत की नब्ज पकड़ने की कोशिश करता हूं। यह बहुत जरूरी है कि आप चाहे नेता हों, लेखक या किसी भी ऐसी भूमिका में, जिसमें जनता से सीधा साबका पड़ता है तो देश की नब्ज पर आपकी पकड़ होनी चाहिए। चेतन भगत भी बतौर लेखक इसलिए चल रहा है, क्योंकि वह यह नहीं देख रहा कि क्रिटिक्स क्या कह रहे हैं। वह यह देखता है कि लोग क्या पसंद करते हैं। BJP भी ये चीजें बहुत अच्छी तरह से समझती है कि भारत की जनता क्या है और उसकी क्या इच्छाएं हैं। दूसरी एक बात जो पार्टी बहुत अच्छा करती है कि उसने अपने बहुत सारे मौजूदा सांसदों के टिकट काट दिए जबकि उसके सामने कोई बहुत बड़ी चुनौती नहीं है। एक चीज होती है कि बहुत क्राइसिस है, तो आप बदलाव ला रहे हैं। लेकिन जब आप ऊंचाई पर हों और आपका हर कदम लोगों को अच्छा लग रहा है, तब आप बदलाव ला रहे हैं, तो आप रिस्क भी ले रहे हैं।

■ BJP को आप दूसरी पार्टियों से किस तरह से अलग पाते हैं?

प्रधानमंत्री का ब्रैंड बहुत ही बड़ा है। खास बात यह है कि पीएम मोदी सिर्फ आज की नहीं सोच रहे, वह आगे के पांच साल के बारे में विचार कर रहे हैं। अगर नया कैंडिडेट देंगे, तो आने वाले वर्षों में वह अपना ब्रैंड बना लेगा। ऐसा मुझे लगता है। हो सकता है, उनका कुछ और सोचना हो। वहीं, कांग्रेस को कई बार सिग्नल मिले हैं कि आप बदलिए। यही वह जनता है, जिसने पहले वोट दिया है उसे। लेकिन कांग्रेस ने क्या बदला, लोग समझ नहीं पा रहे हैं। एक वक्त था जब BJP 2 सीटों पर रह गई थी, तब किसी ने नहीं कहा था विपक्ष मुक्त भारत। तब लोग खुश थे और यह नहीं सोच रहे थे कि अब विपक्ष ही नहीं रहा, तो क्या होगा। तब 400 सीटों पर कांग्रेस थी और BJP के पास 2 सीटें थीं। तब लाल कृष्ण आडवाणी और अटल बिहारी वाजपेयी समेत दूसरे नेताओं ने पूरी मेहनत की और 200 सीटें लेकर आए।

■ नरेंद्र मोदी के पीएम बनने के बाद उनकी पार्टी किस तरह बदली?

मोदी और शाह की टीम का अपना एक इतिहास है। पार्टी ने एक सिस्टम बनाया। पिछले दिनों जब दिल्ली से कुछ सांसदों के टिकट काटे गए, तो उन लोगों ने सोशल मीडिया पर लिखा कि वे संन्यास ले रहे हैं, ताकि उनके फैंस को ऐसा ना लगे कि उन्हें क्यों हटाया गया है। यह गौर करने वाली बात है। उन्होंने पार्टी के निर्णय को न केवल स्वीकार किया बल्कि यह भी सुनिश्चित करने की कोशिश की कि उस फैसले को आम लोग भी सही रूप में लें। कांग्रेस जब दो बार हारी पिछले चुनावों में, तो लोगों ने कहा कि आप सिंधिया को सीएम बना दीजिए। यह अच्छा मौका था। अगर वे ऐसा कर देते, तो उनका अपना एक ब्रैंड होता, कांग्रेस का अपना एक चेहरा होता। लेकिन उन्होंने कहा, नहीं।

■ क्या कभी आपका भी मन किया कि राजनीति में आ जाऊं?

मन में यह बात आई थी। अन्ना हजारे के आंदोलन के दौरान तो हर कोई चाहता था कि राजनीति में आ जाऊं। लेकिन मेरे जहन में बहुत सारे संदेह भी थे। मैं लेखक हूं तो कहीं ना कहीं वह सब बंद करना पड़ता। इसलिए मैंने सोचा कि अभी सही समय नहीं आया है। अभी सिर्फ लिखना चाहता हूं। अच्छा नेता बनना आसान काम नहीं है। अगर आपको सिलेब्रिटी सांसद बनना हो तो अलग बात है। जहां तक मैं देखता हूं कि बहुत से सिलेब्रिटी नेता इसी कारण वापस अपने प्रफेशन में लौट आए हैं। एक अच्छा राजनेता बनने के लिए आपको 24X7 देने होते हैं।

> एक अच्छा अपोजिशन होना देश में जरूरी है, अभी वह नहीं है। लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि इसकी पूरी वजह BJP ही है। बेशक BJP के पास बहुत पावर है, लेकिन जहां कांग्रेस के कंट्रोल में कुछ चीजें थीं, वहां भी उसने कुछ नहीं किया। जो बदलाव वह कर सकती थी, जिसका मौका था उसके पास, वह भी नहीं किया

■ अगर आप सोसायटी को कुछ अच्छा देना चाहते हैं, तो आपको नहीं लगता कि उसके लिए राजनीति में आना चाहिए?

हां, यह तो है। लेकिन सबके अपने विचार हैं। हमारे देश में अच्छे लोग भी हैं, जिनकी राजनीति में रुचि है। अच्छा काम करने वालों की तारीफ भी करनी चाहिए। लोगों में एक फैशन सा बन जाता है कि अगर कोई पॉलिटिशन है, तो उसकी सिर्फ निंदा ही करो। इसमें उन्हें मजा आता है। लेकिन यह सोच ठीक नहीं है। आप अच्छे काम की तारीफ करेंगे, तो ही अच्छे लोग आएंगे।

■ किसी पार्टी के लगातार दो बार जीतने के बाद उसे लेकर लोगों की सोच में बदलाव आता है। आपकी सोच में भी कोई बदलाव आया है क्या?

एक अच्छा अपोजिशन होना देश में जरूरी है, अभी वह नहीं है। लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि इसकी पूरी वजह BJP है। बेशक BJP के पास बहुत पावर है, लेकिन जहां कांग्रेस के कंट्रोल में कुछ चीजें थीं, वहां भी उसने कुछ नहीं किया। कांग्रेस के लोग कई मामलों में कह सकते हैं कि BJP ने ऐसा या वैसा नहीं करने दिया, लेकिन जो आप कर सकते थे, वह भी आपने नहीं किया। आपको एक मौका मिला था सचिन पायलट और सिंधिया को आगे बढ़ाने का, जो आपने नहीं किया। उसका नतीजा हुआ कि आपको मध्य प्रदेश और राजस्थान गंवाना पड़ा। आज भी अगर उन्हें कुछ बोलो तो कहते हैं कि तुम नहीं समझ सकते, आज भी कांग्रेस के अपने फैंस हैं। उन्हें समझना होगा कि बदलाव ही रीत है।

www.nbt.in

सेवा का मेवा लेकर छूमंतर

खुद अपनी आंख से

मेखला गुप्ता

सुबह से ही घर में गहमागहमी का माहौल था। गर्मी की छुट्टियों में ननदें आई हुई थीं, और आज घर में कजिन जेठ की बेटी आने वाली थी। सभी एक सुर में कहे जा रहे थे, 'भई, बहू तो उसके जैसी होनी चाहिए। ससुराल में सबका आते ही ऐसा ध्यान रखना शुरू कर दिया, जैसे बरसों से वहां रह रही हो।' वैसे बहुएं तो हम भी थीं, पर उसके चर्चे कुछ ज्यादा स्वाद से किए जा रहे थे। पतिदेव व्यंग्यबाण छोड़ते हुए बोले, 'कुछ सीख लेना उससे कि ससुराल में रिश्ते कैसे निभाए जाते हैं।' खैर हमने बात को ज्यादा तवज्जो न देते हुए ध्यान अपने काम में लगाया।

माहौल में काफी गरमाहट थी। हम भी इसमें खासी भूमिका निभा रहे थे। हमारी बेटी और दामाद जो आने वाले थे। उम्र में भले ही ज्यादा फासला नहीं था, पर ओहदा तो सासू मां का था ही। कुछ डिशेज हमने भी बनाईं। घर को अलग तरह से सजाया गया। आखिरकार बेटी-दामाद और उनके मम्मी-पापा, यानी हमारे समधी और समधन आने वाले थे। चाय नाश्ता लगाना शुरू किया तो बेटी बोली- चाची जी, पापा चीनी नहीं लेंगे। हमने मीठा ऑफर किया तो बोली, 'नहीं, नहीं पापा जी की शुगर काफी बढ़ी हुई है, मीठा नहीं खा सकते।' सबके सब बेटी पर निहाल हुए जा रहे थे। सास-ससुर भी बहू पर निहाल हुए जा रहे थे। उसकी तारीफ में कोई कमी नहीं कर रहे थे।

मैं महसूस कर रही थी, जैसे मैंने बहू होकर कुछ अच्छा किया ही नहीं। मैं तो बस नाम के लिए बहू बनी थी। समधी जी बोले, 'इसने आते ही घर को ऐसे संभाल लिया कि अब तो कोई चिंता ही नहीं रही।' वहीं सासू जी बोलीं, 'हमने बेटी की शादी करके जो कमी महसूस की थी, इसने वो कमी पूरी कर दी।' जैसे-जैसे नाश्ता और खाना सर्व हो रहा था, बेटी परिवार के हर सदस्य की रुचि बताते हुए उनके पसंदीदा खाने की लिस्ट बता रही थी। फिर शादी के बाद नए माहौल में खुद को एडजस्ट कैसे किया, यह बताने लगी। हम भी उसकी बातें सुनकर आनंदित हो रहे थे।

खैर, उनका खाना-पीना हुआ, और जब वे रवाना हुए तो घर के सदस्यों के मुंह पर बस उसकी ही तारीफें थी। देखो कितनी जमीन से जुड़ी लड़की है। घर को कैसे संभाल लिया। सास-ससुर का मां-बाप की तरह ख्याल रखती है। थोड़े दिन गुजरे थे कि एक दिन खबर आई कि बेटी दामाद को लेकर अचानक से अपने मायके चली गई है। मैंने कहा, इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है? गई होगी घूमने। आ जाएगी।

पता चला कि वो तो सामान समेट कर रवाना हो गई। माता-पिता समान सास-ससुर को बिना कुछ बताए पति-पत्नी निकल लिए थे। जेठजी और पतिदेव जब मिलने गए तो पता चला कि दोनों काफी समय से तैयारी में लगे थे, पर उन दो बुजुर्ग प्राणियों को इसकी भनक तक नहीं लगने दी। पतिदेव ने आकर जब उनका हाल बताना शुरू किया तो एक-एक बात खुलकर सामने आने लगी। घर के लोग जो पहले बोल रहे थे कि ऐसी होती हैं बहुएं, अब कह रहे थे कि बोलो, क्या ऐसी होती हैं बहुएं?

चलते-चलते...

जानवर पहले भी जड़ी-बूटी खाकर अपना इलाज करते पाए गए हैं। यह पहली बार है, जब वैज्ञानिकों को एक ओरांगुटान बंदर बाकायदा जड़ी-बूटी से मलहम बनाकर अपने घाव पर लगाता मिला है। साइंटिफिक रिपोर्ट्स में प्रकाशित एक शोध के मुताबिक इंडोनेशिया में राकुस नाम के ओरांगुटान ने एक दर्दनिवारक पौधे को चबाकर पीसा, फिर उसका लेप अपने घाव पर लगाया।

रीडर्स मेल

▸ गौरव की भावना

'क्रॉसवर्ल्ड' कॉलम में 'यादों का सहारा' शीर्षक से 3 मई को प्रकाशित लेख पढ़ा। यह लेख नॉस्टैल्जिक नैशनलिज्म के विषय को बखूबी उजागर करता है, जिसमें राष्ट्र अपने प्राचीन गौरव को याद करते हुए वर्तमान चुनौतियों से निपटने का प्रयास करते हैं। यह एक सार्वभौमिक मानवीय प्रवृत्ति है। लेख में कहा गया है कि कई देशों के नेता, जैसे डॉनल्ड ट्रंप, व्लादिमीर पूतिन और शी चिनफिंग ने अपने राष्ट्रों को उनके 'स्वर्णिम युग' में वापस लाने का वादा किया है। यह एक प्रभावी राजनीतिक उपकरण हो सकता है, क्योंकि यह लोगों में एकता और राष्ट्रीय गौरव की भावना जगाता है। लेकिन देश के नागरिकों को इस भ्रम में बहलाना अच्छा नहीं है। अतीत से सीखना और उससे प्रेरणा लेना महत्वपूर्ण है, पर वर्तमान की चुनौतियों का सामना करने और एक बेहतर भविष्य बनाने के लिए हमें अतीत के पीछे भागने से बचना चाहिए।

निर्मल गुप्ता, ईमेल से

▸ पूर्वाग्रह से बचें

यह पत्र 1 मई के संपादकीय 'ट्रूडो की गलती से संबंधित है'। अलगाववादी नारों और बैनरों के प्रदर्शन पर ट्रूडो की उदासीनता ने दोनों देशों के संबंधों में तनाव बढ़ा दिया है। धार्मिक स्वतंत्रता को लेकर अमेरिकी आयोग की पूर्वाग्रह से भरी रिपोर्ट पर भारत ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है। यह सराहनीय है। पश्चिमी मीडिया, पश्चिमी एजेंसियां और अमेरिका, कनाडा और ब्रिटेन की सरकारें दोहरा रुख अपनाती हैं। ये देश भारत से दुर्भावना रखते हैं और अलगाववादी ताकतों के पनाहगाह बने हुए हैं। अमेरिका स्वयं के हितों पर चोट करने वाले आतंकवादियों को दूसरे देशों की सीमा में घुसकर मारने में भी कोई गुरेज नहीं करता है। अपने यहां होने वाले आंदोलनों को वह किसी भी सीमा तक जाकर कुचलने से कोई परहेज नहीं करता है। फलस्तीन समर्थक छात्रों पर कार्रवाई इसका उदाहरण है जबकि वहां की सरकार और एजेंसियां धार्मिक स्वतंत्रता, मानवाधिकार और अभिव्यक्ति की आजादी पर भारत को उपदेश देती रहती हैं। सभी देशों को यह समझना होगा।

विमलेश पगारिया, ईमेल से

आर.एन.आई. नं. 510/57© सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित। स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड के लिए राजीव यादव द्वारा, 7 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित तथा टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, साइट IV, औद्योगिक क्षेत्र साहिबाबाद और प्लॉट नंबर 7-8, सेक्टर M-11, ट्रांसपोर्ट हब, इंडस्ट्रियल मॉडल टाउनशिप, मानेसर, हरियाणा से मुद्रित। फोन : 23302000 फैक्स: 23492047, पंजीकृत कार्यालय : दादाभाई नौरोजी रोड, मुंबई-400001। विमान सेवा शुल्क : 1 रु. प्रति कॉपी। नेपाल में कुल मूल्य : सोमवार से शनिवार : नेपाली 5 रु. ; रविवार : नेपाली 6 रु. संपादक (दिल्ली मार्केट) : आशीष पांडे (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी)

https://t.me/AllNewsPaperPaid

राष्ट्रीय
सहारा
नई दिल्ली • शनिवार • 4 मई • 2024
www.rashtriyasahara.com

अनमोल वचन

सुंदर स्त्री हीरा है, लेकिन नेक स्त्री हीरों का खजाना है।
-सादी

पाकिस्तान के बहाने

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का कांग्रेस पर हमले के अभियान में पाकिस्तान एक नया कनेक्शन है। हालांकि शुरुआती चुनाव से ही पाकिस्तान को भारत के विरुद्ध खतरे के रूप में चिह्नित किया जाता रहा है। ताजा आरोप है कि पाकिस्तान 'शहजादे' यानी राहुल गांधी की ताजपोशी के लिए बहुत उछल रहा है। यह 'चुनाव को प्रभावित करने' का एकरेखीय आरोप नहीं है, जैसा कि चीन-रूस के बारे में अमेरिका का होता है। प्रधानमंत्री मोदी पाकिस्तान की राहुल में दिलचस्पी के दुष्परिणामों को आंतरिक और बाह्य, दोनों स्तरों पर दिखाते हैं। इससे देश में इस्लामिक जेहाद-आतंकवाद जोर पकड़ेगा, राष्ट्रीय एकता-अखंडता खंडित होगी, सुरक्षा-व्यवस्था कमजोर पड़ेगी और नागरिकों को भुगतना पड़ेगा। यह कांग्रेसी राज का दुर्भाग्यपूर्ण फिनोमिना रहा है। इससे भारत की चहुंदिस जारी वैश्विक प्रगति भी थम जाएगी। रिकॉर्ड्स पर टिके मोदी के इस आकलन से शायद ही असहमति होगी।

पाकिस्तान से दो-दो लड़ाइयां जीतने के बावजूद कांग्रेसी हुकूमत के बनिस्बत मोदी की सुरक्षा व्यवस्था निस्संदेह पुख्ता है-कश्मीर में आतंकवाद की छिटपुट वारदात के बावजूद। 'घर में घुस कर मारने' की बात अब चेतावनी नहीं होती। इसलिए दुश्मन में दहशत पैदा करती हैं। पर क्या पाकिस्तान वास्तव में इस हालत में रह गया है कि वह आज के भारत को नुकसान पहुंचा सके? आतंक के मोर्चे पर यह आज भी सही है। इसलिए ही, पाकिस्तान आम भारतीयों में अलगाववाद और खून-खराबे के जेहाद का नाम है। इसका केवल चुनाव के समय ही नहीं, बाकी दिनों में भी किया गया उल्लेख अधिकतर भारतीयों के विचारों को ध्रुवीकृत कर देता है। ऐसे में इंडिया गठबंधन की सपा प्रत्याशी की वोट जेहाद की अपील, जो एक सांप्रदायिक विचारों की लामबंदी से है, बहुसंख्यक मतों का ध्रुवीकरण कर सकती है। मोदी इन मुद्दों का फायदा उठाना चाहते हैं। आरक्षण और संविधान, जो चुनाव में अंडरकरंट मुद्दे हैं, उनमें भी मत-विभाजन का लाभ चाहते हैं। इस मामले में बैकफुट पर चल रहे मोदी को कांग्रेस पर हमले के नये तर्क मिल गए हैं। वे उसके अल्पसंख्यक-प्रेम को ओबीसी कोटे की हकमारी बताते हैं। अब ऐसा नहीं होगा, इसकी वे कांग्रेस से लिखित गारंटी चाहते हैं। यह भय का वैसा ही तर्क है, जैसा कांग्रेस जनमानस में बिठा रही है कि 'मोदी आए तो लोकतंत्र, संविधान और आरक्षण कुछ भी नहीं बचेगा।'

घातक आत्मग्लानि

कर्नाटक हाई कोर्ट ने 'जाओ फांसी लगा लो' कहने को आत्महत्या के लिए उकसाने की श्रेणी में रखने से मना कर दिया। अदालत आपत्तिजनक बयानों से जुड़े आत्महत्या के लिए उकसाने के मामले की जटिलताओं को दूर करने के मुद्दे पर विचार कर रही थी। तटीय कर्नाटक के उडुपी में गिरजाघर में पादरी की मौत के सिलसिले में हत्या के लिए उकसाने के आरोपों से जुड़ी याचिका पर अदालत ने यह कहा। आरोप है कि पादरी और याचिकाकर्ता की पत्नी के दरम्यान दैहिक संबंध थे। दोनों के बीच हुई बहस में उसने पादरी को मरने के लिए कहा। एकल जज की पीठ ने सर्वोच्च अदालत के पूर्व निर्णयों के आधार पर कहा सिर्फ बयानों को उकसाने वाला नहीं माना जा सकता। अदालत ने पिता और पादरी होने के बावजूद मानव मन की जटिलताओं का जिक्र करते हुए मामले को खारिज कर दिया। जिम्मेदार और धार्मिक पद पर होने के बावजूद सामाजिक मूल्यों का अनादर करने वाला शख्स आत्मग्लानि के चलते भी जिंदगी समाप्त कर सकता है। अपने समाज में साल दर साल आत्महत्याओं के मामले बढ़ते जा रहे हैं।

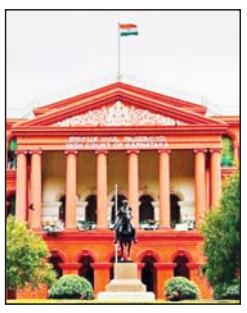

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार सिर्फ एक साल (2022) में प्रति दिन 468 लोगों ने अपनी जान ली। खुद की जान लेने वालों में युवाओं की संख्या बढ़ती जा रही है। खासकर सामाजिक-पारिवारिक कारणों से लोग खुदकुशी कर लेते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार अपनी जिंदगी से उकता कर, निराश होकर या आवेश में आत्महत्या करने वाले भी मानसिक तौर पर इसके लिए तैयार होते हैं, जिसके संकेत वे लगातार अपने करीबियों, परिवार या मित्रों को देते रहते हैं, जिसकी प्रायः अनदेखी की जाती है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि मानसिक प्रताड़ना, उलाहनों, उत्पीड़न और दोष मढ़े जाने से आजिज आकर भी लोग अपनी जान ले लेते हैं। मगर इस मामले में केवल कहासुनी के दौरान मरने का ताना देना ही काफी नहीं कहा जा सकता। आत्म-गलानि भरे उपासकों के पाप-स्वीकरण सुनने वालों के प्रति आम जन जो सम्मान का भाव रखता है, उसका दुष्चरित्र होना, सामाजिक तौर पर अस्वीकृत और तिरस्कृत होता है। इसी सब से भयभीत होकर मृतक को यह कदम उठाना पड़ा होगा।

कटाक्ष/ कबीरदास

मैं टिकट नहीं छीनने दूंगा!

साक्षी मलिक की यह बात तो बिल्कुल गलत है। अब उसका ब्रजभूषण शरण सिंह से खुंदक खाना तो फिर भी समझ में आता था। आखिर, देश के कुश्ती के बॉस थे और नीचे वालों में कुछ पर बॉस की कृपा बरसती है, तो कुछ से खटपट हो ही जाती है। पर बेचारे करण भूषण ने उनका क्या बिगाड़ा है? मोदी जी के उसको कैसरगंज से अपनी पार्टी का टिकट देने के पीछे क्यों पड़ गईं? कहती हैं कि ब्रजभूषण जीत गया, भारत की बेटियां हार गईं! कैसे भाई कैसे? ब्रजभूषण का तो टिकट कट गया, वह भी भारत की बेटियों के ही चक्कर में? उसे सिर्फ इसलिए जीता बताया जा रहा है कि करण भूषण, ब्रजभूषण का बेटा है? बाप का टिकट मोदी जी बेटे को नहीं देंगे तो क्या बाप के दुश्मनों को देंगे? मोदी जी परिवारवाद के खिलाफ जरूर हैं और पक्के खिलाफ हैं, लेकिन अपना नफा-नुकसान देखकर।

वैसे भी मोदी जी परिवारवाद के जितने बड़े विरोधी हैं, उससे बड़े विरोधी विरासत कर के हैं। बाकायदा ऐलान कर के कह दिया है कि जब तक मोदी जिंदा है, विरासत कर के नाम पर इंडी एलाइंस वालों को पचास परसेंट नहीं छीनने देंगे। आधी जमीन नहीं छीनने देंगे। घर में चार कमरे हों तो दो कमरे नहीं छीनने देंगे। दो भैंसें भी हुईं तो एक भैंस नहीं छीनने देंगे। वैसे कांग्रेसी तो पचास परसेंट पर भी कहां रुकने वाले हैं, वो तो पूरा का पूरा छीन लेंगे, चाहे मंगलसूत्र हो, औरतों का गहना-जेवर हो या बाजरे में दबी नकदी हो। और नौकरी भी। बाकी छोड़ो अब तो ये कुर्सी का टिकट भी छीनने पर आ गए हैं। कहते हैं बाप का टिकट, बेटे को ही क्यों मिलेगा; हम इसे अपने तुष्टीकरण वाले वोट बैंक को देंगे! पर जब तक मोदी जिंदा है, ऐसा कानून नहीं बनने देगा। बाप का टिकट बेटे को ही मिलेगा, जिंदगी के बाद भी और मजबूरी ही हो जाए तो बाप की जिंदगी के साथ भी।

साक्षी को तो मोदी जी को थैंक यू कहना चाहिए कि उनकी बात मान कर ब्रजभूषण जी का टिकट काट दिया। वरना प्रज्वल रेवन्ना की तरह मोदी जी टिकट भी दिला देते और उनके लिए प्रचार करने चले जाते, तो भी वो क्या कर लेतीं? एक ओलंपिक पुरस्कार जीत आने का मतलब यह थोड़े ही है कि मोदी जी उनकी हर बात मान ही लेंगे।

भारत की आर्थिक छलांग

सामयिक

प्रह्लाद सबनानी

दिनांक 1 मई, 2024 को अप्रैल, 2024 माह में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) के संग्रहण से संबंधित जानकारी जारी की गई है। माह अप्रैल 2024 के दौरान जीएसटी का संग्रहण पिछले सारे रिकार्ड तोड़ते हुए 2.10 लाख करोड़ रुपये के रिकार्ड स्तर पर पहुंच गया है, जो निश्चित ही, भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती को दर्शा रहा है। वित्त वर्ष 2022 में जीएसटी का औसत कुल मासिक संग्रहण 1.20 लाख करोड़ रुपये रहा था, जो वित्त वर्ष 2023 में बढ़कर 1.50 लाख करोड़ हो गया एवं वित्त वर्ष 2024 में 1.70 लाख करोड़ रुपये के स्तर को पार कर गया।

अब तो अप्रैल, 2024 में 2.10 लाख करोड़ रुपये के स्तर से भी आगे निकल गया है। इससे आभास हो रहा है कि देश के नागरिकों में आर्थिक नियमों के अनुपालन के प्रति रुचि बढ़ी है, अर्थव्यवस्था का तेजी से औपचारीकरण हो रहा है एवं भारत में आर्थिक विकास की दर तेज गति से आगे बढ़ रही है। भारत में वर्ष 2014 के पूर्व ऐसा समय था जब केंद्रीय नेतृत्व में नीतिगत फैसले लेने में हिचकिचाहट रहती थी और अर्थव्यवस्था विश्व की हिचकोले खाने वाली 5 अर्थव्यवस्थाओं में शामिल थी, परंतु केवल 10 वर्ष पश्चात केंद्र में मजबूत नेतृत्व एवं मजबूत लोकतंत्र के चलते वर्ष 2024 में भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है और विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर तेजी से आगे बढ़ रही है। आज भारत आर्थिक क्षेत्र में वैश्विक मंच पर नित रिकार्ड बना रहा है। वैश्विक स्तर पर विदेशी प्रेषण के मामले में भारत प्रेषण प्राप्तकर्ता के रूप में प्रथम स्थान पर पहुंच गया है। भारत में सबसे बड़ा सिंक्रोनाईजड बिजली ग्रिड है। बैंकिंग क्षेत्र में वास्तविक समय लेन देन की सबसे बड़ी संख्या आज भारत में ही संपन्न हो रही है। भारत विश्व में दूसरा सबसे बड़ा स्टील उत्पादक देश है एवं विश्व में मोबाइल फोन का दूसरा सबसे बड़ा निर्माता बन गया है। भारत में विश्व का दूसरा सबसे बड़ा सड़क नेट्वर्क है। मात्रा की दृष्टि से भारत में विश्व का तीसरा सबसे बड़ा फार्मास्यूटिकल्स उद्योग है। भारत में विश्व में तीसरा सबसे बड़ा मेट्रो नेट्वर्क है। भारत ने स्टार्टअप विकसित करने के उद्देश्य से विश्व का तीसरा सबसे बड़ा पारिस्थितिकी तंत्र खड़ा कर लिया है। भारत का स्टॉक बाजार, पूंजीकरण के मामले में विश्व में चौथे स्थान पर आ गया है। भारत में विश्व का चौथा सबसे बड़ा रेल नेट्वर्क है। विश्व में पैटेंट के लिए आवेदन किए जाने वाले देशों में भारत छठे स्थान पर आ गया है। 10 वर्षों के दौरान शेयर बाजार में निवेशकों को अपार सफलता

हासिल हुई है और सेंसेक्स ने 200 प्रतिशत की रिकार्ड वृद्धि दर्ज की है। निफ्टी ने भी इसी अवधि में 206 प्रतिशत की रिकार्ड वृद्धि दर्ज की। यह स्थानीय एवं विदेशी निवेशकों का भारतीय अर्थव्यवस्था पर विश्वास जता रहा है। भारत में शेयर बाजार में व्यवहार करने के उद्देश्य से खोले जाने वाले डीमेट खातों की संख्या 2014 में 2.2 करोड़ थी जो 2024 में बढ़कर 15.13 करोड़ हो गई है अर्थात 10 वर्षों में 7 गुणा से अधिक। ईज ऑफ डूइंग बिजनेस में भी काफी सुधार हुआ है।

भारतीय नागरिकों में आज स्व का भाव जगाने में भी कामयाबी मिली है, जिसके चलते स्वदेश निर्मित वस्तुओं का उपयोग बढ़ रहा है एवं अन्य देशों से विभिन्न उत्पादों के आयात कम हो रहे हैं। इसके चलते भारत के विदेशी व्यापार घाटे में सुधार दृष्टिगोचर है। भारत से विभिन्न उत्पादों के निर्यात में भी मामूली वृद्धि दर्ज हो रही है। भारत में नागरिक का औसत जीवन 2022 के 62.7 वर्ष से बढ़कर 67.7 वर्ष हो गया है, जो स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के चलते ही संभव हो सका है। संयुक्त राष्ट्र के एक प्रतिवेदन के अनुसार भारत में प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय में पिछले 12 महीनों के दौरान 6.3 प्रतिशत की वृद्ध दर्ज हुई है। एक सर्वे के अनुसार, आज भारत में 36 प्रतिशत कंपनियां आगामी 3 माह में नई भर्तियां करने पर गंभीरता से विचार कर रही हैं, इससे में रोजगार के लाखों अवसर निर्मित होते दिखाई दे रहे हैं। गरीब वर्ग को भी केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ पहुंचाए जाने के भरसक प्रयास किए जा रहे हैं।

जल जीवन मिशन ने पूरे भारत में 75 प्रतिशत से अधिक घरों में नल के पानी का कनेक्शन प्रदान करके मील का पत्थर हासिल कर लिया है। लगभग 4 वर्षों के भीतर मिशन ने 2019 में ग्रामीण नल कनेक्शन कवरेज को 3.23 करोड़ घरों से बढ़ाकर 14.50 करोड़ से अधिक घरों तक पहुंचा दिया गया है। पीएम आवास योजना के अंतर्गत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में 4 करोड़ से अधिक पक्के मकान बनाए गए हैं। सौभाग्य योजना के अंतर्गत 2.8 करोड़ घरों का विद्युतीकरण कर लिया गया है। विश्व के सबसे बड़े सरकारी वित्त पोषित स्वास्थ्य सेवा कार्यक्रम-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना-के अंतर्गत 55 करोड़ लाभार्थियों को माध्यमिक एवं तृतीयक देखभाल एवं अस्पताल में भर्ती के लिए प्रति परिवार 5 लाख रुपये का बीमा कवर प्रदान किया जा रहा है।

पीएम गरीब कल्याण योजना के माध्यम से मुफ्त अनाज के मासिक वितरण से 80 करोड़ से अधिक परिवारों को लाभ प्राप्त हो रहा है। पीएम उज्जवल योजना के अंतर्गत 10 करोड़ से अधिक महिलाओं को मुफ्त गैस कनेक्शन प्रदान किए गए हैं। ये महिलाएं पहले लकड़ी जलाकर भोजन सामग्री तैयार कर पाती थीं और अपनी आंखों को खराब होते हुए देखती थीं। स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत भी 12 करोड़ से अधिक शौचालयों का निर्माण कर महिलाओं की सुरक्षा एवं गरिमा को कायम रखा जा सका है। जन धन खाता योजना के अंतर्गत 52 करोड़ से अधिक खाते खोलकर नागरिकों को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली में लाया गया है। इससे वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिला है। देश भर में 11,000 से अधिक जनऔषधि केंद्र स्थापित किए गए हैं, जो 50-90 प्रतिशत रियायती दरों पर आवश्यक दवाएं प्रदान कर रहे हैं। कहा जा सकता है कि भारत आर्थिक क्षेत्र में विश्व में चमकते सितारे के रूप में दिखाई दे रहा है एवं अपनी विकास दर को 10 प्रतिशत के ऊपर ले जाने के भरसक प्रयास कर रहा है। इससे निश्चित ही भारत शीघ्र ही विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा एवं इसके बाद 2027 तक विकसित राष्ट्र भी बन जाएगा।

कहा जा सकता है कि भारत आर्थिक क्षेत्र में विश्व में चमकते सितारे के रूप में दिखाई दे रहा है एवं अपनी विकास दर को 10 प्रतिशत के ऊपर ले जाने के भरसक प्रयास कर रहा है। निश्चित ही भारत शीघ्र ही विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा एवं 2027 तक विकसित राष्ट्र भी बन जाएगा। आभास हो रहा है कि देश के नागरिकों में आर्थिक नियमों के अनुपालन के प्रति रुचि बढ़ी है, अर्थव्यवस्था का औपचारीकरण हो रहा है

पॉपुलेशन डिविडेंड का लाभ नहीं उठा पा रहा दक्षिण एशिया

- दक्षिण एशिया अभी अपने पॉपुलेशन डिविडेंड (जनसांख्यिकी लाभ) का पूरा लाभ उठाने में विफल है। वह मौका गंवा रहा है
- वर्ल्ड बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री फ्रांजिस्का ओहनसोरगे के मुताबिक, यदि यह क्षेत्र अन्य उभरते बाजारों और विकासशील इकॉनमी की तरह कामकाजी उम्र वाली आबादी के बड़े हिस्से को सक्रिय श्रम में जुटाने में सफल रहता है, तो इसकी उत्पादन क्षमता 16 फीसद बढ़ सकती है

(स्रोत : मीडिया इनपुट्स)

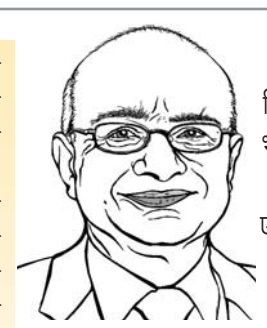

यदि कनाडा सिख उग्रवाद का विश्व में बड़ा केंद्र बन गया है, तो भारत को भी अपने सर कुछ दोष लेना होगा। इसने 1985 में एअर इंडिया के विमान में बमबारी को लेकर कनाडा को नहीं घेरा। इस घटना में 329 लोगों को जान से हाथ धोने पड़े थे। हालांकि बाद में कनाडा में दो अलग-अलग जांचों में पाया गया कि यह कृत्य कनाडा-स्थित सिख उग्रवादियों का था।

ब्रह्म चेलानी, सामरिक चिंतक
@Chellaney

विद्रोही कामरेड हमारी यादों में

अतुल अनजान | **मणेंद्र मिश्रा मशाल**

कामरेड अतुल अनजान नहीं रहे। शुक्रवार सुबह लखनऊ के एक निजी हास्पिटल में कैंसर से जूझ रहे अतुल अनजान ने अंतिम सांस ली। उनका पूरा जीवन ही सार्वजनिक था, जिसमें निजी जैसा कुछ भी नहीं था। हमारी पीढ़ी के लिए वह राजनीति, संविधान, जन सरोकार, सामाजिक मुद्दों सहित देश-दुनिया के विभिन्न मसलों, जिनका असर आम जनता पर पड़ सकता है, सभी विषयों के लिए इनसाइक्लोपीडिया थे। वामपंथी राजनीति के वे बड़े चेहरे थे। लेफ्ट यूनिटी के लिए पूरी प्रतिबद्धता होने के बाद भी अतुल अनजान समाजवादी, कांग्रेसी सहित उन सभी समूहों, जिनका भरोसा आपसी सौहार्द एवं उपेक्षितों/किसानों के प्रति रहता था, से संवाद करने में नहीं हिचकते थे।

हम लोगों का उनसे परिचय आज के बीस वर्ष पूर्व इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान हुआ था। प्रो. बनवारी लाल शर्मा के संयोजन में आजादी बचाओ आंदोलन में सक्रिय रहते हुए हम लोगों ने उनके कई कार्यक्रम कराए जिनमें उन्हें करीब से सुनना हुआ था। उस समय सेज (स्पेशल इकनॉमिक जोन) के खिलाफ अतुल अनजान के किसानों के समर्थन में दिए गए वक्तव्य की राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा थी। जनजातीय क्षेत्रों में मानवाधिकारों के लिए उन्होंने लंबी लड़ाई लड़ी। वामपंथी राजनीति को पसंद न करने वाले लोग भी उनका भाषण सुनने दूर-दूर से आते थे। दिल्ली स्थित मावलंकर हाल, कांस्टीट्यूशन क्लब, तीन मूर्ति लाइब्रेरी में शहीदे आजम भगत सिंह, सामयिक मुद्दों पर कामरेड एबी वर्धन के साथ अतुल अनजान की उपस्थिति हर बार एक नया विमर्श पैदा करती थी। 2019 में दिल्ली के गांधी शांति प्रतिष्ठान में 12-13 जुलाई को आयोजित समाजवादी समागम में उन्होंने राजनीति में विचार और जनाधार, दोनों को बचाने के लिए समाजवादियों से आह्वान किया था। इस उपलक्ष्य में विमोचित समाजवादी विचार समग्र पुस्तक में प्रकाशित मेरे लेख 'समाजवादी सोच के प्रति नई पीढ़ी की चिंता' को लेकर मंच से खूब सराहना की और आयोजन में मेरे वक्तव्य से प्रभावित होकर सचेत किया था कि समाजवादी विचारधारा को नवीन प्रयोगों से सक्रिय किए रहना।

लखनऊ विश्वविद्यालय के लोकप्रिय छात्र संघ अध्यक्ष रहे अतुल अनजान आजीवन छात्र आंदोलन के

स्मृति शेष

जेपी मूवमेंट वाली पीढ़ी और नये छात्र/नौजवानों में समन्वयकारी भूमिका में रहते थे। 2018 में लखनऊ विश्वविद्यालय के आंदोलनरत छात्रों के जेल जाने पर मीसा बंदी एवं लोकतंत्र रक्षक सेनानी, सत्तर के दशक में मेरठ कॉलेज की छात्र राजनीति से निकले पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेन्द्र चौधरी की पहल पर प्रो. रमेश दीक्षित (लखनऊ विश्वविद्यालय) एवं लखनऊ विश्वविद्यालय छात्र संघ के पूर्व पदाधिकारियों का सफल संयुक्त प्रेस कांफ्रेंस कराने का श्रेय अतुल को ही रहा। लखनऊ छात्र संघ के इतिहास में यह अपने आप में अनूठी घटना थी, जिसमें पूर्व छात्र संघ अध्यक्षों में अतुल अनजान, सत्यदेव त्रिपाठी, अरविन्द सिंह गोप, अरविन्द कुमार सिंह, डॉ. राजपाल कश्यप प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। इसका असर यह रहा कि जेल में बंद छात्र नेताओं की जल्द रिहाई हो गई।

प्रेस कांफ्रेंस में लखनऊ विश्वविद्यालय में सरकारी धन के दुरुपयोग को लेकर प्रोटेस्ट करने वाले छात्र-छात्राओं की गिरफ्तारी और उत्पीड़न की निंदा की गई थी। अतुल अनजान को अपने गृह जनपद मऊ से बेहद लगाव था जहां उनके प्रयास से 31 दिसम्बर, 2015 को तत्कालीन समाजवादी सरकार में नेता जी मुलायम सिंह यादव एवं उस समय मुख्यमंत्री रहे अखिलेश यादव ने जनपद के महान विभूति रहे पंडित अलगू राय शास्त्री और कामरेड जय बहादुर सिंह की प्रतिमा की स्थापना मऊ कलेक्ट्रेट परिसर में की थी।

कामरेड अतुल अनजान की हजरतगंत कॉफी हाउस की बैठकी बेहद चर्चित थी, जिसमें लखनऊ के सिविल सोसायटी से जुड़े अनेक लोग शामिल होते थे जिनमें नेता, पत्रकार, वकील, सामाजिक कार्यकर्ता और प्रोफेसर शामिल रहते थे। उनके होने से अन्याय के खिलाफ किसी भी आंदोलन, धरना, प्रदर्शन में लोगों को एक मजबूत संबल मिलता था। सच कहने का उनमें गजब का साहस था। वे आजीवन सिद्धांत और ईमानदारी की राजनीति करते रहे। उनके निधन ने समाज में एक जनपक्षकार की रिक्तता पैदा कर दी है। यह शून्यता लंबे समय तक बनी रहेगी जिसकी भरपाई मुश्किल है। अतुल कुमार अनजान अपने अर्थपूर्ण लेखों, ओजस्वी भाषणों और विद्रोही तेवर के लिए हमारी स्मृतियों में बने रहेंगे। हाशिये की मुखर आवाज अतुल अनजान को अंतिम प्रणाम।

शाश्वत प्रेम | **संत राजिन्दर**

लोग ऐसा प्रेम नहीं चाहते जो क्षणभंगुर हो। वे एक सरसरी नजर या अल्पकालीन मिलन नहीं चाहते। वे एक शाश्वत दृष्टि, एक शाश्वत मिलन चाहते हैं-अपने प्रियतम के साथ एकमेव होने की शाश्वत अवस्था में रहना चाहते हैं। इस भौतिक संसार के सबसे उत्तम और करीबी रिश्ते भी अंततः खत्म हो जाते हैं, क्योंकि इस संसार का नियम ही ऐसा है। हमारे भौतिक स्वरूप का अंत होना सुनिश्चित है।

जब हम जीवन की अनिश्चितता के बारे में जानते हैं, तो हम एक ऐसा प्रेम चाहते हैं जो अनश्वर हो। उसे हम प्रभु रूपी शाश्वत प्रेम के महासागर में तैर कर पा सकते हैं। प्रभु का प्रेम नश्वर नहीं होता। जब हम प्रभु से प्रेम करने लगते हैं, तो हम एक ऐसे प्रियतम से प्रेम करने लगते हैं, जो मृत्यु के द्वार के परे भी हमारे साथ रहता है। जब हम प्रभु के निर्मल, पवित्र महासागर में तैरते हैं तो हम अपने सच्चे स्वरूप का, अपनी आत्मा का प्रतिबिंब देख पाते हैं। वहां उसको दूषित करने वाली कोई मैल या गंदगी नहीं होती। बिना किसी ऐसी वस्तु के जो हमारे ध्यान को भंग करे, हम महासागर की गहराई में झांक पाते हैं। उसकी प्रेममयी लहरें हमसे टकराती रहती हैं। यहां हमारी शांति को भंग करने वाला कोई भौतिक आकर्षण नहीं होता। क्षणिक सांसारिक सुखों की बजाय हम प्रभु के शाश्वत प्रेम का अनुभव करने लगते हैं। जब हम प्रभु के महासागर में तैरते हैं, तो हम दिव्य आह्लाद का अनुभव करते हैं। हमारे अंतर में दिव्य जल का आह्लादकारी सरोवर सदैव विद्यमान रहता है। हम किसी भी समय इसमें डुबकी लगा सकते हैं। जब हम इस सरोवर में जाते हैं, तो हम समस्त चिंताओं से मुक्त हो जाते हैं। हम पूर्णतया तनावरहित हो जाते हैं। हमारे मन और आत्मा में परमानंद समा जाता है। जब हमारी आत्मा इसमें इस आंतरिक 'स्पा' में स्नान करती है, तो शांति से भरपूर हो जाती है। जब हमारी आत्मा शांत होती है, तो हमारा मन और शरीर भी स्वाभाविक रूप से शांत हो जाते हैं। जब हम प्रभु के साथ तैरते हैं, हम में दुनियावी भोगों की कोई चाह नहीं रहती, क्योंकि प्रभु का प्रेम हमें संतुष्ट कर देता है। जब हम प्रभु के साथ तैरते हैं, तो जो आह्लाद हमारी आत्मा में रम जाता है, वह किसी भी दुनियावी संतुष्टि से हजारों गुणा अधिक होता है। जब हम प्रभु के साथ तैरते हैं, तो शांति से भरपूर हो जाते हैं।

रीडर्स मेल

मिले सख्त सजा

भारतीय संस्कृति-सभ्यता के अंतर्गत आश्रम व्यवस्था का धार्मिक-पौराणिक महत्त्व माना गया है, परंतु वर्तमान दौर में महाकाल नगरी उज्जैन के एक आश्रम में हुई घटना से इस पर सवालिया निशान लग गया है। खबर के मुताबिक बड़नगर मार्ग एक आश्रम में संचालित गुरुकुल में 3 बच्चों का यौन शोषण किया गया। इस घटना ने आश्रम की गरिमा को तो धूमिल किया ही, साथ ही संस्कृति पर भी कुठाराघात किया। आचार्य और सेवादार के घिनौने कृत्य से आश्रम व्यवस्था की कार्यप्रणाली पर विश्वास उठ जाता है। रक्षक ही भक्षक बन गए। पूरे प्रकरण की जांच-पड़ताल कर दोषियों को सख्त-से-सख्त सजा दी जाए। अपराध की प्रवृत्ति पर रोकथाम के लिए संचालित आश्रमों की जांच-पड़ताल की जाए ताकि भविष्य में ऐसी शर्मनाक घटना न घटे। बच्चों को इंसाफ मिले इसके लिए कारगर कदम उठाए जाएं।

योगेश जोशी, बड़वाह, मप्र

पशुओं से बर्ताव अच्छा हो

पशु क्रूरता में जानवरों के साथ दुर्व्यवहार के जानबूझकर, दुर्भावनापूर्ण कार्य और कम स्पष्ट स्थितियां शामिल हैं, जहां किसी जानवर की जरूरतों की उपेक्षा की जाती है। जानवरों के खिलाफ हिंसा को आपराधिक हिंसा और घरेलू दुर्व्यवहार की उच्च संभावना से जोड़ा गया है। अनुच्छेद 21 में अधिकार केवल मनुष्यों को प्रदान किया गया है, लेकिन 'जीवन' शब्द के विस्तारित अर्थ में अब बुनियादी पर्यावरण में गड़बड़ी के खिलाफ अधिकार शामिल है, इसका अर्थ यह होना चाहिए कि पशु जीवन के साथ भी 'आंतरिक मूल्य, सम्मान और गरिमा' के साथ व्यवहार किया जाना चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं कि संविधान केवल मनुष्यों के अधिकारों की रक्षा करता है, लेकिन 'जीवन' शब्द का अर्थ आज केवल अस्तित्व से कहीं अधिक समझा जाता है; इसका मतलब एक ऐसा अस्तित्व है जो हमें, अन्य बातों के अलावा, एक स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण में रहने की अनुमति देता है।

डॉ. सत्यवान सौरभ, ई मेल से

ई-कचरा से संभल कर

वर्तमान तकनीकी और डिजिटल युग में ई-कचरा (ई-वेस्ट) पूरी दुनिया में एक चुनौती के रूप में उभर कर सामने आया है। हम सभी के पास मोबाइल फोन, टीवी, लैपटॉप और भी बहुत से ऐसे इलेक्ट्रॉनिक सामान हैं, जो कि हर रोज इस्तेमाल होते हैं, लेकिन नये स्मार्टफोन, टीवी या फिर लैपटॉप खरीदने के बाद पुराने को हम कचरा समझ कर फेंक देते हैं। आज जिस तरह से देश दुनिया में इलेक्ट्रॉनिक सामान की चाहत बढ़ती जा रही है वही सामान (गैजेट्स) जहर बनकर अब हमारे वातावरण का गला घोंट रहे हैं। ई-कचरे के चलते लाखों महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य पर भी खतरा मंडरा रहा है। जिस रफ्तार से हम ई-कचरा पैदा कर रहे हैं वो पूरी पृथ्वी के लिए बेहद खतरनाक है और इसके लिए पूरी दुनिया को ई-कचरा पर लगाम लगाने के साथ उसके बेहतर पुनर्चक्रण (रिसाइकिलिंग) का भी इंतजाम करना होगा। ताकि हम पृथ्वी के अनमोल संसाधनों का न सिर्फ सावधानी और समझबूझ के साथ इस्तेमाल कर सकें बल्कि पृथ्वी की सेहत का भी ध्यान रख सकें।

ऋषभ मिश्रा, कानपुर

letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

https://t.me/AllNewsPaperPaid

राष्ट्रीय सहारा
• राष्ट्रीयता • कर्तव्य • समर्पण
वर्ष-33, अंक 260

सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, सातवां तल, नवरंग हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। । समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - रत्नेश मिश्र* ।
दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23352368, 23352369, 23352371, 23352372, फैक्स - 23352370, दूरभाष - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2550750
आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान हैं।

संस्थापक: शहीद शिरोमणि लाला जगतनारायण जी, अमर शहीद रमेश चन्द्र जी एवं कलम के योद्धा अश्विनी कुमार जी

फिर विवादों में राजभवन

कर्नाटक में प्रज्वल रेवन्ना के सैक्स स्कैंडल का मामला अभी सुर्खियों में है और यह मुद्दा देशभर में चर्चा का विषय बना हुआ है। इसी बीच पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सी.वी. आनंदबोस पर कोलकाता राजभवन की अस्थायी महिला कर्मचारी ने छेड़छाड़ का आरोप लगाया है। महिला ने पुलिस स्टेशन में शिकायत भी दर्ज करा दी है। सैक्स और सियासत का जब भी कॉकटेल हुआ है तब-तब हंगामा बरपा है। राजभवन का विवादों में आना कोई नया नहीं है। 2018 में दक्षिणी भारत के राज्य से एक ऐसा ही मामला सामने आया था तब वहां के राज्यपाल पर यौन शोषण का आरोप लगा था। तब भी राजभवन में काम करने वाली महिलाओं पर शारीरिक संबंध बनाने के दबाव डालने के आरोप लगे थे। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल पर आरोप लगने के बाद राजनीति में हलचल मच गई। यह आरोप उस समय उछले जब तीसरे चरण के चुनाव के लिए चुनाव प्रचार जोरों पर है। यद्यपि गवर्नर सी.वी. आनंदबोस ने गुरुवार रात को ही अपने एक्स हैंडल पर कहा है ''सच्चाई की जीत होगी। मैं जोड़-तोड़ वाली कहानी के आगे झुकने से इंकार करता हूं। अगर कोई मुझे बदनाम करके वोट हासिल करना चाहता है तो भगवान उनका भला करे लेकिन वे बंगाल में हिंसा और भ्रष्टाचार के खिलाफ मेरी लड़ाई को रोक नहीं सकते।''

कभी राजनीति में नैतिकता और सिद्धांतों को प्राथमिकता दी जाती थी तब आरोप लगने के तुरन्त बाद ही नैतिकता का तकाजा देखते हुए राजनीतिज्ञ और राज्यपाल अपने पदों से इस्तीफा दे देते थे लेकिन अब वह दौर नहीं रहा। आज के दौर में आरोपों की कोई परवाह नहीं करता। आज के दौर में इससे ज्यादा कोई शर्मनाक बात नहीं हो सकती कि गम्भीर आरोपों के बावजूद राजनीतिज्ञ सत्ता से चिपके रहते हैं। संवैधानिक पद पर विराजित राज्यपाल एवं चुनी हुई सरकारों के बीच द्वंद एवं टकराव की स्थितियां अनेक बार उभरती रही हैं। राजनीति के उलझे धागों के कारण ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण एवं विडम्बनापूर्ण स्थितियां देखने को मिलती हैं। राज्यपालों और राज्य सरकारों में टकराव न केवल लोकतंत्र के लिए बल्कि शासन व्यवस्थाओं पर एक बदनुमा दाग की तरह है। पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल, तेलंगाना, पंजाब में ऐसी स्थितियां देखने को मिली हैं, जब वहां के राज्यपालों पर सरकार के कामकाज में रोड़े अटकाने के आरोप लगे हैं। राज्यपाल बनाम राज्य सरकार का वाक् युद्ध तो आम देखने को मिल रहा है। देश के सामने अनेक समस्याएं हैं, उनसे मुक्ति की बजाय इस तरह का टकराव उभरता राजनीति के दूषित होने का परिणाम है। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल और ममता सरकार में टकराव कोई छिपी हुई बात नहीं है। उन पर यौन शोषण के आरोप लगाना अपने आप में गम्भीर है। अब यह देखना होगा कि यह आरोप सच है या झूठ। यह भी देखना होगा कि राज्यपाल के खिलाफ शिकायत साजिश है या नहीं।

> **राजनीति के उलझे धागों के कारण ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण एवं विडम्बनापूर्ण स्थितियां देखने को मिलती हैं। राज्यपालों और राज्य सरकारों में टकराव न केवल लोकतंत्र के लिए बल्कि शासन व्यवस्थाओं पर एक बदनुमा दाग की तरह है। पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल, तेलंगाना, पंजाब में ऐसी स्थितियां देखने को मिली हैं, जब वहां के राज्यपालों पर सरकार के कामकाज में रोड़े अटकाने के आरोप लगे हैं। राज्यपाल बनाम राज्य सरकार का वाक् युद्ध तो आम देखने को मिल रहा है। देश के सामने अनेक समस्याएं हैं, उनसे मुक्ति की बजाय इस तरह का टकराव उभरता राजनीति के दूषित होने का परिणाम है।**

कुछ इसी तरह का मामला साल 2009 में भी सामने आया था। उस वक्त कांग्रेस के वरिष्ठ नेता नारायण दत्त (एनडी) तिवारी आंध्र प्रदेश के राज्यपाल हुआ करते थे। एक दिन टीवी पर उनकी एक कथित सैक्स सीडी सामने आई, जिसने पूरे देश की राजनीति में भूचाल मचा दिया था। हर तरफ उसकी चर्चा होने लगी थी। उस सीडी में एन.डी. तिवारी तीन महिलाओं संग आपत्तिजनक स्थिति में दिख रहे थे। उस वीडियो क्लिप को तेलुगू चैनल ने प्रसारित किया था। इस सीडी के सियासत ने ऐसा रंग दिखाया कि एनडी तिवारी को राज्यपाल पद से इस्तीफा देकर वापस लौटना पड़ा था। सीडी कांड को उन्होंने अपने खिलाफ विरोधियों की साजिश बताया था। आंध्र प्रदेश से लौटने के बाद एन.डी. तिवारी उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश की सक्रिय राजनीति में अपनी जमीन तलाश ही रहे थे कि एक नई मुसीबत सामने आ गई। जवानी के दिनों में अपनी रंगीन मिजाजी के लिए मशहूर एन.डी. तिवारी पर एक महिला ने नया आरोप लगा दिया।

यद्यपि राज्यपाल को संवैधानिक संरक्षण प्राप्त होता है। संविधान के अनुच्छेद 361 के मुताबिक उनके खिलाफ कोई आपराधिक कार्रवाई नहीं की जा सकती। अनुच्छेद के अनुसार किसी राज्यपाल पर आपराधिक और नागरिक कानूनों के तहत आरोप नहीं लगाया जा सकता। अब यह निश्चित है कि राज्यपाल आरोप लगने के बाद राज्य में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस इस मुद्दे पर तूफान मचाएगी और इंडिया गठबंधन भी भाजपा को जमकर घेरेगा। नैतिकता का तकाजा तो यही कहता है कि राज्यपाल पद की गरिमा एवं सम्मान को अक्षुण्ण रखने के लिए अपने पद से इस्तीफा दे दें और स्वयं को निर्दोष साबित होने का इंतजार करें। राज्यपाल पद की गरिमा और मर्यादा को बनाए रखने के लिए भी ऐसा जरूरी है। प्रत्येक राज्य में संविधान के संरक्षक राष्ट्रपति के प्रतिनिधि के तौर पर राज्यपालों की नियुक्तियां की जाती हैं। यह पद सजावटी होकर भी विशेषाधिकारों से लैस होता है। वैसे तो राजभवनों में बैठकर राज्यपालों ने ऐसे-ऐसे कुकृत्य किए हैं जो इस पद को शोभा नहीं देते। राज्यपालों का पद खत्म करने पर भी विचार करने पर लम्बी बहस हो चुकी है। समस्या यह है कि सरकारें राज्यपाल को केन्द्र का प्रतिनिधि माने या उनकी अवहेलना करें। राज्यपाल पद की प्रतिष्ठा पर आंच न आए, इसका मार्ग भी लोकतंत्र में तलाशना जरूरी है।

आदित्य नारायण चोपड़ा
Adityachopra@punjabkesari.com

...लोगों के दिलों में दहशत फैलाता है

अफवाहों का बाजार जब भी गर्माता है,
जनसामान्य के जीवन में एक तपिश छोड़ जाता है,
कभी-कभी ये किसी गहरी साज़िश की जड़ों तक पहुंचता है,
और कभी यूं ही लोगों के दिलों में दहशत फैलाता है...!

गीता पाढा

राहुल वायनाड बरकरार रखेंगे या रायबरेली?

ताक-झांक
आर.आर. जैरथ

राजनीतिक हलकों में पहले से ही अटकलें लगाई जा रही हैं कि क्या राहुल गांधी वायनाड सीट बरकरार रखेंगे या रायबरेली, क्या उन्हें दोनों सीटें जीतनी चाहिए, जैसा कि व्यापक रूप से उम्मीद की जा रही है। संभावना अधिक लग रही है कि वह वायनाड को बरकरार रखेंगे। ऐसा लगता है कि उन्हें वायनाड के लोग बहुत पसंद हैं और वे यहां के माहौल में काफी सहज हैं। यदि वह वास्तव में वायनाड चुनते हैं,

तो इस बात की अधिक संभावना है कि जब भी उपचुनाव होगा तो प्रियंका गांधी वाड्रा रायबरेली से चुनाव लड़ेंगी। कांग्रेस के अंदरूनी सूत्रों के मुताबिक, परिवार को भरोसा है कि पार्टी रायबरेली और अमेठी दोनों में जीत हासिल करेगी। उनके सभी आंतरिक सर्वेक्षणों ने संकेत दिया है कि मतदाताओं को राहुल गांधी को हराने का अफसोस है जिन्होंने तीन बार निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया।

पार्टी को लगता है कि भूमिगत सहानुभूति लहर है जो उसे चुनाव में मदद करेगी। यदि राहुल गांधी चुनाव लड़ते तो सर्वेक्षणों से पता चलता कि वह निश्चित विजेता थे। हालांकि, परिवार के वफादार केएल शर्मा को मैदान में उतारकर, गांधी परिवार को उम्मीद है कि वे रायबरेली और अमेठी दोनों के मतदाताओं को एक संदेश भेजेंगे कि उन्होंने उन्हें नहीं छोड़ा है और अन्य निर्वाचन क्षेत्रों में विकास कार्यों में मदद करना जारी रखेंगे।

अखिलेश के लोकसभा चुनाव लड़ने के पीछे क्या गणित है ?

हालांकि जनमत सर्वेक्षणों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मौजूदा चुनावों में भारी बढ़त मिल रही है, लेकिन इंडिया ब्लॉक के नेताओं को लगता है कि भाजपा के लिए जीतना इतना भी तय नहीं हैं। इसी आकलन ने समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव को यूपी के कन्नौज से लोकसभा चुनाव लड़ने के लिए प्रेरित किया है। सपा की आंतरिक चर्चाओं में उनके सलाहकारों ने कहा कि उन्हें लोकसभा सांसद बनना चाहिए ताकि भारत में अगली सरकार बनने की स्थिति में वह एक वरिष्ठ मंत्री पद के लिए दावेदारी कर सकें। हालांकि गैर-भाजपा सरकार की संभावना कम लगती है, लेकिन विपक्षी नेता जमीनी रिपोर्टों से काफी उत्साहित दिख रहा है। इस निर्णय में कि अखिलेश यादव को कन्नौज से अपना नामांकन पत्र दाखिल करना चाहिए, एक नाजुक प्रक्रिया शामिल थी। सपा ने पहले ही घोषणा कर दी थी कि इस सीट से लालू प्रसाद यादव के दामाद तेजप्रताप सिंह यादव उम्मीदवार होंगे।

तेजप्रताप मुलायम सिंह यादव परिवार के गृह जिले मैनपुरी से आते हैं और उनकी शादी लालू यादव की सबसे छोटी बेटी राज लक्ष्मी से हुई है। वह अखिलेश यादव के भतीजे भी हैं। सपा हलकों के मुताबिक, जब अखिलेश यादव और तेजप्रताप ने लालू से इस बारे में विचार-विमर्श किया तो उन्होंने समझदारी का परिचय देते हुए सपा नेतृत्व को ही निर्णय लेने को कहा। तेजप्रताप के किसी अन्य सीट से चुनाव लड़ने की संभावना कम ही दिख रही है। कन्नौज सपा का पारंपरिक गढ़ है। हालांकि पिछली बार पार्टी बीजेपी से सीट हार गई थी।

इस बार प्रत्याशी 'गायब' होने की घटनाएं बढ़ गई हैं

भाजपा प्रत्याशी के निर्विरोध चुने जाने के बाद कांग्रेस प्रत्याशी के गायब हो जाने से सूरत और इंदौर सुर्खियों में हैं। लेकिन ऐसी अन्य सीटें भी हैं जहां विपक्ष के उम्मीदवार गायब हो गए हैं, जिससे भाजपा को वाकओवर मिल गया है। ऐसी ही एक सीट है मध्य प्रदेश की खजुराहो, कांग्रेस ने अपनी समझ के तहत यह सीट भारतीय साझेदार समाजवादी पार्टी के लिए छोड़ दी।

यह जानते हुए कि यह एक हारने वाली सीट है, सपा उम्मीदवार ने यह सुनिश्चित किया कि उसका नामांकन पत्र खारिज कर दिया जाए ताकि उसे चुनाव न लड़ना पड़े और पैसा खर्च न करना पड़े। वह अब भूमिगत हो गए हैं और भाजपा उम्मीदवार की जीत पक्की है। इसी तरह अरुणाचल प्रदेश में जहां लोकसभा चुनाव के साथ-साथ विधानसभा चुनाव भी हो रहे हैं, वहां कांग्रेस प्रतिद्वंद्वियों के दौड़ से हटने के बाद 10 भाजपा उम्मीदवारों को निर्विरोध विजयी घोषित किया गया। यह सचमुच एक अजीब चुनाव साबित हो रहा है।

घाटी की तीन सीटों पर चुनाव से दूर रहेगी भाजपा

संविधान के अनुच्छेद 370 के तहत राज्य की विशेष स्थिति को वापस लेने के बाद जम्मू-कश्मीर में सामान्य स्थिति की वापसी के दावों के बावजूद, भाजपा ने घाटी में तीन मुस्लिम बहुल सीटों पर चुनाव नहीं लड़ने का फैसला किया है। पार्टी लोकसभा के लिए उम्मीदवार उतारकर घाटी में अपनी लोकप्रियता या अलोकप्रियता का परीक्षण करने के लिये अनिच्छुक दिखाई देती है। केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने हाल ही में जम्मू में एक रैली में घोषणा की कि भाजपा को कश्मीर में कमल खिलाने की कोई जल्दी नहीं है।

उन्होंने कहा कि हम कश्मीर में हर दिल जीतना चाहते हैं। पार्टी के आंतरिक आकलन से पता चला है कि कश्मीर के लोग अभी भी अनुच्छेद 370 की वापसी को लेकर गुस्से में हैं। हालांकि वे अब फैसले का विरोध करने के लिए सड़कों पर नहीं हैं, लेकिन उन्होंने अपने गुस्से को अंदर ही अंदर समाहित कर

लिया है और यह चुनाव में भाजपा के प्रतिकूल साबित हो सकता है। भाजपा को लेकर घाटी के लोगों में रोष दिख रहा है।

पार्टी अपने 2019 के फैसले की अलोकप्रियता को उजागर नहीं करना चाहती, जिसने न केवल अनुच्छेद 370 को रद्द कर दिया, बल्कि राज्य को दो भागों में विभाजित कर दिया, जम्मू और कश्मीर राज्य और केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख। वादा किया गया विधानसभा चुनाव अभी तक नहीं हुआ है। गौरतलब है कि बीजेपी को न सिर्फ कश्मीर घाटी के लोगों से बल्कि लद्दाख के लोगों से भी विरोध का सामना करना पड़ रहा है, जिनका मानना है कि मोदी सरकार इस क्षेत्र को अधिक स्वायत्तता देने के अपने वादे पर खरी नहीं उतरी है।

बंगाल : सीपीएम के लिए आसान नहीं राहें

राहिल नोरा चोपड़ा

सीपीएम अब पश्चिम बंगाल में कांग्रेस के सहारे अपना खाता खोलने के लिए पूरी तरह तैयार है। मालदा दक्षिण, मालदा उत्तर, जंगीपुर और मुर्शिदाबाद के चार निर्वाचन क्षेत्र 7 मई को मतदान के लिए तैयार हैं और इन्हें कांग्रेस का गढ़ माना जाता है। पश्चिम बंगाल के मालदा उत्तर निर्वाचन क्षेत्र में कांग्रेस-वाम मोर्चा गठबंधन, बीजेपी और टीएमसी के बीच त्रिकोणीय मुकाबला होगा। एक समय कांग्रेस का गढ़ रहे इस निर्वाचन क्षेत्र में पिछले एक दशक में भाजपा और तृणमूल कांग्रेस का उदय हुआ है। यहां बीजेपी सांसद खगेन मुर्मू को टीएमसी के पूर्व आईपीएस अधिकारी प्रसून बनर्जी के खिलाफ खड़ा किया गया है। कांग्रेस ने मुस्ताक आलम को मैदान में उतारा है। हबीबपुर के पूर्व सीपीएम विधायक मुर्मू 2019 में भाजपा में शामिल हो गए थे।

दूसरी ओर, मालदा दक्षिण सीट पर एक दिलचस्प चुनावी मुकाबला है, जिसमें रेहान जहां तृणमूल कांग्रेस का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, वहीं श्रीरूपा मित्रा चौधरी भाजपा की ओर से किस्मत आजमा रही हैं जबकि कांग्रेस के ईशा खान चौधरी इस सीट को बरकरार रखने के लिए पूरा जोर लगा रहे हैं। चौधरी के पिता अबू हासेम खान चौधरी ने पिछले पांच वर्षों में इस सीट का प्रतिनिधित्व किया है। जहां 2019 में कांग्रेस ने यहां जीत हासिल की थी, वहीं 2021 के विधानसभा चुनाव में तृणमूल ने इस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया था। चूंकि इस निर्वाचन क्षेत्र में अधिकांश मतदाता मुस्लिम हैं, लिहाजा उनके वोटों में विभाजन से भाजपा को कांग्रेस और टीएमसी पर अतिरिक्त बढ़त मिल सकती है। इस बीच, तृणमूल कांग्रेस नेता अभिषेक बनर्जी ने बुधवार को आरोप लगाया कि बंगाल में कांग्रेस नेतृत्व ने राज्य में इंडिया गठबंधन को विफल कर दिया है और उन्होंने पार्टी को मालदा में वोट कटुआ करार दिया, एक ऐसा जिला जहां तृणमूल ने कभी भी लोकसभा चुनाव नहीं जीता है। इसी तरह, मुर्शिदाबाद सीट पर सीपीएम महासचिव मोहम्मद सलीम, तृणमूल के मौजूदा सांसद अबू ताहेर खान और बीजेपी के गौरी शंकर घोष ताल ठोंक रहे हैं।

यहां कांग्रेस ने सीपीएम कैंडिडेट के लिए अपनी पूरी ताकत झोंक दी है और कांग्रेस नेता अधीर चौधरी सीपीएम के लिए प्रचार कर रहे हैं, लेकिन मुर्शिदाबाद में सीपीएम को बीजेपी से कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि यहां बीजेपी हिंदू वोटों को मजबूत करने की कोशिश कर रही है। जंगीपुर सीट पर कांग्रेस-वाम मोर्चा गठबंधन, बीजेपी और टीएमसी में त्रिकोणीय मुकाबला देखने को मिल रहा है। 2019 में यह सीट तृणमूल कांग्रेस प्रत्याशी और स्थानीय व्यवसायी खलीलुर रहमान ने जीती थी। इस बार वह दोबारा चुनाव लड़ रहे हैं। बीजेपी की ओर से धनंजय घोष और कांग्रेस की ओर से मुर्तजा हुसैन दौड़ में हैं।

केरल : भाजपा के खिलाफ सीपीएम का जवाबी अभियान

भाजपा नेता शोभा सुरेंद्रन और केरल प्रदेश कांग्रेस कमेटी (केपीसीसी) के अध्यक्ष के. सुधाकरन के यह आरोप लगाने के बाद कि लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट (एलडीएफ) के संयोजक ई.पी. जयराजन ने भगवा पार्टी में शामिल होने के संबंध में प्रकाश जावड़ेकर के साथ चर्चा की थी, वामपंथी कार्यकर्ताओं ने हैरत जताते हुए अपनी प्रतिक्रियाएं दी थीं।

इस बीच, एक राजनीतिक बिचौलिए टी.जी. नंदकुमार ने दावा किया था कि जावड़ेकर ने भाजपा के लिए त्रिशूर लोकसभा सीट सुरक्षित करने में सीपीआई (एम) की सहायता लेने के उद्देश्य से जयराजन से उनकी उपस्थिति में तिरुवनंतपुरम के एक फ्लैट में मुलाकात की थी। हालाँकि, ई.पी. जयराजन ने प्रस्ताव से इनकार कर दिया और उन्होंने मंगलवार को भाजपा नेता शोभा सुरेंद्रन, केपीसीसी अध्यक्ष के सुधाकरन और बिचौलिए के खिलाफ कानूनी नोटिस भेजा, जिसमें आरोप लगाया गया कि उन्होंने उन्हें और उनकी पार्टी को अपमानित करने की साजिश रचने के बाद गलत प्रचार किया है। इस मामले में राज्य सीपीएम ने जयराजन को क्लीन चिट दे दी है लेकिन अंतिम फैसला सीपीएम सेंट्रल कमेटी लेगी। राज्य सीपीएम ने भी इस मुद्दे पर जवाबी अभियान शुरू करने का फैसला किया है ताकि यह दिखाया जा सके कि पार्टी के नेता उन्हें लुभाने की भाजपा की कोशिशों का कैसे सामना करते हैं।

अफजाल ने बेटी को बनाया विकल्प

गाजीपुर के सांसद अफजाल अंसारी की सीट से चुनाव लड़ने की पात्रता पर अदालत के फैसले की प्रतीक्षा के साथ, अफजाल अंसारी ने पहले ही अपनी बेटी नुसरत अंसारी के अलावा एक बैकअप उम्मीदवार का फैसला कर लिया है और वह गाजीपर सीट से अपना नामांकन भी दाखिल कर सकते हैं। हालांकि नुसरत पहले ही गाजीपुर में चुनाव प्रचार शुरू कर चुकी हैं। मुख्तार अंसारी की मौत के बाद जब सपा प्रमुख अखिलेश यादव उनके परिवार से मिलने गए थे तो नुसरत ने उनसे मुलाकात की थी। उधर, बीजेपी प्रत्याशी पारसनाथ राय की बेटी वंदना राय ने भी पहली बार सांसद का चुनाव लड़ रहे अपने पिता के लिए गाजीपुर में चुनाव प्रचार की कमान संभाल ली है।

अखिलेश की 21 वर्षीय बेटी ने दिखाया दम

समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव की 21 वर्षीय बड़ी बेटी अदिति ने चिलचिलाती धूप में यूपी के मैनपुरी जिले में अपनी मां डिंपल यादव के लिए प्रचार में भागीदारी कर राजनीति में अत्यधिक रुचि दिखाई है। अपनी मां के लिए वोट मांगते हुए अदिति हाई-प्रोफाइल निर्वाचन क्षेत्र में स्थानीय लोगों की छोटी सभाओं को संबोधित कर रही है। अपनी मां के लिए

प्रचार करने के उनके वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं, जहां इंस्टाग्राम पर उनके 405के और 'X' पर 317.1 के फॉलोअर्स हैं।

डिंपल लगातार दूसरी बार मैनपुरी सीट से जीत हासिल करने का प्रयास कर रही है। यह सीट पहले सपा संरक्षक और उनके ससुर मुलायम सिंह यादव के पास थी। उनके खिलाफ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राज्य मंत्री जयवीर सिंह और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के शिव प्रसाद यादव मैदान में हैं। मैनपुरी में 7 मई को मतदान होगा। एक अनुभवी राजनेता की तरह, वह हाथ जोड़कर बुजुर्गों और महिलाओं का अभिवादन करती है जबकि अपनी उम्र के बच्चों और युवाओं की ओर हाथ हिलाती है। उनका स्वागत मालाओं, गुलदस्तों से किया जाता है और बूढ़े लोगों को उनके सिर पर पगड़ी डालते देखा जा सकता है।

मणिपुर में हिंसा : मेइती-कुकी दंपति अलग-अलग रहने को मजबूर

इंफाल/चुराचंद्रपुर (मणिपुर), (भाषा): मणिपुर में पिछले साल मई में जातीय हिंसा भड़कने के बाद कई मेइती-कुकी दंपतियों को अलग-अलग रहना पड़ रहा है। महीने में केवल एक बार मिलना, बच्चों को नहीं देख पाना और भविष्य में रिश्ता टूटने का डर उनकी नियति बन गया है।

जातीय संघर्ष से प्रभावित राज्य में इंफाल घाटी में मेइती बहुतायत में हैं तो कुकी समुदाय के लोग पर्वतीय क्षेत्रों में रह रहे हैं। राज्य में अब भी स्थिति तनावपूर्ण बनी हुई है जहां अंतरजातीय विवाह करने वाले दंपति अब तक इस हिंसा का दंश झेल रहे हैं। तीन मई, 2023 के बाद से हिंसा में अब तक 200 से अधिक लोग मारे जा चुके हैं और हजारों लोग विस्थापित हो गए।

इन दंपतियों की अनेक करुणा भरी कहानियां हैं। एक मां है जो महीने में एक बार अपने बच्चों से मिल पाती है तो एक पिता ने अपनी बेटी के जन्म से अब तक उसे नहीं देखा है। यहां तक कि ऐसे हालात बन गए हैं कि परिवारों पर टूटने का खतरा भी पैदा हो गया है।

जातियों के बीच टकराव के हालात ऐसे हैं कि एक महिला को लगता है कि कहीं उसका पति उसे छोड़ तो नहीं देगा, वहीं एक शादीशुदा जोड़ा सोच रहा है कि उनका भविष्य अब क्या होगा। भविष्य को लेकर इन लोगों के मन में अनिश्चितता बनी हुई है।

कुकी समुदाय से ताल्लुक रखने वाली इरेने हाओकिप शादी के बाद इंफाल में रहने लगीं। 42 वर्षीय हाओकिप को पिछले साल कुकी बहुल चुराचांदपुर में अपने माता-पिता के पास लौटना पड़ा। वहीं, उनके पति और पांच साल का एक बेटा तथा तीन साल की बेटी इंफाल में ही रह रहे हैं।

हाओकिप ने कहा, ''मेरे पति निर्माण मजदूर के रूप में काम करते थे। मेरी उनसे मुलाकात बिष्णुपुर में पड़ोस में एक मकान के निर्माण के दौरान हुई थी। हमें प्यार हो गया। वह मुझसे मिलने अक्सर इलाके में आते थे। हमने 2018 में शादी कर ली और हमारे दो बच्चे हुए।'' बिष्णुपुर मेइती बहुल इंफाल और कुकी बहुल चुराचांदपुर के बीच है। यहां पहले दोनों समुदायों के लोग रहते थे और अब इसे 'बफर जोन' माना जाता है। हाओकिप ने कहा, ''मेरे पति ने पिछले साल मुझे मेरे माता-पिता के पास भेज दिया। उन्हें संघर्ष शुरू होने के बाद घाटी में मेरी सुरक्षा की फिक्र थी। बच्चे उनके साथ हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि मेइती के बच्चे होने की वजह से वे चुराचांदपुर में सुरक्षित नहीं हैं।''

हाओकिप हर महीने पड़ोसी राज्य मिजोरम में अपने पति और बच्चों से मिलने जाती हैं। इसके लिए उन्हें एक तरफ से 15 घंटे सफर करना होता है। उन्होंने बताया, ''वह (पति) वहां बच्चों को भी लेकर आते हैं। कई अन्य दंपति भी ऐसा कर रहे हैं। हम महीने में एक बार मिलते हैं और अपने-अपने घर वापस आ जाते हैं। मेरे बच्चे मेरी कमी महसूस करते हैं लेकिन यह जिंदा रहने और मां की ममता के बीच किसी एक चीज को चुनने जैसा है।''कई स्थानीय लोग बताते हैं कि मणिपुर में मेइती-कुकी विवाह पहले असामान्य नहीं होते थे और इन्हें लेकर कभी कोई सामाजिक समस्या नहीं रही। दोनों समुदाय के लोग आपस में घुल-मिल जाते थे।

समस्या गत वर्ष तीन मई को तब शुरू हुई जब मेइती समुदाय की अनुसूचित जनजाति दर्जे की मांग के खिलाफ पर्वतीय जिलों में 'आदिवासी एकजुटता मार्च' निकाला गया था और हिंसा भड़क गई। कुकी समुदाय के लैशराम सिंह हिंसा शुरू होने के करीब एक महीने बाद ही पिता बने थे लेकिन उन्होंने अब तक अपनी बेटी का चेहरा नहीं देखा है।

जब उन्हें 2022 में अपनी पत्नी के गर्भवती होने का पता चला था तो खुशी से फूले नहीं समाए सिंह ने अपनी बेटी के लिए कई सपने देखे थे। इस दंपति ने जून महीने में अपनी पहली संतान के जन्म से पहले कपड़ों और खिलौनों की खरीदारी की। लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। हिंसा शुरू होने के बाद सिंह कुकी बहुल पहाड़ी क्षेत्र में आ गए और उनकी पत्नी अचनबा, जो मेइती हैं, वहीं रुकी रहीं। अचनबा के माता-पिता की पांच साल पहले मौत हो गई थी और उन्हें पिछले साल मई में इंफाल घाटी में एक राहत शिविर में जाना पड़ा जहां उन्होंने जून में एक बच्ची को जन्म दिया। सिंह ने पिछले 11 महीने से अब तक अपनी बेटी का चेहरा नहीं देखा है।

अचनबा को कभी-कभी डर लगता है कि यह दूरी कहीं उनके रिश्ते को समाप्त नहीं कर दे। उन्होंने कहा, ''ना तो मैं विधवा हूं और ना ही तलाकशुदा। फिर पता नहीं, यह किस तरह का अलगाव है।'' पिछले साल तक महिलाओं के बाजार इमा कीथेल में एक दुकान चलाने वाली कुकी समुदाय की निर्मला अब पहाड़ी क्षेत्र में रहती हैं और उनके पास आजीविका का कोई स्थायी स्रोत नहीं है। उनके पति मेइती हैं और अपने बेटे तथा माता-पिता के साथ इस समुदाय के बाहुल्य वाले इंफाल के सुगनू इलाके में रहते हैं। शुरू में निर्मला के पति पैसे भेजते थे लेकिन अब उन्होंने ऐसा करना बंद कर दिया है। निर्मला को डर लगता है कि कहीं उनके पति उन्हें छोड़ नहीं दें। मेइती समुदाय की पेमा दिंपू और उनके कुकी पति के बीच अक्सर यह चर्चा होती है कि उन्हें किसी और राज्य में जाकर बस जाना चाहिए। पेमा इंफाल में रहती हैं, जबकि उनके पति पहाड़ी क्षेत्र में रहते हैं।

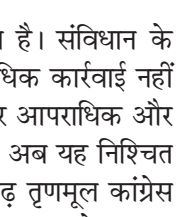

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83
पंजाब केसरी
दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com

स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रैस, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

दैनिक जागरण
संघर्ष के बिना समर्पण कर देना कायरता की निशानी है

अनुकूल मौसम में हों चुनाव

राम नाथ कोविन्द

जब भी मई-जून में चुनाव होंगे, तब मौसम संबंधी समस्याएं रहेंगी। हमारा उद्देश्य ऐसे समय चुनाव कराने का होना चाहिए, जो अधिकतम भागीदारी में सहायक हो

यह आम चुनावों का समय है। अनेक कारणों से यह अत्यंत महत्वपूर्ण अवसर है। भारत सबसे बड़ा लोकतंत्र है और इस बार 96.88 करोड़ नागरिकों के पास मताधिकार है। प्रत्येक वोट, चाहे वह किसी भी उम्मीदवार के लिए हो, लोकतंत्र के पक्ष में भी एक वोट है। पूरे विश्व में, बड़ी संख्या में लोकतांत्रिक देशों में चुनाव हो रहे हैं और उनमें से प्रत्येक का परिणाम विभिन्न वैश्विक घटनाओं को अलग-अलग ढंग से प्रभावित करेगा, लेकिन भारत के चुनाव ही लोकतंत्र को मजबूत बनाने में सबसे अधिक योगदान देंगे। इसलिए यह समय की मांग है कि चुनावों में अधिकतम सहभागिता को यथासंभव सुनिश्चित किया जाए। मतदाताओं तक पहुंचने और दूर-दराज के स्थानों में मतदान की व्यवस्था करने हेतु हरसंभव प्रयास करने के लिए भारत के निर्वाचन आयोग की सराहना की जानी चाहिए। इनमें से कुछ क्षेत्रों तक पहुंचना मुश्किल भी है।

सिविल सोसायटी संगठनों और समाचार माध्यमों ने भी मतदान के अधिकार और कर्तव्य के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए अभियान चलाए हैं। मतदाताओं ने भी उस आह्वान पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है और पहले दो चरणों में उत्साहपूर्वक अपने मताधिकार का प्रयोग किया है। अब तक का रुझान संतोषजनक रहा है, लेकिन जब भी मतदान-प्रतिशत के आंकड़ों पर चर्चा होती है, तब पर्यवेक्षक और विश्लेषक अक्सर एक बड़ी चुनौती के रूप में गर्मी के मौसम की चर्चा करते हैं। यदि गर्मी के बावजूद मतदाता अच्छी संख्या में बाहर आए हैं, तो अनुकूल मौसम में चुनाव होने पर लोकतांत्रिक प्रक्रिया में उनकी भागीदारी कहीं अधिक होती।

वर्तमान परिदृश्य में, मौसम एक अपरिहार्य आयाम है। चुनावों को इस तरह से निर्धारित किया जाना चाहिए कि 17वीं लोकसभा का कार्यकाल समाप्त होने (16 जून) से पहले नतीजे आ जाएं। लाजिस्टिक कारणों और सुरक्षा आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मतदान को कई हफ्तों की अवधि में आयोजित करना होगा। इन दो तथ्यों को देखते हुए इस बार का चुनाव कार्यक्रम अप्रैल में शुरू हुआ और जून में समाप्त होगा। यही समय है जब भारत के अधिकांश हिस्से बढ़ती गर्मी से पीड़ित रहते हैं। यहां यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि भारत के निर्वाचन आयोग ने चुनावों के संचालन का समय निर्धारित करते हुए, मौसम के आयाम को ध्यान में रखा है, लेकिन उसे 16 जून की अंतिम समयसीमा का पालन भी करना पड़ा है।

जैसे ही आइएमडी यानी भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने अप्रैल के दौरान कई जिलों में लू की चेतावनी जारी की, निर्वाचन आयोग ने त्वरित कार्रवाई की। निर्वाचन आयोग ने भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधिकारियों को शामिल करते हुए एक टास्क फोर्स गठित करने का निर्णय लिया। यदि आवश्यकता पड़ी तो यह टास्क फोर्स प्रत्येक चरण के मतदान से पांच दिन पहले लू और आर्द्रता के प्रभाव की समीक्षा करेगी और रक्षात्मक उपायों के लिए कदम उठाएगी। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय को चुनाव संचालन को प्रभावित करने वाली गर्मी की स्थिति का सामना करने हेतु तैयारी करने और सहायता प्रदान करने के लिए राज्यों में स्वास्थ्य अधिकारियों को आवश्यक दिशानिर्देश जारी करने की जिम्मेदारी दी गई है। निर्वाचन आयोग ने राज्य-स्तरीय अधिकारियों को मतदान केंद्रों पर आश्रय-स्थल, पीने के पानी और पंखों की व्यवस्था करने के लिए भी कहा है। मुझे विश्वास है कि ये उपाय मतदाताओं को कुछ हद तक राहत प्रदान करेंगे, फिर भी ये उपाय चुनाव प्रक्रिया के केवल एक पक्ष का समाधान करते हैं।

हम इसकी अनदेखी नहीं कर सकते कि उम्मीदवारों, विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं और कार्यकर्ताओं को बाहर गर्मी और धूल में प्रचार कार्य करना पड़ता है। सार्वजनिक रैलियों में बड़े नेताओं के बेहोश होने की खबरें चौंकाने वाली तो थीं, लेकिन आश्चर्यजनक नहीं। तथाकथित मतदाता-उदासीनता प्रचार अभियान के दौरान ही शुरू हो सकती है। मतदान केंद्रों पर व्यवस्थाओं की सराहना की जानी चाहिए, लेकिन जिन मतदाताओं को ग्रामीण इलाकों में तेज धूप में काफी दूरी तय करनी पड़ सकती है, वे बाहर निकलना पसंद नहीं करेंगे। हमें ध्यान देना चाहिए कि ऐसे परिदृश्य अपवाद नहीं, बल्कि सामान्य हैं। भारत में गर्मी के दौरान मौसम की यह स्थिति तनिक भी असामान्य नहीं है। उत्तरी मैदानी इलाकों, दक्षिणी प्रायद्वीपीय तथा तटीय क्षेत्रों में तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर चला जाता है, यहां तक कि कुछ स्थानों पर यह 45 डिग्री सेल्सियस से भी ऊपर रहता है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि भविष्य में जब भी मई-जून में मतदान होगा, तब भी मौसम संबंधी यही समस्याएं रहेंगी। ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के कारण परिस्थितियां और अधिक कठिन ही हो सकती हैं। इसलिए हमें मतदाताओं, चुनाव प्रचारकों और चुनाव कराने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए चुनाव के उपयुक्त समय पर चर्चा करने की जरूरत है। कहने की जरूरत नहीं है कि लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए भी यह महत्वपूर्ण है।

अब समय आ गया है कि हम आम चुनावों के लिए मौसम के अनुकूल समय-सारणी बनाएं। मैं यहां स्पष्ट कर दूं कि यह विषय एक साथ चुनावों पर मेरी अध्यक्षता में गठित उच्चस्तरीय समिति के संदर्भ की शर्तों का हिस्सा नहीं था। चुनाव समय-सारणी के बारे में मेरा सुझाव उस समिति की सिफारिशों से अलग है। यह सुझाव मेरे द्वारा व्यक्तिगत क्षमता में दिया जा रहा है। मुझे लगता है कि जलवायु संबंधी चिंता इतनी गंभीर है कि इसके लिए एक सुविचारित और सामूहिक पहल की आवश्यकता है। लोकतंत्र के हित में इस समस्या का समाधान करने के लिए सभी हितधारकों को एक साथ आना चाहिए और कोई रास्ता निकालना चाहिए। हमारा उद्देश्य ऐसे मौसम में चुनाव कराना होना चाहिए, जो अधिकतम भागीदारी के लिए अनुकूल हो ताकि लोकतंत्र की व्यवस्था और मजबूत हो सके।

(लेखक पूर्व राष्ट्रपति हैं)

response@jagran.com

अवधेश राजपूत

राहुल गांधी रायबरेली से

एक लंबे समय से इसे लेकर संशय व्याप्त था कि कांग्रेस अपनी परंपरागत सीटों रायबरेली और अमेठी से किसे चुनाव लड़ाएगी। नामांकन के अंतिम दिन उसने यह फैसला किया कि राहुल गांधी रायबरेली से चुनाव लड़ेंगे और अमेठी से गांधी परिवार के विश्वासपात्र किशोरी लाल शर्मा। कांग्रेस अपने इस फैसले को सोची-समझी रणनीति बता रही है, लेकिन आखिर यह कैसी सुविचारित रणनीति है कि एक तो अंतिम समय पर फैसला लिया गया और दूसरे राहुल गांधी की ओर से उस अमेठी का परित्याग कर दिया गया, जहां से वह और उनके पिता राजीव गांधी चुनाव लड़ते रहे हैं। हो सकता है कि राहुल गांधी रायबरेली से जीत जाएं, क्योंकि वहां से सोनिया गांधी लगातार जीतती रही हैं, लेकिन उनके अमेठी छोड़ने से देश भर में कांग्रेस के कार्यकर्ताओं और समर्थकों को तो यही संदेश गया कि वह पिछले चुनाव में स्मृति इरानी से पराजित होने के कारण इस बार उनका सामना करने का साहस नहीं जुटा पाए। भाजपा ने तो यह प्रचारित करना शुरू भी कर दिया है। इससे अच्छा तो यह होता कि राहुल गांधी ऐसा कुछ कहकर रायबरेली से भी चुनाव न लड़ते कि वह वायनाड से जीत के प्रति आश्वस्त हैं और दो सीटों पर चुनाव लड़कर मतदाताओं और साथ ही चुनाव प्रक्रिया पर अनावश्यक बोझ नहीं डालना चाहते। यदि उन्हें दो सीटों पर ही चुनाव लड़ना तो था रायबरेली के बजाय अपनी सीट अमेठी क्यों नहीं?

प्रश्न यह है कि यदि राहुल गांधी वायनाड के साथ रायबरेली से भी जीत गए तो कौन सी सीट खाली करेंगे? आखिर इस जटिल प्रश्न को खड़ा करना सोची-समझी रणनीति कैसे हो सकती है? राहुल गांधी के लिए वायनाड और रायबरेली में से किसी एक का चयन करना आसान नहीं होगा, क्योंकि केरल में दो वर्ष बाद विधानसभा चुनाव होने हैं। यदि वह वायनाड छोड़ते हैं तो केरल की जनता को गलत संदेश जाएगा और यदि रायबरेली छोड़ते हैं तो यह माना जाएगा कि उन्होंने अपनी दादी और मां के निर्वाचन क्षेत्र के स्थान पर वायनाड को अधिक महत्व दिया। राहुल गांधी के लिए रायबरेली छोड़ना इसलिए भी मुश्किल होगा, क्योंकि इससे उत्तर प्रदेश में कांग्रेस को फिर से खड़ा करने की संभावनाएं और कमजोर हो जाएंगी। उन्होंने जिस तरह अमेठी के स्थान पर रायबरेली का चयन किया, उससे सहयोगी दल सपा की चुनावी संभावनाओं पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है, क्योंकि उनके फैसले को लेकर यह भी कहा जा रहा है कि उनमें जोखिम लेने की क्षमता नहीं। राजनीति में खुद को स्थापित करने और अपने कार्यकर्ताओं में जोश भरने के लिए नेताओं को राजनीतिक जोखिम उठाने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। चूंकि राहुल गांधी ऐसा करते नहीं दिखे, इसलिए इस पर आश्चर्य नहीं कि यह सवाल भी उठाया जा रहा है कि क्या वह डरो मत के अपने नारे को भूल गए?

वीआइपी दर्शन

उत्तराखंड सरकार ने इस वर्ष चारधाम यात्रा के शुरुआती 15 दिनों में वीआइपी दर्शन पर रोक लगाने का निर्णय लिया है। यह निश्चित रूप से स्वागत योग्य है। इससे यात्रा पर आने वाले सभी श्रद्धालुओं को दर्शन के समान अवसर मिल सकेंगे। इस वर्ष प्रदेश में चारधाम यात्रा के पंजीकरण को लेकर यात्रियों में काफी उत्साह देखने को मिल रहा है। 15 अप्रैल से अब तक 18.2 लाख यात्री पंजीकरण करा चुके हैं। इससे यही परिलक्षित हो रहा है कि यात्रा इस वर्ष नए प्रतिमान स्थापित करेगी। इसे देखते हुए यात्रा का सुचारु संचालन प्रदेश सरकार के सामने एक बड़ी चुनौती रहेगा। यद्यपि, प्रदेश सरकार ने इसके लिए तैयारियां शुरू कर दी हैं। स्वास्थ्य व परिवहन विभाग की ओर से यात्रियों के लिए गाइडलाइन जारी कर दी गई है। यात्रा में 18 स्थानों पर स्वास्थ्य जांच केंद्र और 50 स्थानों पर स्वास्थ्य केंद्र बनाए जा रहे हैं। इनमें विशेषज्ञ चिकित्सकों की तैनाती की जा रही है। केदारनाथ व बदरीनाथ में चिकित्सालय तैयार किए जा चुके हैं। यात्रा में रात्रि 10 बजे से सुबह चार बजे तक वाहनों का संचालन प्रतिबंधित किया गया है। यात्रा मार्ग पर ड्रोन व सीसी कैमरों से नजर रखी जाएगी। कहा जा सकता है कि सुरक्षित यात्रा के लिए आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं। अब सरकार ने यात्रा के पहले 15 दिनों में वीआइपी दर्शन न कराने का निर्णय लिया है। इसके लिए बाकायदा सभी राज्यों को पत्र लिखकर कहा गया है कि शुरुआती 15 दिन, विशेषकर केदारनाथ में वाइआइपी दर्शनों को जितना हो सके टाला जाए। इससे सबसे बड़ा फायदा उन श्रद्धालुओं को होगा, जो कई दिनों की यात्रा कर इन धामों तक पहुंचते हैं और दर्शनों के लिए लंबी कतार में खड़े होते हैं।

वीआइपी दर्शन की व्यवस्था वैसे भी उचित नहीं है। सरकार ने चारधाम यात्रा के शुरुआती दिनों में इस व्यवस्था पर रोक लगाकर अच्छा संदेश दिया है

लोकतंत्र की शुचिता के सामने सवाल

केसी त्यागी

न केवल दागी उम्मीदवार चुनाव मैदान में उतर रहे हैं, बल्कि धनबल का इस्तेमाल भी बढ़ रहा है

दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत आम चुनाव के दौर से गुजर रहा है। विश्वसनीय चुनाव किसी भी राज्यव्यवस्था के लोकतांत्रिक माने जाने के लिए एक आवश्यक शर्त हैं। चुनाव प्रक्रिया की शुचिता बनाए रखने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जिसमें राजनीति में धन और आपराधिक तत्वों के प्रभाव को दूर करना एवं राजनीतिक दलों के कामकाज में पारदर्शिता सुनिश्चित करना शामिल है। हमारी जीवंत लोकतांत्रिक प्रक्रिया की सतह के नीचे कुछ चिंताएं भी छिपी हैं-जैसे बढ़ता अपराधीकरण, धनबल का उपयोग और चुनावी कदाचार। भारतीय लोकतंत्र के सामने सबसे गंभीर मुद्दों में से एक राजनीति और अपराध के बीच बढ़ती साठगांठ है। पिछले कुछ वर्षों में आपराधिक पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारों की संख्या में वृद्धि हुई है। एक गैर-सरकारी संगठन एसोसिएशन फार डेमोक्रेटिक रिफार्म्स (एडीआर) द्वारा चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों की प्रोफाइल के विश्लेषण से पता चलता है कि 2009 में उनके खिलाफ लंबित मामले कुल उम्मीदवारों के 15 प्रतिशत थे, जो 2014 में 17 प्रतिशत और 2019 में बढ़कर 19 प्रतिशत हो गए। चुनाव जीतने में सफल रहे आपराधिक पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारों का अनुपात और भी गंभीर तस्वीर पेश करता है। 2009 में विजयी उम्मीदवारों में से 30 प्रतिशत ऐसे थे, जिन्होंने अपने खिलाफ आपराधिक मामले घोषित किए थे। 2014 में विजयी उम्मीदवारों में से 34 प्रतिशत और 2019 में 43 प्रतिशत के खिलाफ आपराधिक मामले थे। इनमें से बड़ी संख्या में उम्मीदवार हत्या, दुष्कर्म और भ्रष्टाचार जैसे गंभीर आपराधिक आरोपों का सामना कर रहे थे। एडीआर के अनुसार, 2019 में चुने गए 29 प्रतिशत सांसदों पर गंभीर आपराधिक आरोप थे, जबकि 2014 में यह आंकड़ा 24 प्रतिशत था। इस बार भी बड़ी संख्या में दागी प्रत्याशी चुनाव मैदान में उतर रहे हैं। पहले चरण में उनका प्रतिशत 16 था, दूसरे में 21 और तीसरे में 18 प्रतिशत।

संसद में दागी जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति न केवल लोकतंत्र की छवि को धूमिल करती है, बल्कि उनके द्वारा प्रदान किए जाने वाले शासन पर भी सवाल उठाती है। यह स्थिति कानून के शासन को कमजोर करती है और राजनीतिक व्यवस्था में जनता के विश्वास को खत्म करती है। हालांकि लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा आठ दोषी नेताओं पर प्रतिबंध लगाती है, लेकिन मुकदमे का सामना करने वाले नेता चुनाव लड़ने के लिए स्वतंत्र हैं, भले ही उनके खिलाफ आरोप कितने भी गंभीर क्यों न हों। दागी नेताओं को टिकट देने से इन्कार करने की बात तो दूर, सभी पार्टियां अपने द्वारा चुनाव मैदान में उतारे गए दागी नेताओं की संख्या में एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा करती दिखती हैं। इस मुद्दे से निपटने का एक तरीका यह है कि देश में न्यायिक प्रक्रिया में तेजी लाई जाए, ताकि आपराधिक पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारों को चुनाव लड़ने से रोका जा सके।

भारत में चुनावी प्रक्रिया के लिए एक और महत्वपूर्ण चुनौती धनबल का बड़े पैमाने पर उपयोग है। भारत में चुनाव महंगे हो गए हैं और उम्मीदवार अक्सर धन जुटाने के लिए अवैध तरीकों का सहारा लेते हैं। धनबल का प्रयोग न केवल समान अवसर छीन लेता है, बल्कि लोकतंत्र के सिद्धांतों को भी कमजोर करता है। यह धनी उम्मीदवारों को अपने विरोधियों पर अनुचित बढ़त बनाने की सुविधा देता है, जिससे सीमित वित्तीय संसाधनों वाले उम्मीदवारों के लिए प्रभावी ढंग से प्रतिस्पर्धा करना मुश्किल हो जाता है। इसके अलावा चुनावों में काले धन के इस्तेमाल का अर्थव्यवस्था पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। यह भ्रष्टाचार के चक्र को कायम रखता है और अवैध वित्तीय प्रवाह को रोकने के प्रयासों को कमजोर करता है। धन बल के सहारे चुनाव जीते प्रतिनिधि जनता के हितों की तुलना में अपने धनदाताओं के हितों को प्राथमिकता दे सकते हैं। यह चिंताजनक है कि इस बार पहले चरण के मतदान के पूर्व ही मतदाताओं के बीच बांटी जाने वाली शराब, आभूषण, मादक पदार्थ और नकदी पिछले चुनाव के मुकाबले कहीं अधिक मात्रा में बरामद की गई। स्पष्ट है कि चुनाव खत्म होते-होते ऐसी बरामदगी कहीं अधिक होगी। हालांकि उम्मीदवारों के खर्च की एक सीमा तय की गई है, लेकिन पार्टी के खर्च की कोई सीमा नहीं है। बड़ी पार्टियां आमतौर पर प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र में उम्मीदवारों की सीमा से अधिक पैसा खर्च करती हैं। इसे रोकने के लिए चुनाव खर्च पर मौजूदा कानूनों को और अधिक प्रभावी बनाया जाना चाहिए। राजनीतिक दलों द्वारा किए गए खर्चों पर एक सीमा होनी चाहिए। जो उम्मीदवार निर्धारित समय के भीतर चुनाव खर्च दर्ज करने में विफल रहे, उसे दंडित किया जाए और यदि वह चुनाव जीत गया हो तो उसे शपथ लेने से रोक दिया जाए।

अपराधीकरण और धनबल के अलावा, चुनावी कदाचार भी चुनाव प्रक्रिया के लिए एक खतरा है। चुनावी कदाचार के विभिन्न रूप हैं, जैसे बूथ पर कब्जा करना, मतदाताओं को डराना और वोट खरीदना। मतदाताओं की जागरूकता के अभाव में भी ये तौर-तरीके देश के कई हिस्सों में प्रचलित हैं। चुनावी कदाचार और अन्य कदाचारों से निपटने के लिए कई मोर्चों पर ठोस प्रयासों की जरूरत है। चुनावों को नियंत्रित करने वाले कानूनी ढांचे को मजबूत करने और राजनीतिक दलों एवं उम्मीदवारों की जवाबदेही बढ़ाने वाले चुनाव सुधारों की तत्काल जरूरत है। चुनावी कदाचार का पता लगाने और उसे रोकने के लिए अधिक मजबूत तंत्र बनाने के साथ ही लोगों को जागरूक करना होगा। नागरिकों को उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में बताने के साथ ही उन्हें लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे मतदान प्रतिशत बढ़ाने में भी सहायता मिलेगी।

(लेखक जदयू के महासचिव एवं पूर्व सांसद हैं)

response@jagran.com

मतदाताओं को होना होगा जागरूक। फाइल

https://t.me/AllNewsPaperPaid

ऊर्जा

कर्मफल

यह जगत कर्म प्रधान है। हम अच्छे-बुरे जैसे भी कर्म करते हैं, उसका फल अंततः हमें ही भोगना पड़ता है। अच्छे कर्म, शुभ कर्म, पुण्यकर्म से हमें सुख प्राप्त होता है और बुरे कर्म, अशुभ कर्म, पापकर्म से दुख मिलता है। इसका अर्थ यह हुआ कि कर्म ही हमारे सुख और दुख का कारण हैं। सुख और दुख हमारे कर्मों का परिणाम एवं प्रतिफल हैं। ब्रह्मांड में ऐसी कोई शक्ति नहीं, जो हमें हमारे पुण्यकर्मों के सुफल से वंचित कर सके। उसी प्रकार यदि हमने बुरे कर्म किए हैं तो वे हमारा पीछा करते रहेंगे और उन कर्मों के परिणामों को भोगना हमारी नियति होगी। जैसे दीवार पर फेंकी गई गेंद लौटकर फेंकने वाले की ओर आती है, उसी प्रकार हमारे द्वारा किए गए कर्म हमारी ओर लौट आते हैं। वस्तुतः, कर्म प्रतिक्रियाशील हैं।

हम किसी भी प्रकार का कर्म करते समय भले ही अकेले रहे हों, किंतु सर्वव्यापी परमात्मा की उपस्थिति वहां भी होती है। हमारे भीतर परमात्मा का अंश यानी हमारा आत्मा भी उस कर्म का साक्षी होता है। यही कारण है कि हम बुरे कर्म करते समय दुनिया की दृष्टि में भले ही अच्छे बने रहें, पर हमारे भीतर से अंतरात्मा की आवाज हमें आईना दिखाती रहती है। भला उससे हम कोई चीज कैसे छिपा सकते हैं? हमारे आत्मा के पास हमारे प्रत्येक कर्म का लेखाजोखा है। कर्मों की दिशा ही हमारे जीवन की दिशा निर्धारित करती है।

हमारे कुछ कर्मों का फल तो तत्काल मिल जाता है, लेकिन कुछ कर्मों का फल वर्षों बाद भविष्य में या फिर अगले जीवन में प्राप्त होता है, किंतु मिलता अवश्य है। बीज बोते ही वह वृक्ष तो नहीं बन जाता। उसे बीज से वृक्ष बनने में समय लगता है। हमारा हर कर्म वास्तव में बीज है, जो एक न एक दिन अंकुरित होता हुआ, विकसित होता हुआ वृक्ष के रूप में आकार लेगा और उस वृक्ष में सुख और दुख के फल लगे होंगे, जिनका भोग हमें ही करना होगा। इसे ही कर्मभोग कहते हैं।

नीता देवी

चुनाव आयोग की सराहनीय पहल

डा. मोनिका शर्मा

बुजुर्गों और दिव्यांगों के लिए चुनाव आयोग इस बार घर पर ही प्रदान कर रहा है मतदान की सुविधा

विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की चुनावी प्रकिया की तैयारियां भी बहुत बड़े स्तर पर होती हैं। 18वीं लोकसभा के लिए सात चरणों में पूरी होने वाली वोटिंग में भी चुनाव आयोग ने कई मोर्चों पर सराहनीय कदम उठाए हैं। मतदान प्रतिशत बढ़ाने से प्रयासों के साथ ही मतदाताओं की सुविधा का पूरा ध्यान रखने के भी पूरे प्रयास किए गए हैं। विशेष रूप से वयोवृद्ध मतदाताओं के लिए निर्वाचन आयोग द्वारा दी गई होम वोटिंग की सुविधा एक आवश्यक पहल है। इसके चलते शारीरिक रूप से असमर्थ और बुजुर्ग मतदाताओं को अपने मताधिकार का प्रयोग करने में कोई बाधा नहीं आ रही है। निर्वाचन आयोग की इस अभिनव पहल का ही परिणाम है कि उम्रदराज लोग भी बिना परेशानी के देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था में अपनी सहभागिता निभा पा रहे हैं।

ध्यातव्य है कि भारत निर्वाचन आयोग की ओर से लोकसभा चुनाव में पहली बार 85 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के बुजुर्गों और दिव्यांगों के लिए होम वोटिंग की सुविधा प्रदान की गई है। इस प्रक्रिया में मतदान कर्मचारियों-अधिकारियों द्वारा घर-घर जाकर बुजुर्ग व दिव्यांग मतदाताओं से बैलेट पेपर के माध्यम से वोट डलवाने की सुविधा दी गई है। निर्वाचन आयोग द्वारा मतदान प्रतिशत में बढ़ोतरी करने और वयोवृद्ध एवं दिव्यांगों की समस्या को देखते हुए होम वोटिंग की सुविधा शुरू की गई है।

देखा जाए तो होम वोटिंग एक सकारात्मक व मानवीय पहल है। शारीरिक रूप से कमजोर एवं वृद्धावस्था के कारण चलने-फिरने में भी सक्षम नहीं होने से कितने ही उम्रदराज मतदाता वोट नहीं डाल पाते हैं। होम वोटिंग की सुविधा से न केवल उम्रदराज और दिव्यांग नागरिकों को वोट डालने में सहजता होगी, बल्कि मतदान प्रतिशत भी बढ़ सकता है।

देश के विषम भौगोलिक परिस्थितियों वाले प्रदेशों और चरम मौसमी हालातों के बीच विशेष श्रेणी के लोगों को घर बैठे वोट देने की सुविधा मिलना बहुत सी परेशानियों से राहत देने वाली है। ज्ञात हो कि आम चुनाव 2024 में लगभग 96.8 करोड़ मतदाताओं को देश की सरकार चुनने का मौका मिल रहा है। इनमें बड़ी संख्या वयोवृद्ध वोटर्स की भी है। देश की यह पीढ़ी पूरे उत्साह से मतदान में भागीदारी निभाने का मानस रखती है। यही वजह है कि उम्र के इस पड़ाव पर बुजुर्ग नागरिकों के लिए अपने मौलिक अधिकार का प्रयोग करने की इस सुविधा को आमजन द्वारा भी सराहा जा रहा है। मतदान केंद्र तक पहुंचने में आने वाली बहुत सी कठिनाइयों से बचाने के लिए निर्वाचन आयोग द्वारा बुजुर्गों को प्रदान की जाने वाली होम वोटिंग से मिली सुगमता एक प्रभावी और प्रशंसनीय नवाचार है।

(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

मेलबाक्स

अमेरिका को सही जवाब

'अमेरिका को खरी-खरी' शीर्षक से प्रकाशित संपादकीय में उचित ही लिखा गया है कि पश्चिमी देश अनावश्यक रूप से भारत जैसे देशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने की मंशा रखते हैं। भारत को लेकर बुनियादी समझ के अभाव में उस पर अनर्गल टिप्पणियां करते रहते हैं। कभी वे मानवाधिकारों का मुद्दा उठाते हैं तो कभी संस्थानों की भूमिका को लेकर सवाल उठाते हैं। इस प्रकार के प्रकरणों से यही अनुभूति होती है कि अमेरिका और अन्य पश्चिमी देश एक प्रकार के श्रेष्ठताबोध से भरे हुए हुए हैं जो यह मानते हैं कि कथित सभ्यता और आधुनिकतावाद का दायरा उन्हीं तक सिमटा हुआ है और वही दुनिया के अन्य हिस्सों को उपदेश देने का अधिकार रखते हैं। यह स्थिति तब है जब हाल के दिनों में अमेरिका के कई शिक्षण संस्थान हिंसा, अराजकता और विरोध-प्रदर्शनों के केंद्र बने हुए हैं। बहुत ज्यादा दिन नहीं हुए जब अमेरिका में 'ब्लैक लाइव्स मैटर' यानी 'अश्वेतों का जीवन भी महत्वपूर्ण है' जैसी मुहिम चलानी पड़ी थी। वास्तविकता यही है कि कोई भी देश पूर्णता में सर्वश्रेष्ठ नहीं है और इस कारण उसे दूसरों को हीन समझने की मानसिकता से बाज आना चाहिए।

रवि वार्ष्णेय, बुलंदशहर

राहुल गांधी से हमदर्दी

पाकिस्तान को राहुल गांधी से बहुत हमदर्दी है? उसे भारत में न तो मोदी जैसा प्रधानमंत्री पसंद है, न यहां की स्थायी और मजबूत सरकार। मोदी के रहते उसे कभी सर्जिकल स्ट्राइक झेलनी पड़ती है और कभी एयर स्ट्राइक। कांग्रेस के समय में तो वह आतंकवादी हमले करके साफ निकल जाता था। कश्मीर में पत्थरबाजी उसका नित्य का काम था। कांग्रेस सरकार की गलत नीतियों और लापरवाही के फलस्वरूप पाकिस्तान से आ रहे नकली नोटों की खेप पर कभी प्रभावी रोक नहीं लग पाई, जिसके कारण पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था नकली भारतीय नोटों के कारण फलती-फूलती रही और उसके दम पर वह भारत में आतंकवाद को पोषित करता रहा। प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी के आने से नोटबंदी हुई। पाक में नकली भारतीय नोटों का जखीरा रद्दी का ढेर बन गया। उसकी अर्थव्यवस्था बदहाली का शिकार हो गई। पाकिस्तान राहुल गांधी के भारत विरोधी वक्तव्यों का उपयोग भारत को बदनाम करने के लिए भी करता है। पाकिस्तान के कुछ नेता चाहते हैं कि भारत में राहुल गांधी जीतें, क्योंकि उनकी सरकार होने पर वे भारत में अपनी आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा दे सकेंगे। हालांकि भारत के मतदाता पाकिस्तान की इच्छा को पूरा नहीं होने देंगे।

धर्मेंद्र नाथ रस्तोगी, गाजियाबाद

आरक्षण के लिए कौन है खतरा

कौन खतरा बन रहा है आरक्षण के लिए- शीर्षक आलेख में बृज लाल ने आरक्षण को लेकर मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस को बेनकाब कर दिया है। साल 1961 से लेकर 2024 तक तथ्यों को सामने रखकर बृज लाल ने सही लिखा है कि आरक्षण के मामले में यह देखने की आवश्यकता है कि किस दल की सरकार ने उसके लिए क्या किया? निस्संदेह इससे दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा। पीएम नरेन्द्र मोदी ने इस संबंध में कांग्रेस को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि जो पार्टी अपने संविधान की पवित्रता को नहीं मानती है, वह पार्टी देश के संविधान को कैसे मानेगी। कांग्रेस पार्टी के संविधान को नष्ट करने का काम इस परिवार ने किया है। कांग्रेस ने संविधान की मर्यादाओं को तोड़ा है। इन्होंने संविधान के साथ हमेशा खिलवाड़ किया है। देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को लोकतंत्र का चेहरा कहा जाता था। संसद में बैठने के बाद उन्होंने सबसे पहला जो संशोधन किया था, वह फ्रीडम आफ स्पीच को प्रतिबंधित करने का काम किया था। बहुत ही अनुभवी लोग और भारत को जानने वाले लोगों ने बैठकर संविधान को बनाया है। संविधान को एक सामाजिक दस्तावेज भी कहा जाता है। देश आगे चले, संविधान में इसकी पूरी व्यवस्था भी है।

युगल किशोर राही, ग्रेटर नोएडा

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।
****

हिन्दुस्तान
1936
सत्य • सार्थक • सदैव

वैक्सीन की चिंता

जब कोरोना वैक्सीन को लेकर शिकायतों और चर्चा का माहौल गरम है, तब पूरी सतर्कता के साथ विचार करने की जरूरत है। एस्ट्राजेनेका कंपनी ने जब से यह माना है कि उसके द्वारा निर्मित वैक्सीन कोविशील्ड की वजह से विरल मामलों में कुछ लोगों को नुकसान की आशंका है, तब से पूरा टीकाकरण अभियान ही सवालों के घेरे में है। लोग तरह-तरह के कयास लगा रहे हैं और अपने-अपने नुकसान का आकलन भी कर रहे हैं। ब्रिटेन में एस्ट्राजेनेका को अनेक मुकदमों का सामना करना पड़ रहा है और सजा के तौर पर उसे बड़े पैमाने पर मुआवजा चुकाने की भी जरूरत पड़ सकती है। खैर, मुकदमे और मुआवजे अपनी जगह हैं, पर लोगों में मन में जो शंकाएं घर कर गई हैं, उन पर सावधानी से सोचने की जरूरत है। लगभग सभी चिकित्सकों का यही मानना है कि टीका लेने के बाद चालीस दिन में साइड इफेक्ट सामने आ जाते हैं, पर जब टीका लगे दो साल से ज्यादा समय बीत चुका है, तब साइड इफेक्ट की चर्चा का बहुत महत्व नहीं है।

वैसे, साइड इफेक्ट को साबित करने का काम आसान नहीं है। हमने यह देखा है कि महामारी ने उन लोगों को ज्यादा परेशान किया था, जिन्हें पहले से कोई बीमारी थी। ऐसे लोगों को टीका लेते समय भी सावधान रहने के लिए कहा गया था, उम्र या वर्ग के हिसाब से धीरे-धीरे लोगों को टीके दिए गए थे। टीका देते समय और उसके ठीक बाद तात्कालिक रूप से लोगों की निगरानी भी की गई थी। अतः भारत में साइड इफेक्ट की शिकायत अगर सामने आई है, तो उसका पूरी तरह से वैज्ञानिक अध्ययन होना चाहिए। फिलहाल यह मुद्दा चुनाव में भी गरम है, पर यह आगामी केंद्र सरकार के लिए एक गंभीर विषय होना चाहिए। चिकित्सकों की संस्था को गोपनीयता बरतते हुए वैक्सीन के दुष्प्रभावों का अध्ययन करना चाहिए। भारत में किसी बड़ी दवा कंपनी के खिलाफ खुले रूप में जांच करना असहज स्थिति पैदा कर सकता है। दरअसल, यह शिकायत आम लोगों का विषय नहीं, स्वास्थ्य विशेषज्ञों का विषय है। आम लोगों की शंकाओं को भी तभी दूर किया जा सकता है, जब शिकायतों का विशेषज्ञता के साथ अध्ययन किया जाए। यह अच्छी बात है कि एस्ट्राजेनेका-ऑक्सफोर्ड कोविड-19 वैक्सीन के संभावित दुर्लभ दुष्प्रभावों की रिपोर्ट के बीच 'कोवैक्सिन' विकसित करने वाले संस्थान भारत बायोटेक ने बयान में कहा है कि कोवैक्सीन का पूरी तरह से परीक्षण किया गया था। कोविशील्ड और कोवैक्सीन का ही भारत में सर्वाधिक उपयोग हुआ था। मतलब, फिलहाल कोविशील्ड लेने वाले चिंता में हैं, जबकि कोवैक्सीन लेने वाले थोड़े आश्वस्त हैं।

कोरोना वैक्सीन संबंधी आम लोगों की आशंकाओं को तभी दूर किया जा सकता है, जब पूरी शिकायत का विशेषज्ञता के साथ अध्ययन किया जाए।

वास्तव में, एस्ट्राजेनेका को विशेष तौर पर लोगों की शंकाओं को दूर करना चाहिए। उसकी वजह से कई देशों में करोड़ों लोग शंकाग्रस्त हैं। भारत सरकार को भी ब्रिटेन में चल रहे मुकदमों पर नजर रखनी चाहिए। अगर एस्ट्राजेनेका की गलती सामने आती है, तो भारत को भी अपने हिसाब से इस कंपनी से निपटना होगा। यह एक ऐसा मामला है, जो हमें अपने स्वाथ्य के प्रति सजग बनाता है। किसी भी दवा को लेने की स्थिति में दुष्प्रभावों को लेकर हमें सजग होना चाहिए। पश्चिम में लोग अपनी शारीरिक या स्वास्थ्य पैमानों को लेकर जागरूक हैं, तभी वे दवा कंपनियों या अस्पतालों को गलती होने पर कठघरे में खड़ा कर पाते हैं। लोगों को सजग होना चाहिए, ताकि चिकित्सा सेवा की गुणवत्ता को पूरी तरह से सुनिश्चित किया जा सके।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले

4 मई, 1949

बड़ौदा का विलय

बड़ौदा रियासत की गणना भारत की प्रमुख रियासतों में होती रही है। दूसरी रियासतों की तुलना में वह प्रगतिशील रियासत थी। उसके आर्थिक साधन भी इतने थे कि वह अपना स्वतंत्र अस्तित्व रख सकती थी। आज से कुछ महीने पहले कोई भी यह कल्पना नहीं कर सकता था कि बड़ौदा का पृथक अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। किन्तु आज से करीब दो महीने पहले जब सरदार पटेल ने बड़ौदा की यात्रा की थी, तो लोगों ने आश्चर्य के साथ सुना कि बड़ौदा रियासत बम्बई प्रान्त में मिलने जा रही है। सरदार पटेल भारत का नया नक्शा तैयार कर रहे हैं। उस नक्शे में बड़ौदा रियासत के लिए कोई अलग स्थान नहीं था। अतः उन्होंने महाराजा को यह सलाह दी कि वह बड़ौदा को बम्बई प्रान्त में मिला दें। इसके कुछ ही दिनों बाद अधिकृत तौर पर यह घोषित कर दिया गया कि महाराजा ने सरदार पटेल की सलाह के अनुसार बड़ौदा को बम्बई में मिलाना स्वीकार कर लिया है। इस प्रकार बड़ौदा को बम्बई में विलय करने का निर्णय दो मास पूर्व ही हो गया था, किन्तु वास्तव में विलय अब इस महीने की १ तारीख को हुआ है। यह बीच का समय विलीनीकरण के लिए आवश्यक तैयारियां करने के लिए आवश्यक था।

बड़ौदा रियासत का विलय भारत के आधुनिक इतिहास की बड़ी घटना है। इस कदम को उठाने के लिए असाधारण साहस की आवश्यकता थी। केवल सरदार पटेल की इच्छामात्र से यह संभव नहीं हो सकता था। सरदार को मालूम था कि बड़ौदा की प्रजा भी वही चाहती है जो वह खुद चाहते हैं। अतः उनका आत्म-विश्वास दुगुना हो गया था। आखिर बड़ौदा रियासत के लोगों और समीपस्थ बम्बई प्रान्त के लोगों में अन्तर ही कहां है? दोनों की भाषा तथा रहन-सहन एक है और दोनों सामाजिक संबंधों में जकड़े हुए हैं। ऐतिहासिक संयोगों ने उनको भिन्न शासन व्यवस्थाओं के अधीन रख दिया था। भौगोलिक दृष्टि से बड़ौदा रियासत इस तरह बम्बई प्रान्त के इलाकों के साथ गुंथी हुई है कि शासन की यह विभिन्नता बड़ी कष्टदायक थी। यदि इस प्रश्न पर कभी जनमत भी लिया जाता तो यही नतीजा आता कि बड़ौदा रियासत के लोग बम्बई प्रान्त के साथ मिलना चाहते हैं।

लोकसभा चुनाव में अल्पसंख्यकों की चर्चा अक्सर हो रही है। एक संवेदनशील मुद्दा आरक्षण का है, जिस पर विचार बंटे हुए हैं। 25 मई, 1949 को संविधान सभा में भी मुस्लिम आरक्षण के मुद्दे पर विचार बंटे हुए थे और जो चिंताएं सामने आई थीं, उनमें से अनेक आज भी जीवंत हैं।

आमने-सामने

मुस्लिमों को आरक्षण जरूर मिलना चाहिए

यहां स्कैन करें

मुहम्मद इस्माइल साहिब | संविधान सभा सदस्य

- मुसलमान, समूचा संप्रदाय, आरक्षण छोड़ने के पक्ष में नहीं है।
- हम सामंजस्य ही चाहते हैं, भौतिक एकता या कठोर समन्वय नहीं।
- बहुसंख्यक जाति की अप्रसन्नता या आलोचना सहना कोई खेल नहीं।

मैं तो यही चाहता हूं कि अल्पसंख्यकों तथा उनके लिए आरक्षण के प्रश्न पर पुनर्विचार किया जाए, जिसमें पृथक निर्वाचक मंडलों का प्रश्न भी शामिल है, जो इस प्रश्न का अत्यंत महत्वपूर्ण तथा स्वाभाविक भाग है।...

श्रीमान, मेरा दावा है और मैं निश्चितरूपेण कहता हूं कि मुसलमान, समूचा संप्रदाय, आरक्षण छोड़ने के पक्ष में नहीं है। इतना ही नहीं, वे इस सभा से प्रार्थना करते हैं कि पृथक निर्वाचक मंडलों को रखा जाए, क्योंकि इसी से उन्हें विधानसभाओं में उचित प्रतिनिधित्व मिल सकता है। मुस्लिम लीग ने, जो अब भी मुस्लिम संप्रदाय की प्रतिनिधि संस्था है, इसी वर्ष एकाधिक बार आरक्षण के पक्ष में निश्चित विचार प्रकट किए हैं...। अब यदि बहुसंख्यक जाति या शासनारूढ़ दल इन संरक्षणों को हटाना चाहता है, तो यह दूसरी बात है, किंतु मेरा निवेदन है कि अल्पसंख्यकों के कंधों पर इन संरक्षणों को हटाने का उत्तरदायित्व डालना उचित नहीं है।...

जब हम कहते हैं कि एक हिंदू है और दूसरा मुसलमान है, तो कोई इस बात से इनकार नहीं कर सकता है। दोनों में अंतर है, किंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि वे एक-दूसरे का गला काटने के लिए दौड़ पड़ें। इस अंतर को ठीक करना है और वह ठीक हो सकता है। हम सामंजस्य ही चाहते हैं, भौतिक एकता या कठोर समन्वय नहीं। हम नहीं चाहते कि किसी देश की जनसंख्या में एक ही धर्म के उपासक हों। ...सामंजस्य तभी संभव है, जब सभी वर्ग संतुष्ट हों, खुश हों। यदि वे देखें कि उन्हें उनके अधिकार मिल रहे हैं, उन्हें तंग नहीं किया जा रहा, उनकी सुनी जाती है तथा उनके साथ मनुष्यों सा व्यवहार होता है, तो शांति स्वयं हो जाएगी।...

यूरोप के देशों में अल्पसंख्यकों के लिए विशेष व्यवस्था की गई है, पोलैंड, यूगोस्लेविया, बुलगारिया, अलबानिया, यूनान, तुर्की आदि देश में ऐसा किया गया है। ...अलबानिया में, उस छोटे से देश में, केवल 10 लाख जनसंख्या वाले देश में, ...उन्होंने अल्पसंख्यकों के लिए पृथक निर्वाचन मंडल पद्धति को स्वीकार कर लिया है। वहां भी उन्हें आशंका नहीं है कि पृथक निर्वाचक मंडल से देश और भी छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट जाएगा।...हमारे देश में जो स्थितियां हैं, पृथक निर्वाचक मंडलों से ही अल्पसंख्यकों को संतोष हो सकता है और इसी से वे अन्य जातियों के साथ समानता का पद प्राप्त कर सकते हैं। ...पहले तो हमारा देश ब्रिटिश शासन के अधीन था। यह कहा जाता है और स्वतंत्र रूप से कहा जाता है कि पृथक निर्वाचक मंडलों की पद्धति का अंग्रेजों ने लोगों में फूट डालने और उन पर अपना साम्राज्य अटल बनाने के लिए ही आविष्कार किया था, किंतु इस समय विदेशी यहां नहीं हैं। अब हम स्वतंत्र राष्ट्र हैं, लोगों को ...अधिकार मिले, तभी यह संभव है कि उन लोगों के सच्चे प्रतिनिधि जाकर सरकार के समक्ष या विधानमंडल में या बहुसंख्यक संप्रदाय के समक्ष अपने विचार प्रकट कर सकें।...

अल्पसंख्यक संप्रदाय के लिए सदा बहुसंख्यक जाति की अप्रसन्नता या आलोचना सहना कोई खेल नहीं है। वे भी उतनी ही शांति से रहना चाहते हैं, जितना कि जनता का कोई वर्ग चाहता है, किंतु फिर वे इस आरक्षण पद्धति पर और पृथक निर्वाचक मंडलों की पद्धति पर तथा स्थानों के आरक्षण पर क्यों हठ ठानते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि केवल इसी प्रकार वे अन्य लोगों के पास जा सकते हैं...।

मैं इस मामले पर कोई विवाद नहीं उठाना चाहता। मैं तो शांतिप्रिय व्यक्ति हूं और सदा शांति और समन्वय के लिए ही प्रयत्नशील रहा हूं। ...इस विषय में मैं अपने संप्रदाय के गुणों का ही प्रतिबिंब हूं। मेरा संप्रदाय देश में शांति और समृद्धि चाहता है; वह देश में समन्वय चाहता है। ...अपनी शिकायतें पेश करने का मूलाधिकार मिलना चाहिए, जिससे कि वे इस देश के सुख, शक्ति और सम्मान के लिए अपना अधिकतम अंशदान कर सकें...।

(संविधान सभा में दिए गए उद्‌बोधन से)

अगर मिला आरक्षण तो बढ़ जाएंगी दूरियां

यहां स्कैन करें

बेगम ऐजाज रसूल | संविधान सभा सदस्य

- आरक्षण एक आत्मघाती शस्त्र है, जो बहुसंख्यकों से दूर कर देता है।
- मुस्लिम अपने आपको बहुसंख्यक संप्रदाय की सद्‌भावना पर छोड़ दें।
- निश्चिंत रहिए, कोई राजनीतिक दल मुस्लिमों की उपेक्षा नहीं कर पाएगा।

माननीय सरदार पटेल ने अल्पसंख्यक संप्रदायों के प्रतिनिधित्व के विषय में जो प्रस्ताव पेश किया है, मैं उसका हृदय से समर्थन करने के लिए आई हूं। श्रीमान, मुझे खेद है कि मुझे मद्रास के मुहम्मद इस्माइल के संशोधन का विरोध करना पड़ता है। उनके संशोधन का सारांश यह है कि पृथक निर्वाचक मंडलों को रहने दिया जाए। जहां तक मेरा संबंध है, मैं आरंभ से ही यह समझती हूं कि ...पृथक निर्वाचक मंडलों का कोई स्थान नहीं है। अतः संयुक्त निर्वाचक मंडलों के सिद्धांत को स्वीकार करने के पश्चात अल्पसंख्यकों के लिए स्थान रक्षण मुझे व्यर्थ और अर्थहीन दिखता है। जो अभ्यर्थी हिंदुओं और मुस्लिमों के संयुक्त मतों से चुना जाए, वह सम्भवतः केवल मुसलमानों के ही दृष्टिकोण को पेश नहीं कर सकता और इसलिए यह स्थान रक्षण सर्वथा तथ्यहीन है। मेरे विचार में आरक्षण एक आत्मघाती शस्त्र है, जो सदा के लिए अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यकों से दूर कर देता है। यह अल्पसंख्यकों को कोई अवसर ही नहीं देता कि वे बहुसंख्यकों की सद्‌भावना प्राप्त कर सकें। इससे पार्थक्य और संप्रदायवाद की भावना बनी रहती है, जिसे एक ही बार सदा के लिए मिटा देना चाहिए। यह रक्षण केवल दस वर्षों के लिए था और मेरे विचार में हमारे देश के जीवन में ये दस वर्ष सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं और संप्रदायों में मेल कराने के लिए प्रत्येक प्रयास किया जाना चाहिए।

यही एक आधार है, जिस पर कि मैं माननीय सरदार पटेल के प्रस्ताव का समर्थन करती हूं। मेरे समर्थन करने का दूसरा कारण यह है कि अभी तक भारत के संप्रदायों में अलगाव की भावना पाई जाती है। यह मिट जानी चाहिए। मेरा ख्याल है कि यह अल्पसंख्यकों के हित में है कि वे बहुसंख्यक जाति में विलीन होने का प्रयत्न करें। इससे अल्पसंख्यकों को हानि नहीं होने वाली है। मैं उन्हें यह विश्वास दिला देती हूं, क्योंकि आगे चलकर यह उन्हीं के हित में है कि वे बहुसंख्यकों की सद्‌भावना प्राप्त करें। मेरे विचार में यह आवश्यक है कि इस देश में रहने वाले मुस्लिम अपने आपको पूर्ण रूप से बहुसंख्यक संप्रदाय की सद्‌भावना पर छोड़ दें, अलगाव की भावनाओं को त्याग दें और सच्चा लौकिक राज्य बनाने में अपना पूरा बल लगा दें।

श्रीमान, मैं पिछले दो वर्षों की घटनाओं के इतिहास को नहीं लूंगी। वह बहुत दुःखद इतिहास है और कोई इस बात से इनकार नहीं करेगा कि जो कुछ घटनाएं हुई हैं, उनमें इस देश के रहने वाले मुसलमानों को सबसे अधिक दुःख उठाना पड़ा है। केवल उनके जीवन और संपत्ति ही जोखिम में नहीं रहे हैं और असुरक्षित नहीं रहे हैं, बल्कि उनका सम्मान ही जोखिम में पड़ गया और उनकी वफादारी पर ही संदेह किया जाने लगा। इससे उन्हें बहुत निराशा और मानसिक चिंता रही है। हम भूत को भुला देना चाहते हैं और हम यह चाहते हैं कि एक नया अध्याय आरंभ करना चाहिए, जिससे इस देश में रहने वाले समस्त सम्प्रदाय सुख और सुरक्षापूर्वक रह सकें। मुस्लिमों के दिमाग में कुछ आशंका है कि स्थान आरक्षण हट जाने के बाद वे अपनी जनसंख्या के अनुपात से विधान मंडलों में स्थान प्राप्त नहीं कर सकेंगे। मेरे विचार में यह आशंका निर्मूल है, क्योंकि मेरे विचार में जब हम बहुसंख्यक संप्रदाय के सम्मान पर सब कुछ छोड़ देते हैं, तो वे अपनी साख और सम्मान बनाए रखने के लिए अल्पसंख्यक संप्रदाय के सदस्यों को केवल उनकी जनसंख्या के आधार पर ही नहीं, वरन शायद अधिक संख्या में चुनेंगे। मैं कल्पना नहीं कर सकती कि भविष्य में कोई राजनीतिक दल मुसलमानों की अवहेलना करके अपने प्रत्याशी खड़े कर सकता है। मुसलमान इस देश की जनसंख्या के एक बहुत बड़े अंग हैं। मैं नहीं समझती कि कोई राजनीतिक दल उनकी उपेक्षा कर सकता है...। हम अपने आरक्षणों का त्याग कर दें और बहुसंख्यकों को यह दिखा दें कि हमें उनमें पूरा विश्वास है।

(संविधान सभा में दिए गए उद्‌बोधन से)

इस चुनाव नहीं गूंज रहे मतदाताओं को छूने वाले नारे

यहां स्कैन करें

विवेक शुक्ला | वरिष्ठ पत्रकार

लोकसभा चुनाव के दो चरण संपन्न हो चुके हैं, पर अभी तक कोई खास नारा फिजां में नहीं गूज रहा। नारों के बिना चुनाव बिना छौंक की दाल जैसे लगते हैं, इसलिए नारे होंगे, तो चुनाव का लुत्फ भी बढ़ेगा। पहले इन नारों को पढ़ लीजिए- *जात पर न पात पर, इंदिरा जी की बात पर, मोहर लगेगी हाथ पर; सबको देखा बारी-बारी, अबकी बारी अटल बिहारी; कांग्रेस लाओ, गरीबी हटाओ; इंडिया शाइनिंग; अबकी बार, मोदी सरकार।* एक दौर में ये सभी नारे देश के स्तर पर पसंद किए गए थे। कुछ नारे चुनावों के समय नहीं उछाले गए, पर उनका राष्ट्रीय महत्व रहा। जैसे, *आराम हराम है; जय जवान, जय किसान; जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान; मेक इन इंडिया; सबका साथ, सबका विकास।* जम्हूरियत की जान होते हैं नारे। ये माहौल बनाते हैं। इनसे मतदाता खास दल के साथ जुड़ते हैं।

कभी-कभी ये बहुत तीखे होने लगते हैं। इससे चुनावी माहौल स्वस्थ नहीं रह पाता। ऐसा ही एक नारा था- *तिलक, तराजू और तलवार, इनको मारो जूते चार।* इससे माहौल काफी विषाक्त हुआ था। अलबत्ता, बहुजन समाज पार्टी के दो नारे एक वक्त खासे लोकप्रिय हुए थे- *हाथी नहीं गणेश हैं, ब्रह्मा, विष्णु, महेश हैं* और दोनों बड़े राष्ट्रीय दलों के लिए *एक नागनाथ, दूसरा सांपनाथ।* अगर 1960 के दशक के पन्ने पलटें, तो गोरक्षा आंदोलन को तेज करते हुए जनसंघ ने नारा दिया था, *गौ हमारी माता है, देश-धरम का नाता है।* जनसंघ के नेतागण कांग्रेस सरकार बदलने के लिए अपने भाषणों में खूब तीखी शैली का प्रयोग करते थे। उनकी काट के लिए कांग्रेसियों ने नारा दिया था, *दीपक बुझ गया तेल नहीं, सरकार बदलना खेल नहीं।*

भारतीय जनता पार्टी के पूर्व अवतार जनसंघ ने एक बार नारा दिया था, *हर हाथ को काम, हर खेत को पानी, हर घर में दीपक, जनसंघ की निशानी।* सन् 1971 के चुनाव में इंदिरा गांधी ने *कांग्रेस लाओ, गरीबी हटाओ* का नारा दिया था। यह नारा जब आया, तब देश समाजवादी मूल्यों को लेकर समर्पित था। इस नारे ने कांग्रेस को फायदा दिलाया, पर अगले लोकसभा चुनाव में जयप्रकाश नारायण ने इसकी हवा निकालते हुए नारा दिया, *इंदिरा हटाओ, देश बचाओ।* 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद *जब तक सूरज-चांद रहेगा, इंदिरा जी तेरा नाम रहेगा* जैसे नारे ने पूरे देश में सहानुभूति लहर पैदा कर दी थी और कांग्रेस को विराट जीत हासिल हुई। इसी तरह, 1991 के चुनाव में राजीव गांधी की हत्या के बाद *राजीव तेरा ये बलिदान, याद करेगा हिन्दुस्तान* खूब गूंजा और इसका साफ असर वोटिंग पर देखा गया।

जम्हूरियत की जान होते हैं नारे। ये माहौल बनाते हैं। इनसे मतदाता किसी खास दल के साथ जुड़ते हैं। हालांकि, कुछ नारे चुनावों के समय नहीं उछाले गए, लेकिन उनका राष्ट्रीय महत्व रहा।

आपातकाल के बाद आम चुनावों में नारों का खासा जोर रहा। इस दौरान *सन सतहत्तर की ललकार, दिल्ली में जनता सरकार; संपूर्ण क्रांति का नारा है, भावी इतिहास हमारा है; फांसी का फंदा टूटेगा, जॉर्ज हमारा छूटेगा* जैसे नारे खूब चले। तब राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की ये कालजयी पंक्तियां जयप्रकाश नारायण की क्रांति का नारा बनी थीं- *संपूर्ण क्रांति अब नारा है, भावी इतिहास तुम्हारा है।* अरविंद केजरीवाल की पार्टी बेशक आम आदमी पर अपना कॉपीराइट समझती है, मगर इस पार्टी के पैदा होने से पहले ही कांग्रेस ने यह नारा दिया था- *कांग्रेस का हाथ, आम आदमी के साथ; आम आदमी के बढ़ते कदम, हर कदम पर भारत बुलंद।* भाजपा का एक नारा *मजबूत नेता, निर्णायक सरकार* भी सिर चढ़कर बोल चुका है। कुछ नारे दलों की सरहद को लांघ जाते हैं। तमाम विश्वविद्यालयों के छात्र *साथियो साथ दो* नारा खूब लगाते रहे हैं। *जो हमसे टकराएगा, चूर-चूर हो जाएगा* तो सर्वप्रिय नारा है।

नारे सिर्फ भारत में नहीं उछलते। अमेरिका में भी इनका समृद्ध इतिहास रहा है। डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार हैरी ट्रूमैन जब 1948 में राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ रहे थे, तब उनका नारा था- *द बक स्टॉप्स हेयर* (जिम्मेदारी यहीं खत्म होती है)। रिचर्ड निक्सन (रिपब्लिकन पार्टी) के 1972 के चुनावी नारे *नाउ, मोर दैन एवर* (अब पहले से कहीं ज्यादा) ने भी खासी धूम मचाई थी। पिछले राष्ट्रपति चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी के प्रत्याशी डोनाल्ड ट्रंप का नारा था, *मेक अमेरिका ग्रेट अगेन* (फिर बनाना होगा अमेरिका को महान)। ट्रंप के खिलाफ 2016 के राष्ट्रपति चुनाव में डेमोक्रेटिक प्रत्याशी हिलेरी क्लिंटन के पक्ष में समर्थक नारे लगा रहे थे *हिलेरी फॉर अमेरिका* (अमेरिका के लिए हिलेरी) और *फॉरवर्ड टुगेदर* (मिलकर आगे बढ़ें), हालांकि ये नारे उन्हें व्हाइट हाउस नहीं ले जा सके।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

पागलपन का कुआं

एक राज्य में बहुत ताकतवर जादूगर था। किसी बात से खफा होकर वह पूरे राज्य को नष्ट कर देना चाहता था। एक रात राजधानी के सभी सामुदायिक कुओं में उसने ऐसी औषधि डाल दी कि जो कोई भी उनका पानी पिए, वही बौरा जाए। अगली सुबह राजधानी के सारे लोग पगला गए, क्योंकि पीने के पानी का एकमात्र स्रोत वे कुएं ही थे। सिर्फ राजा और उसका परिवार ही बच सका, क्योंकि उनका कुआं महल के भीतर था और उसका पानी सिर्फ राज परिवार के लिए आरक्षित था। जादूगर की उस कुएं तक पहुंच नहीं बन पाई थी।

राजा के आगे भारी समस्या खड़ी हो गई। सार्वजनिक स्वास्थ्य और सुरक्षा से संबंधित एक के बाद एक निर्देश उसने जारी किए, ताकि लोगों को नियंत्रित किया जा सके, मगर सुरक्षा तंत्र के लोग भी दूषित पानी का शिकार हो चुके थे। पुलिस वालों ने सोचा, राजा के आदेश बेतुके हैं और उन्होंने उन पर ध्यान देना बंद कर दिया। जब राजधानी के निवासियों को राजाज्ञा के बारे में पता चला, तो उन्हें यकीन हो गया कि राजा पगला गया है और वे बड़ी संख्या में राजमहल के आगे इकट्ठा हो राजा से गद्‌दी छोड़ने की मांग करने लगे।

आहत राजा ने गद्‌दी त्यागने का फैसला कर लिया। वह सिंहासन छोड़ने ही वाला था कि रानी ने कहा, 'क्यों न हम भी किसी सामुदायिक कुएं का पानी पिएं? तब हम भी इन सबके जैसे हो जाएंगे।' राजा-रानी ने भी दूषित कुएं का पानी पी लिया और वे भी बेतुकी बातें करने लगे। प्रजा को फौरन पश्चाताप होने लगा कि राजा जब इतनी बुद्धिमत्ता प्रदर्शित कर ही रहा था, तो उसे शासन जारी रखने की अनुमति उन्होंने क्यों नहीं दी?

पाउलो कोएल्हो

एंटोनियो गुटेरस | संयुक्त राष्ट्र महासचिव

गाजा में सामूहिक कब्रों की खबर चिंताजनक है। निष्पक्ष जांचकर्ताओं को उन तक पहुंचने की अनुमति तत्काल दी जानी चाहिए। दुनिया को अंतरराष्ट्रीय कानूनों के किसी भी उल्लंघन के लिए जवाबदेही तय करने का अधिकार है।

अनुलोम-विलोम

भारतीय संविधान

संविधान हर एक नागरिक की ताकत

अगर कोई आपको पकड़कर कहे कि चलो, तुम्हें अमुक नेता को खून देना है, तो आप उसे किस अधिकार से मना कीजिएगा? यही नहीं, अगर कोई अधिकारी कह दे कि आपकी किडनी निकालकर अमुक मरीज को लगा दी जाए, तो आपके पास ऐसी कौन सी ताकत है, जो यह करने से रोक सकती है। ऐसे तमाम आदेशों के खिलाफ जानते हैं आपकी ताकत क्या है? वह है, देश का संविधान। इसमें लिखी हमारे अधिकारों और कर्तव्यों की वे लाइनें, जो ऐसा हर काम करने से रोकती हैं। हमारे संविधान ने हमें दैहिक स्वतंत्रता दी है, इसलिए कोई भी, कभी भी खड़ा होकर हमारी नसों से खून नहीं निकलवा सकता, हमारी किडनी नहीं छीन सकता, हमारी गाड़ी नहीं उठवा सकता, हमारे भोजन को सीमित नहीं कर सकता, हमारे मनोरंजन पर पहरे नहीं बैठा सकता।

लोग संविधान को केवल आरक्षण जैसे विषय पर लाकर खत्म कर देते हैं। आरक्षण तो एक मामूली हिस्सा है, असली बात तो यह है कि हमारा संविधान हमें हमारे ढंग से जीने की आजादी देता है। अगर यह नहीं होगा, तो कोई भी ताकतवर आपको पकड़कर आपका खून चूस लेगा और कोई अधिकार न होने पर आप सिर्फ खून देंगे और रोएंगे। लिहाजा जरूरी है संविधान, इसीलिए बात हो रही है कि इसे बचा लो! आपको हमेशा लगता होगा कि आप बड़े ताकतवर हैं। आपको संविधान की जरूरत ही क्या है? संविधान हमारी जिंदगी में क्या ही रोल निभाता है? यह तो दलितों और अल्पसंख्यकों के लिए है। मगर जब कभी आप कमजोर पड़ते हैं, किसी डॉक्टर के आगे, वकील के आगे, पुलिस के आगे, अधिकारी के आगे, दबंग के आगे, तब यही संविधान है, जो आपकी ताकत बनता है। यह सिर्फ कुछ पन्नों की किताब नहीं, इसकी अहमियत समझिए। इसीलिए जब कहा जा रहा है कि इसे बचाना है, तो इस बात को गंभीरता से लीजिए। संविधान नहीं रहेगा, तो सिर्फ आरक्षण नहीं जाएगा, बल्कि बहुत कुछ जाएगा और नया क्या आएगा, आपको और हमें नहीं पता? इन संविधान के न होने पर पता नहीं यह फरमान भी जारी हो जाए कि हर दवा का पहला परीक्षण प्रत्येक परिवार के एक सदस्य पर होगा और आप देखते ही देखते चूहों की जगह ले लेंगे। संविधान है, इसलिए यह मनमानी तो नहीं हो सकती है।

लिहाजा, देश के संविधान का सम्मान कीजिए। इसके प्रति संवेदनशील बनिए। जब कोई कहे कि इसे हटा दिया जाएगा, बदल दिया जाएगा, तो सतर्क हो जाइए। यही उस नागरिक का धर्म है, जिसे संविधान ने एक मामूली इंसान से नागरिक बनाया है।

हफीज किदवई, टिप्पणीकार

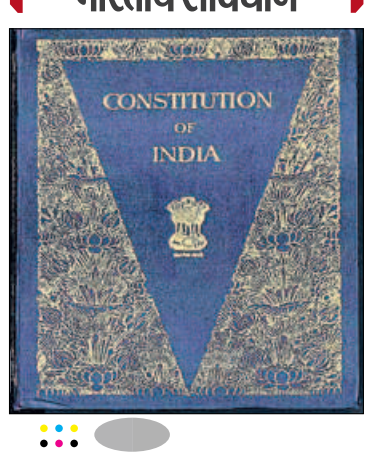

संशोधन का मौजूदा विमर्श गलत नहीं

संविधान संशोधन का तात्पर्य संविधान में किसी प्रावधान को जोड़ने, बदलने या निरस्त करने की प्रक्रिया से है। संविधान संशोधन का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि यह सदैव एक जीवंत दस्तावेज बना रहे, ताकि अपने मौलिक सिद्धांतों और मूल्यों को बनाए रखते हुए बदलती परिस्थितियों को अपनाने में सक्षम हो। विश्व के किसी भी संविधान में परिवर्तन या संशोधन की प्रक्रिया को अपनाया जाना प्रगति का सूचक माना जाता है। किसी भी देश का संविधान कितनी ही सावधानी से क्यों न लिखा गया हो, किंतु मनुष्य की कल्पना शक्ति की सीमा होती है। भविष्य के हालात की कल्पना संविधान के निर्माण-काल में नहीं की जा सकती थी। अतः बदलती परिस्थितियों के कारण इसमें संशोधन वांछनीय हो जाता है।

आज जो लोग यह हल्ला कर रहे हैं कि सरकार संविधान बदल देगी, वे यह तथ्य बड़ी चालाकी से छिपा रहे हैं कि अब तक संविधान में सैकड़ों बार संशोधन हो चुका है। इतना ही नहीं, आपातकाल के दौरान तो संविधान का मूल चरित्र ही बदल दिया गया था। यहां तक कि इसकी प्रस्तावना में भी, जिसे बाबा साहब आंबेडकर ने संविधान की आत्मा कहा है, बदलाव कर दिया गया। उल्लेखनीय यह भी है कि देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि 'हालांकि, हम इस संविधान को इतना ठोस और स्थायी बनाना चाहते हैं, जितना कि हम बना सकते हैं, फिर भी संविधान में कोई स्थायित्व नहीं है।... यदि आप इसे अपरिवर्तनशील और स्थायी बना देंगे, तो राष्ट्र की प्रगति को रोक देंगे।'

आज संविधान में बदलाव का विरोध वही लोग और दल कर रहे हैं, जो राष्ट्र की प्रगति को रोकना चाहते हैं। वे जीवंत और संगठित राष्ट्र की परिकल्पना के विरोधी हैं। सोचिए, संविधान में संशोधन नहीं होता, तो पिछड़ों को अपना अधिकार मिल पाता? दलितों को उनका हक मिलता? या, महिलाओं को उचित सम्मान मिलता? संविधान में संशोधन नहीं होता, तो जम्मू-कश्मीर को अपना हक नहीं मिलता, मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक जैसी अमानवीय प्रथा से मुक्ति नहीं मिलती या महिला आरक्षण की राह सुनिश्चित नहीं होती। संविधान का अर्थ है, सबके लिए समान विधान, यानी सबके लिए समान नियम और कानून। संविधान बदलने का डर वही दिखा रहे हैं, जो भारत में हर जाति और मजहब के लिए अलग विधान चाहते हैं। वे 'पर्सनल' कानून के हिमायती हैं और मजहब को राष्ट्र से ऊपर रखना चाहते हैं, ताकि भारत कभी एक सशक्त राष्ट्र न बन सके। हमें ऐसे लोगों को पहचानकर उनको बेपरदा करना है।

आशा विनय सिंह बैस, टिप्पणीकार

संघर्ष के विना समर्पण कर देना कायरता की निशानी है

राहुल गांधी रायबरेली से

एक लंबे समय से इसे लेकर संशय व्याप्त था कि कांग्रेस अपनी परंपरागत सीटों रायबरेली और अमेठी से किसे चुनाव लड़ाएगी। नामांकन के अंतिम दिन उसने यह फैसला किया कि राहुल गांधी रायबरेली से चुनाव लड़ेंगे और अमेठी से गांधी परिवार के विश्वासपात्र किशोरी लाल शर्मा। कांग्रेस अपने इस फैसले को सोची-समझी रणनीति बता रही है, लेकिन आखिर यह कैसी सुविचारित रणनीति है कि एक तो अंतिम समय पर फैसला लिया गया और दूसरे राहुल गांधी की ओर से उस अमेठी का परित्याग कर दिया गया, जहां से वह और उनके पिता राजीव गांधी चुनाव लड़ते रहे हैं। हो सकता है कि राहुल गांधी रायबरेली से जीत जाएं, क्योंकि वहां से सोनिया गांधी लगातार जीतती रही हैं, लेकिन उनके अमेठी छोड़ने से देश भर में कांग्रेस के कार्यकर्ताओं और समर्थकों को तो यही संदेश गया कि वह पिछले चुनाव में स्मृति इरानी से पराजित होने के कारण इस बार उनका सामना करने का साहस नहीं जुटा पाए। भाजपा ने तो यह प्रचारित करना शुरू भी कर दिया है। इससे अच्छा तो यह होता कि राहुल गांधी ऐसा कुछ कहकर रायबरेली से भी चुनाव न लड़ते कि वह वायनाड से जीत के प्रति आश्वस्त हैं और दो सीटों पर चुनाव लड़कर मतदाताओं और साथ ही चुनाव प्रक्रिया पर अनावश्यक बोझ नहीं डालना चाहते। यदि उन्हें दो सीटों पर ही चुनाव लड़ना था तो रायबरेली के बजाय अपनी सीट अमेठी क्यों नहीं? प्रश्न यह है कि यदि राहुल गांधी वायनाड के साथ रायबरेली से भी जीत गए तो कौन सी सीट खाली करेंगे? आखिर इस जटिल प्रश्न को खड़ा करना सोची-समझी रणनीति कैसे हो सकती है? राहुल गांधी के लिए वायनाड और रायबरेली में से किसी एक का चयन करना आसान नहीं होगा, क्योंकि केरल में दो वर्ष बाद विधानसभा चुनाव होने हैं। यदि वह वायनाड छोड़ते हैं तो केरल की जनता को गलत संदेश जाएगा और यदि रायबरेली छोड़ते हैं तो यह माना जाएगा कि उन्होंने अपनी दादी और मां के निर्वाचन क्षेत्र के स्थान पर वायनाड को अधिक महत्व दिया। राहुल गांधी के लिए रायबरेली छोड़ना इसलिए भी मुश्किल होगा, क्योंकि इससे उत्तर प्रदेश में कांग्रेस को फिर से खड़ा करने की संभावनाएं और कमजोर हो जाएंगी। उन्होंने जिस तरह अमेठी के स्थान पर रायबरेली का चयन किया, उससे सहयोगी दल सपा की चुनावी संभावनाओं पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है, क्योंकि उनके फैसले को लेकर यह भी कहा जा रहा है कि उनमें जोखिम लेने की क्षमता नहीं। राजनीति में खुद को स्थापित करने और अपने कार्यकर्ताओं में जोश भरने के लिए नेताओं को राजनीतिक जोखिम उठाने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। चूंकि राहुल गांधी ऐसा करते नहीं दिखे, इसलिए इस पर आश्चर्य नहीं कि यह सवाल भी उठाया जा रहा है कि क्या वह डरो मत के अपने नारे को भूल गए?

बालू के साथ प्रयोग

अगर कोई चाहे तो राज्य सरकार की ओर से बालू के साथ किए गए प्रयोगों पर सुंदर, विस्तृत और रोचक ग्रंथ की रचना कर सकता है। अधिक मेहनत करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। तीन चार-साल के भीतर के सरकारी परिपत्रों और उस आधार पर प्रकाशित समाचारों का अध्ययन करने मात्र से संबंधित ग्रंथ की रचना हो सकती है। इसमें हास्य भी रहेगा। अर्थशास्त्र भी रहेगा। करामात का समावेश भी रहेगा। इससे यह भी पता चलेगा कि बालू से तेल निकालने वाले लोग कितने पिछड़े थे। बेचारे सिर्फ तेल निकाल कर ही रह गए। बालू से कुछ बढ़िया निकालने का हूनर उनके पास होता तो वे आज की तरह आलीशान मकान निकाल सकते थे। विधानसभा और लोकसभा का टिकट निकाल सकते थे। मतलब तेल से अधिक कीमती आइटम निकाल सकते थे। लेकिन, ज्ञान के अभाव में बेचारे सिर्फ तेल निकाल कर रह गए। आजतक कहावत बनकर अपमानित हो रहे हैं। उस समय अधिक मूल्यवान वस्तु निकाल लिए होते तो उनकी पीढ़ियां ठाठ से जीवन बसर करतीं। अधिक से अधिक क्या होता? सजा मिलती। कुछ दिन जेल में रहते। आज भी लोग बालू के कारण जेल जा रहे हैं। कानून बनाने वाले एकाध लोग भी बालू लीला में लिप्त होकर जेल की सैर कर रहे हैं। मगर, इससे किसका स्वास्थ्य खराब हो रहा है। बालू के अवैध कारोबार पर नजर रखने वाली सरकारी एजेंसियां भी कहां पीछे रह रही हैं। सिपाही से लेकर कोतवाल तक बालू के खेल में फंसे हुए हैं। जेल जा रहे हैं। निलंबित हो रहे हैं। फिर भी कोई सरकारी मुलाजिम परहेज नहीं कर रहा है। सरकार का कानून है। कानून के तहत बालू का कारोबार होगा, ताकि आम और खास लोगों को आसानी से बालू मिल सके। सब हो रहा है। बस, एक काम यही नहीं हो रहा है कि आसानी से बालू मिल जाए।

बालू के खेल में सिपाही से लेकर कोतवाल तक फंसे हुए हैं। उन्हें जेल भी हो रही।

कह के रहेंगे — माधव जोशी

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या सुप्रीम कोर्ट का यह कहना सही है कि सात फेरों के बिना हिंदू विवाह मान्य नहीं होगा?

आज का सवाल
क्या अमेठी के बजाय रायबरेली से चुनाव लड़ने का राहुल गांधी का फैसला सही है?

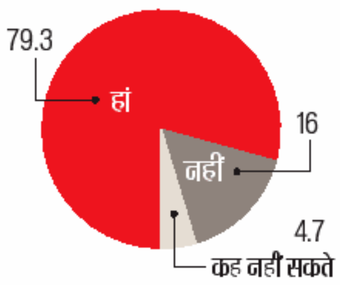

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

अनुकूल मौसम में हों चुनाव

राम नाथ कोविन्द

जब भी मई-जून में चुनाव होंगे, तब मौसम संबंधी समस्याएं रहेंगी। हमारा उद्देश्य ऐसे समय चुनाव कराने का होना चाहिए, जो अधिकतम भागीदारी में सहायक हो

यह आम चुनावों का समय है। अनेक कारणों से यह अत्यंत महत्वपूर्ण अवसर है। भारत सबसे बड़ा लोकतंत्र है और इस बार 96.88 करोड़ नागरिकों के पास मताधिकार है। प्रत्येक वोट, चाहे वह किसी भी उम्मीदवार के लिए हो, लोकतंत्र के पक्ष में भी एक वोट है। पूरे विश्व में, बड़ी संख्या में लोकतांत्रिक देशों में चुनाव हो रहे हैं और उनमें से प्रत्येक का परिणाम विभिन्न वैश्विक घटनाओं को अलग-अलग ढंग से प्रभावित करेगा, लेकिन भारत के चुनाव ही लोकतंत्र को मजबूत बनाने में सबसे अधिक योगदान देंगे। इसलिए यह समय की मांग है कि चुनावों में अधिकतम सहभागिता को यथासंभव सुनिश्चित किया जाए। मतदाताओं तक पहुंचने और दूर-दराज के स्थानों में मतदान की व्यवस्था करने हेतु हरसंभव प्रयास करने के लिए भारत के निर्वाचन आयोग की सराहना की जानी चाहिए। इनमें से कुछ क्षेत्रों तक पहुंचना मुश्किल भी है।

सिविल सोसायटी संगठनों और समाचार माध्यमों ने भी मतदान के अधिकार और कर्तव्य के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए अभियान चलाए हैं। मतदाताओं ने भी उस आह्वान पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है और पहले दो चरणों में उत्साहपूर्वक अपने मताधिकार का प्रयोग किया है। अब तक का रुझान संतोषजनक रहा है, लेकिन जब भी मतदान-प्रतिशत के आंकड़ों पर चर्चा होती है, तब पर्यवेक्षक और विश्लेषक अक्सर एक बड़ी चुनौती के रूप में गर्मी के मौसम की चर्चा करते हैं। यदि गर्मी के बावजूद मतदाता अच्छी संख्या में बाहर आए हैं, तो अनुकूल मौसम में चुनाव होने पर लोकतांत्रिक प्रक्रिया में उनकी भागीदारी कहीं अधिक होती।

वर्तमान परिदृश्य में, मौसम एक अपरिहार्य आयाम है। चुनावों को इस तरह से निर्धारित किया जाना चाहिए कि 17वीं लोकसभा का कार्यकाल समाप्त होने (16 जून) से पहले नतीजे आ जाएं। लाजिस्टिक कारणों और सुरक्षा आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मतदान को कई हफ्तों की अवधि में आयोजित करना होगा। इन दो तथ्यों को देखते हुए इस बार का चुनाव कार्यक्रम अप्रैल में शुरू हुआ और जून में समाप्त होगा। यही समय है जब भारत के अधिकांश हिस्से बढ़ती गर्मी से पीड़ित रहते हैं। यहां यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि भारत के निर्वाचन आयोग ने चुनावों के संचालन का समय निर्धारित करते हुए, मौसम के आयाम को ध्यान में रखा है, लेकिन उसे 16 जून की अंतिम समयसीमा का पालन भी करना पड़ा है।

जैसे ही आइएमडी यानी भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने अप्रैल के दौरान कई जिलों में लू की चेतावनी जारी की, निर्वाचन आयोग ने त्वरित कार्रवाई की। निर्वाचन आयोग ने भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधिकारियों को शामिल करते हुए एक टास्क फोर्स गठित करने का निर्णय लिया। यदि आवश्यकता पड़ी तो यह टास्क फोर्स प्रत्येक चरण के मतदान से पांच दिन पहले लू और आर्द्रता के प्रभाव की समीक्षा करेगी और रक्षात्मक उपायों के लिए कदम उठाएगी। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय को चुनाव संचालन को प्रभावित करने वाली गर्मी की स्थिति का सामना करने हेतु तैयारी करने और सहायता प्रदान करने के लिए राज्यों में स्वास्थ्य अधिकारियों को आवश्यक दिशानिर्देश जारी करने की जिम्मेदारी दी गई है। निर्वाचन आयोग ने राज्य-स्तरीय अधिकारियों को मतदान केंद्रों पर आश्रय-स्थल, पीने के पानी और पंखों की व्यवस्था करने के लिए भी कहा है। मुझे विश्वास है कि ये उपाय मतदाताओं को कुछ हद तक राहत प्रदान करेंगे, फिर भी ये उपाय चुनाव प्रक्रिया के केवल एक पक्ष का समाधान करते हैं।

अवधेश राजपूत

हम इसकी अनदेखी नहीं कर सकते कि उम्मीदवारों, विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं और कार्यकर्ताओं को बाहर गर्मी और धूल में प्रचार कार्य करना पड़ता है। सार्वजनिक रैलियों में बड़े नेताओं के बेहोश होने की खबरें चौंकाने वाली तो थीं, लेकिन आश्चर्यजनक नहीं। तथाकथित मतदाता-उदासीनता प्रचार अभियान के दौरान ही शुरू हो सकती है। मतदान केंद्रों पर व्यवस्थाओं की सराहना की जानी चाहिए, लेकिन जिन मतदाताओं को ग्रामीण इलाकों में तेज धूप में काफी दूरी तय करनी पड़ सकती है, वे बाहर निकलना पसंद नहीं करेंगे। हमें ध्यान देना चाहिए कि ऐसे परिदृश्य अपवाद नहीं, बल्कि सामान्य हैं। भारत में गर्मी के दौरान मौसम की यह स्थिति तनिक भी असामान्य नहीं है। उत्तरी मैदानी इलाकों, दक्षिणी प्रायद्वीपीय तथा तटीय क्षेत्रों में तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर चला जाता है, यहां तक कि कुछ स्थानों पर यह 45 डिग्री सेल्सियस से भी ऊपर रहता है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि भविष्य में जब भी मई-जून में मतदान होगा, तब भी मौसम संबंधी यही समस्याएं रहेंगी। ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के कारण परिस्थितियां और अधिक कठिन ही हो सकती हैं। इसलिए हमें मतदाताओं, चुनाव प्रचारकों और चुनाव कराने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए चुनाव के उपयुक्त समय पर चर्चा करने की जरूरत है। कहने की जरूरत नहीं है कि लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए भी यह महत्वपूर्ण है।

अब समय आ गया है कि हम आम चुनावों के लिए मौसम के अनुकूल समय-सारणी बनाएं। मैं यहां स्पष्ट कर दूं कि यह विषय एक साथ चुनावों पर मेरी अध्यक्षता में गठित उच्चस्तरीय समिति के संदर्भ की शर्तों का हिस्सा नहीं था। चुनाव समय-सारणी के बारे में मेरा सुझाव उस समिति की सिफारिशों से अलग है। यह सुझाव मेरे द्वारा व्यक्तिगत क्षमता में दिया जा रहा है। मुझे लगता है कि जलवायु संबंधी चिंता इतनी गंभीर है कि इसके लिए एक सुविचारित और सामूहिक पहल की आवश्यकता है। लोकतंत्र के हित में इस समस्या का समाधान करने के लिए सभी हितधारकों को एक साथ आना चाहिए और कोई रास्ता निकालना चाहिए। हमारा उद्देश्य ऐसे मौसम में चुनाव कराना होना चाहिए, जो अधिकतम भागीदारी के लिए अनुकूल हो ताकि लोकतंत्र की व्यवस्था और मजबूत हो सके।

(लेखक पूर्व राष्ट्रपति हैं)

response@jagran.com

लोकतंत्र की शुचिता के सामने सवाल

दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत आम चुनाव के दौर से गुजर रहा है। विश्वसनीय चुनाव किसी भी राज्यव्यवस्था के लोकतांत्रिक माने जाने के लिए एक आवश्यक शर्त हैं। चुनाव प्रक्रिया की शुचिता बनाए रखने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जिसमें राजनीति में धन और आपराधिक तत्वों के प्रभाव को दूर करना एवं राजनीतिक दलों के कामकाज में पारदर्शिता सुनिश्चित करना शामिल है। हमारी जीवंत लोकतांत्रिक प्रक्रिया की सतह के नीचे कुछ चिंताएं भी छिपी हैं-जैसे बढ़ता अपराधीकरण, धनबल का उपयोग और चुनावी कदाचार। भारतीय लोकतंत्र के सामने सबसे गंभीर मुद्दों में से एक राजनीति और अपराध के बीच बढ़ती साठगांठ है। पिछले कुछ वर्षों में आपराधिक पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारों की संख्या में वृद्धि हुई है। एक गैर-सरकारी संगठन एसोसिएशन फार डेमोक्रेटिक रिफार्म्स (एडीआर) द्वारा चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों की प्रोफाइल के विश्लेषण से पता चलता है कि 2009 में उनके खिलाफ लंबित मामले कुल उम्मीदवारों के 15 प्रतिशत थे, जो 2014 में 17 प्रतिशत और 2019 में बढ़कर 19 प्रतिशत हो गए। चुनाव जीतने में सफल रहे आपराधिक पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारों का अनुपात और भी गंभीर तस्वीर पेश करता है। 2009 में विजयी उम्मीदवारों में से 30 प्रतिशत ऐसे थे, जिन्होंने अपने खिलाफ आपराधिक मामले घोषित किए थे। 2014 में विजयी उम्मीदवारों में से 34 प्रतिशत और 2019 में 43 प्रतिशत के खिलाफ आपराधिक मामले थे। इनमें से बड़ी संख्या में उम्मीदवार हत्या, दुष्कर्म और भ्रष्टाचार जैसे गंभीर आपराधिक आरोपों का सामना कर रहे थे। एडीआर के अनुसार, 2019 में चुने गए 29 प्रतिशत सांसदों पर गंभीर आपराधिक आरोप थे, जबकि 2014 में यह आंकड़ा 24 प्रतिशत था। इस बार भी बड़ी संख्या में दागी प्रत्याशी चुनाव मैदान में उतर रहे हैं। पहले चरण में उनका प्रतिशत 16 था, दूसरे में 21 और तीसरे में 18 प्रतिशत।

संसद में दागी जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति न केवल लोकतंत्र की छवि को धूमिल करती है, बल्कि उनके द्वारा प्रदान किए जाने वाले शासन पर भी सवाल उठाती है। यह स्थिति कानून के शासन को कमजोर करती है और राजनीतिक व्यवस्था में जनता के विश्वास को खत्म करती है। हालांकि लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा आठ दोषी नेताओं पर प्रतिबंध लगाती है, लेकिन मुकदमे का सामना करने वाले नेता चुनाव लड़ने के लिए स्वतंत्र हैं, भले ही उनके खिलाफ आरोप कितने भी गंभीर क्यों न हों। दागी नेताओं को टिकट देने से इन्कार करने की बात तो दूर, सभी पार्टियां अपने द्वारा चुनाव मैदान में उतारे गए दागी नेताओं की संख्या में एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा करती दिखती हैं। इस मुद्दे से निपटने का एक तरीका यह है कि देश में न्यायिक प्रक्रिया में तेजी लाई जाए, ताकि आपराधिक पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवारों को चुनाव लड़ने से रोका जा सके।

केसी त्यागी

न केवल दागी उम्मीदवार चुनाव मैदान में उतर रहे हैं, बल्कि धनबल का इस्तेमाल भी बढ़ रहा है

मतदाताओं को होना होगा जागरूक ● फाइल

भारत में चुनावी प्रक्रिया के लिए एक और महत्वपूर्ण चुनौती धनबल का बड़े पैमाने पर उपयोग है। भारत में चुनाव महंगे हो गए हैं और उम्मीदवार अक्सर धन जुटाने के लिए अवैध तरीकों का सहारा लेते हैं। धनबल का प्रयोग न केवल समान अवसर छीन लेता है, बल्कि लोकतंत्र के सिद्धांतों को भी कमजोर करता है। यह धनी उम्मीदवारों को अपने विरोधियों पर अनुचित बढ़त बनाने की सुविधा देता है, जिससे सीमित वित्तीय संसाधनों वाले उम्मीदवारों के लिए प्रभावी ढंग से प्रतिस्पर्धा करना मुश्किल हो जाता है। इसके अलावा चुनावों में काले धन के इस्तेमाल का अर्थव्यवस्था पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। यह भ्रष्टाचार के चक्र को कायम रखता है और अवैध वित्तीय प्रवाह को रोकने के प्रयासों को कमजोर करता है। धन बल के सहारे चुनाव जीते प्रतिनिधि जनता के हितों की तुलना में अपने धनदाताओं के हितों को प्राथमिकता दे सकते हैं। यह चिंताजनक है कि इस बार पहले चरण के मतदान के पूर्व ही मतदाताओं के बीच बांटी जाने वाली शराब, आभूषण, मादक पदार्थ और नकदी पिछले चुनाव के मुकाबले कहीं अधिक मात्रा में बरामद की गई। स्पष्ट है कि चुनाव खत्म होते-होते ऐसी बरामदगी कहीं अधिक होगी। हालांकि उम्मीदवारों के खर्च की एक सीमा तय की गई है, लेकिन पार्टी के खर्च की कोई सीमा नहीं है। बड़ी पार्टियां आमतौर पर प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र में उम्मीदवारों की सीमा से अधिक पैसा खर्च करती हैं। इसे रोकने के लिए चुनाव खर्च पर मौजूदा कानूनों को और अधिक प्रभावी बनाया जाना चाहिए। राजनीतिक दलों द्वारा किए गए खर्चों पर एक सीमा होनी चाहिए। जो उम्मीदवार निर्धारित समय के भीतर अपना चुनाव खर्च दर्ज करने में विफल रहे, उसे दंडित किया जाए और यदि वह चुनाव जीत गया हो तो उसे शपथ लेने से रोक दिया जाए।

अपराधीकरण और धनबल के अलावा, चुनावी कदाचार भी चुनाव प्रक्रिया के लिए एक खतरा है। चुनावी कदाचार के विभिन्न रूप हैं, जैसे बूथ पर कब्जा करना, मतदाताओं को डराना और वोट खरीदना। मतदाताओं की जागरूकता के अभाव में भी ये तौर-तरीके देश के कई हिस्सों में प्रचलित हैं। चुनावी कदाचार और अन्य कदाचारों से निपटने के लिए कई मोर्चों पर ठोस प्रयासों की जरूरत है। चुनावों को नियंत्रित करने वाले कानूनी ढांचे को मजबूत करने और राजनीतिक दलों एवं उम्मीदवारों की जवाबदेही बढ़ाने वाले चुनाव सुधारों की तत्काल जरूरत है। चुनावी कदाचार का पता लगाने और उसे रोकने के लिए अधिक मजबूत तंत्र बनाने के साथ ही लोगों को जागरूक करना होगा। नागरिकों को उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में बताने के साथ ही उन्हें लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे मतदान प्रतिशत बढ़ाने में भी सहायता मिलेगी।

(लेखक जदयू के महासचिव एवं पूर्व सांसद हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

कर्मफल

यह जगत कर्म प्रधान है। हम अच्छे-बुरे जैसे भी कर्म करते हैं, उसका फल अंततः हमें ही भोगना पड़ता है। अच्छे कर्म, शुभ कर्म, पुण्यकर्म से हमें सुख प्राप्त होता है और बुरे कर्म, अशुभ कर्म, पापकर्म से दुख मिलता है। इसका अर्थ यह हुआ कि कर्म ही हमारे सुख और दुख का कारण हैं। सुख और दुख हमारे कर्मों का परिणाम एवं प्रतिफल हैं। ब्रह्मांड में ऐसी कोई शक्ति नहीं, जो हमें हमारे पुण्यकर्मों के सुफल से वंचित कर सके। उसी प्रकार यदि हमने बुरे कर्म किए हैं तो वे हमारा पीछा करते रहेंगे और उन कर्मों के परिणामों को भोगना हमारी नियति होगी। जैसे दीवार पर फेंकी गई गेंद लौटकर फेंकने वाले की ओर आती है, उसी प्रकार हमारे द्वारा किए गए कर्म हमारी ओर लौट आते हैं। वस्तुतः, कर्म प्रतिक्रियाशील हैं।

हम किसी भी प्रकार का कर्म करते समय भले ही अकेले रहे हों, किंतु सर्वव्यापी परमात्मा की उपस्थिति वहां भी होती है। हमारे भीतर परमात्मा का अंश यानी हमारा आत्मा भी उस कर्म का साक्षी होता है। यही कारण है कि हम बुरे कर्म करते समय दुनिया की दृष्टि में भले ही अच्छे बने रहें, पर हमारे भीतर से अंतरात्मा की आवाज हमें आईना दिखाती रहती है। भला उससे हम कोई चीज कैसे छिपा सकते हैं? हमारे आत्मा के पास हमारे प्रत्येक कर्म का लेखाजोखा है। कर्मों की दिशा ही हमारे जीवन की दिशा निर्धारित करती है।

हमारे कुछ कर्मों का फल तो तत्काल मिल जाता है, लेकिन कुछ कर्मों का फल वर्षों बाद भविष्य में या फिर अगले जीवन में प्राप्त होता है, किंतु मिलता अवश्य है। बीज बोते ही वह वृक्ष तो नहीं बन जाता। उसे बीज से वृक्ष बनने में समय लगता है। हमारा हर कर्म वास्तव में बीज है, जो एक न एक दिन अंकुरित होता हुआ, विकसित होता हुआ वृक्ष के रूप में आकार लेगा और उस वृक्ष में सुख और दुख के फल लगे होंगे, जिनका भोग हमें ही करना होगा। इसे ही कर्मभोग कहते हैं। इसलिए सदैव अच्छे कर्म करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

नीता देवी

पाठकनामा

pathaknama@pat.jagran.com

अमेरिका को सही जवाब

'अमेरिका को खरी-खरी' शीर्षक से प्रकाशित संपादकीय में उचित ही लिखा गया है कि पश्चिमी देश अनावश्यक रूप से भारत जैसे देशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने की मंशा रखते हैं। भारत को लेकर बुनियादी समझ के अभाव में उस पर अनर्गल टिप्पणियां करते रहते हैं। कभी वे मानवाधिकारों का मुद्दा उठाते हैं तो कभी संस्थानों की भूमिका को लेकर सवाल उठाते हैं। इस प्रकार के प्रकरणों से यही अनुभूति होती है कि अमेरिका और अन्य पश्चिमी देश एक प्रकार के श्रेष्ठताबोध से भरे हुए हुए हैं जो यह मानते हैं कि कथित सभ्यता और आधुनिकतावाद का दायरा उन्हीं तक सिमटा हुआ है और वही दुनिया के अन्य हिस्सों को उपदेश देने का अधिकार रखते हैं। यह स्थिति तब है जब हाल के दिनों में अमेरिका के कई शिक्षण संस्थान हिंसा, अराजकता और विरोध-प्रदर्शनों के केंद्र बने हुए हैं। बहुत ज्यादा दिन नहीं हुए जब अमेरिका में 'ब्लैक लाइव्स मैटर' यानी 'अश्वेतों का जीवन भी महत्वपूर्ण है' जैसी मुहिम चलानी पड़ी थी। वास्तविकता यही है कि कोई भी देश पूर्णता में सर्वश्रेष्ठ नहीं है और इस कारण उसे दूसरों को हीन समझने की मानसिकता से बाज आना चाहिए। इस मामले में भारतीय विदेश मंत्रालय ने संयत एवं सटीक प्रतिक्रिया व्यक्त करके बिल्कुल सही किया।

रवि वार्ष्णेय, बुलंदशहर

370 हटा कर संविधान की सेवा की

'कौन खतरा बन रहा है आरक्षण के लिए' शीर्षक आलेख में बृज लाल ने आरक्षण को लेकर मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस को बेनकाब कर दिया है। 1961 से लेकर 2024 तक तथ्यों को सामने रख कर बृज लाल ने सही लिखा है कि आरक्षण के मामले में यह देखने की आवश्यकता है कि किस दल की सरकार ने उसके लिए क्या किया? निसंदेह इससे दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस संबंध में कांग्रेस को आड़े हाथों लेते हुए कहा, जो पार्टी अपने संविधान की पवित्रता को नहीं मानती है, वो पार्टी देश के संविधान को कैसे मानेगी। बहुत ही अनुभवी लोग और भारत को जानने वाले लोगों ने संविधान को बनाया है। इसलिए उसको एक सामाजिक दस्तावेज भी कहा जाता है। संविधान में देश आगे चले, इसकी पूरी व्यवस्था भी है। जब संविधान बना तो उसके हर एक पृष्ठ पर पेंटिंग रखी गई। वे पेंटिंग हमारे हजारों वर्षों को जोड़ने का माध्यम हैं। धर्म के आधार पर आरक्षण नहीं दे सकते हैं, यह संविधान में है। कुछ दल धर्म के आधार पर आरक्षण देने पर तुले हैं। कश्मीर में भारत का संविधान नहीं लागू हुआ था। जम्मू-कश्मीर में दलित भाई बहनों को 75 वर्षों तक आरक्षण का अधिकार नहीं मिला। तब सत्ता में रही कांग्रेस व उसके सहयोगी दलों को क्यों रोना नहीं आया। वहां संविधान था ही नहीं। वर्तमान केंद्र सरकार ने संविधान की सबसे बड़ी सेवा जम्मू-कश्मीर से 370 हटा कर की। कश्मीर में दलित, आदिवासी और ओबीसी को आज आरक्षण मिल रहा है। आज उन्हें संविधान की उपस्थिति का एहसास हो रहा है। नामांकन व नौकरियों में आरक्षण प्राप्त कर समाज की मुख्य धारा में आ रहे हैं। अन्य प्रदेशों की तरह कश्मीर में भी देशवासी जमीन की खरीद-बिक्री कर सकते हैं।

युगल किशोर राही, छपरा, बिहार

देश को नई दिशा देगा चुनाव परिणाम

विवेक काटजू द्वारा लिखित आलेख 'दुनिया की नजर में है लोकसभा चुनाव' पढ़ा। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। लोकतंत्र की जननी है, और आज इस देश में दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक चुनाव चल रहा है। इस चुनाव पर पूरी दुनिया की निगाहें टिकी हुई हैं। भारत दुनिया की उभरती हुई महाशक्ति है। हर क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, एवं तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। देश को इस मुकाम तक पहुंचने में आजादी के बाद सभी सरकारों का योगदान है। आज भारत परमाणु संपन्न राष्ट्र है। अब रक्षा उपकरणों का निर्यातक देश भी बन चुका है। कोरोना काल के दौरान गलवान घाटी में चीन को मुंहतोड़ जवाब देकर भारत ने अपनी बढ़ती शक्ति का एहसास कराया। सैकड़ों देशों को टीके का दान देकर मानवता की रक्षा की। आपदा की घड़ी में अफगानिस्तान और श्रीलंका को मदद भेज कर पड़ोसी धर्म को निभाया। जी-20 का सफल आयोजन कर भारत ने नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंच कर भारत ने अंतरिक्ष जगत में सफलता का परचम लहराया। यूक्रेन संकट के दौरान देश ने तटस्थ नीति अपना कर अपने हितों की रक्षा की, एवं अपने नागरिकों को सुरक्षित वापस लाया। भारत की युवा शक्ति पूरी दुनिया को सेवा प्रदान कर रही है। यह चुनाव परिणाम देश को नई दिशा प्रदान करेगा।

ई हिमांशु शेखर, केसपा, गया

पोस्ट

यह कांग्रेस सरकार के तहत हुआ कि तेलंगाना पुलिस ने अपनी क्लोजर रिपोर्ट में कहा कि रोहित वेमुला दलित नहीं था और सभी आरोपितों को क्लीनचिट दे दी गई।

शेखर गुप्ता@ShekharGupta

निजी अस्पतालों का व्यवहार चुनावी मुद्दा क्यों नहीं बनता? स्वास्थ्य बीमा से जुड़ी जटिलताएं क्यों चर्चा में नहीं आतीं? क्यों बीमा कंपनियां बिल को हरी झंडी देने में कई-कई घंटे लगा देती हैं?

अखिलेश शर्मा@akhileshsharma1

आखिर अमेठी से चुनाव लड़ने का राबर्ट वाड्रा का सपना चकनाचूर हो गया। स्मिता प्रकाश@smitaprakash

राहुल अमेठी के बजाय रायबरेली से चुनाव लड़ेंगे? वह 'डरो मत' वाले नारे पर खुद अमल नहीं करते क्या?

अभिसार शर्मा@abhisar_sharma

क्या विचित्र निर्णय है भाई? अमेठी तो वाकओवर दिया। यह तो फिर भी समझ आता है, पर रायबरेली सीट क्यों खराब कर रहे हैं? सोचिए कि रायबरेली और वायनाड, दोनों जीतेंगे तो एक सीट छोड़नी होगी। केरल में विधानसभा चुनाव जीतने का अच्छा मौका है कांग्रेस के पास। तब वायनाड खाली करना गलत होगा और रायबरेली खाली करना और भी गलत। यशवंत देशमुख@YRDeshmukh

जनपथ

रायबरेली आ गए आखिर में युवराज,
सिर्फ फैमिली करेगी इस गद्दी पर राज।
इस गद्दी पर राज बनी है ऐसी सीढ़ी,
बस गांधी परिवार चढ़े पीढ़ी दर पीढ़ी।
ऐसा साजन पाय अमेठी जैसे झेली,
विरह सहेगी रोज वही अब रायबरेली!

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व.पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान सम्पादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन- महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान सम्पादक -संजय गुप्त

जागरण प्रकाशन लिमिटेड के लिये आनन्द त्रिपाठी द्वारा दैनिक जागरण प्रेस C-5, C-6 & 15 इंडस्ट्रियल एरिया, पाटलिपुत्रा, पटना - 800013 से प्रकाशित एवं मुद्रित, सम्पादक (बिहार/प. बंगाल)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, स्थानीय सम्पादक - आलोक मिश्रा * दूरभाष : 0612-2277071, 2277072, 2277073
E.mail : patna@pat.jagran.com, R.N.I. NO. BIHHIN/2000/03097* इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी पटना जीपीओ रजि.नं. R-10/NP-18/14-16 समस्त विवाद पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे। वर्ष 25 अंक 22

****

सफल कूटनीति वही है, जो उद्देश्यों और साधनों के बीच तालमेल बिठाती है। -डेनिस रॉस

एडीबी की ताजा रिपोर्ट आयुष्मान योजना की सराहना करने के बावजूद बुजुर्गों के स्वास्थ्य बीमा के मामले में भारत की स्थिति को चिंताजनक बताती है। ऐसे में बुजुर्गों के गरिमापूर्ण जीवन और उनकी उत्पादकता का लाभ उठाने के लिए उनकी सामाजिक सुरक्षा पर बल दिए जाने की जरूरत है।

उम्र चुनौती दे रही है

एशियाई विकास बैंक (एडीबी) द्वारा 'एजिंग वेल इन एशिया' शीर्षक से जारी एक रिपोर्ट में बुजुर्गों के लिए स्वास्थ्य बीमा के मामले में भारत को एशिया-प्रशांत देशों में सबसे निचली कतार में दर्शाना बताता है कि देश की आबादी के एक महत्वपूर्ण हिस्से के लिए अभी काफी कुछ किया जाना बाकी है। हालांकि रिपोर्ट में आयुष्मान योजना की तारीफ की गई है, जिससे स्वास्थ्य सुविधाओं तक बुजुर्गों की पहुंच आसान हुई है, इसके बावजूद भारत, बांग्लादेश और इंडोनेशिया जैसे देशों के बुजुर्गों की स्वास्थ्य बीमा तक पहुंच करीब 21 फीसदी है, जो वाकई चिंताजनक है। रिपोर्ट बताती है कि भारत की विकास दर की गति को बनाए रखने और बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए सबको स्वास्थ्य बीमा के दायरे में लाने की जरूरत है। उल्लेखनीय है कि नीति आयोग की हाल में जारी रिपोर्ट भी कहती है कि देश में 78 फीसदी बुजुर्गों के पास कोई पेंशन योजना नहीं है। एडीबी की रिपोर्ट के मुताबिक, एशिया-प्रशांत देशों में 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों की संख्या 2050 तक कुल आबादी का करीब एक-चौथाई हो जाएगी। सिर्फ भारत की बात करें, तो नीति आयोग के अनुसार, अभी देश में 60 वर्ष से अधिक उम्र के 12.8 फीसदी लोग हैं, जो 2031 तक 13.2 फीसदी और 2050 तक 19 फीसदी हो जाएंगे। यह देश के जनसांख्यिकीय बदलाव की झलक तो देता ही है, पेंशन व कल्याण कार्यक्रमों के अलावा स्वास्थ्य बीमा की बढ़ती जरूरत को भी दर्शाता है। हाल ही में, बीमा नियामक इरडा द्वारा स्वास्थ्य बीमा खरीदने में 65 साल की उम्र की अनिवार्यता को खत्म किया जाना सराहनीय कदम है, जिससे देश में स्वास्थ्य बीमा की पहुंच निश्चित ही बढ़ेगी। लेकिन नहीं भूलना चाहिए कि बुजुर्गों की आबादी में एक बड़ी संख्या मजदूरों व असंगठित क्षेत्र में कार्यरत लोगों की भी है, जिनकी सामाजिक सुरक्षा का विषय महत्वपूर्ण है। हालांकि केंद्र सरकार बुजुर्गों के लिए एक व्यापक राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम चलाती है, लेकिन जैसा कि संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की हालिया रिपोर्ट भी कहती है, इन कार्यक्रमों व योजनाओं के बारे में जागरूकता की कमी और इनमें निहित प्रशासनिक प्रक्रियाओं की जटिलताएं अक्सर बुजुर्गों को इनका लाभ उठाने नहीं देतीं। बुजुर्गों की क्षमताओं के बेहतर उपयोग के लिए स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार जरूरी है, तभी अर्थव्यवस्था को उनकी अतिरिक्त उत्पादकता का लाभांश मिल सकेगा। तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था में वरिष्ठ नागरिकों के आत्मसम्मानपूर्ण जीवन के अधिकार की रक्षा भी बेहद जरूरी है। उम्मीद है कि लोकसभा चुनावों के उपरांत गठित होने वाली नई सरकार इस ओर ध्यान देगी।

पाकिस्तान में फलस्तीन

पाकिस्तान में इस्राइल के विरोध का आलम यह है कि शांति कार्यकर्ता अस्मा जहांगीर की स्मृति में होने वाले शांतिपूर्ण वार्षिक सम्मेलन में भी इस्राइल समर्थक जर्मनी के राजदूत को कड़े विरोध का सामना करना पड़ा। सोशल मीडिया पर वायरल जर्मन राजदूत की उग्र प्रतिक्रिया के भी कई अर्थ निकाले जा रहे हैं।

मरिआना बाबर
वरिष्ठ पाकिस्तानी पत्रकार

पाकिस्तान में भारतीय उच्चायोग की पहली महिला प्रभारी गीतिका श्रीवास्तव समेत इस्लामाबाद में एक दर्जन से ज्यादा महिला राजदूत हैं। इन राजनयिकों की मौजूदगी से यह संदेश जाता है कि पाकिस्तान किस तरह से महिला राजनयिकों की सुरक्षा करता है। राजदूतों के अलावा हरेक दूतावास में कई विदेशी एवं स्थानीय महिलाएं कार्यरत हैं। आम तौर पर ये राजनयिक तब भी सुरक्षित महसूस करती हैं, जब वे बैठकों या कार्यक्रमों में पाकिस्तानियों से मिलती हैं। आम पाकिस्तानी स्वभाव से विनम्र होते हैं और यहां आने वाले विदेशी या भारतीय पर्यटक इस बात को समझते हैं और इसकी पुष्टि भी करते हैं।

लेकिन इस हफ्ते लाहौर में यह सब कुछ बदल गया, जहां दुनिया की प्रसिद्ध वकील और शांति कार्यकर्ता अस्मा जहांगीर की याद में उनकी लॉ कंपनी और उनकी बेटियों ने एक बेहद लोकप्रिय सालाना कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया। पिछले पांच वर्षों से अस्मा जहांगीर की स्मृति में होने वाला यह आयोजन दुनिया भर में प्रसिद्ध हो गया है, जिसमें पाकिस्तानी प्रतिभागी, विदेशी राजदूत और विदेशी प्रतिनिधि भी भाग लेते हैं। इस वर्ष भारतीय मीडिया का एक प्रतिभागी भी शामिल था।

यह सम्मेलन इसलिए भी प्रसिद्ध हुआ, क्योंकि यह ऐसी दुर्लभ जगह है, जहां असंतुष्ट और वैसे लोग भी, जिन्हें बोलने का अवसर या स्थान नहीं मिलता, स्वतंत्र रूप से खुलकर अपनी बात रख सकते हैं, जिन्हें दुनिया सुनती है। अतीत में कई बार सरकारी अधिकारियों, राजनेताओं एवं यहां तक कि न्यायाधीशों के भाषण के दौरान प्रदर्शनकारियों द्वारा बाधा डाली गई है। यही इस सम्मेलन की खूबसूरती है, जहां हर कोई बोलने के लिए स्वतंत्र है।

इस बार कार्यक्रम में 'दक्षिण एशिया में नागरिक अधिकारों की सुरक्षा' विषय पर एक सत्र था और प्रतिभागियों में जर्मन राजदूत अल्फ्रेड ग्रेनास भी थे, जो इस्लामाबाद में सबसे वरिष्ठ राजनयिक हैं। इन दिनों जर्मनी गाजा युद्ध में इस्राइल के समर्थन के लिए चर्चा में है। पाकिस्तान और अन्य मुल्कों में भी जर्मनी के खिलाफ आवाजें उठ रही हैं और उस पर इस्राइल का समर्थन करके फलस्तीनियों के नरसंहार में सहयोग करने का आरोप लगाया जा रहा है।

हर जगह, विशेष रूप से अमेरिका में छात्र सरकारी नीतियों का विरोध कर रहे हैं, विशेषकर उन नीतियों का, जो इस्राइल का समर्थन कर रही हैं। इसलिए यह कोई हैरानी की बात नहीं थी कि सम्मेलन में युवा छात्र प्रदर्शनकारियों ने जर्मन राजदूत के भाषण में बाधा डाली। एक युवा प्रदर्शनकारी ने चिल्लाकर कहा, 'माफ कीजिएगा राजदूत महोदय, मैं आपके इस दुस्साहस से हैरान हूं कि आप यहां नागरिक अधिकार की बात करने आए हैं, जबकि आपका मुल्क फलस्तीनियों के अधिकारों के लिए बोलने वालों के साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार कर रहा है।' उसकी इस बात का कई लोगों ने समर्थन किया।

यूरोपीय देशों के कई राजदूतों ने भी उसी मंच से भाषण दिया, लेकिन उनके भाषणों में कोई बाधा नहीं डाली गई। उनमें कई महिला राजदूत भी थीं। कई लोगों ने अपनी सीट से खड़े होकर कहा, 'नदी से समुद्र तक' फलस्तीन को स्वतंत्र करो। असल में 'नदी से समुद्र तक' एक राजनीतिक वाक्यांश है, जो जॉर्डन नदी और भूमध्यसागर के बीच के क्षेत्र को बताता है, जिसे फलस्तीन माना जाता है।

लेकिन जर्मन राजदूत की प्रतिक्रिया सबसे हैरान करने वाली थी, जैसे यह उनके लिए अविश्वसनीय था कि कोई उनके भाषण में रुकावट डालेगा और गाजा युद्ध में जर्मनी की भूमिका के खिलाफ प्रदर्शन करेगा। कोई सोच सकता था कि जर्मन राजदूत रुककर थोड़ा मुस्कराएंगे और फिर प्रदर्शनकारी से विनम्रता से बैठने के लिए कहेंगे और सवाल-जवाब के सत्र में सवालों का स्वागत करेंगे। वह भी यह जानते थे कि ऐसे व्यवधान को हमेशा आयोजक या तो शांत करा देते हैं या प्रदर्शनकारी को हॉल छोड़कर चले जाने के लिए मना लेते हैं।

लेकिन ऐसा करने के बजाय जर्मन राजदूत बेहद नाराज हो गए और अपनी बांहें फड़काते हुए प्रदर्शनकारी की तरफ इशारा करते हुए गुस्से में बोले, 'यदि तुम चिल्लाना चाहते हो, तो बाहर चले जाओ, वहां तुम चिल्ला सकते हो, लेकिन चिल्लाना विमर्श नहीं है। यदि तुम विमर्श करना चाहते हो, तो यहां आओ। हम चर्चा करेंगे, लेकिन चिल्लाओ मत। चिल्लाना कोई अच्छी बात नहीं है, तुम्हें शर्म आनी चाहिए।'

मंच पर बैठे हुए कुछ राजदूतों और अन्य लोगों ने जर्मन राजदूत से शांत होने और अपना भाषण आगे बढ़ाने के लिए कहा, लेकिन वह इतने ज्यादा गुस्सा थे कि सुन ही नहीं रहे थे। चूंकि इस सम्मेलन का लाइव प्रसारण हो रहा था, इसलिए पूरे पाकिस्तान ने उनका भयावह गुस्सा देखा और जर्मन राजदूत का व्यवहार देखकर लोग हैरान थे। तुरंत आयोजकों ने उस प्रदर्शनकारी को धक्के देकर बाहर निकाल दिया।

अचानक जर्मन राजदूत की उग्र प्रतिक्रिया सोशल मीडिया पर वायरल हो गई और पाकिस्तानियों ने पूछा कि क्या यह जर्मनी है, जो किसी को बाहर जाने के लिए कहता है। एक्स पर एक व्यक्ति ने टिप्पणी की, 'जर्मन कूटनीति के लिए यह अच्छी बात नहीं है। पश्चिमी देशों में इस तरह के व्यवधान अपवाद नहीं, बल्कि आदर्श बन जाएंगे।' सभी टीवी चैनलों एवं अगले दिन अखबारों ने भी इस घटना को प्रमुखता से जगह दी। युवा पाकिस्तानी इतिहासकार और कार्यकर्ता अम्मार अली जान भी जर्मन राजदूत के व्यवहार से बहुत नाराज थे-'जर्मन राजदूत पाकिस्तानियों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर व्याख्यान देते हैं, जबकि जर्मनी सरकार गाजा पर किसी भी चर्चा को प्रतिबंधित करती है।'

कराची में भी ब्रिटिश उच्चायुक्त के आवास पर भी एक अन्य घटना घटी। पाकिस्तानी शास्त्रीय नृत्यांगना एवं मानवाधिकार कार्यकर्ता सीमा केरमानी ने गाजा में संघर्ष विराम के लिए आवाज उठाई, तो उन्हें कार्यक्रम छोड़ने के लिए कहा गया और बाहर निकाल दिया गया।

जो मुल्क गाजा युद्ध में इस्राइल का समर्थन कर रहे हैं, उन्हें लगातार ऐसे विरोध प्रदर्शनों का सामना करना पड़ेगा और दुनिया भर में उनके राजदूतों को शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शनों का सामना करना पड़ेगा। वरिष्ठ राजनयिक होने के बावजूद जर्मन राजदूत ने जैसी प्रतिक्रिया दी, वह कूटनीति की विफलता है।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

स्वामी विवेकानंद

मनुष्य पर जो प्रभाव पड़ता है, वह सिर्फ शब्दों से नहीं होता। विचार भी शायद प्रभाव का एक-तिहाई ही पैदा करते होंगे। पर बाकी दो-तिहाई प्रभाव उसके व्यक्तित्व का ही होता है।

हमारे कर्म हमारे व्यक्तित्व के बाह्य आविष्कार मात्र हैं

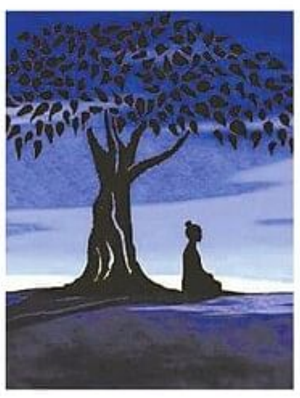

देखो, *हमारे आसपास दुनिया में क्या चल रहा है। अपना प्रभाव चलाना, यही दुनिया है। हमारी शक्ति का कुछ अंश तो हमारे शरीर धारण के उपयोग में आता है, पर हमारी शक्तियों का प्रत्येक अंश दूसरों पर अपना प्रभाव डालने में व्यय होता रहता है। हमारे शरीर, गुण, बुद्धि और हमारा आत्मिक बल-ये सब लगातार दूसरों पर प्रभाव डालते आ रहे हैं। इसी प्रकार दूसरों का प्रभाव भी हम पर पड़ता चला आ रहा है। हमारे आसपास यही चल रहा है।*

एक प्रत्यक्ष उदाहरण है। एक मनुष्य तुम्हारे पास आता है। वह खूब शिक्षित है, उसकी भाषा भी सुंदर है। वह तुमसे एक घंटा बात करता है, फिर भी वह अपना असर नहीं छोड़ पाता। दूसरा मनुष्य आता है। वह चंद शब्द बोलता है। शायद वे शब्द शुद्ध और व्यवस्थित भी नहीं होते, फिर भी वह खूब असर कर जाता है। यह तुममें से बहुतों ने अनुभव किया है। इससे स्पष्ट है कि मनुष्य पर जो प्रभाव पड़ता है, वह सिर्फ शब्दों से नहीं होता। विचार भी शायद प्रभाव का एक-तिहाई ही पैदा करते होंगे। पर बाकी दो-तिहाई प्रभाव उसके व्यक्तित्व का ही होता है। जिसे तुम व्यक्तित्व का आकर्षण कहते हो, वही प्रकट होकर तुम पर अपना असर डाल देता है।

प्रत्येक कुटुंब में एक मुख्य संचालक होता है। कोई संचालक यशस्वी होता है, कोई नहीं। ऐसा क्यों? जब हमें अपयश मिलता है, तो हम दूसरों को कोसते हैं। अपयश आने पर प्रत्येक मनुष्य अपना कसूर और अपने दोष नहीं, बल्कि यह दिखलाने की कोशिश करता है कि वह निर्दोष है और सारा दोष वह किसी मनुष्य या किसी वस्तु पर, और दुर्भाग्य पर मढ़ना चाहता है। जब घर का प्रमुख कर्ता सफलता न प्राप्त कर सके, तो उसे सोचना चाहिए कि कुछ लोग अपना घर किस प्रकार अच्छी तरह चला सकते हैं और दूसरे क्यों नहीं? मनुष्य जाति के बड़े-बड़े नेताओं की बात की जाए, तो हमें यही दिखाई देगा कि उनका व्यक्तित्व ही उनके प्रभाव का कारण था। अब बड़े-बड़े प्राचीन लेखकों और दार्शनिकों की बात लो। सच पूछो, तो असल और सच्चे विचार उन्होंने हमारे सम्मुख कितने रखे हैं? बीते समय के नेताओं ने जो कुछ लिख छोड़ा है उसका विचार करो। उनकी लिखी हुई पुस्तकों को देखो और प्रत्येक का मूल्य आंको। जिन्हें हम असल, नए और स्वतंत्र विचार कह सकते हैं, वे इस संसार में सिर्फ मुट्ठी भर ही हैं। लोगों ने जो विचार हमारे लिए छोड़े हैं, उनको उन्हीं की पुस्तकों में से पढ़ो, तो वे हमें कोई बहुत बड़े नहीं प्रतीत होते। फिर भी अपने जमाने में वे बहुत बड़े हो गए हैं। ऐसा क्यों होता है? सिर्फ उनके सोचे हुए विचारों के कारण ही नहीं, न उनकी लिखी हुई पुस्तकों के कारण ही, और न यह कि अपने दिए हुए भाषणों के कारण ही वे बहुत बड़े प्रतीत होते थे, बल्कि किसी दूसरी ही बात के कारण ऐसा प्रतीत होता है और वह है उनका व्यक्तित्व। हमारे कर्म हमारे व्यक्तित्व के बाह्य आविष्कार मात्र हैं। प्रभावी व्यक्तित्व कर्म के रूप से प्रकट होगा ही।

दोष न ढूंढें...

सूत्र

व्यक्तित्व प्रभावी होगा तो कर्म में प्रकट होगा, यह आपको जीवन में साफ-साफ दिखाई देने लग जाएगा। आपके विचारों से ही आपका व्यक्तित्व बनता है और वही आपको सफलता और असफलता दिखाता है। किसी भी चीज के लिए मनुष्य को किसी ओर पर दोष नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि जीवन की चाबी केवल आपके पास होती है...

दूसरा पहलू

पिछले एक दशक में यूक्रेन में कॉफी की दुकानों में भारी वृद्धि हुई है। राजधानी कीव में आज करीब 2,500 दुकानें हैं।

युद्ध के बीच भी कॉफी का जुनून

लगभग दो साल पहले जब रूसी टैंक यूक्रेन में घुसे थे, तब अर्तेम ब्रादी मान चुके थे कि उनका कारोबार ठप हो जाएगा। 'युद्ध के बीच कॉफी के बारे में भला कौन सोचेगा', मैड हेड्स के सह-संस्थापक ब्रादी का कहना था। यह राजधानी कीव में कॉफी के बीज पीसकर घरों और रेस्टोरेंट्स में कॉफी की आपूर्ति करने वाली प्रमुख दुकान है। लेकिन युद्ध शुरू होने के तीन-चार दिन बाद ही उन्हें यूक्रेनी सैनिकों की तरफ से कॉफी भेजने के संदेश मिलने लगे। एक सैनिक ने कॉफी के कुछ बैग मोर्चे पर भेजने के बारे में लिखा, क्योंकि सेना द्वारा मुहैया कराए गए एनर्जी ड्रिंक्स से उनका काम नहीं चल रहा था।

कॉन्स्टेंट मेहेट

पहले से ही कॉफी के दीवाने यूक्रेनी नागरिकों के बीच रूसी हमले के बाद कॉफी अब प्रतिरोध और जुनून का दूसरा नाम है।

यूक्रेन के ये उदाहरण वहां कॉफी के प्रति लोगों के जुनून के बारे में बताते हैं। पिछले एक दशक में यूक्रेन के छोटे-बड़े शहरों में कॉफी शॉप्स की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। राजधानी कीव की हर गली में कॉफी की दुकानें हैं। आज वहां कॉफी की करीब 2,500 दुकानें हैं, जिनमें से अनेक दुकानें तो रूसी हमले के बाद ही खुली हैं।

हाल के दौर में दुनिया भर में कॉफी की लोकप्रियता बढ़ी है। चाय के लिए मशहूर ब्रिटेन में भी कॉफी पीने वाले बढ़े हैं, लेकिन पहले से ही इसके दीवाने यूक्रेनी नागरिकों के बीच रूसी हमले के बाद कॉफी अब प्रतिरोध और जुनून का दूसरा नाम है। 'युद्ध जारी रहने के बावजूद यूक्रेन के लोग कॉफी पीने के बारे में सोचते हैं। वे अपना घर छोड़ सकते हैं, अपनी आदतें छोड़ सकते हैं, पर कॉफी के बगैर नहीं रह सकते', ब्रादी कहते हैं।

आधुनिक कॉफी कल्चर अपनाकर यूक्रेन अपनी जड़ों की ओर लौट रहा है, क्योंकि 17वीं शताब्दी में वियना में पहला कैफे खोलने वाला यूक्रेन का एक सैनिक था। उसने ही यूरोप को कॉफी से परिचित कराया था।

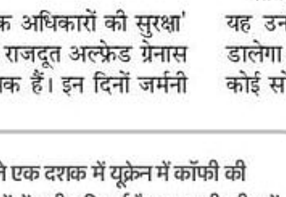

यूरोप के नजदीक आने का असर भी यहां की कॉफी पर पड़ा है। पहले कॉफी की ज्यादातर दुकानों में ग्राहकों को सामान्य कॉफी ही पिलाई जाती थी। लेकिन अनेक लोगों ने पाया कि यूरोप में कुछ बड़े कॉफी शॉप्स कॉफी के भुने हुए बीज पीसकर अपने यहां ही कॉफी पाउडर तैयार करते हैं। यूक्रेन के अनेक कॉफी शॉप्स ने इसे अपनाया। यूक्रेन में रह रहे एक अमेरिकी माइकल मैक्लॉगलिन कहते हैं, 'दुनिया में सबसे अच्छी कॉफी यहां के कैफे में मिलती है।' विशेषज्ञों के मुताबिक, आधुनिक कॉफी कल्चर अपनाकर यूक्रेन दरअसल अपनी जड़ों की ओर लौट रहा है, क्योंकि 17वीं शताब्दी में वियना में पहला कैफे खोलने वाला यूक्रेन का ही एक सैनिक था। उसी व्यक्ति ने यूरोप को कॉफी के स्वाद से परिचित कराया था।

-साथ में डारिया मिटिक

©The New York Times 2024

आंकड़े

कर राजस्व

हमारे देश में कुल कर राजस्व जीडीपी का 7.8 फीसदी होता है, जिनमें से सबसे ज्यादा हिस्सा प्रत्यक्ष कर का होता है।

प्रत्यक्ष कर	6.6%
अप्रत्यक्ष कर	5.0%
आय कर	3.3%
जीएसटी संग्रह	3.2%
कॉरपोरेट कर	3.1%

(आंकड़े जीडीपी का प्रतिशत, 2023-24 का संशोधित अनुमान) | स्रोत : RBI

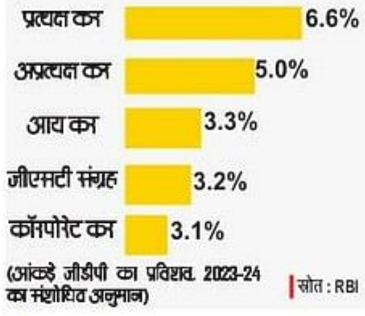

आत्म-कल्याण ही मनुष्य जीवन का सच्चा लक्ष्य है, इसे ही पूरा करना चाहिए। कोई भी किसी के प्रेम में मरता नहीं है।

जीवन का सच्चा लक्ष्य

अंतर्यात्रा
संकलित

एक युवक एक महात्मा के आश्रम में आया करता था। महात्मा ने एक दिन उससे कहा, आत्म-कल्याण ही मनुष्य जीवन का सच्चा लक्ष्य है, इसे ही पूरा करना चाहिए। यह सुनकर युवक ने कहा-महाराज! वैराग्य धारण करने पर मेरे घर के लोग तो मेरे वियोग में मर ही जाएंगे। महात्मा बोले, कोई नहीं मरेगा! यह सब दिखावटी प्रेम है। तू नहीं मानता, तो परीक्षा कर ले।

युवक राजी हो गया, तो महात्मा ने उसे प्राणायाम करना सिखाया और घर जाकर सांस रोक लेने का आदेश दिया। युवक ने घर जाकर वही किया। बड़े-बड़े वैद्यों को बुलाया गया, लेकिन उसने इस तरह से सांस रोकी कि सबने उसे मरा ही समझा। घर वाले रोने-बिलखने लगे। पड़ोस के लोग भी इकट्ठा हो गए। तभी महात्मा भी वहां पहुंचे और बोले-हम इस लड़के को जीवित कर देंगे, परंतु तुम में से किसी को अपने प्राण देने पड़ेंगे। लेकिन मरने के लिए माता-पिता और पत्नी सहित कोई रिश्तेदार और पड़ोसी भी तैयार नहीं हुआ। तभी महात्मा ने युवक को झकझोरते हुए कहा–अब तो तुझे ज्ञान हो गया कि कौन तेरे लिए प्राण देता है? युवक तुरंत उठ पड़ा और महात्मा के चरणों में गिर पड़ा। वह सांसारिक मोह त्यागकर आत्म-कल्याण की साधना करने लगा।

(अमर उजाला आर्काइव से)

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 2 मई, 1959

मोकामा में राजेंद्र पुल का उद्घाटन

राजेन्द्र पुल का उद्घाटन

मोकामाघाट १ मई। पांच लाख नर नारियों के जन समूह के समक्ष उल्लासपूर्ण वातावरण में प्रधान मंत्री श्री नेहरू ने आज सायंकाल यहां गंगा पर "राजेन्द्र पुल" का उद्घाटन किया। इस पुल ने उत्तरी व दक्षिणी बिहार को एक दूसरे से मिला दिया है। पुल के निर्माण पर १६ लाख रुपया व्यय हुआ

पांच लाख जनसमूह के समक्ष आज प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने मोकामा घाट में गंगा नदी पर राजेंद्र पुल का उद्घाटन किया। इस पुल ने उत्तरी एवं दक्षिणी बिहार को एक दूसरे से जोड़ दिया है। इसके निर्माण पर 16 लाख रुपये खर्च हुए।

ज्ञान का सूरज कहीं अस्त न हो जाए

बंगाल के शिक्षा घोटाले में घूस देने वाले शिक्षकों को बचाने के लिए ममता सरकार ने 19-20 हजार योग्य शिक्षकों की नौकरी खतरे में डाल दी है।

बिमल राय

सियासत

पहली सदी में ज्ञान का सूरज पूरब में नालंदा विश्वविद्यालय से आलोकित हुआ था और अंग्रेजों के भारत आने के बाद से कलकत्ता के सर डोनाल्ड रास 1902 में चिकित्सा के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम के लिए नोबेल पुरस्कार से नवाजे गए थे। रास को रवींद्रनाथ टैगोर, अमर्त्य सेन, मदर टेरेसा और अभिजीत बनर्जी के बाद पांचवां नोबेल विजेता माना जाता है और सी. वी. रमण को भी जोड़ लें, तो कहा जा सकता है कि इस बंग प्रदेश से भारत के छह नोबेल विजेता निकले हैं। यह चर्चा सामान्य ज्ञान के लिए नहीं, बल्कि असामान्य ज्ञान के लिए की जा रही है। घनघोर अराजकता पैदा करने वाले सत्ताधारियों ने बंगाल की शिक्षा व्यवस्था की जो दुर्दशा की है, उसे अभी सुधार योग्य भी नहीं माना जा रहा।

एक ऐतिहासिक फैसले में कलकत्ता हाईकोर्ट ने हाल में बंगाल में 2016 के राज्य स्तरीय चयन परीक्षा के जरिये नियुक्त करीब 26 हजार शिक्षकों की नियुक्तियां रद्द कर दीं। इनमें से केवल छह-सात हजार लोगों की ही नौकरी जाती, अगर राज्य सरकार ने घूस देकर नौकरी करने वालों का नाम अलग से बताया होता। मगर सरकार ने वोट की राजनीति और निर्ममता की नई व दुर्लभ नजीर पेश करते हुए मूल ओएमआर शीट के आंकड़े नहीं दिए और उस प्रपत्र को गायब बता दिया। मजबूरी में अदालत को पूरा पैनल ही रद्द करना पड़ा। चार सप्ताह में अब तक उठाए गए वेतन को 12 प्रतिशत सूद के साथ लौटाने का आदेश भी कम पीड़ादायी नहीं है। मगर सरकार को सिर्फ मोटी कमाई कराने वाले फर्जी शिक्षकों की ही चिंता है। राज्य सरकार सुप्रीम कोर्ट गई, पर वहां भी हाईकोर्ट के आदेश पर स्टे नहीं मिला। अगली सुनवाई 6 मई को होनी है।

इससे पहले 2023 में कलकत्ता हाईकोर्ट के पूर्व न्यायाधीश अभिजीत गांगुली ने 36,000 प्राइमरी शिक्षकों की नौकरी रद्द की थी। इस मामले पर भी अंतिम फैसला आना बाकी है। आरोप है कि इन लोगों को शिक्षक पात्रता परीक्षा (टेट) पास किए बिना ही घूस लेकर भर्ती किया गया है।

हाल के अदालती फैसले पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने जो प्रतिक्रिया दी है, वह अदालत की अवमानना है और एक वकील ने हाईकोर्ट में स्वतः संज्ञान लेकर कार्यवाही करने की याचिका डाली है। दीदी ने कहा कि दिल्ली से चुन-चुनकर भाजपा समर्थक जजों को कलकत्ता हाईकोर्ट में भेजा गया है। पिछले साल 5 सितंबर को, जब पूरा देश शिक्षक दिवस मना रहा था, मुख्यमंत्री राज्य विश्वविद्यालयों के अंतरिम कुलपतियों को धमका रही थीं कि अगर वे कुलाधिपति राज्यपाल सीवी आनंद बोस के निर्देशों का पालन करना जारी रखेंगे, तो उनकी 'आर्थिक नाकेबंदी' की जाएगी। अब चुनावी सभाओं में वह कह रही हैं कि हम नौकरियां दे रहे हैं, भाजपा अदालतों के जरिये नौकरियां खा रही है।

यह तो कहना ही होगा कि शिक्षा क्षेत्र के पतन के ग्राफ में बंगाल नंबर एक पर है। दो नंबर पर हरियाणा को मान सकते हैं। यहां के जेबीटी घोटाले में पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला ने 10 साल की कैद काटी, पर इसमें 3 हजार शिक्षकों की ही अवैध भर्ती हुई थी। तीसरा राज्य त्रिपुरा है, जहां तत्कालीन वामपंथी सरकार की रोजगार नीति, 2003 को 2014 में त्रिपुरा हाईकोर्ट ने अमान्य घोषित किया था और इस कारण 10,300 शिक्षक बर्खास्त हुए थे। नतीजा यह हुआ कि 152 लोगों की मौत हो गई और 10 से 12 शिक्षकों ने आत्महत्या कर ली थी। हालांकि यह मामला अब भी सुप्रीम कोर्ट में लंबित है।

कलकत्ता हाईकोर्ट ने बर्खास्त अयोग्य शिक्षकों को खपाने के लिए मंत्रिमंडल की बैठक कर हजारों खाली पदों का सृजन करने के फैसले की सीबीआई जांच के आदेश दिए हैं। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने अभी इस जांच पर रोक लगा दी, क्योंकि सरकार ने गुहार लगाई कि चुनावी मौसम में पूरे मंत्रिमंडल के जेल जाने का खतरा है। एजेंसी को किसी उच्च पदस्थ नेता या अधिकारी से पूछताछ करने और जरूरत पड़ने पर हिरासत तक में लेने का आदेश दिया गया है। यह आदेश ममता सरकार पर तलवार बनकर लटक रहा है। शिक्षा विभाग के भ्रष्ट अफसरों को शिकंजे में लाने के लिए हाईकोर्ट मुख्य सचिव की अनुमति मांग रहा है, वे टाल रहे हैं। मजबूर होकर अदालत ने तीन अप्रैल को कहा कि वे कठोर कदम उठाने के लिए मजबूर न करें। प्रधानमंत्री के आम्फान चक्रवात दौरे पर सीएम के साथ मुख्य सचिव ने भी बैठक का बॉयकाट किया था। अब बचा क्या?

https://t.me/AllNewsPaperPaid

हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूंगा। –वाल्तेयर

राजस्थान पत्रिका
संस्थापक
कर्पूर चन्द्र कुलिश

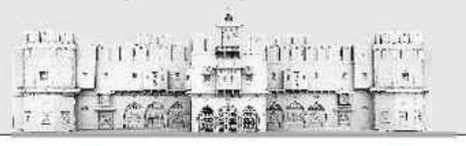

महिलाओं की सेहत से जुड़ी चिंताजनक तस्वीर

अमरीकी शोधकर्ताओं का यह निष्कर्ष कि महिलाओं के मुकाबले पुरुषों में आकस्मिक मृत्यु का खतरा ज्यादा होता है, नाजुक कही जाने वाली महिलाओं की सेहत की दृष्टि से मजबूती का संकेत देता है। यह एक बॉयोलॉजिकल तथ्य भी है कि नवजात बच्ची के रूप में जन्म लेने वाले दिन से ही नारी इतनी ही मजबूत होती है। वैज्ञानिकों ने यह भी निष्कर्ष निकाला है कि पैदा होने के पहले पांच साल में बच्चियों की मौत का आंकड़ा बच्चों की तुलना में कम होता है। वयस्क होने के बाद भी महिलाओं में असमय मृत्यु का खतरा भी पुरुषों की तुलना में कम होता है।

शोध समूची दुनिया में महिला व पुरुषों पर किए गए वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर है। लेकिन, इसी शोध के दूसरे हिस्से की यह रिपोर्ट चिंताजनक है जिसमें कहा गया है कि पुरुषों की तुलना में महिलाएं रोगग्रस्त ज्यादा होती हैं। शोध के ये निष्कर्ष भारतीय महिलाओं के संदर्भ में भी सौ प्रतिशत सच महसूस होते हैं। हमारे देश के संदर्भ में तो यह बात भी जोड़ी जा सकती है कि अलग-अलग परिस्थितियों की वजह से ज्यादातर महिलाएं कई रोग जिंदगी भर साथ लेकर चलती हैं। हालांकि ये ऐसी बीमारियां नहीं हैं, जो ठीक नहीं हो सकतीं। थोड़े से ध्यान और थोड़े से इलाज से इनसे निजात पाई जा सकती है। इसके बावजूद यदि महिलाएं जिंदगी भर किसी भी रोग को अपने साथ लेकर चल रही हैं या लगातार तकलीफ भोगते हुए कष्टमय जीवन बिताने को मजबूर हैं तो यह उसके साथ बड़ा अन्याय है। यह एक कड़वी सच्चाई है, जो हमारे समाज में लिंगभेद के बिना स्त्री-पुरुष की बराबरी के सारे दावों को खोखला साबित करती है। सवाल यह भी है कि आखिर कोई भी महिला रोग को जिंदगी भर अपने साथ लेकर चलने का फैसला खुद कर रही होगी क्या? बिलकुल नहीं। जाने-अनजाने में इन परिस्थितियों के लिए पुरुष वर्ग जिम्मेदार होगा। इसके लिए परिवार और समाज का माहौल भी जिम्मेदार माना जा सकता है। रिपोर्ट साबित कर रही है कि बड़े स्तर पर महिलाओं के बारे में निर्णय का अधिकार पुरुषों के हाथ में ही होता है। इसीलिए कई बार रोगग्रस्त होने के बावजूद महिलाएं डॉक्टर के पास नहीं पहुंच पातीं और जिंदगी भर कष्ट सहने को अभिशप्त हो जाती हैं। यह वाकई चिंताजनक तस्वीर है, जिसे बदला जाना चाहिए।

कई अन्य सामाजिक वर्जनाएं व रूढ़ियां भी ऐसे हालात के मूल में हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि महिला-पुरुष की बराबरी के लिए पिछले सालों में कई कदम उठाए गए हैं। फिर भी महिलाओं की सेहत को लेकर जो तथ्य आ रहे हैं वे चिंताजनक हैं। अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है। देश की महिलाएं ज्यादा मानवीय दृष्टिकोण की हकदार हैं और उनकी सेहत के मोर्चे पर काफी कुछ करना बाकी है। पुरुषों के साथ महिलाएं भी स्वस्थ रहेंगी, तभी परिवार, समाज और देश मजबूत होगा। इसलिए बीमारी होने पर महिलाओं के उपचार में लापरवाही नहीं बरती जानी चाहिए।

सभी नदियां अपने अनुकूल मार्गों से प्रवाहित होती हैं। अन्त में उसी समुद्र में समाहित हो जाती हैं, जहां से उनका आगमन होता है। सागर में विलीन होकर वे यह नहीं जानती कि मैं अमुक नदी हूं। जीव भी सत् तत्त्व से प्रकट होकर नहीं जानता कि मेरा आगमन सत् से हुआ है।

बीज में है सृष्टि

गुलाब कोठारी
प्रधान संपादक
पत्रिका समूह
@patrika.com

शरीर ही ब्रह्माण्ड

सोते समय पुरुष सत् से युक्त हो जाता है। अपने स्वरूप में रहता है। मन भी चारों ओर भ्रमण करता हुआ प्राण का ही आलम्बन ग्रहण करता है। जब भोजन करते हैं तो खाए हुए अन्न को जल ही ले जाता है। जल को अशनाय कहते हैं।

एक शाश्वत प्रश्न है-'मैं कौन हूं'। कृष्ण कहते हैं-अहं बीजप्रद पिता। मैं बीजप्रदाता पिता हूं। श्रुति कहती है-पिता वै जायते पुत्रो अर्थात् पिता ही पुत्र रूप में उत्पन्न होता है। यही उत्तर है। गीता पुनः प्रमाणित करती है-ममैवांशो जीवलोके...। गीता का स्पष्टीकरण भी है-

पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान्।
कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु।। (गीता 13.22)

अर्थात् प्रकृति (शरीर) में स्थित ही पुरुष (आत्मा) प्रकृति से उत्पन्न त्रिगुणी पदार्थों को भोगता है। गुणों का संग ही जीवात्मा के अच्छी-बुरी योनियों में जन्म लेने का कारण है।

पिता बीज है-मां धरती है। पिता ब्रह्म और माता माया है। दोनों मेरे स्वरूप के निर्णायक हैं। बीज में शरीर की आकृति रहती है, प्रकृति रहती है। प्रकृति बीज के स्वरूप का ही अंग है। चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब है। सौम्या है, मन प्रधाना है। चन्द्रमा भी अपने सोम से औषधियों का पोषण करता है। सूर्य काल में भी रहता तो है, किन्तु सूर्य में समाया हुआ रहता है। चन्द्रमा भी सूर्य पत्नी है। चन्द्रमा की श्रद्धा से ही मन का निर्माण होता है। चन्द्रमा हमारा पितरलोक है। जीवात्मा पुनर्जन्म के लिए यहीं से बादल-वर्षा-अन्न से गुजरता हुआ शुक्र में प्रवेश करता है। ये भी जीवात्मा के जन्म ही हैं, इन्हीं प्राकृतिक माता-पिताओं द्वारा। हम भी प्राकृतिक माता-पिता के रूप में ही भूमिका निभाते हैं। हमारे माध्यम से भी जीवात्मा इसी प्रकार आगे बढ़ता जाता है। हम जीवात्मा के रूप में स्वयं को समझ सकते हैं।

हमारे जन्म में माता-पिता तो निमित्त मात्र हैं। हमारी देह के विकास में कितने देवता अपनी भूमिका निभाते हैं। बृहदारण्यक उपनिषद् में ऋषि पति द्वारा देवों के आह्वान का विस्तार है। 'हे प्रिये! सर्वव्यापी भगवान विष्णु तुम्हारे गर्भाशय को समर्थ बनाएं, जिससे तुम श्रेष्ठ पुत्र को जन्म दे सको। भगवान त्वष्टा भावी सन्तान के अंगों को पुष्ट एवं सुन्दर बनाएं। प्रजापति मुझमें स्थित होकर तुममें वीर्याधान करें। भगवान धाता तुम्हारे अन्दर गर्भ धारण करें। उसे पोषित करें। हे देवी! तुम स्वयं सिनीवाली हो (चन्द्रमा की कलाओं को धारण करने वाली प्रतिपदा) अतः गर्भ धारण करो। अश्विनी कुमार (द्वय) स्वयं मेरे अन्दर स्थित होकर अपनी रश्मिरूपी कमलों की माला को धारण कर तुम्हारे अन्दर गर्भाधान करें।'

'दो अरणियों से अश्विनी कुमारों ने मन्थन किया था। उससे अमृत स्वरूप गर्भ (अग्नि) प्रकट हुआ था। उसी प्रकार हे देवी! उस अमृत स्वरूप को हम तुम में स्थापित करते हैं। जिससे तुम दशम मास में इसे उत्पन्न कर सको। जिस प्रकार पृथ्वी अग्नि को गर्भ रूप में धारण किए है, द्यौ इन्द्र को धारण किए है, दिशाएं वायु को धारण किए हैं, उसी प्रकार हे देवी! तुम में पुत्र रूप गर्भ को प्रतिष्ठित करता हूं। हे देवी! जिस प्रकार वायु सरोवर के जल को चंचल करता है, उसी प्रकार तुम्हारा यह गर्भ चंचल हो जाए और जरायु सहित बहिर्गमन करे। जीव का यह पथ जरायु युक्त और अवरोध रहित है। हे जीवात्मन्! तुम गर्भ आवरण सहित बाहर निकलो' (बृहदा. 6-4-23)।

'मैं इस घर में पुत्र रूप समृद्धि को प्राप्त हुआ हूं। पुत्र के घर में कभी सन्तति, सम्पत्ति की कमी न हो। मैं अपने प्राणों को तुझमें मानसिक रूप से होम करता हूं। मैंने जो कुछ न्यून/अधिक किया है, अग्नि देव मुझे दोष मुक्त करके सुहुत करें।'

यहां समझने की बात है कि पिता अपने प्राणों को पुत्र में ही होम करता है, पुत्री में नहीं। 'पुत्री के प्राण शादी के समय कन्यादान रूप में दामाद के प्राणों में होम करता है।' (बृहदा. 6-4-24)।

नवजात शिशु को घी, दही, मधु मिश्रण चटाते हैं। 'मैं तुझे भू, भुवः, स्वः में प्रतिष्ठित करता हूं।' दही अन्न का पृथ्वी अंश होता है, घृत अन्तरिक्ष का और मधु, मधु-समुद्र का। पृथ्वी का इसी समुद्र से गुजरने का काल मधुमास कहलाता है। इसके बाद माता प्रथम स्तनपान करवाती है। साथ में मंत्रोच्चार किया जाता है। 'हे देवी सरस्वती! आपका स्तन इस शिशु के लिए अक्षय दूध का भण्डार है, जो पोषण प्रदान करने वाला है। यह रत्नों की खान, सम्पत्ति प्रदाता है कल्याणकारी है। जिससे आप समस्त वरण करने योग्य पदार्थों को पोषण प्रदान करती हैं। इसे आप इस बालक को पिलाएं।'

इसके बाद शिशु की माता को अभिमंत्रित किया जाता है। 'हे देवी! तुम स्तुत्य मैत्रा वरुणी हो। तुमने वीर पुत्र को उत्पन्न किया है और हमें वीर बालक का पिता बनाया है, इसलिए तुम वीरवती होओ। इस शिशु को देखकर जन सामान्य कहे कि यह अपने और पितामह से भी श्रेष्ठ हुआ है, यह लक्ष्मी, यश और ब्रह्मवर्चस को प्राप्त कर प्रगति की पराकाष्ठा पर पहुंच गया है' (बृहदा. 6-4-28)।

हमारा आत्मा आपः (श्रद्धा-जल) तत्त्व से बनता है। इनमें माता-पिता की कोई भूमिका नहीं होती। बल्कि स्थूल शरीर तो पांचवें माता-पिता से प्राप्त होता है। चार माता-पिता के शरीरों से जीवात्मा चलता हुआ पांचवे तक- इस शरीर में आता है। सभी 33 देवता, 99 असुर प्राण निर्माण में सहायक होते हैं। आदित्य प्राण रूप है- एनर्जी है, चन्द्रमा रयि या मैटर है। प्राण गतिमान चेतन तत्त्व है, रयि प्राण को विविध रूप देने में समर्थ प्रकृति है।

पंचमहाभूत, मन, वाणी, नेत्र आदि भी सब देव हैं। इस शरीर को ये ही धारण करते हैं। अतः शरीर के आश्रयदाता हैं। 'हे प्राण! आप ही प्रजापति हैं। गर्भ में आप ही निवास करते हैं। आप ही माता-पिता के समान आकृति वाले होकर जन्म लेते हैं।' (प्रश्नो. 2-7)।

प्राण की उत्पत्ति आत्मा से होती है। उसी में छाया की भाति आश्रित रहता है। प्राण मन के संकल्प के अनुसार देह में प्रविष्ट होता है। यही प्राण तैजस युक्त होकर जीव के संकल्पानुसार विभिन्न योनियों में ले जाता है।

सभी नदियां अपने अनुकूल मार्गों से प्रवाहित होती हैं। अन्त में उसी समुद्र में समाहित हो जाती हैं, जहां से उनका आगमन होता है। सागर में विलीन होकर वे यह नहीं जानती कि मैं अमुक नदी हूं। जीव भी सत् तत्त्व से प्रकट होकर नहीं जानता कि मेरा आगमन सत् से हुआ है। किसी भी बीज को तोड़ने से भीतर कुछ दिखाई नहीं देता। किन्तु हर बीज में विशाल वृक्ष स्थिर रहता है। सम्पूर्ण जगत् का भी अणु रूप सूक्ष्म जगत् है। वही सत्य है, वही हम हैं।

सोते समय पुरुष सत् से युक्त हो जाता है। अपने स्वरूप में रहता है। मन भी चारों ओर भ्रमण करता हुआ प्राण का ही आलम्बन ग्रहण करता है। जब भोजन करते हैं तो खाए हुए अन्न को जल ही ले जाता है। जल को अशनाय कहते हैं। जल के द्वारा ही शरीर रूपी अंकुर प्रकट होता है। (छान्दो. 6-8-3)। तेज अन्न रूप कर्म का मूल है। तेज रूपी कार्य का मूल सत् है। सत् ही सब प्राणियों की प्रतिष्ठा है। प्यासा व्यक्ति जल ग्रहण करता है, तब तेज ही अन्दर ले जाता है। अतः शरीर को जलरूपी मूल से प्रकट हुआ कहा है। अन्त समय में वाणी मन में, मन प्राण में, प्राण तेज में और तेज पर-देवता में लीन हो जाता है। (छा. 6-8-6)।

क्रमशः

gulabkothari@epatrika.com

आर्ट एंड कल्चर

शिक्षा में मिले सीखने, देखने और परखने का मंत्र

अरसा पहले कला मर्मज्ञ मुकुंद लाठ जी के घर पर पंडित जसराज जी से संवाद हुआ था। याद है, उन्होंने तब सिखिया, दिखिया और परखिया शब्दों का प्रयोग किया था। यह संयोग ही है कि दूरदर्शन के कार्यक्रम 'संवाद' में प्रेरणा श्रीमाली ने भी इस बार सीखने, देखने और परखने के शब्दों में कथक सीखने का मंत्र दिया। मुझे लगता है कि कला–शिक्षा का मूल मर्म यही है। हमारे यहां पाठ्यक्रमों में कलाओं की सैद्धान्तिकी का समावेश तो होता रहा है, परन्तु उसकी व्यावहारिकी प्रायः वहां गौण है। यह वह विकट दौर भी है, जब अक्सर यह समाचार पढ़ने को मिलता है कि फलां प्रतियोगी परीक्षा की तैयार करते किसी विद्यार्थी ने आत्महत्या कर ली। दिशा-भ्रमित होकर ऐसे कदम उठाए जाते हैं परन्तु कलाएं इस भ्रम का निवारण कर सकती हैं, बशर्ते उनके लिए शिक्षण संस्थाओं में स्थान बनें। कलाएं सृजन की सारी संभावनाओं के द्वार खोल उमंग, उत्साह से लबरेज करती हैं। स्वतंत्रता से कुछ सोचने की दृष्टि देती हैं। यह विडम्बना ही है कि संगीत, नृत्य, नाट्य चित्र, मूर्ति, वास्तु आदि के प्रदर्शन के जतन तो हमारे यहां बहुत हैं, परन्तु उनके प्रति रसिकता जगाने की दृष्टि गुम सी है। कहा गया है, रंजयति इति रागः। माने जो मन को रंग दे, वह राग है। कलाओं के इस राग से ही जीवन के प्रति अनुराग जगता है। शिक्षा की बड़ी जरूरत इस समय यही है।

डॉ. राजेश कुमार व्यास
कला समीक्षक
@patrika.com

महात्मा गांधी ने कभी कहा था कि जनता से जुड़ने का जो काम राजनीति में रहकर वह कर रहे हैं, नंदलाल बोस वह कार्य अपनी कला में कर रहे हैं। चरखे के संगीत को सुनते स्वदेशी के प्रसार, आश्रम में प्रार्थना करवाने से जुड़े उनके कार्य जन-मन को जोड़ने की दृष्टि ही है। कलिंग युद्ध के बाद हुए नरसंहार को देख अशोक का जब हृदय परिवर्तित हो जाता है तो धर्म में जय की अपनी दृष्टि के प्रसार के लिए वह कलाओं का सहारा लेता है। कोशाम्बी, वैशाली, लाठ-लौर, सारनाथ और अन्य धर्म-स्तूपो पर मूर्ति-अलंकरणों में खुदी धर्मलिपि से ही धर्म की उसकी शिक्षाओं का प्रसार हुआ। मुझे लगता है कि शिक्षा में सृजन से दूरी ही आज के दौर की सबसे बड़ी समस्या है। बढ़ती आत्महत्याओं का कारण भी यही है।

कलाओं की शिक्षा सिर्फ पाठ्यक्रमों से नहीं मिल सकती। कलाओं के लिए तो परिवेश से सीखने, देखने और परखने की दृष्टि महत्त्वपूर्ण है। कहने को देशभर में संग्रहालयो में प्राचीन धरोहर से जुड़ी महती वस्तुएं संजोई हुई हैं, परन्तु माहौल उत्साहजनक नहीं है। अजन्ता, एलोरा, कोर्णाक, खजुराहो के शिल्प अद्भुत हैं परन्तु वहां पर्यटन प्रमुख है। असल में कलाओं को देखने-समझने और उसके अंतर आलोक में जाने के लिए कहीं कोई पहल नहीं है। हम विद्यार्थियों को देखने, सुनने और गुनने के लिए प्रेरित करें।

बतंगड़

...सुहाना सफर और ये 'मंजिल' कठिन

हरीश पाराशर

हाथों-हाथ फैसला हो गया कि इस बार जोखिम नहीं लेनी है 'बॉस' को। पिछली बार याद करो, किस तरह से हिचकोले खाती बावन सीटर बस में 'राम धाम की भूमि' से सिर्फ एक ही सवारी बैठ पाई थी? इनकी सवारियां तो बावन सीटर बस में ही आ गईं और वहां 'फूल वालों' के नाम से न जाने कहां-कहां से प्लेन उड़े कि एक ही झटके में 303 सवारियां संसद मार्ग तक पहुंचा दी गई थीं। कहते हैं कि उधर 'पायलट' काफी होशियार हैं। इतने होशियार कि इस बार तो एक सवारी पहले ही संसद के बाहर उतार दी। जोखिम पहले से कम नहीं। सबको पता है कि पिछली बार 'बहूरानी' ने 'बॉस को संसद मार्ग तक पहुंचने से रोकने की कोशिश की थी। वे तो अपनी बस दक्षिण से होते हुए निकाल लाए, इसलिए संसद पहुंचने में कामयाब हो गए। संसद मार्ग तक पहुंचने का यह सफर इतना आसान नहीं, जितना समझा जा रहा है। वहां 'बड़ी कुर्सी' पर कौन बैठेगा, इसे तय करने का फार्मूला संख्या बल है। जो खुद या किसी से 'मिलकर' 272 सवारियां यहां तक पहुंचाएगा, वही बड़ी कुर्सी की शोभा बढ़ाएगा। मौका पूरे पांच साल बाद मिला है, इसलिए कोई चूकना नहीं चाहता। सबने अपने-अपने 'वाहन' चारों दिशाओं में दौड़ा दिए हैं। संसद मार्ग जाने वाली पात्र सवारियों का चयन 'जनता' को करना है। इसलिए सब डरे हुए हैं। अब किसी ने प्लेन उड़ा रखे हैं तो किसी ने रेल-बसें लगा दी हैं, ताकि तय कोटा पूरा हो सके। वैसे मायूसी भी कम नहीं ह। उधर चिंता यह कि आर-पार की जो बातें कहते आए हैं वे पूरी होंगी या नहीं। और, चिंता इधर यह कि अस्सी वाले सूबे से कितनी सवारियां संसद मार्ग जाने लायक होंगी। चिंता की बातें तो दूसरे सूबों से भी छन-छन कर आ रही हैं पर वे बेपरवाह हैं। इधर इन्हें 'शतरंज का खिलाड़ी' बताते हुए सब-कुछ ठीक- ठाक होने का दावा किया जा रहा है। पर भाई, सब चाल पर निर्भर है। शह और मात का खेल है यह।

मौका पूरे पांच साल बाद मिला है, इसलिए कोई चूकना नहीं चाहता। सबने अपने-अपने 'वाहन' चारों दिशाओं में दौड़ा दिए हैं। पात्र सवारियों का चयन 'जनता' को करना है।

harish.parashar@epatrika.com

उत्तरप्रदेश : 1998 से 2014 तक कन्नौज पर सपा का रहा कब्जा

इत्रनगरी में पिछली बार ढहा था सपा का गढ़ अखिलेश के आने से रोचक हुआ मुकाबला

कन्नौज से

फिरोज सैफी

इत्र नगरी के नाम से मशहूर कन्नौज लोकसभा सीट इन दिनों उत्तरप्रदेश ही नहीं, बल्कि देशभर में चर्चा का विषय है। तीसरे चरण में जिन 10 लोकसभा सीटों पर 7 मई को मतदान होना है, उनमें कन्नौज सबसे हॉट सीट है। इसकी वजह यह है कि यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव यहां से चुनाव मैदान में हैं। अखिलेश यादव पहले भी इस सीट से लगातार तीन बार सांसद रह चुके हैं।

दिलचस्प बात यह भी है कि समाजवादी नेता राम मनोहर लोहिया भी यहां से एक बार सांसद रह चुके हैं। 1998 से लेकर 2014 तक लगातार इस सीट पर समाजवादी पार्टी का कब्जा रहा है। इस लोकसभा क्षेत्र में पांच विधानसभा क्षेत्र आते हैं जिनमें कन्नौज सदर, छिबरामऊ, तिर्वा, रसूलाबाद और बिधूना है। इस बार अपने गढ़ को बचाने के लिए अखिलेश यादव को खुद चुनाव में उतरना पड़ा है। वहीं भाजपा ने अपने मौजूदा सांसद सुब्रत पाठक पर दांव खेला है। पिछले चुनाव में अखिलेश यादव की पत्नी डिंपल यादव को यहां पर हार का सामना करना पड़ा था। वहीं बहुजन समाज पार्टी ने इमरान जफर को चुनाव मैदान में उतारकर अल्पसंख्यक और दलित वोटों में सेंधमारी का प्रयास किया है।

कन्नौज के मतदाताओं में यहां हो रहे चुनाव को लेकर क्या उत्सुकता है, यही जानने के लिए मैं मैनपुरी से कन्नौज के लिए बस से रवाना हुआ। करीब 2 घंटे के सफर के बाद कन्नौज बस स्टैंड पर पहुंचा। जहां पर बस का इंतजार कर रहे ईंट कारोबारी श्याम सिंह से इस सीट का हाल जाना तो उन्होंने कहा कि यहां अखिलेश के आने से मुकाबला कड़ा हो गया है, लेकिन वोट पीएम नरेंद्र मोदी के नाम पर भी पड़ेंगे। इसलिए यहां कांटे की टक्कर होना तय है। अखिलेश यादव ने सांसद और मुख्यमंत्री रहते हुए इस क्षेत्र में काफी विकास कार्य कराए हैं। लोग उनके काम को याद करते हैं, लेकिन लोगों में यह भी चर्चा है कि वे चुनाव जीत भी गए तो फिर से इस्तीफा दे सकते हैं। साल 2019 के चुनाव में भी अखिलेश यादव आजमगढ़ से सांसद चुने गए थे। बाद में उन्होंने वहां से इस्तीफा दे दिया था। अखिलेश यादव अभी विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष हैं। उन्हीं के साथ में खड़े कमलकांत दीक्षित ने कहा कि इस बार के चुनाव में उत्साह नहीं है। ऐसे में यह कहना मुश्किल है कि यहां से कौन जीतेगा। सुब्रत पाठक की भी क्षेत्र में अच्छी पकड़ है। ऐसा नहीं कह सकते कि यह सीट इस बार सपा के लिए आसान होगी।

कन्नौज रेलवे स्टेशन के पास सरायमीरा इलाके में चाय की दुकान करने वाले घनश्याम राठौड़ का कहना है कि वे भाजपा को वोट देते आए हैं, लेकिन कन्नौज में तो समाजवादी पार्टी ही चुनाव जीतेगी। अखिलेश ने मुख्यमंत्री रहते हुए यहां पर विकास के खूब काम कराए हैं। भाजपा के जो मौजूदा सांसद हैं, उन्होंने 5 साल कोई काम नहीं किया। उनको लेकर लोगों में आक्रोश है। उनका कहना है कि अगर अखिलेश की जगह सपा से कोई दूसरा उम्मीदवार होता तो भाजपा के लिए आसानी होती। लेकिन अखिलेश के चुनाव मैदान में आने से मुकाबला दिलचस्प हो गया है।

इत्र व्यवसायी मोहम्मद शानू ने कहा कि कौन किसको वोट करेगा कुछ नहीं कह सकते हैं। अगर अखिलेश यादव के काम पर वोट पड़े तो समाजवादी पार्टी जीतेगी और पीएम मोदी के नाम पर वोट पड़े तो फिर भाजपा ही जीतेगी।

इत्र की दुकान चलाने वाले अनमोल तिवारी ने कहा कि युवा तो अखिलेश यादव के साथ हैं अखिलेश ने खूब काम कराए हैं, यहां राम मंदिर, अनुच्छेद 370, कॉमन सिविल कोड जैसे मुद्दों पर जनता वोट करने वाली नहीं है। लोगों के सामने रोजगार सबसे बड़ी समस्या है और जो रोजगार की बात करेगा, उसे ही वोट करेंगे। कन्नौज के मेहंदी घाट गांव के निवासी मनीष शर्मा ने कहा कि यूपी सरकार के राज में कानून व्यवस्था बेहतर है, इसलिए वोट बीजेपी को ही देंगे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि प्रत्याशी कौन है। कन्नौज शहर से सटे जसौली और हाजीगंज के गांवों में एक वर्ग के लोगों ने खुलकर तो बात नहीं की, लेकिन बातों से स्पष्ट है कि जो भाजपा को हराएगा उसे वोट करेंगे। हालांकि इस सीट पर किसी एक जाति की बहुलता नहीं है। यहां यादव, दलित, शाक्य, राजपूत और ब्राह्मण और मुस्लिम मतदाता बराबर हैं।

सपा एमवाइ फॉर्मूले के सहारे

समाजवादी के पार्टी के तमाम कद्दावर नेताओं ने यहां डेरा डाल रखा है, घर-घर जाकर लोगों से वोट की अपील की जा रही है। सपा के शासन में कराए गए विकास कार्यों को गिनाकर सपा के नेता जनता से वोट मांग रहे हैं। हालांकि यहां सपा को अपने एमवाइ (मुस्लिम-यादव) फार्मूले पर भरोसा है। वहीं भाजपा राज्य और केंद्र सरकार के कामकाज, बेहतर कानून व्यवस्था और राष्ट्रवाद के मुद्दे पर वोट मांग रही है।

हमारा वोट, हमारा अधिकार

लोकतंत्र के उत्सव में रहे त्योहार सा उत्साह

डॉ. बिंदु टाक

लोकतंत्र का उत्सव चल रहा है। इस अवसर पर किसी त्योहार जैसा ही उत्साह होना चाहिए। मतदान का तीसरा चरण सात मई को होगा। पहले चरण में जब मतदान हुआ था तब मतदान प्रतिशत कम रहा था। दूसरे चरण में बढ़ा जरूर लेकिन अपेक्षा के अनुरूप नहीं। ऐसे में सवाल यही उठता है कि आखिर हमारा मतदाता वोट डालने के लिए घरों से बाहर क्यों नहीं निकलना चाह रहा। वोट नहीं देकर हम 'अब पछताए क्या होत, जब चिड़िया चुग गई खेत' वाली कहावत का उदाहरण क्यों बनना चाहते हैं। सभी की सोच सभी का मकसद अलग-अलग होता है। काम करने का तरीका भी अलग होता है, लेकिन लोकतंत्र का महत्त्व तो समझना चाहिए और वोट के अधिकार प्रयोग करना चाहिए। हमारे सपनों को पूरा करने में जो हमारा साथ दे, वही हमारा नेता होना चाहिए। अपना नेता चुनने के लिए सभी मतदाताओं को वोट देना चाहिए। मतदान के जो आंकड़े सामने आ रहे हैं, उनसे तो ऐसा ही लगता है कि कुछ लोग सो रहे हैं, जबकि यह वक्त सोते रहने का नहीं, जागने और जगाने का है। वोट किसी के पीछे रहकर या आगे रहकर नहीं बल्कि अपनी सोच एवं क्षमता से दें। सीधे तौर पर भेड़चाल नहीं होनी चाहिए। हम किसे वोट दे रहे हैं या किसे वोट देना चाहिए, यह हमारी सोच पर निर्भर होना चाहिए न कि किसी दूसरे की सोच पर।

आपकी बात

आरक्षण की समीक्षा जरूरी

आरक्षण हाशिए पर खड़े वर्ग को समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए अस्थाई व्यवस्था थी, किंतु राजनीति के कारण यह प्रावधान स्थायी नजर आने लगा है। आरक्षण ने जातियों की खाई को पाटने के स्थान पर और अधिक गहरा कर दिया है। समाज और सभी राजनीतिक दलों के इस प्रावधान की समीक्षा करनी चाहिए।

-आजाद पूरण सिंह राजावत, जयपुर

आरक्षण का आधार जाति न हो

आरक्षित जातियों के कुछ ही लोगों को फायदा हो रहा है। कोई भी दल आरक्षण को समाप्त करने की बात नहीं कह सकता क्योंकि उसे इन जातियों के वोटों से हाथ धोना पड़ सकता है। आज भी देश में पिछड़ापन और गरीबी है। आरक्षण आय के आधार पर होना चाहिए, न कि जाति के आधार पर।

-खुशबू कंवर, जोधपुर

आज का सवाल

महिलाओं की सेहत में सुधार कैसे हो?

कल का सवाल था, आरक्षण पर बार-बार विवाद क्यों होता है?

ईमेल करें
edit@epatrika.com

वोट बैंक बनाने का हथियार

राजनीतिक दल अपना वोट बैंक बनाने के लिए आरक्षण का इस्तेमाल करते हैं। आरक्षण जाति के आधार पर न होकर आर्थिक आधार पर होना चाहिए, क्योंकि जातिगत आरक्षण से समाज में विषमताएं पनपती हैं। जाति के आधार पर मिल रहे आरक्षण की वजह से धनी परिवारों को भी आरक्षण का लाभ मिल जाता है, जो ठीक नहीं है।

-मुकेश भटनागर, भिलाई, छत्तीसगढ़

वंचित वर्ग को ही मिले लाभ

आरक्षण को लेकर काफी राजनीति होती है। जाति के आधार पर आरक्षण देने से वोट बैंक तैयार होता है। विभिन्न जातियों को आरक्षण देकर खुश करने के चक्कर में अब पचास प्रतिशत की सीमा भी पार होने लगी है। आरक्षण के जरिए वोट बटोरने की राजनीति बंद होनी चाहिए और वंचित वर्ग को ही इसका लाभ मिलना चाहिए।

-ललित दुबे, रतलाम, मप्र

https://t.me/AllNewsPaperPaid

कल्पमेधा

जो शक्ति के बल पर विजय प्राप्त करता है वह अपने शत्रु पर अपूर्ण विजय ही प्राप्त करता है।

- मिल्टन

प्रत्याशी का चेहरा

अब यह उजागर है कि प्रत्याशी के चुनाव में राजनीतिक दलों से साफ-सुथरी छवि का ध्यान रखने की चाहे जितनी अपेक्षा और मांग की जाए, पर उनका मकसद एक ही होता है। वे उसी को उम्मीदवार बनाते हैं, जिसके जीतने की संभावना अधिक होती है, चाहे वह आपराधिक छवि का ही क्यों न हो। माना जा रहा था कि भारतीय जनता पार्टी बृजभूषण शरण सिंह को चुनाव मैदान में नहीं उतारेगी। इसे लेकर उसमें ऊहापोह भी देखी जा रही थी। मगर लंबी जद्दोजहद के बाद आखिरकार उसने उनकी जगह उनके बेटे करण भूषण सिंह को टिकट दे दिया। बृजभूषण शरण सिंह महिला पहलवानों के यौन शोषण के आरोप में अदालत की सुनवाइयों का सामना कर रहे हैं। उनकी वजह से भाजपा को खासी किरकिरी झेलनी पड़ी। यहां तक कि अंतरराष्ट्रीय कुश्ती संघ ने भी बृजभूषण शरण सिंह पर अंगुली उठाई थी, जिसके चलते उन्हें कुश्ती महासंघ के चुनाव से अलग रहना पड़ा। मगर उन्होंने कुश्ती महासंघ पर अपना दबदबा कायम रखने की नीयत से अपने एक करीबी को अध्यक्ष का चुनाव लड़ाया और उसे ही विजय भी मिली। उस पर भी अंगुलियां उठनी शुरू हुईं, तो खेल मंत्रालय को आखिरकार बृजभूषण शरण सिंह के करीबी को अध्यक्ष पद से हटाना पड़ा।

यह समझना मुश्किल है कि भाजपा के सामने ऐसी क्या मजबूरी थी, जो उसने बृजभूषण शरण सिंह से अपना पल्ला छुड़ाना उचित नहीं समझा। उनकी जगह उनके बेटे को टिकट दे दिया। इससे बृजभूषण शरण सिंह को लेकर उठ रहे सवाल शांत नहीं हो जाएंगे। इसके पीछे एक वजह तो यह बताई जाती है कि उत्तर प्रदेश में राजपूत समाज लगातार भाजपा पर आरोप लगा रहा था कि वह राजपूत समाज के प्रत्याशियों का टिकट काट रही है। दूसरा कारण यह हो सकता है कि बृजभूषण का टिकट कटने से उनके बगावत करने और उस सीट से भाजपा के हारने की आशंका हो सकती थी। मगर इस तरह समझौता करके भाजपा अगर अपनी एक सीट बचा भी ले, तो इससे उसके सिद्धांतों पर सवाल तो उठेंगे ही। लंबे समय से मांग की जा रही है कि राजनीतिक दल अपने प्रत्याशियों का चयन करते हुए उनकी छवि का ध्यान रखें। निर्वाचन आयोग ने भी कहा था कि राजनीतिक दल आपराधिक छवि के लोगों को चुनावी मैदान में उतारने से परहेज करें। अगर वे किसी ऐसे प्रत्याशी को टिकट देती हैं, तो उन्हें इसका स्पष्टीकरण देना होगा कि आखिर उन्होंने ऐसा क्यों किया, क्या उसकी जगह कोई और प्रत्याशी नहीं मिला। बृजभूषण शरण सिंह की जगह उनके बेटे को टिकट देकर बेशक भाजपा इस जवाबदेही से बच गई है, पर यह तो जाहिर है कि वह चुनाव उनका बेटा नहीं, एक तरह से वे खुद लड़ेंगे।

बृजभूषण शरण सिंह पर बेशक अभी आरोप सिद्ध नहीं हुए हैं, मगर जिस तरह महिला पहलवानों ने उनके खिलाफ साक्ष्य प्रस्तुत किए और जांचों से भी उनके खिलाफ तथ्य सामने आए, उससे उन्हें फिलहाल निरपराध नहीं कहा जा सकता। यह भी छिपी बात नहीं है कि उनके खिलाफ आंदोलन पर उतरी महिला खिलाड़ियों को किस तरह दमन के जरिए आंदोलन से हटाया गया। इन सबको लेकर लगातार सरकार के रवैये पर सवाल उठते रहे हैं। इसके बावजूद उनकी जगह उनके बेटे को टिकट देकर भाजपा ने एक तरह से एक नए विवाद को गले लगा लिया है। इसे लेकर विपक्षी दलों और महिला खिलाड़ियों की नाराजगी झेलनी पड़ सकती है।

बुजुर्गों की फिक्र

हमारे देश में सामान्य तौर पर बुजुर्गों की अहमियत है। सभी अपने घर के बड़े-बूढ़ों का खयाल रखने की कोशिश करते हैं। मगर उनकी सामाजिक सुरक्षा को लेकर अपेक्षित नीतिगत व्यवस्था की कमी रही है। खासकर ढलती उम्र में उनके स्वास्थ्य का खयाल रखने के लिए बीमा जैसी व्यवस्था में भी अभी तक उनके लिए पर्याप्त जगह नहीं रही है। यह बेवजह नहीं है कि बुजुर्गों के लिए स्वास्थ्य बीमा के मामले में भारत एशिया-प्रशांत देशों में सबसे निचले पायदान पर है। 'एजिंग वेल इन एशिया' शीर्षक से गुरुवार को जारी एशियाई विकास बैंक की एक रपट में बताया गया है कि भारत को तेजी से बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने और वृद्धि की रफ्तार बनाए रखने के लिए सबको स्वास्थ्य बीमा के दायरे में लाना वक्त का तकाजा है। हालांकि गरीब लोगों को नकदी रहित स्वास्थ्य बीमा देने वाली आयुष्मान भारत जैसी योजना आने के बाद से बुजुर्गों के लिए स्वास्थ्य से संबंधित सुविधाओं का विस्तार हुआ है, लेकिन इस ओर विशेष ध्यान देना समाज और देश के हित में है, क्योंकि अधिक उम्र वाले लोगों की मौजूदगी से मिलने वाला 'लाभांश' ज्यादा हो सकता है।

दरअसल, बदलती स्थितियों में बुजुर्गों को अपनी सेहत के लिहाज से ज्यादा संसाधनों की जरूरत पड़ती है। परिवार और समाज के अतिरिक्त व्यवस्थागत ढांचे में कुछ ऐसे नियम-कायदे हैं, जिनमें कई बार बुजुर्गों को या तो उपेक्षा झेलनी पड़ती या फिर उन्हें कमतर सुविधाएं मिलती हैं। मसलन, स्वास्थ्य के क्षेत्र में बीमा के मामले में देखें तो ज्यादा उम्र के लोगों के लिए जैसी शर्तें रखी गई हैं, उसमें उनका कोई विशेष लाभ नहीं मिल पाता। जबकि बढ़ती उम्र के साथ सेहत के लिहाज से कई ऐसी स्थितियां पैदा होती हैं, जिनमें उन्हें स्वास्थ्य बीमा की सबसे ज्यादा जरूरत पड़ती है। हालांकि अब बीमा नियामक एवं विकास प्राधिकरण ने बुजुर्गों को भी बीमा खरीदने की सुविधा प्रदान कर दी है। पर स्वास्थ्य बीमा का खर्च कम और उनकी पहुंच में होना चाहिए। इस संदर्भ में देखें तो एशियाई बैंक विकास की ताजा रपट नीतिगत स्तर पर ठोस पहल की जरूरत को रेखांकित करती है।

कचरे का भार ढोते गरीब देश

पश्चिमी देशों का दक्षिण के देशों के प्रति गैर-बराबरी की एक स्याह हकीकत का पता चला कि कैसे विकसित देश अपने कूड़े का निस्तारण खुद न कर अंतरराष्ट्रीय समझौतों को धता बताते हुए उसे गरीब और विकासशील देशों को निर्यात करते आए हैं।

कुशाग्र राजेंद्र

मनीला बंदरगाह वर्ष 2013 से 2019 के मध्य तक कनाडा और फिलिपींस के बीच एक अनोखे विवाद के केंद्र में रहा। कनाडा ने पुनर्चक्रित प्लास्टिक अपशिष्ट के नाम पर घरेलू कचरे से भरे 103 बड़े 'कंटेनर' फिलिपींस भेजे थे। फिलिपींस को जब इस घपले का एहसास हुआ तो उसने कहा कि कनाडा पुनर्चक्रित प्लास्टिक अपशिष्ट के बदले घरेलू कूड़ा भेज कर अंतरराष्ट्रीय नियमों की अनदेखी कर रहा है, वह अपना घरेलू कूड़ा वापस ले। इस मामले ने इतना तूल पकड़ा कि फिलिपींस ने कनाडा के खिलाफ युद्ध तक की धमकी दे डाली थी। आखिरकार छह साल बाद कनाडा को अपने 103 में से 69 कंटेनर वापस लेने पड़े। दोनों देशों के बीच इस खींचतान से पश्चिमी देशों का दक्षिण के देशों के प्रति गैर-बराबरी की एक स्याह हकीकत का पता चला कि कैसे विकसित देश अपने कूड़े का निस्तारण खुद न कर अंतरराष्ट्रीय समझौतों को धता बताते हुए उसे गरीब और विकासशील देशों को निर्यात करते आए हैं।

गौरतलब है कि कनाडा और फिलिपींस दोनों ही खतरनाक अपशिष्ट पदार्थों के प्रसार और निस्तारण नियंत्रण के लिए हुए 'बेसल समझौते' का हिस्सा हैं। कचरे के तथाकथित वैश्विक व्यापार का एक सिरा चीन की अचानक आर्थिक प्रगति से जुड़ता है, जब चीन नब्बे के दशक में उत्पादक देश बन कर उभर रहा था। चीन से हर किस्म का उत्पाद 'शिपिंग कंटेनरों' में भर कर अमेरिका और यूरोप भेजा जा रहा था। वापसी में खाली कंटेनरों में पश्चिमी देशों ने अपने घरेलू और अन्य कूड़े-कचरे को भर कर चीन भेजना शुरू किया। खाली लौटते कंटेनरों को भर कर वापस भेजना आर्थिक रूप से लाभदायी भी था। पश्चिम से आने वाले मुफ्त कूड़े को शुरू-शुरू में चीन ने संसाधन के रूप में देखा और जितना पुनर्चक्रित कर सकता था, उससे नए उत्पाद बना लेता था। वहीं अमीर देशों के लिए स्थानीय कूड़े-कचरे के निस्तारण का यह एक सस्ता विकल्प मिल गया, इस तरह उनको अपने कूड़े से छुटकारा मिल जाता था। मगर इसका नतीजा यह हुआ कि अमीर देशों में कचरा फैलाने की प्रवृत्ति बड़ी तेजी से बढ़ी। पश्चिमी देशों में नब्बे का दशक आते-आते प्लास्टिक की खपत बेतहाशा बढ़ गई, जिसे दक्षिण के गरीब विकासशील देशों की तरफ भेजा जाने लगा।

एक अनुमान के मुताबिक अमेरिका में एक टन घरेलू कचरे के निस्तारण में औसतन जितना खर्च आता है उससे आधे खर्च में, वही कचरा, खाली कंटेनरों के जरिए सुदूर गरीब देशों में ठिकाने लगा दिया जाता है। एक जर्मन आनलाइन पोर्टल के मुताबिक 2020 में एक टन घरेलू कूड़े के निस्तारण का खर्च 85 डालर आता था, जो मात्र 35 डालर के भाड़े में गरीब देशों तक पहुंचा दिया जाता था। चीन के साथ-साथ दक्षिण के अधिकांश देश, जिनमें अफ्रीका और एशिया के देश मुख्य रूप से शामिल हैं, सस्ते मजदूर और कम कठोर पर्यावरणीय नियम-कानून के कारण पश्चिम के कूड़े के व्यापार का हिस्सा बनने लगे। भारत और बांग्लादेश पुराने जहाजों के निस्तारण के लिए पसंदीदा जगह बने।

वर्ष 2018 तक चीन विश्व के कचरा निस्तारण या व्यापार का मुख्य केंद्र था, जहां अमेरिका और यूरोप से आने वाले कूड़े के निस्तारण के लिए कुछ हद तक आधारभूत संरचना विकसित हो चुकी थी। फिर भी इतनी भारी मात्रा में कचरे का निस्तारण, जिसमें अधिकांश एक बार इस्तेमाल किया जाने वाला प्लास्टिक होता है, जो पुनर्चक्रण के लायक भी नहीं होता, उससे पर्यावरण और स्थानीय लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्परिणाम को ध्यान में रखते हुए बाद में चीन ने चौबीस प्रकार के कचरे के आयात पर पूर्ण रूप से रोक लगा दी। इसका परिणाम यह हुआ कि पश्चिमी देशों में कचरे के निस्तारण के लिए अफरा-तफरी का माहौल बन गया और उनके कचरे से लदे जहाज नए ठिकाने ढूंढ़ने लगे।

> एक अनुमान के मुताबिक अमेरिका में एक टन घरेलू कचरे के निस्तारण में औसतन जितना खर्च आता है उससे आधे खर्च में, वही कचरा, खाली कंटेनरों के जरिए सुदूर गरीब देशों में ठिकाने लगा दिया जाता है। एक जर्मन आनलाइन पोर्टल के मुताबिक 2020 में एक टन घरेलू कूड़े के निस्तारण का खर्च 85 डालर आता था, जो मात्र 35 डालर के भाड़े में गरीब देशों तक पहुंचा दिया जाता था। चीन के साथ-साथ दक्षिण के अधिकांश देश, जिनमें अफ्रीका और एशिया के देश मुख्य रूप से शामिल हैं, सस्ते मजदूर और कम कठोर पर्यावरणीय नियम-कानून के कारण पश्चिम के कूड़े के व्यापार का हिस्सा बनने लगे।

संयोग से कचरे के नए ठिकाने चीन के पड़ोस में ही मिलने लगे। धीरे-धीरे दक्षिण पश्चिम एशिया, पश्चिम के कचरे का नया ढलाव बनने लगा, जिसमें मलेशिया, इंडोनेशिया, लाओस, म्यांमा, विएतनाम, फिलिपींस आदि देश शामिल हैं। हालांकि इस प्रवृति के शिकार यूरोप के गरीब देश, पूर्वी यूरोप के देश भी हैं। समृद्ध यूरोप का कूड़ा पूर्वी यूरोप में भी डाला जाने लगा। 'साइंटिफिक अमेरिका' के मुताबिक अमेरिका का एक आम आदमी भारत के आम आदमी के मुकाबले पैंतीस गुना ज्यादा प्रकृति को नुकसान पहुंचाता और चीन के आम आदमी के मुकाबले 53 गुना ज्यादा संसाधनों का दोहन करता है।

जितना ज्यादा संसाधनों का दोहन होता है, उसी हिसाब से कचरा भी पैदा होता है, पर उसके निस्तारण का बोझ गैरकानूनी तरीके से लैटिन अमेरिका, अफ्रीका और एशिया के देशों पर डाल देने की परंपरा विकसित हुई है, जहां कचरे के निस्तारण के लिए न्यूनतम आधारभूत ढांचे तक का नितांत आभाव है। ऐसा नहीं कि कचरे के व्यापार के लिए कोई अंतरराष्ट्रीय नियम-कानून नहीं है। बेसल समझौते के तहत केवल ऐसे ही कचरे को एक देश से दूसरे देश में ले जाने की अनुमति है, जो पुनर्चक्रित होने लायक, दुबारा इस्तेमाल में आने वाला, जहरीला और पर्यावरण के लिए हानिकारक न हो। इसके बावजूद यह गोरखधंधा जारी है। अमेरिका एकमात्र देश है, जो बेसल समझौते को नहीं मानता।

'कचरा उपनिवेशवाद' शब्दावली का उपयोग पहली बार 1989 के 'बेसल समझौते' में अफ्रीकी देशों द्वारा अपनाए जा रहे इसी विकृत और गैर-बराबरी वाले रवैए के लिए किया गया। अमीर देशों का कचरा दक्षिण के देशों में थोड़ा-बहुत छांट कर अक्सर जला दिया, नदियों में बहा या कचरापट्टी में डाल दिया जाता है। इससे जल, भूमि और वायु के गंभीर प्रदूषण के बाद स्थानीय लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। एक प्रकार से पश्चिम ने अपने कार्बन उत्सर्जन को गरीब देशों के जिम्मे डाल दिया है। अमीर देश अपने असीमित संसाधनों के दोहन का लाभ तो खुद लेते हैं, पर उससे उपजे लगभग हर दुष्परिणाम को बड़ी चालाकी से गरीब देशों के हिस्से डाल देते हैं।

यह प्रवृत्ति कोई नई नहीं है। औद्योगिक क्रांति के बाद उपजी पश्चिम की औपनिवेशिक मानसिकता इसके मूल में है। यह प्रवृत्ति जलवायु और पर्यावरण के संकट के वक्त एक नए रूप में सामने आई है, जो वैश्विक स्तर के लगभग हर जलवायु या पर्यावरण से जुड़े समझौते में दिख भी रही है। हालांकि दक्षिण के देश अब इस प्रवृत्ति का पुरजोर विरोध अंतरराष्ट्रीय समझौते में कर रहे हैं और लामबंद भी हो रहे हैं, ताकि अमीर देशों की गैर-बराबरी और नैतिक रूप से विकृत व्यस्था को उजागर किया जा सके। इस कड़ी में भारत ने अपनी अध्यक्षता में ब्रिक्स के अन्य देशों के साथ मिल कर दक्षिण के देशों का पक्ष प्रभावी ढंग से रखा है, जिसमें पिछले वर्ष जी-20 समूह में अफ्रीकी संघ को सदस्यता दिलाना एक महत्त्वपूर्ण प्रगति है।

दिखावे का रोग

चंदन कुमार चौधरी

जेब खाली है, लेकिन समाज के लोग, रिश्ते-नातेदार क्या सोचेंगे, इसकी चिंता कुछ लोगों को सताए जा रही है। ऐसे लोग सोच नहीं पा रहे हैं कि उनके यहां जो काम है, वह सामान्य तरीके से करें या समाज में लोगों की परवाह करते हुए दिखावा करते हुए करें। दिखावे के चक्कर में रुपया ज्यादा खर्च होगा और जो काम है, वह बहुत कम खर्च में हो जा सकता है। मगर क्या करें कि आज की तारीख में लोगों के लिए दिखावा ज्यादा जरूरी हो गया है। सामान्य तरीके से कोई काम कराने के बजाय जिसे देखो वही दिखावा करने में लगा हुआ है। दिखावे के इस शौक की सीमा आखिर कहां है? पड़ोस के घर में जब से एक सामाजिक काम होना तय हुआ था, तब से उस घर के लोगों से काम के कदम-कदम पूछे जा रहे थे। यह भी पूछा जा रहा था कि वह काम साधारण तरीके से किया जाएगा या शानो-शौकत के साथ। उस घर के व्यक्ति ने बताया कि काम साधारण तरीके से किया जाए, तो उसके बाद लोगों के हाव-भाव बदल गए और उनकी टीका-टिप्पणियों में अंतर आ गया। लोग बताने लगे कि आजकल तो साधारण से साधारण लोग भी 'अच्छे से' काम करते हैं, और आप तो समाज के गणमान्य व्यक्ति हैं। अगर आप ही ऐसे साधारण तरीके से करेंगे तो फिर दूसरे लोग क्या करेंगे! लोगों का विचार सुनने के बाद उस घर के लोगों के दिमाग में अपने खानदान और पूर्वजों की शान की याद उमड़ने-घुमड़ने लगी। उनके नाम के 'कीर्तिमान' याद आने लगे। उसके बाद आपस में यह बात हुई कि अगर हम कुछ नहीं करेंगे तो हमारी मान-मर्यादा क्या रह जाएगी। पहले की शानो-शौकत के बरक्स आज नौबत कर्ज लेने की थी, मगर घर के लोग इसके लिए तैयार हो गए। उन्हें समाज में रहने के लिए दिखावे का रास्ता अपनाना जरूरी लगा।

यह मामला एक उदाहरण भर है। आज की तारीख में हमारे इर्द-गिर्द इस तरह के हजारों लोग हैं, जो स्वेच्छा से या मजबूरी में दिखावा करते हैं। उन्हें लगता है कि अगर वे ऐसा नहीं करेंगे तो उन्हें लंबे समय तक आसपास के लोगों की आलोचनाएं सुननी पड़ेंगी। ऐसे में वे कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहते हैं।

जबकि यह समझने की बात है कि दिखावा और उद्देश्य की पूर्ति, दो अलग-अलग चीज है। हर किसी के घर में समय-समय पर कोई न कोई काम होता रहता है। लोगों की माली हालात जैसी भी हो, लेकिन ज्यादातर कामों पर दिखावा हावी होता है। हालांकि अगर हम अपनी जरूरत को समझें और सिर्फ काम पूरा करने उद्देश्य की पूर्ति पर जोर दें तो बहुत कुछ बदल सकता है। इसके लिए सोच में बदलाव की जरूरत है।

जब हम किसी के यहां जाते हैं तो उसके बारे में अगले कुछ समय तक हमारे मनो-मस्तिष्क में बातें चलती रहती हैं। अगर हम उनका जीवन वैभव या विलासितापूर्ण देखते हैं तो हम भी उन्हीं की तरह जीना चाहते हैं। मन ही मन हम तुलना करने लगते हैं। हमें लगता है कि हम भी उनके जैसा बनें। उनके घर में कोई सामान देखा तो अपने घर में भी वैसा ही चाहते हैं। यह सामाजिक हैसियत का विषय हो जाता है।

इस चक्कर में कई लोगों को काफी परेशानी उठानी पड़ती है और परिवार में खटपट भी होती है। लोग दूसरे को बताते हैं कि हमारे पास वह सामान है और मैंने वह वहां से लिया है। उसकी यह खासियत है... कीमत इतनी है। हो सकता है कि जिस व्यक्ति के पास वह सामान है, उसे उसकी जरूरत होगी। जिसके पास वह नहीं है, उसे उसकी जरूरत नहीं होगी। सिर्फ किसी के घर में कोई सामान देख कर बिना जरूरत के हम वही चीज अपने लिए अलग से लेते हैं तो यह दिखावा ही है। अगर व्यक्ति अपनी हैसियत और जरूरत के हिसाब से कदम उठाए तो वह कई परेशानियों से बच सकता है।

हमारे आसपास अक्सर ऐसे लोग मिलते हैं जो बताते रहते हैं कि हमने वह सामान इतने में खरीदा है और वह उतने में। यह बताने की कोई जरूरत हो या नहीं, फिर भी वे लोगों को बताते हैं। लोग भी ऐसे लोगों की बातों को काफी ध्यान से सुनते हैं और उनकी तारीफ करते हैं। बताने वाले को शायद लगता है कि हमें अपना ऐश्वर्य का प्रदर्शन करना चाहिए और सुनने-देखने वाले को लगता है कि हमें उनका दिखावा देखना चाहिए। इसके बाद लोग सोचने लगते हैं कि अगर मेरे पास वह सामान नहीं होगा या हम उनके जैसा कपड़े नहीं पहेंगे तो शायद हमारी सामाजिक स्थिति कमतर हो जाएगी। हालांकि यह समझने की जरूरत है कि कपड़े या कोई चीज होने या नहीं होने से कोई फर्क नहीं पड़ता है। अगर फर्क पड़ता है तो समाज को चाहिए कि वह इस फर्क को समाप्त करे। कई बार तो लगता है कि यह दिखावा एक रोग है, जिसे हर हालात में बदलना चाहिए।

> दिखावे के चक्कर में लोग दूसरों के जैसा बनने की कोशिश करने लगते हैं। अपनी मौलिकता और बुनियाद भूल जाना भी उन्हें परेशान नहीं करता। जबकि जितनी कोशिश हम दूसरों के जैसा बनने की करते हैं, उतनी कोशिश अगर खुद को संवारने में करें तो ज्यादा अच्छा हो।

इस दिखावे के चक्कर में लोग दूसरों के जैसा बनने की कोशिश करने लगते हैं। अपनी मौलिकता और बुनियाद भूल जाना भी उन्हें परेशान नहीं करता। जबकि जितनी कोशिश हम दूसरों के जैसा बनने की करते हैं, उतनी कोशिश अगर खुद को संवारने में करें तो ज्यादा अच्छा हो। आखिर हम अपने हिसाब से जीवन जीना क्यों नहीं पसंद करते हैं? हम दूसरों के हिसाब से जीवन क्यों जीने लगते हैं? क्या हमारे जीवन जीने का तौर-तरीका कोई बाहरी व्यक्ति तय करेगा? यह हमें तय करना चाहिए। यह निर्धारित करने का अधिकार हमारा होना चाहिए। अगर हम ऐसा करेंगे तो हमें अंदर से खुशी मिलेगी जो बाहरी और कृत्रिम खुशी से कई हजार गुणा अच्छी होगी।

दुनिया मेरे आगे

चकाचौंध के समांतर

बोलचाल की भाषा में अक्सर लोगों को कहते सुना है कि 'गरीब होना सबसे बड़ा पाप और अपराध है'। हाल की एक खबर के मुताबिक, दुनिया का सबसे उन्नत और बलशाली देश संयुक्त राज्य अमेरिका में बेघरबार होने वालों को कानूनन 'अपराधी' घोषित कर दिया गया है। अमेरिका के ओरेगान और व्योमिंग को छोड़कर लगभग हर राज्य में बेघर होना अवैध है। बड़ी संख्या में न्यायक्षेत्र नियमित रूप से और भेदभावपूर्ण तरीके से बेघर लोगों को उन अध्यादेशों के तहत लक्षित करते हैं, जो विशेष व्यवहारों को प्रतिबंधित करते हैं। उदाहरण के लिए, फुटपाथ पर बाधा डालना, इधर-उधर घूमना, भीख मांगना, अतिक्रमण करना, डेरा डालना, घंटों तक किसी एक विशेष स्थान पर रहना, विशेष क्षेत्रों में बैठना या लेटना, सोना आदि। बेघर लोगों और भीख मांगने वाले अगर इतनी ही बड़ी समस्या हैं, तो सरकार उनके लिए घर क्यों नहीं बना देती? उनके लिए भोजन और रोजगार का व्यवस्था क्यों नहीं कर देती? दुनिया भर में जो देश हर साल करोड़ों डालर दान में दे देता है, वह अपने बेघर गरीब लोगों का तकलीफ को दूर नहीं कर सकता?

- जंग बहादुर सिंह, गोलपहाड़ी, जमशेदपुर

व्यक्तित्व की पहचान

शख्सियत का ताल्लुक रूप से कतई नहीं है। व्यक्तित्व के निखार या गढ़न में रूप बहुत मददगार नहीं होता। इसीलिए ऊंचाइयों की ओर उड़ान भरने के लिए परिभाषित तौर पर सुंदर नहीं, ताकतवर विचार और पंखों की जरूरत होती है। सारे इंसान अलग दिखते हैं, अलग होते हैं और यह विविधता उनकी पहचान है। कितने ही लोग अपनी पहचान पर नाज करते हैं। दूसरे केवल देखकर निर्णय लें और व्यक्ति इससे प्रभावित हो, यह आत्मविश्वास का मामला है। हमें जो हासिल है, उससे खुश नहीं हो पाते। सांवलों को गोरी त्वचा, तो गोरों को चमकदार त्वचा चाहिए। किसी को बालों से एतराज है कि मेरे बाल उसकी तरह सीधे क्यों नहीं हैं या काश उसकी तरह मेरा कद भी ऊंचा होता। दूसरों के रूप-रंग से हम खुद की इतनी तुलना कर बैठते हैं कि हमें खुद में अनगिनत कमियां नजर आने लगती हैं। ऐसी भावना शरीर के प्रति नकारात्मक छवि कहलाती है। व्यक्ति की पहचान उसके गुण से हो, न कि रूप से।

- योगेंद्र गौतम, उन्नाव

सहिष्णुता का सौंदर्य

भारतीय संस्कृति, संस्कृति की विकास की उस गाथा की साक्षी है जिसने मानव को विकास की एक अभूतपूर्व अवसर दिया, जिसने मानव को सर्व धर्म समभाव और सद्भाव के मूल्य दिए और न केवल उसे पुष्पित पल्लवित किया, बल्कि परिस्थिति के अनुसार सिंचित किया, संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानते हुए 'वसुधैव कुटुंबकम्' की संकल्पना से परिचय करवाया। समय के बुद्धिजीवियों द्वारा सहिष्णुता को सहानुभूति के संदर्भ में यह माना गया कि हम उन मूल्यों को अपने अंदर सृजित करें जो न केवल अपने धर्म को सर्व कल्याणार्थ बनाए, बल्कि दूसरे धर्म को सहर्ष स्वीकार करे। पर समय के साथ राजनीतिक अवसरवादिता के कारण देश में सहिष्णुता के मूल्य में इस स्तर तक गिरावट आई कि देश को बंटवारे का दंश झेलना पड़ा। आज हम सहिष्णुता के सहानुभूति पक्ष को छोड़ कर सैद्धांतिक पक्ष की ओर अधिक झुके दिखाई पड़ते हैं।

- बृजेश, प्रयागराज, उप्र

समाज के स्तंभ

वरिष्ठ नागरिक एक औपचारिक शब्द है, जिसे आधुनिक होते जनमानस ने अपनी सुविधानुसार गढ़ा है। हमने अपने विकास की यात्रा का पिछला हिस्सा इन्हीं व्यक्तियों के मजबूत कंधों पर बैठकर तय किया है। भारतीयता अपने बुजुर्गों की नियमित देखभाल का संकल्प, अपने संस्कारों एवं संस्कृति से पाती है, जिसे पीढ़ी दर पीढ़ी मजबूती के साथ आगे बढ़ना था। समय-समय पर सरकार एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं द्वारा विभिन्न सुधारात्मक कदम उठाए गए हैं। मगर वे अभी तक नाकाफी सिद्ध हुए हैं। हमने हर कार्य को प्रवृत्तिवश नापने, मापने और तोलने तक ही सीमित रखा है, जिसके अच्छे या बुरे परिणाम का फैसला लाभ-हानि से तय होता है। हमें नहीं भूलना चाहिए कि 'सम्मान' गुणवत्तापूर्ण जीवन की अनिवार्य शर्त है जिसके साथ समझौता नहीं किया जा सकता।

- जोगिंद्र भारद्वाज, दिल्ली

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

नई दिल्ली

www.readwhere.com

चिंतन

धीमा जहर ऑक्सीटोसिन से हो रहा सेहत से खिलवाड़

हम कुछ भी खाएं, पीएं, मिलावट के जहर से दूषित हैं। शुद्ध व प्राकृतिक खाद्य जैसे बीते दिनों की बात हो गई हो। दूध, फल, सब्जियां, सब जहरीले होते जा रहे हैं। आजकल अधिक दूध के लिए पशुओं में व अधिक सब्जियों व फलों के लिए सब्जी व फल में इंजेक्शन लगाए जा रहे हैं। लालच में आकर अधिक दूध के लिए गाय व भैंस को ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन धड़ल्ले से लगाए जा रहे हैं। ऐसे ही लौकी, कद्दू, तोरई जैसी हरी सब्ज़ियों को जल्दी तैयार करने के लिए सब्ज़ियों में भी ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन का इस्तेमाल किया जा रहा है। इसके दुष्प्रभाव से बच्चों में हार्मोनल परिवर्तन व दुधारू पशुओं में बांझपन का खतरा बढ़ रहा है। पशु चिकित्सकों के मुताबिक, गाय व भैंस को लगाए जाने वाले ऑक्सीटोसिन की आंशिक मात्रा दूध में आ जाती है। ऑक्सीटोसिन मिश्रित दूध जहर से कम नहीं है। ऑक्सीटोसिन के कई स्वास्थ्य संबंधी खतरे हैं। ऑक्सीटोसिन यूं तो एक प्राकृतिक हार्मोन है, जो स्तनधारी जीवों में प्रसव के बाद दूध उत्पादन के लिए स्वभाविक रूप से उत्पन्न होता है, यह दूध बच्चों के पालन में काम आता है, लेकिन जब अधिक दूध के लिए या सब्जियों व फलों को जल्द तैयार करने के लिए कृत्रिम ऑक्सीटोसिन का इंजेक्शन लगाया जाता है तो यह धीमा जहर के समान है। कोई भी व्यक्ति ताजा सब्जियों को यही समझ कर खाता है कि उनसे उनके शरीर को जरूरी पोषक तत्व मिलेंगे, किंतु ऑक्सीटोसिन मिश्रित सब्जियां स्लो प्वाइजन की तरह है। इसके अलावा भी हम जो अनाज खाते हैं या फल खाते हैं, सब में मिलावट की रसायनिक जहर है, जो स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। दिल्ली उच्च न्यायालय ने अधिकारियों को राजधानी में गाय-भैंस रखने वाली डेरियों में ऑक्सीटॉसिन के गलत उपयोग के खिलाफ कार्रवाई करने का निर्देश दिया है। अदालत ने कहा है कि हार्मोन संबंधित दवा देना पशु क्रूरता है और यह एक अपराध है। कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन की अध्यक्षता वाली पीठ ने दिल्ली सरकार के औषधि नियंत्रण विभाग से साप्ताहिक निरीक्षण करने और मामला दर्ज करने को कहा है, पुलिस इसकी जांच करेगी। अदालत ने दिल्ली पुलिस के खुफिया विभाग से ऑक्सीटॉसिन उत्पादन, पैकेजिंग और वितरण के स्रोतों की पहचान करने को कहा है। साथ ही इस मामले में कानून के अनुसार कार्रवाई करने को कहा है। ऐसी कार्रवाई देशव्यापी स्तर पर किए जाने की जरूरत है। देश के हर कोने में ऑक्सीटोसिन का गलत इस्तेमाल हो रहा है। लोगों की सेहत से खिलवाड़ का हक किसी को नहीं है। ऑक्सीटोसिन को देना पशु क्रूरता है और यह पशुओं के प्रति क्रूरता से बचाव अधिनियम 1960 की धारा 12 के तहत एक संज्ञेय अपराध है। ऑक्सीटोसिन के गलत उपयोग या इसे रखने के सभी मामलों को पशुओं के प्रति क्रूरता से बचाव अधिनियम 1960 की धारा 12 एवं दवा एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम की धार 18(ए) के तहत दर्ज किया जाता है। अदालत ने यह भी कहा कि सभी डेरियों को उचित सीवेज, जल निकासी, बायोगैस संयंत्र, मवेशियों के घूमने के लिए पर्याप्त खुली जगह और पर्याप्त चारागाह वाले क्षेत्रों में स्थानांतरित किया जाना चाहिए। शहर के सभी डेयरियों को पशु पालन के लिए उच्च हाइजेनिक मानदंडों का पालन करना चाहिए। सरकार को चाहिए कि ऑक्सीटोसिन के दुरुपयोग को पूर्णतया बंद कराए, क्योंकि इससे लोगों की सेहत को नुकसान पहुंच रहा है।

स्मृति शेष
मणेंद्र मिश्रा मशाल

समावेशी वामपंथ के पक्षधर थे कामरेड अतुल अनजान

कामरेड अतुल अनजान नहीं रहे। शुक्रवार सुबह लखनऊ के एक निजी हास्पिटल में कैंसर से जूझ रहे अतुल अनजान ने अंतिम सांस ली। उनका पूरा जीवन ही सार्वजनिक था। हमारी पीढ़ी के लिए वह राजनीति, संविधान, जन सरोकार, सामाजिक मुद्दों सहित देश दुनिया के विभिन्न मसले जिनका असर आम जनता पर पड़ सकता है, उन सभी विषयों के लिए इनसाइक्लोपीडिया थे। वामपंथी राजनीति का वे बड़ा चेहरा थे। लेफ्ट यूनिटी के लिए पूरी प्रतिबद्धता होने के बाद भी अतुल समाजवादी, कांग्रेसी सहित वे सभी समूह जिनका भरोसा आपसी सौहार्द एवं उपेक्षितों, किसानों के प्रति रहता था उनसे संवाद करने में नहीं हिचकते थे। हम लोगों का उनसे परिचय आज के बीस वर्ष पूर्व इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान हुआ था। प्रो बनवारी लाल शर्मा के संयोजन में आजादी बचाओ आंदोलन में सक्रिय रहते हुए हम लोगों ने उनके कई कार्यक्रम कराए जिनमें उन्हें करीब से सुनना हुआ था। उस समय सेज (एसईजेड) के खिलाफ अतुल अनजान का किसानों के समर्थन में दिए गए वक्तव्य की राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा थी। जनजातीय क्षेत्रों में मानवाधिकारों के लिए उन्होंने लंबी लड़ाई लड़ी। वामपंथी राजनीति को पसंद न करने वाले लोग भी उनका भाषण सुनने दूर-दूर से आते थे। दिल्ली स्थित मावलंकर हाल,कांस्टीट्यूशन क्लब, तीन मूर्ति लाइब्रेरी में शहीदे आजम भगत सिंह, सामयिक मुद्दों पर

कामरेड एबी वर्धन के साथ अतुल अनजान की उपस्थिति हर बार एक नया विमर्श पैदा कर देती थी। 2019 में दिल्ली के गांधी शांति प्रतिष्ठान में 12-13 जुलाई को समाजवादी समागम में उन्होंने राजनीति में विचार और जनाधार दोनों को बचाने के लिए समाजवादियों से आह्वान किया था। इस उपलक्ष्य में विमोचित हुए समाजवादी विचार समग्र पुस्तक में प्रकाशित मेरे लेख समाजवादी सोच के प्रति नई पीढ़ी की चिंता को लेकर मंच से खूब सराहना की और आयोजन में मेरे वक्तव्य से प्रभावित होकर सचेत किया था कि समाजवादी विचारधारा को नवीन प्रयोगों से सक्रिय किए रहना। लखनऊ विश्वविद्यालय के लोकप्रिय छात्रसंघ अध्यक्ष रहे अतुल अनजान आजीवन छात्र आंदोलन के जेपी मूवमेंट वाली पीढ़ी और नए छात्र, नौजवानों में एक समन्वयकारी भूमिका में रहते थे। 2018 में लखनऊ विश्वविद्यालय के आन्दोलनरत छात्रों के जेल जाने पर मीसा बंदी एवं लोकतंत्र रक्षक सेनानी, सत्तर के दशक में मेरठ कॉलेज की छात्र राजनीति से निकले पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेन्द्र चौधरी की पहल पर प्रो रमेश दीक्षित(लखनऊ विश्वविद्यालय) एवं लखनऊ विश्वविद्यालय छात्रसंघ के पूर्व पदाधिकारियों का सफल संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस कराने का श्रेय अतुल को ही रहा। लखनऊ छात्रसंघ के इतिहास में यह अपने आप में अनूठी घटना थी जिसमें पूर्व छात्रसंघ अध्यक्षों में अतुल अनजान, सत्यदेव त्रिपाठी, अरविन्द सिंह गोप, अरविन्द कुमार सिंह, डॉ राजपाल कश्यप प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। इसका असर यह रहा कि जेल में बंद छात्र नेताओं की जल्द रिहाई हो गई। प्रेस कॉन्फ्रेंस में लखनऊ विश्वविद्यालय में सरकारी धन के दुरुपयोग को लेकर प्रोटेस्ट करने वाले छात्र-छात्राओं की गिरफ्तारी और उत्पीड़न की निंदा की गई थी। अतुल अनजान को अपने गृह जनपद मऊ से बेहद लगाव था। जहां उनके प्रयास से 31 दिसंबर 2015 को तत्कालीन समाजवादी सरकार में मुलायम सिंह यादव एवं उस समय मुख्यमंत्री रहे अखिलेश यादव ने जनपद के महान विभूति रहे पंडित अलगू राय शास्त्री और कामरेड जय बहादुर सिंह की प्रतिमा की स्थापना मऊ कलेक्ट्रेट परिसर में की गई। कामरेड अतुल अनजान की हजरतगंत काफी हाउस की बैठकी बेहद चर्चित थी। इसमें लखनऊ के सिविल सोसायटी से जुड़े अनेक लोग शामिल होते थे, जिनमें नेता, पत्रकार, वकील, सामाजिक कार्यकर्ता और प्रोफेसर शामिल रहते थे। उनके होने से अन्याय के खिलाफ किसी भी आंदोलन,धरना, प्रदर्शन में लोगों को एक संबल मिलता था। सच कहने का उनमें गजब का साहस था। वे आजीवन सिद्धांत और ईमानदारी की राजनीति करते रहे। उनके निधन ने समाज में एक जनपक्षकार की रिक्तता पैदा कर दिया। इसकी भरपाई मुश्किल है। अतुल अनजान अपने अर्थपूर्ण लेखों, ओजस्वी भाषणों के लिए हमारी स्मृतियों में बने रहेंगे। हाशिये की मुखर आवाज अतुल अनजान को अश्रूपूर्ण श्रद्धांजलि।

(लेखक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अतिथि प्रवक्ता रहे हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

कांग्रेस की रक्षात्मक रणनीति!

लोकसभा चुनाव
राज कुमार सिंह

कांग्रेस की परंपरागत सीटों अमेठी और रायबरेली को लेकर जारी सस्पेंस के अंतिम क्षणों में पटाक्षेप से जवाब कम मिले, सवाल ज्यादा उठते हैं। इन सीटों पर नामांकन की अंतिम तिथि वाले दिन ही उम्मीदवारों के ऐलान से कांग्रेस की किसी सुनियोजित रणनीति के बजाय कन्फ्यूजन का संदेश ज्यादा गया। केरल में वायनाड से लगातार दूसरी बार चुनाव लड़ रहे पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी अब रायबरेली से भी लड़ेंगे। चुनावी आकलन के दौरान यह आशंका जताई जाती रही है कि विपक्षी दलों के आधे-अधूरे बने 'इंडिया' गठबंधन की सबसे कमजोर कड़ी कांग्रेस ही साबित हो सकती है।

गांधी-नेहरू परिवार की पारंपरिक लोकसभा सीटों अमेठी और रायबरेली को लेकर जारी सस्पेंस के अंतिम क्षणों में पटाक्षेप से जवाब कम मिले, सवाल ज्यादा उठते हैं। इन सीटों पर नामांकन की अंतिम तिथि वाले दिन ही उम्मीदवारों के ऐलान से कांग्रेस की किसी सुनियोजित रणनीति के बजाय कन्फ्यूजन का संदेश ज्यादा गया। केरल में वायनाड से लगातार दूसरी बार चुनाव लड़ रहे पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी अब रायबरेली से भी लड़ेंगे। 2004 से 2019 तक रायबरेली से लगातार पांच बार जीतीं सोनिया गांधी ने बढ़ती उम्र और स्वास्थ्य कारणों से इस बार राजस्थान से राज्यसभा में चुने जाने का विकल्प चुना। पिछली बार दो सीटों से चुनाव लड़े राहुल वायनाड से तो जीत गए, लेकिन अपनी परंपरागत सीट अमेठी से, लगातार तीन बार जीतने के बाद, स्मृति ईरानी से लगभग 55 हजार वोटों से हार गए, इसीलिए लंबे अरसे से गांधी-नेहरू परिवार की पारंपरिक सीट रहीं अमेठी और रायबरेली को लेकर राजनीतिक गलियारों से मीडिया तक में अटकलों का बाजार गर्म था। इतना ही नहीं चर्चाएं यह भी रहीं कि वायनाड में मतदान हो जाने के बाद राहुल अमेठी से ताल ठोकेंगे, जबकि कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी अपनी चुनावी राजनीति की शुरूआत रायबरेली से कर सकती हैं।

पिछले दिनों कांग्रेस सूत्रों के हवाले से यह खबर भी आई कि राहुल-प्रियंका के असमंजस के बीच खुद सोनिया गांधी ने दोनों से फोन पर बात की है। यह भी बताया गया कि सोनिया ने यहां तक कहा है कि उन दोनों के चुनाव न लड़ने का अर्थ दोनों सीटें भारतीय जनता पार्टी को थाली में रख कर दे देने जैसा होगा, पर तीन मई को नामांकन के अंतिम दिन कांग्रेस ने ऐलान किया कि राहुल, रायबरेली से लड़ेंगे, जबकि अमेठी से गांधी-नेहरू परिवार के निष्ठावान रहे किशोरी लाल शर्मा चुनाव लड़ेंगे। मूलतः पंजाब से आने वाले किशोरी लाल शर्मा दशकों से अमेठी और रायबरेली लोकसभा क्षेत्रों में, वहां से गांधी-नेहरू परिवार के निर्वाचित सांसदों के प्रतिनिधि के रूप में राजनीतिक कामकाज देखते रहे हैं।

यहां पर कई सवाल उठना लाजिमी हैं। कोई राजनीतिक दल अपने निष्ठावान कार्यकर्ता को पुरस्कृत करे, यह अच्छी बात है, पर क्या किशोरी लाल शर्मा के लिए रायबरेली ज्यादा आसान सीट नहीं होती? वहां से भाजपा उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ रहे दिनेश प्रताप सिंह पुराने कांग्रेसी हैं और पिछले लोकसभा चुनाव में सोनिया गांधी के विरुद्ध मैदान में उतरे थे और हार गए थे। ऐसे में राहुल के खुद रायबरेली से लड़ने और किशोरी लाल शर्मा को अमेठी में स्मृति ईरानी के विरुद्ध लड़वाने से बहुत सकारात्मक राजनीतिक संदेश नहीं गया है। राहुल को हरा चुकी स्मृति को शर्मा कड़ी टक्कर दे पाएंगे,ऐसा मानने का फिलहाल तो कोई आधार नहीं दिखता।

बेशक राहुल के पास वायनाड के मतदाताओं के प्रति प्रतिबद्धता के आधार पर किसी भी दूसरी सीट से चुनाव न लड़ने का बेहतर नैतिक आधार हो सकता था, लेकिन

रायबरेली से लड़ कर उन्होंने उसे भी गंवा दिया। अगर दो सीटों से ही चुनाव लड़ रहे हैं, तब अपनी परंपरागत सीट छोड़ कर रायबरेली जाने से भारतीय जनता पार्टी को यह प्रचार करने का मौका उन्होंने खुद उपलब्ध कराया है कि वह डर गए।

माना कि अमेठी से राहुल की जीत तय नहीं थी, पर हार तय मान लेने का क्या कारण रहा? क्या एक बार चुनाव हारने के बाद नेता उसी सीट से दोबारा जीतते नहीं और सबसे बड़ा सवाल यह कि जब चुनावी राजनीति में हैं, तो हार से डर कैसा? इंदिरा गांधी, अटल बिहारी वाजपेयी और चौधरी चरण सिंह भी चुनाव हारे, जो राजनीतिक कद और पद में राहुल से बहुत बड़े नेता रहे, पर उन्होंने इस तरह पलायन नहीं किया। अब भारतीय जनता पार्टी के इस प्रचार की राहुल और कांग्रेस कैसे काट करेंगे? सवाल यह भी है कि 2022 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में 'लड़की हूं, लड़ सकती हूं' का नारा देने वाली प्रियंका गांधी अब मौका आने पर क्यों पीछे हट गईं? उम्मीद यही थी कि भारत जोड़ो यात्रा से हासिल आत्मविश्वास के बल पर राहुल फिर अमेठी से ही ताल ठोकेंगे, जबकि बेटी रायबरेली में मां की विरासत संभालेगी।

अब तर्क दिया जा रहा है कि परिवार के सभी सदस्यों का चुनाव लड़ना सही नहीं होता। अगर सभी सदस्य सक्रिय राजनीति में आ सकते हैं, तब चुनाव भी लड़ लेने में क्या समस्या है? एक ओर यह तर्क दिया जा रहा है, तो दूसरी ओर प्रियंका के पति रॉबर्ट वाड्रा तक मीडिया इंटरव्यू के जरिये चुनाव लड़ने की अपनी इच्छा जताते रहे हैं। सवाल यह भी है कि अगर राहुल दोनों सीटों से जीत गए तो उनके द्वारा खाली की जाने वाली सीट से क्या कोई पारिवारिक सदस्य चुनाव नहीं लड़ेगा? सीधा सवाल पूछें तो क्या दोनों जगह से जीत की स्थिति में राहुल द्वारा खाली की जाने वाली सीट से प्रियंका चुनाव नहीं लड़ेंगी और क्या वह कभी चुनावी राजनीति में नहीं आना चाहतीं? बेशक कांग्रेस और राहुल गांधी को अपनी रणनीति तय करने का अधिकार है, लेकिन सार्वजनिक जीवन के फैसले पूरी तरह व्यक्तिगत नहीं हो सकते। उन पर टीका-टिप्पणी होगी ही, क्योंकि उनका प्रभाव व्यापक होता है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव द्वारा पूर्ण सहयोग के आश्वासन के बावजूद अमेठी-रायबरेली की बाबत इन फैसलों से कांग्रेस की रक्षात्मक रणनीति का नकारात्मक संदेश ही गया है।

इससे पहले सूरत एवं इंदौर में 'जयचंद-प्रकरण' और दिल्ली में बगावत तथा पश्चिम बंगाल में अधीर रंजन चौधरी सरीखे वरिष्ठ नेता की 'टीमएसी से बेहतर होगा भाजपा को वोट देना' जैसी अपील से भी कांग्रेस के राजनीतिक प्रबंधन पर गंभीर सवाल उठे हैं। 2014 और 2019 में एकतरफा लोकसभा चुनावों के बाद इस चुनाव में कड़े मुकाबले के संकेत मिल रहे हैं। फिर भला विपक्ष का सबसे बड़ा दल होने के बावजूद कांग्रेस ने ऐसी रक्षात्मक रणनीति से नकारात्मक चुनावी राजनीतिक संदेश का जोखिम क्यों उठाया? किसी भी राष्ट्रीय राजनीतिक दल के लिए इस तरह की रणनीति सवाल तो खड़े करती ही है साथ ही उसके लिए एक नकारात्मक छवि भी लोगों के दिलो दिमाग पर अंकिल करती है।

चुनावी आकलन के दौरान यह आशंका जताई जाती रही है कि विपक्षी दलों के आधे-अधूरे बने 'इंडिया' गठबंधन की सबसे कमजोर कड़ी कांग्रेस ही साबित हो सकती है, क्योंकि लगभग 200 सीटों पर उसका भाजपा से सीधा मुकाबला होता है। क्षेत्रीय दल पहले भी भाजपा के विरुद्ध अपेक्षाकृत अच्छा प्रदर्शन करते रहे हैं। ऐसे में अंतिम परिणाम बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करेगा कि खुद कांग्रेस, भाजपा के विरुद्ध कैसा चुनावी प्रदर्शन करेगी। अभी तक के संकेत बहुत सकारात्मक तो नहीं हैं।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **edit@haribhoomi.com** पर दे सकते हैं।

हृदय का करें अनुसरण

संकलित
दर्शन

कोई भी धर्मग्रंथ हमें धार्मिक नहीं बना सकता। चाहे हम दुनिया के सारे धर्मग्रंथ पढ़ डालें, परंतु फिर भी ईश्वर या धर्म का हमें तनिक भी ज्ञान नहीं होता। हम सारी उम्र धर्म या ईश्वर संबंधी बातें करते रहें, पर हमारी आध्यात्मिक उन्नति नहीं होती। दुनिया के विद्वानों ने भले ही हमारी बुद्धि प्रखर कर दी हो, पर हम ईश्वर तक नहीं पहुंच सके। पाश्चात्य संस्कृति का दोष यह है कि हम बुद्धि का संस्कार करते समय हृदय के संस्कार की ओर ध्यान ही नहीं देते। इसका परिणाम यह होता है कि मनुष्य दस गुना स्वार्थी हो जाता है। यदि हृदय और बुद्धि में विरोध उत्पन्न हो, तो तुम हृदय का अनुसरण करो, क्योंकि बुद्धि केवल एक तर्क के क्षेत्र में ही काम कर सकती है, वह उसके परे जा ही नहीं सकती, पर वह केवल हृदय ही है, जो हमें उच्चतम भूमिका पर आरूढ़ करता है। वहां तक बुद्धि कभी नहीं पहुंच सकती। हृदय, बुद्धि का अतिक्रमण कर अंतःस्फूर्ति को पा लेती है। बुद्धि से कभी अंतःस्फूर्ति प्राप्त नहीं हो सकती। अंतःस्फूर्ति का कारण केवल ज्ञानोदय बासित हृदय ही है। बुद्धिप्रधान, किंतु हृदय शून्य मनुष्य कभी स्फूर्तिमान नहीं बन सकता। प्रेममय पुरुष की समस्त क्रियाएं उसके हृदय से अनुप्राणित होती हैं। एक ऐसा उच्चतर साधन, जिसे बुद्धि कभी नहीं दे सकती, अगर किसी ने पाया है तो हृदय ने ही, और वह साधन है अंतःस्फूर्ति। जिस तरह बुद्धि ज्ञान का साधन है, उसी तरह हृदय अंतःस्फूर्ति का। शुरुआत में हृदय इतना शक्तिशाली नहीं होता, जितनी कि बुद्धि।

तुलसीदास जी द्वारा विप्रचंद ब्राह्मण पर कृपा

संकलित
प्रेरणा

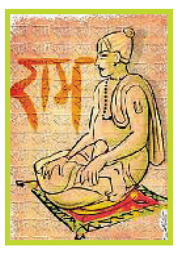

एक बार एक विप्रचंद नामक ब्राह्मण से हत्या हो गयी और उस हत्या के प्रायश्चित के लिए वह अनेक तीर्थों में घूमता हुआ काशी आया। वह मुख से पुकार कर कहता था: राम राम! श्री गोस्वामी जी ने उसके मुख से अपने इष्टदेव का अतिसुंदर राम नाम सुनकर उसे अपने निवास स्थान पर बुला लिया और उसे हृदय से लगा लिया। फिर उसे अपनी पंक्ति में बैठकर प्रसाद पवाया, जिससे वह शुद्ध हो गया। काशी के ब्राह्मणों ने जब यह बात सुनी तो उन्होंने एक सभा की और उसमें गोस्वामी जी को बुलवाया। सभी पंडितो ने गोस्वामी जी से पूछा कि प्रायश्चित पूरा हुए बिना ये ब्राह्मण कैसे शुद्ध हो गया? भगवन्नाम के प्रताप से ही यह ब्राह्मण भी शुद्ध हो गया। गोस्वामी जी ने पूछा कि फिर आपको कैसे होगा वह उपाय कहिये? इसपर ब्राह्मणों ने कहा: यदि इस व्यक्ति के हाथ से भगवान शंकर के नंदी जी प्रसाद खा लें तो हम लोग इसे अपनी जाति, पंगति में ले अथवा नहीं। सब लोग काशी में ज्ञानवापी नदी के तट पर पहुंचे जहाँ शर्त रखी गयी थी। श्री गोस्वामी जी ने नन्दीश्वर से कहा: हे नंदीश्वर ! यदि यह ब्राह्मण राम नाम के प्रताप से शुद्ध हो गया है तो आप इसके हाथ से प्रसाद स्वीकार करके नाम की महिमा को प्रमाणित कीजिये। नन्दीश्वर ने प्रसन्नता के साथ प्रसाद स्वीकार कर लिया। इस चमत्कार को देखकर सभी श्री रामचंद्र जी की एवं रामनाम की जय जयकार करने लगे और श्रीतुलसीदास जी की नामनिष्ठा पर बलिहार हो गए।

अंतर्मन

आज की पाती

प्रेस की मुख्य भूमिका

संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1993 में विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस हर वर्ष 3 मई को मनाए जाने की घोषणा की थी। हमारे देश का सबसे पहला समाचारपत्र का प्रकाशन 30 मई 1826 को हुआ था। यह पहला हिंदी समाचार पत्र था। इसका नाम उदन्त मार्तण्ड है और अब हमारे देश में विभिन्न भाषाओं के बहुत से समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। जितनी आजादी से हमारे देश में मीडिया अपना काम करता है, उतना शायद अन्य किसी देश में शायद ही हो। लड़ाई हो तो पत्रकारों को बुलाओ, सड़क नहीं बनी तो पत्रकारों को बुलाओ, पानी नहीं आ रहा तो पत्रकारों को बुलाओ, यानी हर छोटी-मोटी समस्या के लिए पत्रकार हमेशा हाजिर हो जाते हैं। आज न्यूज चैनलों की बाढ़ आ जाने के बावजूद हर कोई अखबार का इंतजार जरूर करता है।

- अजय चद्रवंशी, अंबिकापुर

करंट अफेयर

ताइवान हर दिन लाखों साइबर हमलें झेल रहा

तेजी से निरंकुश होते क्षेत्र में ताइवान लोकतंत्र, नवाचार और प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में खड़ा है। लेकिन इस पर ख़तरा बढ़ता जा रहा है। हाल के वर्षों में, चीन ने ताइवान पर कम्युनिस्ट पार्टी के एकीकरण के प्रयासों को स्वीकार करने के लिए दबाव बनाने के लिए कई तरह की 'ग्रे जोन' रणनीतियों का इस्तेमाल किया है। इसमें साइबर हमलों का आक्रमण शामिल है, जो न केवल ताइवान की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा पैदा करता है, बल्कि इसकी लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को भी कमजोर करने की कोशिश करता है। ये हमले फ़िशिंग प्रयासों से लेकर परिष्कृत मैलवेयर घुसपैठ तक होते हैं। वेबसाइट

विरूपण हमले और डिस्ट्रीब्यूटेड डेनियल ऑफ सर्विस (डीडीओएस) हमले अक्सर महत्वपूर्ण घटनाओं के दौरान देखे जाते हैं, जैसे कि अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की तत्कालीन अध्यक्ष नैन्सी पेलोसी की अगस्त 2022 की यात्रा के दौरान। निशाने पर होते हैं सरकारी एजेंसियां, शैक्षणिक संस्थान, सुविधा स्टोर और ट्रेन स्टेशन। तो, ताइवान इन हमलों से खुद को कैसे बचा रहा है? और क्या वह ऐसा कर पाएगा क्योंकि चीन की रणनीति और अधिक परिष्कृत होती जाएगी।

ऑफ बीट

हृदय गति क्षेत्र क्या हैं, इसे दिनचर्या में शामिल करें

यदि आप ऑनलाइन फिटनेस सामग्री की खोज में बहुत समय बिताते हैं, तो हो सकता है कि आप हृदय गति क्षेत्रों की अवधारणा से परिचित हों। हृदय गति

क्षेत्र प्रशिक्षण हाल के वर्षों में अधिक लोकप्रिय हो गया है, आंशिक रूप से पहनने योग्य प्रौद्योगिकी में उछाल के कारण, जो अन्य कार्यों के अलावा, लोगों को आसानी से अपनी हृदय गति को ट्रैक करने का अवसर देता है। एरोबिक व्यायाम के दौरान हृदय गति क्षेत्र तीव्रता के विभिन्न स्तरों को दर्शाते हैं। वे अक्सर आपकी अधिकतम हृदय गति के प्रतिशत पर आधारित होते हैं, जो आपके हृदय द्वारा प्रति मिनट ली जा सकने वाली धड़कनों की उच्चतम संख्या है। लेकिन विभिन्न हृदय गति क्षेत्र क्या हैं, और आप अपने वर्कआउट को अनुकूलित करने के लिए इन क्षेत्रों का उपयोग कैसे कर सकते हैं? तीन-ज़ोन मॉडल जबकि हृदय गति क्षेत्रों का वर्णन करने के लिए कई मॉडलों का उपयोग किया जाता है, वैज्ञानिक साहित्य में सबसे आम मॉडल तीन-क्षेत्र मॉडल है, जहां क्षेत्रों को निम्नानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है: जोन 1: 55 प्रतिशत - अधिकतम हृदय गति का 82 प्रतिशत जोन 2: 82 प्रतिशत - अधिकतम हृदय गति का 87 प्रतिशत जोन 3: 87 प्रतिशत - अधिकतम हृदय गति का 97 प्रतिशत।

ट्रेंड

सुशासन से ही संभव

2024 के आम चुनाव में 'मोदी गारंटी' मुख्य मुद्दा है. भाजपा का लक्ष्य 2047 तक एक विकसित भारत बनाना है। यह केवल सुशासन से ही संभव है। हम उनसे अनुरोध करते हैं जो उज्ज्वल भविष्य चाहते हैं कि वे फौलादी इरादों वाले मोदी को वोट दें जो देश को समावेशी विकास की ओर ले जा सकें।

-एस जयशंकर, केंद्रीय मंत्री

भविष्य का अस्तित्व नहीं

आप अतीत या भविष्य को कष्ट नहीं दे सकते क्योंकि उनका अस्तित्व ही नहीं है। आप जो पीड़ित हैं वह आपकी स्मृति और आपकी कल्पना है। ध्यान न तो एकाग्रता है और न ही विश्राम। यह एक तरह की घर वापसी है।

-सदगुरु, आध्यात्मिक गुरु

मोदी के पसंदीदा शब्द

हिंदी भाषा में लगभग 1.5 लाख शब्द बताये जाते हैं तथा अध्ययन की सभी शाखाओं में तकनीकी शब्दों को मिलाकर 6.5 लाख शब्द हैं, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी के पसंदीदा शब्द हैं:- पाकिस्तान, श्मशान, क़ब्रिस्तान, हिन्दू-मुसलमान, मंदिर-मस्जिद, मछली-मुगल, मंगलसूत्र, गाय-भैंस।

-लालू प्रसाद यादव, राजद सुप्रीमो

विरासत में शहादत मिली

मेरे पिता को विरासत में धन-दौलत नहीं, शहादत मिली। जब नरेंद्र मोदी मेरे पिता पर आरोप लगाते हैं कि उन्होंने विरासत लेने के लिए क़ानून बदला, वो यह नहीं समझ सकते कि मेरे पिता को विरासत में धन-दौलत नहीं, शहादत की भावना मिली।

-प्रियंका गांधी, कांग्रेस महासचिव

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-42422221 पर या सीधे मेल से **aapkepatra.haribhoomi@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

https://t.me/AllNewsPaperPaid